बदनामे ज़माना लानती
वसीम रिज़वी की किताब मुहम्मद
में ८७ आरोपों और आपत्तियों का युक्ति संगत
और मुँह तोड़ जवाब

अज़ीम मुहम्मद

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

लेखक:

मौलाना मुहम्मद इब्राहीम आसी

जामिआ क़ादरिया अशरफ़िया, मुंबई

प्रकाशक:

तहफ़्फ़ुज़े नामूसे रिसालत बोर्ड मुंबई

बदनामे ज़माना लानती वसीम रिज़वी की किताब "मुहम्मद"
में 87 आरोपों और आपत्तियों का

युक्ति संगत और मुँह तोड़ जवाब

अज़ीम मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

लेखकः

मौलाना मुहम्मद इब्राहीम आसी
जामिआ क़ादरिया अशरफ़िया, मुम्बई

इच्छा अनुसारः
पीरे तरीक़त, हज़रत अल्लामा मौलाना **सय्यद मुईनुद्दीन मियां**
अशरफ़ अशरफ़ी अल-जीलानी
(अध्यक्ष ऑल इंडिया सुन्नी जमीअतुल उलमा)

क़ाइदे अहले सुन्नत, मुहाफ़िज़े नामूसे रिसालत
अलहाज **मुहम्मद सईद नूरी** साहब
(संस्थापक रज़ा एकेडमी)

प्रकाशकः

तहफ़्फ़ुज़े नामूसे रिसालत बोर्ड, मुम्बई
52, डोंटाड स्ट्रीट, पहला माला, खड़क, मुम्बई - 400009
फोन नंः 022–2345 4585
Email: mumbai.razaacademy@gmail.com/ Website: www.razaacademy.com

सभी अधिकार लेखक द्वारा आरक्षित हैं

नाम पुस्तकः **अज़ीम मुहम्मद** *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*
विषय : रद्द (लानती वसीम रिज़वी की किताब ''मुहम्मद'' का जवाब)
लेखक : मौलाना मुहम्मद इब्राहीम आसी
पुनरीक्षणः मुफ़्ती अब्दुल मजीद ख़ान साहब मिस्बाही,
मुफ़्ती मुहम्मद शाहनवाज़ मिस्बाही,
क़ारी रईस अहमद वास्ती
प्रूफ़ रीडिंगः जनाब मुहम्मद अहमद नुरी साहब बरैली शरीफ
हवाला तलाशीः मौलवी महबुब राज़ा मौलवी मुजाहिद राज़ा
सफ़हात : 238
सहायकोंः रेहान अनवर धोराजीवाला साहब,
जनाब असलम लाखा साहब
एडोकेट सुल्तान साहब,
जनाब शेख़ इरफ़ान साहब
जनाब आरिफ़ रिज़वी साहब
दूसरे धर्मों की पुस्तकों की उपलब्धताः अनवर हुसैन, रेहान वारसी
निम्न आयोजनः जामिआ क़ादरिया अशरफ़या, मुम्बई
कम्पोज़िंगः ज़ुबैर क़ादरी मुम्बई
प्रकाषक : तहफ़्फ़ुज़ नामूसे रिसालत बोर्ड, मुम्बई
संस्क्रण वर्षः जुन 2022

लेखों की सूची

नम्बर	शीर्षक	सफ़्हा नं
1	प्रसंग व संदर्भ	8
2	आवश्यक घोषणा	11
3	समर्पण	12
4	शुक्रे ख़ुदा	13
5	प्रार्थना शब्द (मुईनुल मशाइख़ अश-शाह **सय्यद मुईनुद्दीन मुईन मियां** साहब क़िबला)	14
6	नामूसे रिसालत के लिये सब कुछ कुरबान (अलहाज मुहम्मद सईद नूरी साहब क़िब्ला)	16
7	सलाहकार परिषद और उत्तर की तय्यारी	19
8	वाणी प्रशंसा	22
9	प्रस्तावना	26
10	झूटा लेखक, झूटी पुस्तक अस्लियत के आईने में	32
11	संदर्भ सारांश	33
12	ज़हरीला बयान	34
13	लानती वसीम रिज़वी प्रश्नों के घेरे में	38
14	लानती वसीम रिज़वी का अरबी ज्ञान	40
15	‘‘बिन’’ और ‘‘बिन्त’’ में अंतर	41
16	आरोप बग़ैर प्रमाण के	41
17	मुंह एक बातें दो	42
18	लानती वसीम रिज़वी हलाली या हरामी	44
19	झूट से पर्दा हटा	45

20	झूट पे झूट	46
21	अन्यायी कौन, पीड़ित कौन?	47
22	छल कपट	50
23	क़ैदी	52
24	संज्ञाहीन कौन?	53
25	लानती वसीम रिज़वी की बकवास	54
26	लानती वसीम रिज़वी की गंदी मानसिकता	56
27	झूटी बातें	57
28	मूत्र पीने वाला कौन?	58
29	लानती वसीम रिज़वी की निगाह में गांधी जी अहमक़	59
30	बदसूरत कौन?	60
31	आरोप तराशी	62
32	बुतों को क्यों तोड़ा?	63
33	क्या बच्चा आसमान से टपकेगा	66
34	**अब झूट से पर्दा उठता है**	67
35	आसमान व ज़मीन का अंतर	67
36	झूटे पर अल्लाह की धिक्कार	74
37	हदीस का भाव अर्थ	77
38	झूट की वर्षा	80
39	लानती वसीम रिज़वी का लेखा परिक्षा	82
40	क़ब्रस्तान में परिवर्तित	85
41	अंग्रेज़ी का मन घड़त लेख	92
42	कौन सच्चा, कौन झूटा	94
43	हवस परस्ती का आरोप	97

44	लानती वसीम रिज़वी की मन घड़त हदीस का पोस्ट मार्टम	97
45	लानती वसीम रिज़वी का मिर्च मसाला	103
46	चश्मे के पीछे से	107
47	किस की योजना?	122
48	लानती वसीम रिज़वी ख़ुद बीमार	123
49	लानती वसीम रिज़वी की कॉकटेल कहानी	123
50	लानती वसीम रिज़वी घर का न घाट का	131
51	मस्जिद, मंदिर, गिरजा घर	134
52	भगवान के लिये नहीं	134
53	लानती वसीम रिज़वी की ग़बन	136
54	लानती वसीम रिज़वी का दिमाग़ ठिकाने लगा	137
55	लानती वसीम रिज़वी का दिल व दिमाग़ ग़ायब	139
56	मुर्तद कौन हुआ?	141
57	किस के सामने बलात्कार?	142
58	घुसेड़ने की आदत	144
59	लानती वसीम रिज़वी का असली चेहरा	147
60	न्योग क्या है?	149
61	लानती वसीम रिज़वी की बीनाई ख़त्म	151
62	D. N. A. (डी, एन, ए) क्या है?	152
63	लानती वसीम रिज़वी की यौन शिक्षा से रुचि	153
64	रावण ने सीता से क्या कहा?	158
65	गुदा मैथुन इस्लाम में हराम	161
66	गाय मूत्र और गोबर	166

67	जैसा दरख़्त वैसा फल	166
68	लानती वसीम रिज़वी का बड़ा झूट	167
69	मनु स्मृती का संदर्भ	171
70	हलाल या हराम	175
71	लेख घोटाला	176
72	लानती वसीम रिज़वी की बेशर्मी	177
73	औरत एक, शौहर पांच	179
74	माएं हराम हैं	180
75	उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा की शादी	181
76	मेडिकल साइंस क्या कहती है?	183
77	पेडोफ़ीलिया क्या है?	184
78	कम उम्र की माएं	186
79	शादी के वक़्त सीता की उम्र 6 साल	188
80	बीवियों की भरमार	194
81	अगर लानती वसीम रिज़वी ने मां का दूध पिया है	196
82	लानती वसीम रिज़वी मानसिक बीमार	196
83	हारमोन क्या है?	197
84	विवाह और व्यभिचार	199
85	**पक्षपात की अग्नि**	202
86	धार्मिक युद्ध या जिहाद	203
87	हिन्दू धर्म में युद्ध व जिहाद	205
88	इस्लामी जिहाद और हिन्दू धर्म युद्ध	216
89	मुसलमान रसूल की भूमिका को छुपाते नहीं, छापते और बताते हैं	220

90	पैग़म्बरे इस्लाम ग़ैर मुस्लिमों की दृष्टि में	222
91	डॉक्टर एन के सिंघ	222
92	राजेंद्र नरायन लाल	223
93	स्वामी लक्षमी शंकर अचारया	224
94	थॉमस कारलाइल	225
95	शहंशाहे फ्रांस नेपोलियन	228
96	स्वामी भवानी दयाल सन्यासी	229
97	रोमानया के विदेश मंत्री कांस्टन वरजेल जॉरज्यो	229
98	गांधी जी	230
99	माइकल हार्ट	230
100	लानती वसीम रिज़वी आंखें खोल	231
101	विकीपेडिया रिपोर्ट के अनुसार	232
102	लानती वसीम रिज़वी बहुत बड़ा बैल	233
103	रहमानी आयात	235

प्रसंग व संदर्भ

संख्या	पुस्तकों के नाम	लेखकों के नाम	मुद्रित
1	कुरआने मुक़द्दस	------	------
2	सहीहुल बुख़ारी	इमामुल मुहद्दिसीन मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी	एतेक़ाद पब्लिशिंग हाउस, सर सय्यद अहमद रोड, दरिया गंज, देहली
3	सहीह मुस्लिम	इमामुल मुहद्दिसीन अबुल हुसैन मुस्लिम बिन हज्जाज कुशैरी	अरशद ब्रादर्स, सुई वालान, नई देहली
4	सुनने अबी दाऊद	इमाम अबू दाऊद सुलेमान इब्ने अशअस	अरशद ब्रादर्स, सुई वालान, नई देहली
5	जामेअ तिर्मिज़ी	इमाम अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी	अरशद ब्रादर्स, सुई वालान, नई देहली
6	मुस्नदे इमाम अहमद बिन हंबल	इमाम अहमद बिन हंबल	दारुल कुतुबुल इल्मिया, बैरूत, लेबनान
7	शुअबुल ईमान	इमाम अबू बकर अहमद बिन हुसैन बैहक़ी	इदारा इशाअते इस्लाम, देवबन्द
8	मिश्कातुल मसाबीह	मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ख़तीब तब्रेज़ी	मक्तबा इस्लामिया, उर्दू बाज़ार, लाहौर
9	अद्दुरुल मन्सूर	इमाम जलालुद्दीन सुयूती	ज़ियाउल कुरआन पब्लीकेशंज़, लाहौर
10	अत्तफ़सीरुल कबीर	इमाम मुहम्मद राज़ी	दारुल फ़िक्र, बैरूत, लेबनान
11	तफ़सीरे मदारिकुत तंज़ील	अल्लामा अब्दुल्लाह बिन अहमद नसफ़ी	फ़रीद बुक स्टॉल, उर्दू बाज़ार, लाहौर
12	तफ़सीरे ख़ाज़िन	अल्लामा अली बिन मुहम्मद इब्राहीम बग़दादी	फ़रीद बुक स्टॉल, उर्दू बाज़ार, लाहौर

13	तफ़्हीमुल क़ुरआन	सय्यद अबुल आला मौदूदी	इदारा तर्जमानुल क़ुरआन, लाहौर
14	तबरानी	हाफ़िज़ सलेमान बिन अहमद तबरानी	यूसुफ़ मार्केट, ग़ज़नी स्ट्रीट, लाहौर
15	तारीख़े बग़दाद	हाफ़िज़ अहमद बिन अली ख़तीब बग़दादी	दारुल कुतुबुल इल्मिया, बैरूत, लेबनान
16	तारीख़ इब्ने असाकिर	इमाम इब्ने असाकिर दमिश्क़ी	दारुल कुतुबुल इल्मिया, बैरूत, लेबनान
17	सीरते इब्ने इस्हाक़	मुहम्मद बिन इस्हाक़ बिन यसार	मक्तबा नबविया, गंज बख़्श रोड, लाहौर
18	सीरते इब्ने हिशाम (अरबी)	अबू मुहम्मद अब्दुल मलिक बिन हिशाम	मक्तबा इमदादिया, सहारनपूर
19	सीरते इब्ने हिशाम (मुतर्जम)	अबू मुहम्मद अब्दुल मलिक बिन हिशाम	एतेक़ाद पब्लिशिंग हाउस, सरसय्यद अहमद रोड, दरिया गंज, देहली
20	तब्क़ात इब्ने सअद (अरबी)	अल्लामा मुहम्मद बिन सअद	दारुल कुतुबुल इल्मिया, बैरूत, लेबनान
21	तब्क़ात इब्ने सअद (मुतर्जम)	अल्लामा मुहम्मद बिन सअद	हाफ़िज़ी बुक डिपो, देवबन्द, यूपी
22	अलअसाबह फ़ी तमीज़िस्सहाबह	हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी	मक्तबा रहमानिया, जे मॉडल टाउन, लाहौर
23	मदारिजुन्नुबुव्वह	शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी	अदबी दुनिया, मटिया महल, देहली
24	रहमतुल लिल-आलमीन	क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान सलमान मन्सूर पुरी	एतेक़ाद पब्लिशिंग हाउस, सुई वालान, देहली
25	फ़तावा क़ाज़ी ख़ान	हसन बिन मन्सूर क़ाज़ी ख़ान	हाफ़िज़ कुतुब ख़ाना, मस्जिद रोड, कोइटा

26	रद्दुल मुहतार	अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी	मक्तबा ज़करिया, देवबन्द, यूपी
27	इहयाउल उलूम	इमाम मुहम्मद बिन ग़ज़ाली	फ़ारूक़या बुक डिपो, मटिया महल, देहली
28	इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ	डॉक्टर मुहम्मद अहमद नईमी	कुतुब ख़ाना, अमजदिया, मटिया महल, देहली
29	मुहम्मद और क़ुरआन	डॉक्टर रफ़ीक़ ज़करिया	इन्क़लाब पब्लीकेशंज़, मुम्बई
30	श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण	वाल्मीकीय	गीता प्रेस, गोरखपुर
31	मनु स्म्रती	मुतर्जमः कृपा राम शर्मा	वेदिक धर्म प्रेस, देहली
32	मनु धर्म शास्त्र	मनु जी	निगारिशात पब्लीकेशंज़, मज़ंग रोड, लाहौर
33	सत्यारथ प्रकाश	दयानन्द सरस्वती	आरयन प्रिंटिंग पब्लीकेशन ट्रेडिंग कम्पनी, लाहोर
34	दी हन्ड्रेड	माइकल हार्ट	करोल पब्लिशिंग ग्रूप, यूनाइटेड स्टेटस
35	पैग़म्बरे इस्लाम ग़ैर मुस्लिमों की नज़र में	मुहम्मद यह्या ख़ान	निगारिशात पब्लिशर्ज़, मज़ंग रोड, लाहौर
36	निसाइयात	डॉक्टर सय्यद मुहम्मद अब्बास रिज़वी	तरक़्क़ी उर्दू ब्योरो, नई देहली
37	गिनीज़ वर्ल्ड रिकार्ड	------	www. guinness worldrecords.com
38	बीबीसी रिपोर्ट	------	
39	विकीपेडिया	------	
40	मज़ामीन डॉट कोम		

आवश्यक घोषणा

मोहतरम क़ारईन! ज़ेरे नज़र किताब ‘‘अज़ीम मुहम्मद’’ (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) वसीम रिज़वी की किताब ‘‘मुहम्मद’’ के जवाब में लिखी गई है। इस किताब के लिखने में दीनी किताबों के अलावा वेब साइटस और दीगर मज़ाहिब की किताबों को भी हवाला बनाया गया है ताकि मुदल्लल, मुफ़स्सल और दन्दान शिकन जवाब दिया जा सके। इस किताब की तहरीर या हवाले से किसी भी मज़हब की अहानत हरगिज़ मक़सूद नहीं। दीगर मज़ाहिब की किताबों की इबारतों को सिर्फ़ बतौर मिसाल पेश किया गया है और यह बताना मक़सद है कि हर एक मज़हब के रिवाज व रुसूम अलग अलग हैं और हर एक को अपने मज़हब के रिवाज व रुसूम पर चलने का हक़ हासिल है। लिहाज़ा किसी भी इबारत को सिर्फ़ बतौर मिसाल ही तसव्वुर किया जाए। हम किसी के भी मज़हबी रुसूम व रिवाज पर उंगली नहीं उठाया करते और न ही किसी को करना चाहिये। किताबों के हवाले, तहरीर, कम्पोज़िंग, तस्हीह व प्रूफ़ रीडिंग और इशाअत व तबाअत में हत्तल इम्कान कोशिश की गई है कि कोई ग़लती न रहने पाए, इसके बावुजूद बतक़ाज़ाए बशरी अगर कोई ग़लती रह गई हो और क़ाबिले अफ़्व हो तो दरगुज़र कर दे। बसूरते दीगर हमें इत्तिला करें ताकि दूसरे ऐडीशन में इस की तस्हीह करली जाए।

तालिबे दुआ

मुहम्मद इब्राहीम आसी

जामिआ क़ादरिया अशरफ़या, छोटा सोनापूर, मुम्बई

Email: mdibrahimaasi@gmail.com

''समर्पण''

उस अज़ीम हस्ती के नाम

जो अल्लाह के आख़िरी रसूल हैं

जो रहमतुल लिल-आलमीन हैं

जो हर क़ौम के लिये मसीहा हैं

जिसे दुनिया मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

के नाम से जानती है।

शुक्रे खुदा

بسم اللہ الرحمن الرحیم
نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم

तमाम तारीफ़ें उस ख़ालिक़े कायनात के लिये जिस ने लफ़्ज़ कुन से पूरी कायनात की तख़्लीक़ फ़रमाई। और अपने प्यारे हबीब और आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद ﷺ को पूरी कायनात के लिये रहमत बना कर भेजा जो पूरी इन्सानियत के लिये एक अज़ीम मसीहा हैं। और हम्द है उस रब्बे करीम के लिये जिस ने इब्ने आदम के लिये कुरआने मुक़द्दस को नाज़िल फ़रमाया ताकि इस की रौशनी से हक़ व बातिल की शनाख़्त कर सकें और इस को अपने लिये मश्अले राह बना सकें। और मुख़्तलिफ़ अक़वाम के लिये कसीर तादाद में रसूलाने इज़ाम और अंबियाए किराम को मबऊस फ़रमाया ताकि अपने मअबूदे हक़ीक़ी को पहचान सकें। इन्सान की कामयाबी व कामरानी सिर्फ़ अपने हक़ीक़ी रब की इताअत व फ़रमां बरदारी ही में है। वह दोनों जहान में कामयाब हुए जिन्होंने अल्लाह व रसूल की इताअत व फ़रमां बरदारी की, और वह ख़सारे में होंगे जो अहकामे इलाही और फ़रमाने नबी ﷺ से मुन्हरिफ़ हुए। अदावत रब्बे अज़्ज़ व जल्ल और अदावते रसूल ﷺ गुमराही का बाइस है।

प्रार्थना शब्द

पीरे तरीक़त, रहबरे शरीअत, क़ाइदे क़ौम व मिल्लत,
ख़ानदाने अहले बैत के चश्म व चराग़,
शहज़ादए हुज़ूर शहीदे राहे मदीना,

हज़रत अल्लामा मौलाना अश्शाह सय्यद मुईनुद्दीन अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी

(सज्जादा नशीन आस्ताना आलिया किछौछा मुक़द्दसा व सदर ऑल इंडिया सुन्नी जमीअतुल उलमा)

نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم!

मुहब्बते रसूल मदारे ईमान है, गुलामाने मुस्तफ़ा के लिये नामूसे रिसालत का तहफ़्फ़ुज़ फ़र्ज़े ऐन है। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमह वर्रिज़वान फ़रमाते हैं

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े, जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी, वह आग लगाई है

यूं तो चौदह सौ (1400) साल से बाज़ दुशमनाने इस्लाम और गुस्ताख़ाने रसूल अलैहिस्सलातु वत्तसलीम आपकी शाने अक़दस में नाज़ेबा कलिमात कहते और लिखते रहे हैं लेकिन दौरे हाज़िर में बदनामे ज़माना लानती वसीम रिज़्वी ने जिस तरह से आक़ाए दोजहां ﷺ की बाबरकत ज़ात पर और कुरआने करीम व दीने इस्लाम पर वाहियात ख़ुराफ़ात और बकवास से पुर एतेराज़ात व इल्ज़ामात अपनी किताब ''मुहम्मद'' में लगाया है, माज़ी क़रीब और बईद में इस की कोई मिसाल नहीं मिलती।

अल्हम्दु लिल्लाह! सुम्मा अल्हम्दु लिल्लाह! इस का मुकम्मल और दन्दान शिकन जवाब इस किताब ''अज़ीम मुहम्मद'' में दिया गया है। जिस पर तमाम ही आशिक़ाने मुस्तफ़ा ﷺ क़ल्बी मुसर्रत महसूस

करते हैं कि ''अज़ीम मुहम्मद'' नामी इस किताब के ज़रिया लानती वसीम रिज़वी के मुंह पर ज़ोरदार तमांचा रसीद किया गया है।

क़ाइदे क़ौम व मिल्लत, बानी रज़ा अकेडमी, नामूसे रिसालत बोर्ड के सेक्रेट्री जनाब अलहाज मुहम्मद सईद नूरी साहब ने सुन्नी मस्जिद बिलाल में एक नशिस्त के दौरान आबदीदा होकर फ़क़ीर से कहा कि ऐसी ज़हरीली किताब का जवाब देना हम गुलामाने मुस्तफ़ा पर फ़र्ज़ है। इसके बाद एक मुकम्मल लाइहए अमल तय्यार करके जवाब देने की जिद्दो जहद शुरू की गई। फ़क़ीर ने मौलाना मुहम्मद इब्राहीम आसी (मुहतमिम जामिआ क़ादरिया अशरफ़िया, मुम्बई) से जवाब लिखने की फ़रमाइश की, आपने शब व रोज़ मेहनते शाक़्क़ा से इस को पायए तकमील तक पहुंचाया। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल उन्हें जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए। नामूसे रिसालत बोर्ड के सेक्रेट्री अलहाज मुहम्मद सईद नूरी साहब ने तहफ़्फ़ुज़ नामूसे रिसालत बोर्ड के ज़ेरे एहतमाम इस किताब की इशाअत फ़रमाई। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उन की उम्र दराज़ फ़रमाए और उन से मज़ीद दीनी काम ले। उन तमाम गुलामाने मुस्तफ़ा के लिये जिन्होंने इस किताब की तकमील के लिये जिद्दो जहद और कोशिश की, फ़क़ीर दुआगो है कि रब तबारक व तआला अपने हबीब अलैहिस्सलातु वस्सलाम के सदक़े दारैन की सआदतों से उन्हें माला माल फ़रमाए।

آمین بجاہ سید المرسلین صلے اللہ علیہ وسلم۔

दुआगो

फ़क़ीर सय्यद मुईनुद्दीन अशरफ़ अलअशरफ़ी अलजीलानी

नामूसे रिसालत के लिये सब कुछ कुरबान

क़ाइदे अहले सुन्नत, मुहाफ़िज़े नामूसे रिसालत, असीरे मुफ़्तिए आज़म,

अलहाज मुहम्मद सईद नूरी साहब क़िब्ला

(बानीए रज़ा एकेडमी व सेक्रेट्री तहफ़्फ़ुज़ नामूसे रिसालत बोर्ड मुम्बई)

आला हज़रत, मुजद्दिदे दीन व मिल्लत इमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमह वर्रिज़्वान इरशाद फ़रमाते हैं।

जान है इश्क़े मुस्तफ़ा, रोज़ फ़ुज़ूं करे ख़ुदा
जिसको हो दर्द का मज़ा, नाज़े दवा उठाए क्यूँ

एक आशिक़े रसूल के लिये तहफ़्फ़ुज़ नामूसे रिसालत ही सब कुछ है। वह हर तरह का नुक़सान बर्दाश्त कर सकता है लेकिन अपने आक़ा अलैहिस्सलातु वस्सलाम की नामूस पर ज़र्रा बराबर आंच जाए इसे कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता। कुछ माह क़ब्ल दफ़्तर रज़ा अकेडमी मुम्बई पर मेरे नाम से बज़रिया कोरियर एक किताब आई, जिस का नाम ''मुहम्मद'' है, इस किताब पर बतौर मुसन्निफ़ ''वसीम रिज़वी'' लिखा हुआ है। मज़्कूरा किताब का सरे वर्क़ ही इतना गंदा और तौहीन आमेज़ बनाया गया है कि कोई भी सच्चा मुसलमान उसे देख कर कभी चैन व सुकून से नहीं रह सकता। किताब की फ़ेहरिस्ते अनावीन भी इस क़दर तौहीन आमेज़ और गुस्ताख़ाना अंदाज़ लिये हुए है कि हर सच्चा आशिक़े रसूल ग़ैरत से मर जाना पसन्द करेगा लेकिन ऐसे तौहीन आमेज़ उन्वानात को पढ़ना और देखना पसन्द नहीं करेगा। किताब को देखने के बाद मेरी जो कैफ़ियत हुई उस को ज़बान और क़लम से बयान करने से क़ासिर हूं। मेरी आंखों ने ऐसे नाज़ेबा अल्फ़ाज़ हुज़ूरे अक़दस ﷺ की शाने अक़दस में न कभी देखा और न ही कानों ने सुना। और मैं समझता हूं कि दीने इस्लाम

की चौदह सौ साला तारीख़ में शाने रिसालत मआब ﷺ में ऐसी तौहीन आमेज़ बातें और गुस्ताख़ाना इज़हारे ख़्याल शायद ही कभी किसी ने किया हो। किताब को देखने के बाद बेसाख़्ता मेरी आंखों से आंसू जारी हो गए और मेरा दावा है कि किसी भी आशिक़े रसूल ﷺ की आंखें इन इबारतों को देखने के बाद पुर-सुकून नहीं रह सकतीं। दिल में ख़्याल आया कि इस का जवाब देना फ़र्ज़े ऐन है ताकि दुनिया के सामने ज़ाते मुस्तफ़ा ﷺ पर लगाए गए इल्ज़ामात और बुहतान तराशियां काई की तरह छंट जाएं। मैंने बिला ताख़ीर पीरे तरीक़त, रहबरे शरीअत, जानशीन मख़दूम सिमनान, साहिबे सज्जादा, हज़रत अल्लामा मौलाना अश्शाह सय्यद मुईनुद्दीन अशरफ़ अशरफ़ी अलजीलानी (सदर ऑल इंडिया सुन्नी जमीअतुल उलमा व मर्कज़ी सदर तहफ़्फ़ुज़ नामूसे रिसालत बोर्ड) से मुलाक़ात करके तबादला ख़्याल किया और यह तय पाया कि फ़ौरी तौर पर तहफ़्फ़ुज़ नामूसे रिसालत बोर्ड के ज़ेरे एहतमाम इस किताब का जवाब मंज़रे आम पर लाया जाना चाहिये ताकि अपनों को इत्मिनान हो सके और ग़ैरों के मुंह पर तमांचा लग सके। इस काम को पायए तकमील तक पहुंचाने के लिये उलमाए किराम के साथ मीटिंग की गई, लाइहए अमल तय्यार किया गया और मुईनुल मशाइख़ की सरपरस्ती में इसे पायए तकमील तक पहुंचाने का इरादा ज़ाहिर किया गया।

लानती वसीम रिज़वी की बकवास और हफ़्वात पर जवाबी किताब की तय्यारी शुरू हुई। जामिआ क़ादरिया अशरफ़िया के मुंतज़िमे आला मौलाना मुहम्मद इब्राहीम आसी साहब को यह ज़िम्मादारी सौंपी गई। बहुत ही मुख़्तसर वक़्त में उन्होंने इस किताब की तकमील की और लानती वसीम रिज़वी की किताब ''मुहम्मद'' का मुदल्लल और दन्दान शिकन जवाब ''अज़ीम मुहम्मद'' के नाम से तय्यार हो गया।

अल्हम्दु लिल्लाह! किताब ऐसी जामेअ और मुदल्लल तय्यार हुई है कि आइन्दा क़ुरआन, इस्लाम और ज़ाते मुस्तफ़ा ﷺ पर

इल्ज़ामात लगाने से पहले कोई भी बद-बख़्त सौ बार सोचने पर मजबूर होगा। इन शाअल्लाह हमारी कोशिश होगी कि इस किताब को मुताद्दिद ज़बानों में शाए कराया जाए ताकि अपनों और ग़ैरों के हर फ़र्द तक इस जवाबी किताब को पहुंचाया जा सके।

हज़रत मौलाना मुहम्मद इब्राहीम आसी साहब ने मुस्तनद हवालों और तारीख़ी शवाहिद की बुनियाद पर इस किताब के ज़रिया झूटे मुसन्निफ़ लानती वसीम रिज़वी के ताबूत में ऐसी कील ठोंकी है कि इन शाअल्लाह आइन्दा कोई भी जरी व बद-बख़्त इस तरह की नाज़ेबा हरकत करने से पहले सोचने पर मजबूर होगा जबकि इस जवाबी किताब के ज़रिया अहले ईमान की आंखों को ठंडक पहुंचेगी।

दुआ है कि अल्लाह तबारक व तआला इस काम को पायए तकमील तक पहुंचाने और किसी भी तरह से इस की इशाअत में तआवुन करने वालों को दोनों जहान की भलाई और दुनिया व आख़िरत की सुर्ख़-रूई अता फ़रमाए। आमीन बिजाहिन्नबीय्यिल अमीनिल करीम ﷺ

तालिबे दुआ

असीरे मुफ़्तिए आज़म, **मुहम्मद सईद नूरी**

रज़ा एकेडमी मुम्बई

सलाहकार परिषद और उत्तर की तय्यारी

बदनामे ज़माना लानती वसीम रिज़वी ने एक किताब बनाम ''मुहम्मद'' लिखी जिस में नामूसे रिसालत, अज़्मते कुरआन, अज़्मते इस्लाम और उम्महातुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुन की ज़वाते बा-बरकात की शान में नाज़ेबा कलिमात और जुम्ले लिखे। किताब जब रज़ा अकेडमी के दफ़्तर पहुंची और बानीए रज़ा अकेडमी अलहाज मुहम्मद सईद नूरी साहब ने देखा तो ख़ून के आंसू रोते हुए पीरे तरीक़त, रहबरे शरीअत, क़ाइदे अहले सुन्नत, हज़रत अल्लामा मौलाना अलहाज सय्यद मुईनुद्दीन अशरफ़ अशरफ़ी अलजीलानी, सदर औल इंडिया सुन्नी जमीअतुल उलमा को इत्तिला देते हुए इस जानिब मुस्तहकम क़दम उठाने का मशवरा दिया। किताब के जवाब का लाइहए अमल तय्यार करने के लिये तहफ़्फ़ुज़ नामूसे रिसालत बोर्ड के ज़ेरे एहतमाम जामिआ क़ादरिया अशरफ़या सुन्नी मस्जिद बिलाल मुम्बई में एक मजलिसे मुशावरत मुईनुल मशाइख़ की सरपरस्ती और अलहाज सईद नूरी की सदारत में रखी गई जिस में अहले इल्म और दानिशवरों ने शिरकत की, बिलख़ुसूस जनाब रेहान धोराजी वाला साहब, जनाब असलम लाखा साहब, एडोकेट सुल्तान साहब, जनाब आरिफ़ रिज़वी साहब (केलको) जनाब इरफ़ान शेख़ साहब, मौलाना अनवार बग़दादी साहब, मौलाना अब्बास रिज़वी साहब (तर्जमान रज़ा अकेडमी), मौलाना ख़लीलुर्रहमान नूरी साहब, मौलाना ज़फ़रुद्दीन रिज़वी साहब, मौलाना मुहम्मद उमर साहब (नाज़िमे आला जामिआ क़ादरिया अशरफ़िया), मुफ़्ती शाह नवाज़ साहब, मौलाना हाफ़िज़ व क़ारी मुश्ताक़ अहमद तेग़ी साहब, मौलाना अब्दुर्रहीम अशरफ़ी साहब और दीगर उलमा शामिल हुए और यह तय पाया कि तहफ़्फ़ुज़ नामूसे रिसालत बोर्ड के ज़ेरे एहतमाम इस काम को बहुत जल्द पायए

तकमील तक पहुंचाया जाए। उलमा और दानिशवरों की निगरानी में यह ज़िम्मादारी मुझे सोंपी गई, किताब हिन्दी में थी बहुत मुख़्तसर वक़्त में किताब का उर्दू ज़बान में तर्जमा किया गया। उलमा और अहले फ़िक्र की टीम जवाब देने के लिये कमर बस्ता हो गई। सबसे पहली तवज्जुह किताब ''मुहम्मद'' में दिये गए हवालों की तरफ़ की गई। हवालों के लिये किताबों की फ़ेहरिस्त तय्यार की गई और किताब की फ़राहमी के लिये जनाब इरफ़ान शेख़ साहब ने काफ़ी तग व दौ की, हिन्द और बैरूने हिन्द से तमाम किताबें इकट्ठी की गईं। इसके बाद उस में दिये गए हवालों को तलाश करके इकट्ठा किया गया, फिर उसके हवालों के ज़रिये ही घेर कर उस का मुहासिबा किया गया।

हवाला-जात में जो ख़्यानत की गई है उस को बयान करना मुश्किल है। इतनी ज़्यादा ख़्यानत की गई है कि इस को तहरीफ़ व तरमीम कहना भी दुरुस्त न होगा। यूं कहिये कि हवाला दिया गया है और मफ़हूम ग़ायब! हवाले की इबारतें ऐसी हैं जैसे आटे में नमक।

मैंने 18 दिसम्बर 2021 ई० को इस काम का आग़ाज़ किया, सबसे पहले लानती वसीम रिज़वी की किताब ''मुहम्मद'' का बग़ौर मुतालिआ किया। एक एक सतर को इन्हेमाक के साथ पढ़ कर एतेराज़ात व इल्ज़ामात का जाइज़ा लिया, किताब में दिये गए तमाम हवालों को अलग करके एक फ़ेहरिस्त बनाई। जिन किताबों का हवाला दिया गया था उन में से हवालों को अलग करके दोनों हवालों का तक़ाबुली मुतालिआ करके उस का तज्ज़िया किया गया। हवालों में जो ख़्यानत की गई थी उस की निशान दही की गई। इस में 15, दिन लग गए, इसके बाद तस्नीफ़ी काम शुरू हुआ। अल्हम्दुलिल्लाह 28 जनवरी 2022 ई० 24, जमादिल उख़रा 1443 हिजरी को 36, किताबों से माख़ूज़ 230 हवालों से यह किताब ''अज़ीम मुहम्मद'' मुकम्मल हो गई।

अहक़ाक़े हक़ और अबताले बातिल साबित हो गया। लानती

वसीम रिज़वी की मन घड़त और झूटी दीवार जो उस ने हक़ के सामने खड़ी करने की कोशिश की थी ज़मीन बोस हो गई। उसके चेहरे से मखोटा उतर गया। किताब ''अज़ीम मुहम्मद'' ﷺ के मुतालिआ के बाद कोई भी इन्साफ़ पसन्द इन्सान उसे नंगा कर सकता है। और कोई भी उसके एतेराज़ात और इल्ज़ामात का आसानी से जवाब दे सकता है। उसे यह समझने में देर नहीं लगेगी कि वह कितना बड़ा ख़ाइन, मक्कार, झूटा और जाहिल है।

बिलखुसूस मैं शुक्र गुज़ार हूं पैकरे इल्म व फ़न उस्ताज़ुल असातिज़ा वल-उलमा ख़ैरुल अज़्किया हज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद अहमद मिस्बाही साहब क़िब्ला (अल-जामिअतुल अशरफ़िया मुबारकपूर) का जिन्होंने किताब ''अज़ीम मुहम्मद'' का बिल-इस्तेअयाब मुतालिआ किया और तस्हीह फ़रमाई। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल उन का साया उलमाए किराम पर तादेर क़ायम रखे।

और दुआ है कि अल्लाह तबारक व तआला उन हज़रात को अज्रे अज़ीम अता फ़रमाए जिन्होंने इस काम को पायए तकमील तक पहुंचाने के लिये कोशिशें कीं, रब्बे क़दीर हम सब को नामूसे रिसालत और अज़मते इस्लाम पर मर मिटने का जज़्बा अता फ़रमाए। आमीन बिजाहि सय्यिदिल मुर्सलीन सलवातुल्लाहि अलैहि व आलिही व अस्हाबिही अज्मईन।

तालिबे दुआ

मुहम्मद इब्राहीम आसी

जामिआ क़ादरिया अशरफ़िया, मुम्बई

Email: mdibrahimaasi@gmail.com

بسم الله الرحمن الرحيم

वाणी प्रशंसा

मुसन्निफ़ कुतुबे कसीरा, माहिरे उलूम व फुनून
हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती **अब्दुल मजीद ख़ान मिस्बाही**
ख़तीब व इमाम मदीना मस्जिद, जोहू गली, अंधेरी, मुम्बई

क़ारईन किराम व अरबाबे इल्म व दानिश!

रूही फ़िदाहु हुज़ूर पुरनूर सय्यदना मुहम्मद अरबी ﷺ की उम्मते इजाबत में चन्द माह से बड़ी बेचैनी और इज़्तिराब पाया जा रहा है। अकनाफ़े आलम में जहां सय्यदना मुहम्मद अरबी ﷺ का ज़िक्रे जमील मिंबर व मेहराब, महफ़िले मीलाद और किताब व ख़िताब से मुसलसल बुलन्द हो रहा है, वहीं चन्द शर-पसन्द अनासिर तौहीने रिसालत के शरारे भी बरसाए जा रहे हैं।

इन में सबसे ज़्यादा शोरिश और बाग़ियाना तेवर बदनामे ज़माना लानती वसीम रिज़वी लखनवी का है। उस ने एक किताब लिखी जिस का नाम "मुहम्मद" रखा, उस में अल्लाह और उसके हबीब ﷺ के मन्सूबों पर दिल खोल कर इल्ज़ाम तराशी की, तरह तरह के बुहतान व इत्तिहाम, दरोग़ बयानी और दजल व फ़रेब से अपनी नापाक व गंदी ज़हनियत के मुताबिक़ भड़ास निकाली, क़ुरआनी आयात व अहादीस, सीरत व तवारीख़ और फ़ुक़हाए उम्मत की कुतुबे फ़िक़्ह में इन्तिहाई बद-दयानती और ख़्यानतें कीं, जिसे एक इन्साफ़ और सुलह पसन्द इन्सान पढ़ने के बाद लानती वसीम रिज़वी की हज़ारहा मलामत करेगा।

इस सिलसिले में इन्फ़िरादी व इज्तिमाई, तहरीकी व तंज़ीमी, क़लमी व इशाअती, तदरीसी व तहक़ीक़ी इदारे अपने अपने ईमानी व

रूहानी दुख दर्द के साथ मैदान में आए। और यह ज़ाहिर किया कि अब सब्र का पैमाना लब्रेज़ हो चुका है। पहले इस का इल्मी व तहक़ीक़ी जवाब लिखा जाना चाहिये, ताकि इसे सुप्रीम कोर्ट में पेश करके यह बावर कराया जाए कि यह किताब ''मुहम्मद'' निहायत मुफ़्सिद और झूट का पुलंदा है। फिर इसके बाद मज़ीद कारवाई की जाए। इस का जवाब लिखने के लिये ऐसे शख़्स की ज़रूरत महसूस की गई, जो उलूमे दीनिया के साथ असरी उलूम वग़ैरा से भी ताल्लुक़ रखता हो और ज़माने के हालात का भी आरिफ़ हो, तस्नीफ़ व तहक़ीक़ से भी ख़ासा शग़फ़ रखता हो। आलिमे दीन तो बहुत हैं अल्लाह तआला जिससे चाहे अपने दीन की ख़िदमत और सय्यदना मुहम्मद अरबी ﷺ के नामूस व अज़मत की हिफ़ाज़त व सियानत का काम ले ले। चुनान्चे इस काम के लिये हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद इब्राहीम आसी (उस्ताज़ जामिआ क़ादरिया अशरफ़िया) का नाम नेक फ़ाल साबित हुआ। इन के बारे में मेरी राय यह है कि यह ''फ़ितरी अदीब व मुहक़्क़िक़'' हैं।

हर उस्ताज़ के न जाने कितने शागिर्द होते हैं। इसी तरह हर शेख़ के न जाने कितने मुरीद होते हैं। लेकिन कुछ शागिर्द और मुरीद अपनी सआदत और नियाज़-मंदी से अपने उस्ताज़ और शेख़ के नज़्दीक ज़्यादा अज़ीज़ और महबूब हो जाते हैं। ऐसे ही मेरे अज़ीज़ शागिर्द हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद इब्राहीम आसी ज़ैद मज्दहु का हाल है। मैं अपने तलामिज़ा में उन पर फ़ख़्र करता हूं। चांदी के इवज़ अहम शख़्सियात के वज़न की मिसालें तो बहुत मिलती हैं, मगर मेरे पास अगर हीरे जवाहर होते तो मैं उन्हें इस से तोल देता। लानती वसीम रिज़वी की किताब ''मुहम्मद'' पढ़ने के बाद एक आम आदमी अफ़सोस करता रह जाएगा कि इस शख़्स ने क़ुरआनी आयात भी पेश कीं, अहादीस व तवारीख़ और फ़िक़्ह व सीरत की किताबों की इबारतें बहवाला नक़्ल कीं। फिर आख़िर क्या वजह है कि वह

इस वक़्त दुनिया का सब से बड़ा बदनाम, गुमराह व गुमरा-गर आदमी है?

इस दुनिया में रहने बसने वाले सारे इन्सानों से गुज़ारिश करूंगा कि अपने माथे की आंखों से लानती वसीम रिज़वी की किताब ''मुहम्मद'' का जवाब ''अज़ीम मुहम्मद'' की एक एक सतर का मुतालिआ करें तो आप पर रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो जाएगा कि लानती वसीम रिज़वी ने जो अय्यारी व मक्कारी, झूट और फ़रेब का सहारा लेकर जो अपने तईं जो शीश महल तय्यार किया था। अल्लामा आसी ने उसे दलाइल के मूसल दान में रख कर कूट कूट कर रेज़ा रेज़ा करके रख दिया है। इस्लाम और बानिए इस्लाम पर इल्ज़ामात लगाने की पादाश में उसे नंगा भी कर दिया, उसके एक एक जुम्ले का निहायत मुदल्लल और मस्कत जवाब दिया है।

सरज़मीने हिन्द पर जब किसी बातिल व मुफ़्सिद ने क़ुरआन, इस्लाम, पैग़म्बरे इस्लाम और क़वानीने इस्लामी के साथ खिलवाड़ करने की कोशिश की है तो उलमाए अहले सुन्नत ने अपने क़लम के ज़रिया हमेशा के लिये उन्हें लाजवाब करके ख़ामोश कर दिया है। यक़ीनन अल्लामा आसी ज़ैद मज्दहु ने तारीख़ के उन्हीं जियालों में अपना नाम रक़म करवा लिया है। ''अज़ीम मुहम्मद'' के मुतालिआ के बाद अगर ज़र्रा बराबर भी लानती वसीम रिज़वी के अन्दर ग़ैरत होगी तो वह नदामत के आंसुओं में ग़र्क़ हो जाएगा। और फिर कुछ लिखने की ताब न ला सकेगा।

इस किताब का मैंने बिल-इस्तेआब मुतालिआ किया। तख़रीब कार का हक़ व सदाक़त के जल्व में बड़ी दयानतदारी के साथ जवाब दिया गया है। इबारत निहायत ही शुस्ता और सलीस है, लेकिन मुफ़्सिद से मुवाख़िज़ा के लिये आहनी ज़ंजीर है। क़ारी के ज़हन में बात आबे शीरीं की तरह उतरती चली जाती है। मौसूफ़ ने जमाअत की तरफ़ से फ़र्ज़े किफ़ाया अदा कर दिया है।

अल्लामा आसी साहब फ़ितरी अदीब व मुहक़्क़िक़, माहिरे उलूम व फ़ुनून, उस्ताज़ व मुदर्रिस और बावक़ार मुफ़्ती हैं। इल्मुल फ़राइज़ में तो अपना सानी नहीं रखते। हालाते हाज़िरा के नब्बाज़ ख़तीब व मुक़र्रिर (जिनके ख़ुतबात चन्द सालों में बीस एडीशन में तबअ होकर उलमा व तलबा में मक़बूलियत की सुरय्या पर पहुंच चुके हैं) बर्रे सग़ीर के मुशहूर व मारूफ़ क़लम कार व मुसन्निफ़, तहरीकाते दीनी व इल्मी के मोतमद और बा-असर मुन्तज़िम हैं। ذلك فضل الله يوتيه من يشاء۔

फ़क़ीर ग़ुफ़िर-लहुल मजीद अपनी और पूरी जमाअत की तरफ़ से हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद इब्राहीम आसी ज़ैद मज्दहु को कलामे तहसीन व आफ़रीन के साथ ढेरों मुबारक बाद पेश करता है। साथ ही क़ाबिले मुबारक बाद हैं पीरे तरीक़त हज़रत मौलाना सय्यद मुईन अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी साहब किछौछवी (सदर ऑल इंडिया सुन्नी जमीअतुल उलमा) और क़ाइदे अहले सुन्नत, अलहाज मुहम्मद सईद नूरी साहब (बानी रज़ा अकेडमी) जिनकी ईमा पर यह किताब मुअर्रिज़े वुजूद में आई। अल्लाह तआला इस ख़िदमत के सिला में उन्हें दारैन की नेअमतें, बरकतें, सआदतें अता फ़रमाए। आमीन
وصلی اللہ تعالیٰ علیٰ خیر خلقہ سیدنا محمد وآلہ واصحابہ اجمعین۔

अब्दुल मजीद ख़ान अलमिस्बाही

28, *जमादिल आख़िरह,* 1443 *हिजरी/* 1 *फ़रवरी* 2022 *ई०*

प्रस्तावना

तौहीने रिसालत, फ़ितनए इर्तिदाद और मुसलमानों की ज़िम्मादारियां

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इन्सानों की हिदायत व रहनुमाई के लिये अंबिया व रुसुल का सिलसिला दराज़ रखा, जिन्होंने दुनिया में तशरीफ़ आवरी के बाद अपनी पाक तीनत तबियत से अल्लाह तआला की शरीअत की तालीम देकर भटकी हुई इन्सानियत को शैताने लईन के मक्र व फ़रेब से बचाया और ख़ुदाए वहदहू लाशरीक की वहदानियत की तरफ़ माइल किया। इन नफ़ूसे क़ुद्सिया की आमद का सिलसिला हज़रत आदम अलैस्सलातु वसल्लाम से लेकर आख़िरी नबी, रहमतुल लिल-आलमीन, ख़ातमुन्नबीय्यीन, महबूबे रब्बुल आलमीन, मुस्तफ़ा जाने रहमत, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ तक जारी रहा और फिर आप ﷺ की ख़ातमियत पर सिक्का मुरत्तब करते हुए अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त ने अपने मुक़द्दस कलाम, क़ुरआने मजीद में साफ़ साफ़ इरशाद फ़रमा दिया कि

तर्जमाः "मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं, हां! अल्लाह के रसूल हैं और सब नबियों में पिछले और अल्लाह सब कुछ जानता है।" (सूरए अहज़ाब, आयतः 40)

इसी तरह रसूले अकरम ﷺ ने भी अपनी हदीसे मुबारका में वाज़ेह इरशाद फ़रमाया कि اَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّيْنَ لَا نَبِيَّ بَعْدِی۔

तर्जमाः "मैं आख़िरी नबी हूं, मेरे बाद कोई नबी नहीं।"

इन वाज़ेह इरशादात के बाद भी दुनिया में बाज़ बदबख़्त मुसलमान नुमा इन्सान ऐसे भी पैदा होते रहे जिन पर शैतान लईन ने अपना क़ब्ज़ा जमाया और वह गुमराही के ऐसे औंधे गढ़े में जा पड़े कि झूटे मुद्दइयाने नुबुव्वत की चालों में आ गए और फ़ितनए

इर्तिदाद का शिकार बन गए। हालांकि कुराने करीम ने और अहादीसे रसूल ﷺ ने आने वाले ज़माने के इन फ़ितनों से उम्मते मुहम्मदिया ﷺ को क़दम क़दम पर आगाही भी दी और चौकन्ना भी किया मगर जिन के नसीबों में हिदायत नहीं वह गुमराही व इर्तिदाद के घटा टोप अंधेरों में भटक ही पड़े। यह कुरान तो पढ़ते रहे मगर कुरान उन के हलक़ से नीचे नहीं उतरा, यह अहादीसे रसूल ﷺ की रोशन व मुनव्वर वादियों की सैर तो करते रहे मगर अंधेरों ने उन का पीछा नहीं छोड़ा, फिर किसी ने नुबुव्वत का झूटा दावा किया तो किसी ने उन झूटों की पैरवी की और अपनी दुनिया व आख़िरत को बरबाद कर लिया। बाज़ ऐसे भी गुज़रे और गुज़रते रहेंगे जिन्होंने अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की शाने अक़दस में तौहीन की या तौहीन करने वालों की हिमायत की तो किसी ने महबूबे ख़ुदा ﷺ की शान व अज़मत का इन्कार किया जिन की सरकोबी हर दौर में अहले ईमान करते रहे और अज़मते अंबिया व मुर्सलीन की सच्चाईयों को नीज़ कुरान व सुन्नत और इस्लामी अहकामात को दुनिया के सामने रोज़े रौशन की तरह ज़ाहिर करते रहे।

अपने नबी पैग़म्बरे इस्लाम, जनाबे मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ की अज़मत व शान से खिलवाड़ करने वालों का तआकुब करके उन्हें कैफ़रे किरदार तक पहुंचाने वाले ऐसे मुजाहिदीने इस्लाम की तवील फ़ेहरिस्त है जिन्होंने अपने दिलों में जागुज़ीं, अपने नबी ﷺ की मुहब्बत व उल्फ़त का ऐसा इज़हार किया कि अपनी जान, अपना माल, अपनी आल व औलाद और अपना घर बार सब कुछ अज़मत व नामूसे रिसालत ﷺ की हिफ़ाज़त व सियानत में कुर्बान कर दिया और या तो ख़ुद सुर्ख़रू हुए या गुस्ताख़ों को उन के अंजाम तक पहुंचाया। मेरे पीर व मुर्शिद, हुज़ूर ताजुश्शरीअह ने ऐसे ही ईमानी जज़्बात की तर्जमानी करते हुए अपने नअतिया दीवान ‘‘सफ़ीनए बख़्शिश’’ मे यूं रक़म तराज़ हैं

नबी से जो हो बेगाना उसे दिल से जुदा कर दें
पिद्र, मादर, ब्रादर, माल व जां उन पर फ़िदा कर दें

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इन्सानी फ़ितरत में जज़्बात व एहसासात को वदीअत फ़रमाया है। इन्ही जज़्बात व एहसासात में जोश व ख़रोश, मुहब्बत व उल्फ़त और ग़ैरत व हमियत जैसे मस्बत जज़्बात भी हैं तो नफ़रत व अदावत और कीना व हसद जैसे मन्फ़ी जज़्बात भी। इन्सानी समाज में जब कभी मन्फ़ी जज़्बात ने सर उभारा और इन्फ़िरादी या इज्तिमाई एहसासात को ठेस पहुंचाने की कोशिश की गई तो ऐसे मवाक़े पर रद्दे-अमल के तौर पर इन्तिशार, बेचैनी, बग़ावत और बदले की कैफ़ियात का उभरना फ़ितरी अमल है। जब भी कभी किसी इन्सान के प्यारे, महबूब फ़र्द या अज़ीज़ अज़ जान शख़्सियात या फिर मुक़द्दस मज़हबी शख़्सियात पर तौहीन आमेज़ गुफ़्तगू या अहानत आमेज़ तर्ज़े अमल इख़्तियार किया जाता है तो उन्हें जानने मानने और उन की मुहब्बत में अपना सब कुछ कुर्बान कर देने वालों पर बिजली गिरना, उन का बेचैन होना और बतौरे रद्दे-अमल मुख़्तलिफ़ ज़रूरी इक़दामात पर अमल पैरा होना फ़ितरी तक़ाज़ा है।

क़ुराने मुक़द्दस में अल्लाह अज़्ज़ व जलल इरशाद फ़रमाता हैः

तर्जमाः "और इज़्ज़त तो अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों ही के लिये है मगर मुनाफ़िक़ों को ख़बर नहीं।" (सूरए मुनाफ़िक़ून, आयतः 8)

मज़हबे इस्लाम ने तो अपने नबी ﷺ की मुहब्बत को ही ईमान की जान क़रार दिया है। चुनान्चे हदीसों में आता है कि जब रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ़्त किया गया कि ईमान किस चीज़ का नाम है तो हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि ईमान तुम्हारे नबी की मुहब्बत का नाम है और फ़ितरते इन्सानी का तक़ाज़ा है कि वह जिससे मुहब्बत करता है उस की ज़ात या सिफ़ात में अदना सी तौहीन भी बर्दाश्त नहीं कर सकता। इसी लिये जब जितेंद्र त्यागी उर्फ़ लानती वसीम रिज़वी ने अल्लाह के हबीब, मुसलमानों की जाने

ईमान, मुस्तफ़ा जाने रहमत की शाने अक्दस में मुंह भर भर कर तौहीन आमेज़ बातें किताबी शक्ल में शाए की तो हर साहिबे ईमान का कलेजा छलनी होता गया, जिस ने भी उस लानती की गंदी, गुस्ताख़ाना इबारात पर नज़र डाली वह ख़ून के आसू रोने पर मजबूर हुआ। ऐसी ऐसी तौहीन आमेज़ बातें उस लानती त्यागी उर्फ़ लानती वसीम रिज़वी ने तहरीर की हैं कि जिस का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता। मुसलमानों के मज़हबी जज़्बात को सख़्त मजरूह करने वाली इस किताब का जवाब देना इसलिये भी ज़रूरी था कि भोले भाले मुसलमानों को इल्हाद व बेदीनी से बचाया जा सके, तो वहीं ग़ैर मुस्लिमों तक इस्लाम व शरीअत के साफ़ शफ़्फ़ाफ़ चेहरे को पेश भी किया जा सके।

ईमान ऐसी ही मताए बेबहा है कि जिस की हिलावत व चाश्नी को एक मर्तबा खुश क़िस्मत अहले ईमान महसूस कर लें तो फिर उस की बक़ा व दवाम की ख़ातिर हर मंज़िल से गुज़रने को हमेशा तय्यार नज़र आते हैं। वक़्त और हालात के मुताबिक़ तग़य्युर पज़ीर अक़दार के तक़ाज़ों के मुताबिक़ वह अपने नबी की शान व अज़मत के तहफ़्फ़ुज़ व बक़ा को क़ायम रखने की हर मुम्किन कोशिश करते रहते हैं। इस्लामी हुकूमतों में क़ाज़ीए इस्लाम और बादशाहे इस्लाम ने तौहीने रिसालत करने वालों पर जहां अहकामे इस्लाम नाफ़िज़ फ़रमाया तो वहीं बादशाही निज़ामे हुकूमत में मुसलमान बादशाहों ने उलमाए उम्मत से रहनुमाई हासिल करते हुए ऐसे बदबख़्तों को अपने अंजाम तक पहुंचाया। समझ में यह आया कि अमारत और सल्तनत के ज़ेरे साया अहले इश्क़ व ईमान अपनी हिकमत व तदब्बुर से काम लेते रहे और शाने उलूहियत या शाने रिसालत के गुस्ताख़ों को उन की औक़ात बता कर अस्ल इस्लामी तालीमात को उजागर करते रहे।

मौजूदा हालात में, जम्हूरियत और जम्हूरी निज़ामे हुकूमत के ज़ेरे साया मुसलमानों को हिकमत व तदब्बुर इख़्तियार करना अज़-हद

ज़रूरी है। जम्हूरी निज़ामे हुकूमत ने जहां ग़ैरों को आज़ादी इज़हारे राय के उन्वान से ढील दी है तो वहीं इसी उन्वान के तहत इस्लाम दुशमन ताक़तों ने इस्लाम, मुसलमान और मुक़द्दस इस्लामी शख़्सियात पर अंगुश्त नुमाई करने वालों की पुश्त पनाही भी की है। इस निज़ामे हुकूमत ने अहले ईमान व अहले इस्लाम के हाथों को रोके रखा है, यहां अपने मज़हबी फ़राइज़ व वाजिबात पर मुकम्मल तौर से अमल आवरी की इजाज़त तो है लेकिन बाज़ मुआमलात में जम्हूरी अक़दार को इस्लामी उसूलों पर फ़ौक़ियत भी है।

ऐसे पुर-फ़ितन हालात में उलमाए उम्मत और ज़ोमाए मिल्लत पर दोहरी ज़िम्मेदारियां आयद हो जाती हैं कि वह इस्लामी अहकामात की सरबुलन्दी की ख़ातिर अवामे मुस्लिमीन की रहनुमाई भी फ़रमाएं और शातिमाने रिसालत को मौजूदा हुकूमत व इक़्तिदार की अदालत में बतौरे मुज्रिम पेश करके हुसूले इन्साफ़ के तक़ाज़ों को पूरा भी फ़रमाएं। यही वजह है कि शाने उलूहियत या शाने रिसालत या मुक़द्दस मज़हबी शख़्सियात की शान में तौहीन व गुस्ताख़ी करने वालों के ख़िलाफ़ इस्लामी अहकामात के मुताबिक़ हद मुतअय्यन करने की बजाए अपने मुल्क के दस्तूरे असासी की बुनियादों पर मुसलमान आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं। ऐसी ही कोशिशों का एक हिस्सा लानती वसीम रिज़वी उर्फ़ जितेंद्र त्यागी की अहानत आमेज़ किताब ''मुहम्मद'' का तहरीरी जवाब देना भी है। लानती वसीम रिज़वी उर्फ़ त्यागी की इल्ज़ामी किताब मुदल्लल व मुस्कत जवाब अपनी किताब के ज़रिया मौलाना इब्राहीम आसी साहब (मुहतमिम जामिआ क़ादरिया अशरफ़िया, मुम्बई) ने देने की कामयाब कोशिश की है। ''अज़ीम मुहम्मद'' नाम से इस जवाबी किताब को तरतीब देने में मौलाना इब्राहीम आसी साहब और उन की टीम ने जिस मेहनत और जांफ़शानी से काम किया है वह न सिर्फ़ क़ाबिले तारीफ़ है बल्कि क़ाबिले तक़लीद भी। जानशीने मख़दूमे सिमनां, साहिबे सज्जादा, मुईनुल मशाइख़, हज़रत

सय्यद मुईन मियां अशरफ़ी अलजीलानी साहब क़िब्ला और क़ाइदे मिल्लत, असीरे मुफ़्तिए आज़म, अलहाज मुहम्मद सईद नूरी साहब क़िब्ला की ईमा पर पूरी दुनिया के मुसलमानों की जानिब से अदा किये गए इस फ़र्ज़े किफ़ाया की अदायगी पर राक़िमुल हुरूफ़ रज़वी सलीम शहज़ाद और अज़ीज़ दोस्त डॉक्टर रईस अहमद रज़वी की जानिब से पुर-ख़ुलूस मुबारकबाद पेश है। क़ुराने करीम की सूरए तौबा आयत २४ में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इरशाद फ़रमाता हैः

तर्जमाः "तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुंबा और तुम्हारी कमाई के माल और वह सौदा जिस के नुक़सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसन्द के मकान, यह चीज़ें अल्लाह और उसके रसूल और उस की राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हों तो रास्ता देखो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए और अल्लाह फ़ासिक़ों को राह नहीं देता।" जिस की तफ़सीर बयान करते हुए सदरुल अफ़ाज़िल, मौलाना सय्यद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमह अपनी तफ़सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में फ़रमाते हैं, इस आयत से साबित हुआ कि दीन के महफ़ूज़ रखने के लिये दुनिया की मशक़्क़त बर्दाश्त करना मुसलमान पर लाज़िम है और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत के मुक़ाबिल दुनियावी तअल्लुक़ात कुछ क़ाबिले इल्तिफ़ात नहीं और ख़ुदा और रसूल की मुहब्बत ईमान की दलील है।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में दुआ है कि मौला तआला हज़रत मौलाना मुहम्मद इब्राहीम आसी साहब और उन की पूरी टीम के उलमा, साहिबाने सरवत अफ़राद और मुआविनीन की इस ख़िदमते जलीला को अपनी बारगाह में शर्फ़े क़बूलियत बख़्शे और उन सब के लिये इस काम को दारैन की असादतों के हुसूल का ज़रिया बनाए। आमीन बिजाहिन्नबीय्यिल अमीनिल करीम ﷺ

रज़वी सलीम शहज़ाद, *एम ए, बी एड*
E-Mail: rsshahzad@gmail.com

झूटा लेखक, झूटी पुस्तक, अस्लियत के आईने में

बदनामे ज़माना लानती वसीम रिज़वी ने एक ज़हरीली किताब लिख कर जो नफ़रत की आग फैलाई है माज़ी क़रीब व बईद में इस की मिसाल नहीं मिलती। यह किताब मज्मूअतुल अकाज़ीब यानी झूट की गठरी है और मुसन्निफ़ मुअल्लिमुल काज़िबीन यानी झूटों का गुरू है। इस की किताब "मुहम्मद" का मुकम्मल मुफ़स्सल, मदल्लल और दन्दान शिकन जवाब ज़ेरे नज़र किताब "अज़ीम मुहम्मद" ﷺ में मौजूद है। लानती वसीम रिज़वी की किताब "मुहम्मद" का मुतालिआ करने के बाद अंदाज़ा होता है कि वह आदाबे तस्नीफ़ व तालीफ़ से बेख़बर है। यह भी वाज़ेह हो जाता है कि हवाले के तअल्लुक़ से भी उस को कोई जानकारी नहीं है। किताब में कुछ बातें उस ने अपनी तरफ़ से कहीं और किसी बात को हवाले से लिखा, जिस किताब का हवाला दिया उस का नाम और बाब और जिल्द नंबर भी दे दिया। इसके अलावा किताब के आख़िर में उस ने हवाला-जात की एक तवील फ़ेहरिस्त जो 350, हवाला-जात पर मुश्तमल है दर्ज की है, जिस में किताबों, अख़बारों और वेब साइटों का नाम दर्ज है जबकि पूरी किताब के अन्दर सिर्फ़ 37, किताबें, 3, अख़बार, 2, मैगज़ीन और 2, वेब साइट का हवाला दिया गया है। अब लानती वसीम रिज़वी से सवाल है कि उस ने जो 350, हवाला-जात लिखे हैं वह किताब में कहां हैं? उस का झूट यहीं से साबित हो जाता है कि वह कितना बड़ा मक्कार और फ़रेबी है। 26, किताबों और 5, रसाइल व जराइद से 121, हवाले लेकर उस को 350, हवाले बताता है। किसी भी ज़बान का अदीब, मुअल्लिफ़, मुसन्निफ़ उस को झूटा और मक्कार क़रार देगा। वह शायद यह बावर कराना चाहता और बताना चाहता है कि मैंने अपनी किताब को साढ़े तीन सौ हवालों से लिखा है और

अपने आप को बड़ा मुहक़्क़िक़, मुफ़क्किर और स्कॉलर साबित करना चाहता है। हक़ीक़त यह है कि उसके मबलग़े इल्म का रक़्बा हाथ की हथेली भर भी नहीं है। वह उस मेंडक की तरह है जो कुंएं का एक चक्कर लगा कर समझता है कि मैंने पूरी दुनिया का चक्कर लगा लिया है। हक़ीक़त पर मबनी बात यह है कि उस की किताब में सिर्फ़ 31, किताबों और जराइद व रसाइल के हवाले मौजूद हैं। क़ारईन के सामने उन हवालों की तफ़सील भी पेश करता हूं ताकि लानती वसीम रिज़वी के सफ़ेद झूट के दफ़्तर से पर्दा उठ जाए। उस ने अपनी पूरी किताब में जो हवाला दिया है उस की तफ़सील भी मुलाहिज़ा करें।

संदर्भ सारांश

कुरआन से 70, सहीह बुख़ारी से 14, सहीह मुस्लिम से 4, तब्क़ात इब्ने सअद से 2, अबू दाऊद से 2, इब्ने इस्हाक़ से 3, अल-बैहक़ी से 1, इब्ने हिशाम से 2, किताबुल अग़ानी से 1, फ़ुतूहुल बलदान से 1, इब्ने ख़लक़ान से 1, मोअता इमाम मालिक से 1, तबरी से 1, मुस्नदे अहमद से 1, तिर्मिज़ी से 2, तफ़सीरे जलालैन से 1, इहयाउल उलूम से 1, तफ़सीर इब्ने कसीर से 1, दुर्रे मन्सूर से 1, अलइस्तिख़राज से 1, अद्दुर्रुल मुख़्तार से 1, फ़तावा क़ाज़ी ख़ान से 1, ऐसरुत्तफ़ासीर से 1, सत्यार्थ प्रकाश से 1, अंग्रेज़ी मज़मून से 1, तैमूर लंग की खुद नविश्त से 1, पेंगबिल टेराज़्म इंडेस्क से 1, जर्मन अख़बार वेल्ट एम सोनटेग से 1, दि एच ऑफ़ सिक्रेट टेरर से 1, टाइम्ज़ मैगज़ीन से 1, अब क़ारईन खुद फ़ैसला करें। मज़्कूरा बाला हवालों के अलावा और कोई हवाला नहीं है तो साढ़े तीन सौ हवाले कहां से हो गए। जब कोई दानिशवर साहिबे क़लम उसके हवालों का जाइज़ा

लेगा तो उस की जहालत और हिमाक़त पर मातम करेगा। लानती वसीम रिज़वी झूटे हवाले दर्ज करके यह साबित करना चाहता है कि मेरा मुतालिआ कितना वसीअ है। हक़ीक़त तो यह है उस की हैसियत पानी के बुलबुले से ज़्यादा नहीं है।

वह अपनी किताब के आग़ाज़ में ''एलान'' उन्वान के तहत लिखता है ''मुहम्मद'' पुस्तक में लिखे गए लेख एवं चित्रण के माध्यम से किसी भी धर्म विशेष या धर्म प्रचारक को निशाना बना कर आहत करने या धार्मिक उन्वाद पैदा करने या धार्मिक आस्था को लेकर किसी धर्म विशेष को चोट पहुंचने की लेखक की कोई मंशा नहीं है।

ज़हरीला बयान

अपने क़ौल में लानती वसीम रिज़वी कितना बड़ा झूटा है, चन्द मिसालें पेश करता हूं क़ारईन को अंदाज़ा हो जाएगा कि उस की तहरीरों से इन्साफ़ पसन्द लोगों के दिलों को तकलीफ़ होगी कि नहीं।

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब में लिखता है।

(1) मोहम्मद एक लुटेरे गिरोह के सरदार थे। *(स: 9)* मआज़ल्लाह

(2) ख़दीजा को यौन संबंध के लिये एक नौजवान लड़का मिल गया था। *(स: 24)* मआज़ल्लाह

(3) ख़दीजा मुहम्मद से शारीरिक संबंध बनाने के लिये हर वक़्त तैयार रहती थी। *(स: 25)* मआज़ल्लाह

(4) मोहम्मद नाम के पैगंबर हिंसा, लूटपाट बलात्कार क़त्लेआम पर भरोसा करते थे। *(स: 34)* मआज़ल्लाह

(5) मोहम्मद इतने शातिर थे कि उन्होंने लूटपाट, ख़ौफ़, महिलाओं के साथ यौन शोषण और हत्याओं को भलाई से कैसे अल्लाह के नाम पर जोड़ दिया। *(स: 52)* मआज़ल्लाह

(6) मोहम्मद ने इस्लाम जंगो में मिली मालिक नीमच के नाम पर

ख़ूबसूरत औरतों के साथ भरपूर सेक्स किया। *(स:* 59) मआज़ल्लाह

(7) उनको आयशा के साथ सेक्स करने में मज़ा भी बहुत आता था। *(स:* 61*)* मआज़ल्लाह

(8) मरते समय मोहम्मद ने कलिमा नहीं पढ़ा था। *(स:* 62) मआज़ल्लाह

(9) मुहम्मद की मौत सेक्स की अधिकता से हुई थी। *(स:* 62) मआज़ल्लाह

(10) जब नबी मरे तो उनका शरीर अकड़ गया था। *(स:* 63*)* मआज़ल्लाह

(11) मुहम्मद ने कई घिनौने अपराध किए शायद सबसे नीच और शर्मनाक 9 वर्षीय बच्ची के साथ उनके यौन उत्पीड़न का रिश्ता था। *(स:* 69) मआज़ल्लाह

(12) वे ऊंट के मूत्र भी पीते हैं क्योंकि मुहम्मद ने इसे पिया। *(स:* 71) मआज़ल्लाह

(13) मुहम्मद को उनकी मासूम बच्ची का बलात्कार करना पड़ा। *(स:* 73) *मआज़ल्लाह*

(14) मुहम्मद साहब अपनी वासना पूर्ति के लिये कुरआन का सहारा लेकर ऐसी ही स्त्रियों से सहवास करने को वैध बना देते थे। *(स:* 74) मआज़ल्लाह

(15) मुहम्मद साहब ने कुरान की आड़ में अपनी हवस पूरी की थी। *(स:* 75) मआज़ल्लाह

(16) मुहम्मद साहब की हवस की शिकार होने वाली पहली औरत का नाम ''ख़ौला बिन्त हकीम अल सलमिया'' था। *(स:* 75) मआज़ल्लाह

(17) वास्तव में मुहम्मद साहब उम्मे हानी के साथ व्यभिचार करने गए थे। *(स:* 77) मआज़ल्लाह

(18) कुरान की इसी तालीम के कारण हर जगह व्यभिचार और

बलात्कार हो रहे हैं। *(स:* 80) मआज़ल्लाह

*(*19*)* मुहम्मद की प्रिय पत्नी आयशा बेशर्म होकर मुहम्मद के साथियों को सेक्स की तालीम देती थी। *(स:* 81) मआज़ल्लाह

*(*20*)* इब्ने उमर ने कहा है कि रसूल ने इस आयत में औरत के साथ उसकी गुदा में सम्भोग करने की इजाज़त दे दी है। और गुदा मैथुन (Sodomy) को हलाल बताया है। *(स:* 85) मआज़ल्लाह

*(*21*)* अपनी माँ से शादी करना, या ऐसी औरत से शादी करना जो पहले से विवाहिता हो। इस्लाम के अनुसार हलाल है। *(स:* 87) मआज़ल्लाह

*(*22*)* दुष्कर्म करना और कराना यही इस्लाम है। *(स:* 91) मआज़ल्लाह

*(*23*)* मुसलमान जितना बड़ा होगा उतना ही दुश्चरित्र होगा। *(स:* 91)

*(*24*)* इस्लाम जो मोहम्मद के द्वारा लाया गया वह एक मानसिक रूप से बीमार काल्पनिक सोच पर आधारित एक घमंडी अय्याश व्यक्ति की उपज है *(स:* 102) मआज़ल्लाह

*(*25*)* जब मोहम्मद ने सेना को अर्धनग्न देखा तो उसकी नियत ख़राब हो गई। *(स:* 103) मआज़ल्लाह

*(*26*)* मोहम्मद अय्याशी के दौरान नशे का भी इस्तेमाल करते थे। *(स:* 107*)* मआज़ल्लाह

*(*27*)* मोहम्मद दिमाग़ी बीमार और औरतों के साथ यौन संबंध कर मज़ा लेने वाले व्यक्ति थे। *(स:* 107) मआज़ल्लाह

*(*28*)* वास्तविक बात तो ये है कि मोहम्मद का कोई चरित्र ही नहीं था। *(स:* 128) मआज़ल्लाह

*(*29*)* मोहम्मद को बचपन में मिर्गी का दौरे पड़ते थे। *(स:* 128) मआज़ल्लाह

*(*30*)* दुनिया का सबसे पहला इस्लामी आतंकवादी मोहम्मद ही तो

था। *(स:* 128) मअाज़ल्लाह

(31) एक बात और है कि मोहम्मद देखने में बदसूरत थे। *(स:* 129) मआज़ल्लाह

(32) औरतें उस से नफ़रत करती थीं। शायद इसी लिये वो औरतों का बलात्कार करते थे। *(स:* 129) मआज़ल्लाह

(33) मुसलमान भले मुहम्मद को रसूल और महापुरुष कहते रहें, लेकिन वास्तव में वह एक अत्याचारी और बलात्कारी व्यक्ति था। *(स:* 131) मआज़ल्लाह

(34) मुहम्मद कुदरती मौत नहीं मरा, उसकी ज़हर देकर हत्या की गयी। *(स:* 131) मआज़ल्लाह

(34) ''किनाना बिन अल रबी'' की हत्या करा दी थी और उसकी पत्नी साफ़िया के साथ जबरन शादी करली थी। *(स:* 132) मआज़ल्लाह

(36) लगातार बच्चे पैदा करने से उनकी औरतों की योनि इतनी ढीली हो जाती है कि उस में उनका पति अपना सिर घुसा कर अन्दर देख सकता है। *(स:* 137) मआज़ल्लाह

(37) इस्लाम सच्चा धर्म तो छोड़िये, धर्म कहने के योग्य भी नहीं है। *(स:* 139) मआज़ल्लाह

(38) यहां तक सेक्स के मामले में भी मुहम्मद साहब को सुपर-मैन ऑफ़ सेक्स Superman of Sex तक कह देते हैं। *(स:* 140) मआज़ल्लाह

(39) रसूल लगातार रात-दिन अपनी औरतों के साथ सम्भोग करते रहते थे। *(स:* 140) मआज़ल्लाह

(40) मुहम्मद साहब शिथिल स्तनों वाली अपनी औरतों से ऊब गए होंगे। *(स:* 141) मआज़ल्लाह

(41) मुहम्मद और उनके अय्याश साथियों की नज़र हवाज़िन क़बीले की औरतों पर थी। *(स:* 143) मआज़ल्लाह

(42) वास्तव में औरतें पकड़ कर उनसे सामूहिक बलात्कार की मुहम्मद की एक कुत्सित योजना थी। (स: 146) मआज़ल्लाह

क़ारईन! लानती वसीम रिज़वी के क़लम से निकले हुए मज़्कूरा बाला ज़हरीले जुम्लों से आप अंदाज़ा लगाएं कि एक एक जुम्ला दिल को किस क़दर मजरूह करने वाला है। मुसलमानों के अलावा हर इन्साफ़ पसन्द इन्सान इन्सानियत का दिल रखने वाला यह बरमला कहेगा कि यह जुम्ले इन्तिहाई नाज़ेबा और नाक़ाबिले बर्दाश्त हैं। दुनिया का कोई भी इन्साफ़ पसन्द मुन्सिफ़ और जज यही कहेगा कि ऐसे जुम्ले लिखने वाला मुज्रिम और सज़ा का मुस्तहिक़ है। ऐसा शख़्स समाज और आला मुआशरा के लिये एक नासूर है जिससे नफ़रत व अदावत की आग तो फैल सकती है मुहब्बत व उख़ुव्वत की नहीं। ऐसी किताब दो मज़ाहिब के दरमियान दराड़ डाल सकती है, अमन व शांती के माहौल को ख़राब कर सकती है।

लानती वसीम रिज़वी प्रशनों के घेरे में

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 1 पर लिखता है।

"छोटे मुसलमान बच्चों को मदरसों की शिक्षा से दूर करना होगा, क़ुरान में दी गई शिक्षा के कारण मुसलमान अपनी सफलता को आतंकवाद के हथियार से नापता है।"

मैं लानती वसीम रिज़वी से पूछना चाहता हूं कि अम्रितसर पंजाब जलियान वाला बाग़ में 13, अप्रेल 1919 ई० में हज़ारों बेक़ुसूर हिन्दुस्तानियों का क़त्ले आम हुआ, उन क़ातिलों ने किस मदरसा में तालीम हासिल की थी? उन को क़ुरआन की कौन सी तालीम दी गई थी?

30, जनवरी 1948 ई० को मोहन दास करम चन्द गांधी (गांधी जी) को दिन दहाड़े नत्थू राम गोडसे ने गोली से छलनी करके क़त्ल कर दिया, नत्थू राम गोडसे ने किस मदरसा में तालीम हासिल की?

उस ने किस कुरआन पर अमल किया था?

31, अक्तूबर 1984 ई० को हिन्दुस्तान की वज़ीरे आज़म इंद्रा गांधी पर गोलियों की बरसात करके मौत के घाट उतार दिया गया, उस क़ातिल ने किस मदरसा में तालीम हासिल की थी? किस कुरआन पर अमल किया था?

सोनिया गांधी के शौहर साबिक़ वज़ीरे आज़म राजियू गांधी को 21, मई 1991 ई० को बम से उड़ा दिया गया, उनके क़ातिल ने किस मदरसा में तालीम हासिल की थी और कुरआन किस से पढ़ा था?

नाज़ी हुकूमत की हिमायत में हिटलर ने तक़रीबन साठ लाख यहूदियों को होलोकास्ट के ज़रिये मौत की नींद सुला दिया। यह क़त्ले आम करने वालों ने किस मदरसा में तालीम हासिल की थी? कुरआन की किस तालीम से मुतास्सिर थे, क्या लानती वसीम रिज़वी के पास इस का कोई जवाब है? अगर ज़रा सी अक़्ल होती तो इस तरह की बातें नहीं करता। मुख़्तसरन यह चन्द मिसालें दी गईं वरना सैंकड़ों सफ़्हात इस पर क़लम बंद किये जा सकते हैं।

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा ५ पर लिखता है।

"ज़्यादा बीवियां होने की वजह से उन्हें कोई दूसरा हासिल न करे इसलिये उन्होंने इस्लाम में अल्लाह की जानिब से पर्दा यानी बुर्क़ा का रिवाज शुरू कर दिया।"

उस जाहिल को इतना पता होना चाहिये था कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने न सिर्फ़ अपनी बीवियों के लिये पर्दा लाज़िम क़रार दिया बल्कि क़यामत तक की मुस्लिम औरतों को पर्दा का हुक्म दिया। जाहिल लानती वसीम रिज़वी को मालूम नहीं कि पर्दा का हुक्म किन के लिये है? लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 6 पर लिखता है कि

"तारीख़ नवीसों के मुताबिक़ सिर्फ़ हिन्दुस्तान में ही इस्लाम की

तलवार से आठ करोड़ हिन्दुओं को मौत के घाट उतारा गया।''

लानती वसीम रिज़वी जैसा दरोग़-गो कौन हो सकता है। उस ने छोटी छोटी बात के लिये जो इस्लाम, कुरआन और हुजूर ﷺ के तअल्लुक़ से थी हवाले तो दिये लेकिन इतनी बड़ी बात कह रहा है कि आठ करोड़ हिन्दुओं को क़त्ल किया गया, इसके हवाले में न ही मुअर्रिख़ का नाम लिख रहा है और न ही किताब का हवाला दे रहा है। यह जो क़त्ल की बात कर रहा है तो क्या वह बता सकता है कि उस वक़्त हिन्दुस्तान की आबादी कितनी थी? हम्ला आवर कितने करोड़ की फ़ौज लेकर हम्ला आवर हुए थे कि आठ करोड़ हिन्दुओं को मार डाला। जबकि अंग्रेज़ हुक्मरान के दौर 1872 ई० में हिन्दुस्तान की आबादी सिर्फ़ बीस करोड़ इकसठ लाख थी तो उससे पहले और कम रही होगी। लानती वसीम रिज़वी का मज़्कूरा बाला जुम्ला सिर्फ़ हिन्दू भाइयों के जज़्बात को मजरूह करने और उन को मुश्तअल करने के लिये है। लानती वसीम रिज़वी अपने मक़सद में कामयाब नहीं होगा इन शाअल्लाह।

लानती वसीम रिज़वी का अरबी ज्ञान

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा नंबर 12 पर लिखता है कि

''मैंने सिर्फ़ कुरान-ए-मजीद पढ़ा था अरबी भाषा में, उसका मतलब नहीं समझा था, लेकिन कुछ महीने पहले जब मैंने कुरान-ए-मजीद के मतलब को समझना शुरू किया तो यह समझ में आया कि दुनिया में जो आतंकवाद फैला हुआ है वह शायद इसी किताब की देन है।''

लानती वसीम रिज़वी से पूछना चाहता हूं कि कुरआन को समझने के लिये कितने साल अरबी की तालीम हासिल की? क्योंकि कुरआन अरबी ज़बान में है। अरबी कुरआन का मतलब व मफ़हूम

समझने के लिये अरबी ज़बान का जानना बहुत ज़रूरी है। चन्द महीने लानती वसीम रिज़वी ने सऊदी अरब के एक होटल में नौकरी की जैसा कि उस ने अपनी किताब में ''मुसन्निफ़ का मुख़्तसर तआरुफ़'' के उन्वान में लिखा है। शायद चन्द माह वहां गुज़ारने पर वह अपने आप को अरबी का बड़ा आलिम समझने लगा। अगर ऐसा होता तो अरब का हर बकरी चराने वाला और ऊंट का रखवाला आलिम हो जाता। अब आइये क़ारईन देखते हैं कि लानती वसीम रिज़वी को क़ुरआन फ़हम, हदीस फ़हमी और तारीख़ व अरबी दानी पर कितना उबूर है।

''बिन'' और ''बिन्ते'' का अंतर

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 58 पर लिखता है। ''ज़ुबैरिया बिन अल हारिस'' ''जुवेरियह'' औरत का नाम है तो उसके लिये ''बिन'' का लफ़्ज़ कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है औरत के लिये ''बिन'' नहीं बल्कि ''बिन्ते'' इस्तेमाल होता है जिस को ''बिन'' और ''बिन्ते'' में फ़र्क़ नहीं मालूम, वह चला है क़ुरआन व अहादीस की तफ़सीर करने और उस का मतलब समझने और दूसरों को समझाने। लानती वसीम रिज़वी कितना बड़ा झूटा और मक्कार है इससे अंदाज़ा लगा सकते हैं।

आरोप बग़ैर प्रमाण के

लानती वसीम रिज़वी हुज़ूरे अकरम ﷺ के बारे में अपनी किताब के सफ़्हा 8 पर लिखता है

''ग़ुलामों के साथ लैंगिक सम्बन्ध स्थापित करना''

अपनी पूरी किताब में अग़लाम बाज़ी के ताल्लुक़ से न कोई हदीस लिखी न किसी तारीख़ी किताब और न ही किसी जरीदा व रिसाला का हवाला दिया और न ही किसी का कोई क़ौल पेश किया

है। पूरी किताब में कोई हवाला नहीं है इसके बावुजूद अग़लाम बाज़ी की निस्बत हुज़ूरे अक्दस ﷺ की तरफ़ करता है, उससे बड़ा इल्ज़ाम तराश और झूटा कौन होगा।

जबकि अग़लाम बाज़ी के बारे में अल्लाह के नबी ने लअनत फ़रमाई है।

जामेअ तिर्मिज़ी जिल्द अव्वल, सफ़्हा नंबर 597, अबवाबुर्रज़ाअ, हदीस नंबर 1165

"हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमायाः अल्लाह तआला उस की तरफ़ नज़रे रहमत से नहीं देखता जो किसी मर्द या औरत से ग़ैर फ़ितरी अमल करे।"

मुंह एक बातें दो

क़ारईन! मैं आपके सामने लानती वसीम रिज़वी की दो इबारत नक़्ल करता हूं जिससे आप को अंदाज़ा हो जाएगा कि लानती वसीम रिज़वी कितना बड़ा झूटा और दग़ाबाज़ है और मुतज़ाद बयान देता है या यूं कहिये कि जो झूटा होता है उससे मुतज़ाद बातें सादिर हो जाती हैं।

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 49 पर लिखता है कि

"कुरान कोई अल्लाह की किताब नहीं है, एक मानसिक तौर पर बीमार व्यक्ति के विचारों की उपज है।"

वह अपनी किताब के सफ़्हा 12 पर लिखता हैः

"कुरान-ए-मजीद अल्लाह की किताब नहीं है।"

फिर लानती वसीम रिज़वी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की शान बयान करते हुए अपनी किताब के सफ़्हा 93 पर लिखता हैः

''हज़रत फ़ातिमा (पवित्र महिला) का पालन पोषण स्वंय मुहम्मद की देख-रेख में घर में ही हुआ। आप का पालन पोषण उस गरिमा मय घर में हुआ जहां पर अल्लाह का संदेश आता था जहाँ पर क़ुरान उतरा।''

लानती वसीम रिज़वी की जहालत, नादानी और हिमाक़त पर जितना मातम कीजिये कम है। वह ख़ुद कहता है कि क़ुरआन आसमानी किताब नहीं है, क़ुरआन अल्लाह की किताब नहीं है। फिर वह अज़्मते फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करते हुए लिखता है।

''मगर फ़ातिमा की शान यह है उन की परवरिश उस घर में हुई जहां क़ुरआन का नुज़ूल होता था।''

अब ख़ुद बताइये कि उस शख़्स को दिमाग़ी तवाज़ुन ठीक है या नहीं? ख़ुद ही कहता है क़ुरआन अल्लाह की किताब है, फिर ख़ुद ही कहता है कि यह क़ुरआन अल्लाह की किताब नहीं। आगे तुरफ़ा तमाशा के लिये उस की दो इबारत और देख लें। अपनी किताब के सफ़्हा 4 पर लिखता है कि

''उनके दादा ने और चाचा ने उनको ज़रूरत से ज़्यादा प्यार दिया जिसके कारण वह पूरी तरह से बिगड़ गए। उन्हें न मर्यादा सिखाई गई और न ही अनुशासन का पाठ पढ़ाया गया।''

अब दूसरी इबारत क़ारईन मुलाहिज़ा फ़रमाएं वह अपनी किताब के सफ़्हा 93 पर लिखता है कि

''मोहम्मद ने अपनी पुत्री फ़ातिमा को (पवित्र महिला) को इस प्रकार प्रशिक्षित किया कि उनके अन्दर मानवता के समस्त गुण विकसित हो गए।

क़ारईन! ख़ुद इन्साफ़ फ़रमाएं जब कोई इन्सान ख़ुद बिगड़ा हुआ हो। उस में तहज़ीब व शाइस्तगी न हो और नज़्म व ज़ब्त मालूम न हो तो फिर वह किस तरह अपनी औलाद को आला तर्बियत दे

सकता है और ऐसी आला तर्बियत कि उस में तमाम ख़ुसूसियात पैदा हो जाएं। क्या इसका जवाब लानती वसीम रिज़वी के पास है, मक्र व फ़रेब करने वाले के पास झूटी बातों का कोई जवाब नहीं होता।

लानती वसीम रिज़वी हलाली या हरामी?

लानती वसीम रिज़वी की दरीदा दहनी, फ़रेब, मक्कारी और जहालत को मुलाहिज़ा कीजिये। वह अपनी पूरी किताब में कहीं लिखता है मुहम्मद की बीवी आयशा, कहीं लिखता है मुहम्मद की शादी आयशा के साथ, कहीं लिखता है अबू बकर की बेटी आयशा के साथ मुहम्मद की शादी हुई,

सफ़्हा नंबर 60 पर एक बार, सफ़्हा 61 पर 4 बार, सफ़्हा 64 पर एक बार, सफ़्हा 65 पर दो बार, सफ़्हा 3 पर तीन बार, सफ़्हा 66 पर एक बार, सफ़्हा 67 पर 3 बार, सफ़्हा 68 पर एक बार, सफ़्हा 69 पर एक बार, सफ़्हा 81 पर दो बार, सफ़्हा 87 पर एक बार, सफ़्हा 88 पर एक बार।

मज्मूई तौर पर 21 जगह वह तसलीम करता है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की बीवी हैं, इसके बावुजूद वह जाहिल हुज़ूरे अक़्दस ﷺ और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की हमबिस्तरी को ज़िना लिखता है। उस बदबख़्त की इबारत मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

वह अपनी किताब के सफ़्हा 73 पर लिखता है।

"अबू बक्र पहले से ही मुहम्मद का भक्त था। अबू बक्र की दोस्ती को जीतने के लिये मुहम्मद को उनकी मासूम बच्ची का बलात्कार करना पड़ा।"

जाहिल लानती वसीम रिज़वी को इतना मालूम नहीं कि मियां बीवी के दरमियान ज़िना यानी बलातकार नहीं होता। तमाम मज़ाहिब में अपने अपने तरीक़े से ब्याह होता है। हर मज़हब में शादी ब्याह

की अलग अलग रस्म व रिवाज है। इसी रस्म व रिवाज के दायरे में औरत और मर्द का रिश्तए अज़्दवाज में मुन्सलिक होना शादी है। इसके बाद दोनों के जिन्सी तअल्लुक़ात को हमबिस्तरी या सम्भोग कहा जाता है। रिश्तए अज्दवाज में मुन्सलिक न हो, ऐसे ही तअल्लुक़ क़ायम करे उस को अस्मत दरी, बलातकार या हराम कारी कहा जाता है।

मैं लानती वसीम रिज़वी से पूछना चाहता हूं कि उसके बाप मुहम्मद ज़की ने शादी करके अपनी बीवी से हमबिस्तरी की या नहीं? की और ज़रूर की, तभी तो लानती वसीम रिज़वी पैदा हुआ, जब मुहम्मद ज़की और उस की बीवी के दरमियान ज़िनाकारी और बलातकारी हुई तो बताया जाए कि ज़िना और बलातकारी से जो बच्चा पैदा होता है उस को समाज में हरामी कहा जाता है या नहीं? अब क़ारईन ख़ुद फ़ैसला करें कि वह हमारे क़ौल के मुताबिक़ नहीं बल्कि लानती वसीम रिज़वी के क़ौल के मुताबिक़ लानती वसीम रिज़वी हरामी हुआ या हलाली?

झूट से पर्दा हटा

एक और झूट मुलाहिज़ा करें, लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 20 पर लिखता है

“पालन पोषण के लिये मुहम्मद को रेगिस्तान में रहने वाले एक ख़ाना बदोश दंपत्ति को सौंप दिया, उस वक़्त मुहम्मद की उम्र मात्र 6 माह के थे।”

अब आइये देखते हैं कि दीगर मज़ाहिब में बच्चों को दूध पिलाने के तअल्लुक़ से क्या दस्तूर है।

दयानंद सरस्वती अपनी किताब सत्यार्थ प्रकाश सम्लास छटा में लिखता है कि

“जब बच्चा पैदा हो, छे दिन तक मां का दूध पिये, छटे दिन

औरत बाहर निकले और बच्चे को दूध पीने के लिये कोई दाई रखे।''

इस बात से मालूम हो गया कि दीगर मज़ाहिब में भी बच्चे के दूध पिलाने के लिये दाई मुक़र्रर की जाती थी।

लानती वसीम रिज़वी की बकवास के बाद अब हक़ीक़ी तारीख़ का जाइज़ा पेश करता हूं। हुज़ूरे अक़दस ﷺ की उम्र उस वक़्त छे माह नहीं थी बल्कि विलादत के चन्द रोज़ बाद ही हज़रते हलीमह सअदियह आप को अपने साथ ले गई थीं। क़ाज़ी मुहम्मद सुलेमान सलमान मन्सूरपूरी अपनी मशहूरे ज़माना किताब ''रहमतुल लिल-आलमीन'' के सफ़्हा 41 पर तहरीर करते हैं कि

''शुरफ़ाए मक्कह का दस्तूर था कि वह अपने बच्चों को जबकि वह आठ दिन के हो जाते थे दूध पिलाने वालियों के सिपुर्द करके किसी अच्छी आब व हवा के मक़ाम पर बाहर भेज दिया करते थे। इस दस्तूर के मुताबिक़ हुज़ूर ﷺ को भी हलीमह सअदियह के सिपुर्द कर दिया गया।''

इससे लानती वसीम रिज़वी का झूट ज़ाहिर हो गया।

झूट पे झूट

लानती वसीम रिज़वी एक झूटी बात अपनी किताब के सफ़्हा 25 पर लिखता है

''ख़दीजा ने मोहम्मद को समझाया कि उनके पास फ़रिश्ता आया था और उन्हें पैग़म्बर बनाने के लिये चुना गया है। उस आकृती को ख़दीजा ने जिब्रील का नाम दिया था।''

यह सरासर झूट है कि उस फ़रिश्ते का नाम जिब्रईल हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने तज्वीज़ किया था। बुख़ारी शरीफ़ में एक तवील हदीस है, मुख़्तसरन मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

बुख़ारी जिल्द अव्वल किताबुल वही, हदीस नंबर 3, सफ़्हा 95।

''जब आप पर वही आना शुरू हुई, इब्तिदाई कैफ़ियत को देख हज़रत ख़दीजा हुज़ूरे अक़दस ﷺ को लेकर अपने चचाज़ाद भाई वरक़ह बिन नोफ़िल के पास गईं और कहा ऐ मेरे चचाज़ाद भाई! अपने भतीजे मुहम्मद ﷺ की बात सुनो। आपने पूरा वाक़िआ सुनाया। इसके बाद वरक़ह बिन नोफ़िल ने कहा यह वह नामूस है जो अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम पर उतारा। काश मैं जवान होता! काश मैं ज़िन्दा रहता, जब आप की क़ौम आप को शहर बदर करेगी।''

इब्ने हिशाम, जिल्द अव्वल, बाब 41, सफ़्हा 267 पर भी बयान किया है कि

''हुज़ूर ﷺ ने जिब्रईल का तआरुफ़ हज़रत ख़दीजा से फ़रमाया। इब्ने हिशाम ने कहा कि मुझ से ऐसे शख़्स ने बयान किया कि मैं उन पर भरोसा रखता हूं कि जिब्रईल रसूले ख़ुदा ﷺ के पास आए और कहा कि ख़दीजा को उनके रब का सलाम पहुंचाएं। अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि ख़दीजा यह जिब्रईल हैं, तुम्हारे परवरदिगार का सलाम तुम्हें पहुंचा रहे हैं। हज़रत ख़दीजा ने कहा अल्लाह तो ख़ुद सलाम ही है, सब को उसी से सलामती है जिब्रईल पर भी सलाम हो।''

इससे आप अंदाज़ा लगाएं कि लानती वसीम रिज़वी कितना बड़ा झूटा है।

इस हदीस से यह साबित होता है कि वरक़ह बिन नोफ़िल ने कहा कि वह नामूस है। नामूस से मुराद फ़रिश्ता है। यह बात ज़ाहिर हो गई कि हज़रत ख़दीजा ने फ़रिश्ता का नाम नहीं दिया था। यह लानती वसीम रिज़वी का बुहतान है।

अन्यायी कौन पीड़ित कौन?

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 31 पर लिखता है कि

"मक्का में मोहम्मद या मुसलमानों पर अत्याचार का कोई प्रमाण नहीं मिलता।"

आगे लानती वसीम रिज़वी सफ़्हा 32 पर लिखता है कि

"मोहम्मद ने पीड़ित होने का ढोंग किया।"

और आगे लिखता है कि

"मुसलमानों द्वारा लिखे गए इतिहास में भी मोहम्मद के साथ अत्याचार होने का प्रमाण नहीं मिलता।"

उसके मक्र व फ़रेब और झूट को साबित करने के लिये चन्द अहादीस आपके सामने पेश करता हूं, देखें कि हुजूरे अक़दस ﷺ और मुसलमानों पर मक्का में कितना ज़ुल्म व सितम ढाया गया था।

सहीह बुख़ारी, जिल्द दोम, किताबुल मनाक़िब, सफ़्हा नंबर 446, हदीस नंबर 1033 में है

"हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप ख़ानए कअबा के साए में चादर की टेक लगाए बैठे थे, उन दिनों मुश्रिकीन की जानिब से हम पर ज़ुल्म व सितम ढाए जा रहे थे।"

सहीह बुख़ारी जिल्द दोम, किताबुल मनाक़िब, सफ़्हा 446, हदीस नंबर 1035 में है कि

"हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ सज्दे में थे और क़ुरैश के कुछ अफ़राद आपके इर्द गिर्द मौजूद थे कि उक़बह बिन अबी मुईत एक ऊंट की ओझड़ी लेकर आया और उसे आप की पुश्ते मुबारक पर रख दिया। आप बराबर सज्दे की हालत में रहे यहां तक हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा आईं और उसे आप की पुश्ते मुबारक से हटाया।"

सहीह बुख़ारी जिल्द दोम, किताबुल मनाक़िब, सफ़्हा नंबर 447, हदीस नंबर 1037 में है कि

"नबी करीम ﷺ कअबा में नमाज़ पढ़ रहे थे कि उक़बा बिन

अबी मुईत आया और उस ने आप की गर्दन में कपड़ा डाल कर पूरी ताक़त के साथ गला घोंटना शुरू कर दिया तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उसे पकड़ कर नबी करीम ﷺ से दूर किया और फ़रमाया क्या तुम ऐसे शख़्स को क़त्ल करना चाहते हो जो यह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है।''

सीरत इब्ने हिशाम जिल्द अव्वल सफ़्हा 350 पर है कि

''इब्ने इस्हाक़ ने कहा मुश्रिकों ने उन सहाबियों पर जिन्होंने इस्लाम इख़्तियार किया और रसूलुल्लाह की पैरवी करने वालों पर ज़ुल्म व सितम ढाए और हर क़बीले ने अपने क़बीले के मुसलमानों पर हम्ला कर दिया, उन्हें क़ैद करते, मारते, भूके प्यासे रखते, तपती ज़मीन पर लिटा कर तकलीफ़ें देते, बाज़ तो शदीद मुसीबतों को बर्दाश्त न कर सके।''

आगे इब्ने हिशाम लिखते हैं कि

''हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद करदा ग़ुलाम हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की हालत यह थी कि वह बनी जम्हा के एक शख़्स के परवर्दा ग़ुलाम में से थे, उन का नाम बिलाल बिन रिबाह था और वालिदा का नाम हमामह, आप बड़े पाक दिल और इस्लाम की सदाक़त के पैकर थे। जब दोपहर की गर्मी बहुत तेज़ होती तो उमय्यह बिन ख़लफ़ आप को लेकर निकलता और मक्का के पथरीले मक़ाम पर चित लिटा देता और किसी को बड़ी चट्टान लाने का हुक्म देता और वह आपके सीने पर रख दी जाती। फिर वह आपसे कहता कि तू इसी हालत में रहेगा, यहां तक कि मर जाए या फिर मुहम्मद से इन्कार करके लात व उज़्ज़ा की पूजा करे। बिलाल उस हालत में भी अहद अहद (अल्लाह एक है, अल्लाह एक है) कहते रहे।''

सीरत इब्ने हिशाम जिल्द अव्वल सफ़्हा 352 में बयान है कि

''इब्ने इस्हाक़ ने कहाः बनी मख़ज़ूम, अम्मार बिन यासिर, उनके

बाप और उन की मां को लेकर निकलते थे और यह सब के सब इस्लाम के घराने वाले थे। जब दोपहर के वक़्त गर्मी ख़ूब बढ़ जाती तो उन लोगों को मक्का की गर्म ज़मीन पर तकलीफ़ें देते थे। मुझे ख़बर मिली है कि रसूलुल्लाह ﷺ जब उनके पास से गुज़रते तो फ़रमाते ऐ यासिर के घर वालो! सब्र करो, तुम्हारे लिये जन्नत का वादा है।''

इसके अलावा बहुत सारी अहादीस और तारीख़ी वाक़िआत मुसलमानों पर ज़ुल्म व सितम के किताबों में मौजूद हैं, बतौर मिसाल चन्द पेश किये गए। ताकि लानती वसीम रिज़वी का झूट साबित हो जाए, जो यह कहता है कि मक्का में मुसलमानों पर ज़ुल्म व सितम नहीं हुआ। इतना ज़ुल्म व सितम होने के बावुजूद जब मक्का फ़तह हुआ तो आक़ाए दोजहां ﷺ ने सब को माफ़ फ़रमा दिया जबकि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश अपने अंजाम से कांप रहे थे। हुज़ूरे अकरम ﷺ की रहम दिली का सुबूत इससे ज़्यादा और क्या होगा।

छल कपट

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश और अबू जहल के ज़ुल्म व सितम पर पर्दा डालते हुए लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 29 पर लिखता है कि

''मुसलमानों पर ज़ुल्म किये गए इसको लेकर बहुत से झूटे क़िस्से सुनाए जाते हैं। सुमय्या नाम की महिला को लेकर मुसलमानों पर ज़ुल्म का एक क़िस्सा सुनाया जाता है। इब्ने साद एकमात्र इतिहासकार है जिसने कहा कि अबू जहल के हाथों सुमय्या की शहादत हुई, साद का हवाला देते हुए अल-बयहाक़ी लिखता हैः- कि अबू जहल ने सुमय्या की योनि में चाक़ू से गोद डाला था। अगर शहादत की यह घटना वाक़ई होती तो मोहम्मद की बढ़ाई लिखने वाला हर लेखक इसका ढिंढोरा पीटना और मुस्लिम लोक परंपराओं इस शहादत का

महिमामंडन किया गया होता यह एक तरह का उदाहरण है कि शुरूआत से ही मुसलमान कैसी कैसी अतिरचनाएं पेश करते रहते हैं।"

लानती वसीम रिज़वी यह कहना चाहता है कि हज़रत सुमय्यह रज़ियल्लाहु अन्हा की यह शहादत झूटी है, उन पर जुल्म नहीं हुआ था, जबकि लानती वसीम रिज़वी इब्ने सअद का हवाला देता है कि अलबैहक़ी ने इसे लिखा है। अब आइये लानती वसीम रिज़वी के झूट का पर्दा चाक करने के लिये तारीख़ की कई किताबों का हवाला पेश करता हूं।

शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी अपनी किताब मदारिजुन्नुबुव्वत जिल्द दोम सफ़्हा 63 में लिखते हैं।

"अबू जहल लईन ने अम्मार की वालिदा सुमय्यह की अंदामे निहानी में दुश्नह मार कर शहीद कर दिया, फिर उनके बाप को भी। यह इस्लाम में सबसे पहले शहीद हैं। तारीख़ इब्ने असाकिर जिल्द सोम में है कि एक मर्तबा अबू जहल ने गालियां बकते हुए हज़रत सुमय्यह रज़ियल्लाहु अन्हा की नाफ़ के नीचे इस ज़ोर से नेज़ा मारा कि वह ख़ून में लत-पत होकर गिर पड़ीं, उन्होंने इस्लाम की सबसे पहली शहीद ख़ातून होने का एज़ाज़ हासिल किया।"

इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी अपनी किताब अलअसाबह फ़ी तमीज़िस्सहाबह में, तज़्किरा सुमय्यह उम्मे अम्मार में लिखते हैं कि

"हज़रत अम्मार की वालिदा हज़रत सुमय्यह को अबू जहल ने निहायत ही वहशियाना तरीक़े से शहीद किया। चुनान्चे तारीख़े इस्लाम की यह पहली शहादत थी जो इस्तक़लाल और इस्तिक़ामत के साथ राहे ख़ुदा में वाक़े हुई।"

सीरते इब्ने हिशाम जिल्द अव्वल सफ़्हा 352 मे है कि

"इब्ने इस्हाक़ ने कहाः बनी मख़ज़ूम अम्मार बिन यासिर, उनके बाप और उन की मां को लेकर निकलते थे। यह सबके सब इस्लाम के घराने वाले थे। जब दोपहर के वक़्त गर्मी बढ़ जाती तो उन लोगों

को मक्का की गर्म ज़मीन पर तकलीफ़ें देते, अम्मार की मां को तो उन लोगों ने मार ही डाला।''

क़ारईन! आप ग़ौर करें कि बहुत सारे मुअर्रिख़ीन ने इस वाक़िआ का ज़िक्र किया। इसके बावुजूद इस का इन्कार लानती वसीम रिज़वी की जहालत और दरोग़ गोई नहीं तो और क्या है।

क़ैदीः

लानती वसीम रिज़वी का एक और झूट मुलाहिज़ा करें वह अपनी किताब के सफ़्हा 29 पर लिखता है कि

''एक हदीस कहती है कि जब उमर मुसलमान नहीं बना था तो एक दिन उस ने अपनी बहन को बंधन बना लिया।''

क़ैदी बनाना सरासर झूट है। इस पूरे वाक़िआ को सीरत इब्ने हिशाम जिल्द अव्वल सफ़्हा 378 में इस तरह लिखा है कि

''उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जब घर के नज़्दीक आए तो उन्होंने ख़ब्बाब की क़िरअत सुन ली थी। जब वह अन्दर आए तो कहा कि यह किस के गुनगुनाने की आवाज़ थी जो मैंने सुनी। बहन, बहनोई दोनों ने कहा तुम ने कुछ नहीं सुना। हज़रत उमर ने कहा क्यों नहीं? वल्लाह मैंने सुना है और मुझे ख़बर भी पहुंची है कि तुम दोनों ने मुहम्मद के दीन की पैरवी इख़्तियार कर ली है। इस पर बहन बहनोई ने कहा कि हां हम ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया है, तुम जो चाहो करो। तब हज़रत उमर ने बहन बहनोई को ज़दो कोब किया और ज़ख़्मी कर दिया। जब उमर ने अपनी बहन का ख़ून देखा तो अपने किये पर पछताए और मारने से रुक गए, बाद में हज़रत उमर इस्लाम लाए।''

इसके अलावा कहीं भी यह नहीं मिलता है हज़रत उमर ने अपनी बहन को क़ैदी बना लिया हो। लेकिन लानती वसीम रिज़वी ने जैसे क़सम खा ली हो कि बात बात पर झूट बोलूंगा और मुसलमानों पर

इल्ज़ाम लगाता रहूंगा। क़ारईन! हवाला से साबित हो गया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी बहन को क़ैदी नहीं बनाया था।

संज्ञाहीन कौन?

लानती वसीम रिज़्वी अपनी किताब के सफ़्हा 58 पर लिखता है कि

“अल्लाह के रसूल ने बनू मुस्तलिक़ पर उस वक्त हम्ले किये थे जब वह सब बेपरवाह थे और अपने पशुओं को पानी पिला रहे थे, रसूल ने उन लोगों को मार डाला और जो बच गए उन्हें क़ैदी बना लिया।”

यह बात भी सरासर झूट है। अब मैं सीरत इब्ने हिशाम के हवाले से इस वाक़िआ को पेश करता हूं।

“सीरत इब्ने हिशाम जिल्द दोम सफ़्हा 348 से यह वाक़िआ शुरू होता है और सफ़्हा 353 पर ख़त्म होता है। कहीं नहीं लिखा है कि वह ग़ाफ़िल थे, जानवरों को पानी पिला रहे थे। हुज़ूरे अक़्दस ﷺ जहां क़याम फ़रमा थे वह एक चश्मा था, जिस का नाम मरीसीअ था, जो क़ुदैद के नवाह में साहिल की तरफ़ वाक़े है, वहीं तसादुम हुआ।” लानती वसीम रिज़्वी की मक्कारी देखिये कि चश्मा का नाम सुनते ही जानवरों को पानी पिलाने का वाक़िआ अपनी तरफ़ से जोड़ दिया और वह लिखता है कि वह सब ग़ाफ़िल थे। हालांकि वह सब ग़ाफ़िल नहीं थे बल्कि मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग की तय्यारी कर रहे थे। अब मुख़्तसर वाक़िआ पेश करता हूं।

इब्ने हिशाम ने इब्ने इस्हाक़ के हवाला से लिखा है, इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि

“रसूले ख़ुदा ﷺ को ख़बर मिली कि बनी मुस्तलक़ मुसलमानों के मुक़ाबले के लिये लोगों को जमा कर रहे हैं। उन का क़ाइद हारिस बिन अबू ज़र्रार था और यह उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवेरियह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का वालिद था। आप उनके

मुक़ाबले के लिये निकले और एक चश्मा बनाम मरीसीअ पर क़याम फ़रमाया और बिल-आख़िर वहीं पर तसादुम हुआ और ख़ून-रेज़ी हुई। इसके बाद अल्लाह तआला ने बनू मुस्तलक़ को शिकस्त दी, उनके कुछ आदमी मारे गए, बाक़ी बचे मर्दों और औरतों को क़ब्ज़ा में ले लिया।''

अब लानती वसीम रिज़वी जवाब दे कि जंग की तय्यारी कौन कर रहा था? दोनों तरफ़ से तसादुम हुआ कि नहीं? फिर वह ग़ाफ़िल कैसे थे? रहा उनके माली असबाब पर क़ब्ज़ा करना, लोगों को क़ैद करना, जंग में जो फ़ातेह होता है वही उस पर क़ब्ज़ा करता है, यही जंग का दस्तूर है। अगर बनू मुस्तलक़ फ़ातेह हो जाते तो क्या मुसलमान लशकरियों को फूलों का गुलदस्ता पेश करते? लानती वसीम रिज़वी का मुतालिआ काफ़ी कमज़ोर है। माज़ी बईद, माज़ी क़रीब और ज़माना हाल की जंगों के हालात उस को मालूम नहीं। जब दो लशकरों और फ़ौजों में जंग होती है तो फ़ातेह लशकर मफ़्तूह लशकर को क़ैद कर लेता है। फ़ातेह मुल्क मफ़्तूह मुल्क को अपने तसर्रुफ़ में ले लेता है। क्या लानती वसीम रिज़वी को मालूम नहीं कि अंग्रेज़ों ने हिन्दुस्तान पर क़ब्ज़ा करके तक़रीबन दो सौ साल तक हुकूमत की और हिन्दुस्तानियों पर अपना क़ानून नाफ़िज़ कर दिया।

लानती वसीम रिज़वी की बकवासः

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 58 पर लिखता है कि

''जुबैरिया एक ख़ूबसूरत युवा महिला थी, मोहम्मद के आदमियों ने उसके पति की हत्या कर दी। उसके बाद जुबैरिया को सेक्स गुलाम बना के ले आया गया और उसे मुसलमान बनाने पर मजबूर किया गया।''

क़ारईन! यह लानती वसीम रिज़वी की बकवास है। हक़ीक़त को जानने के लिये सीरत इब्ने हिशाम से मिन व अन वाक़िआ तहरीर

कर रहा हूं।

सीरत इब्ने हिशाम जिल्द दोम सफ़्हा 351 पर है कि "इब्ने हिशाम ने कहा, जब आप ग़ज़वए मुस्तलक़ से वापस आ रहे थे और साथ जुवेरियह बिन्ते हारिस भी थीं और आप लशकर के इन्तिज़ाम में मस्रूफ़ थे तो आपने जुवेरियह को एक अन्सारी के पास बतौर वदीअत रख दिया और उन्हें हिफ़ाज़त से रखने का हुक्म दिया और आप मदीना आ गए। अब हारिस बिन अबू ज़र्रार अपनी बेटी का फ़िदया लेकर आया। यह जब अक़ीक़ पहुंचा तो उस ने अपने उन ऊंटों पर नज़र डाली जो फ़िदया के लिये लाया था। उन में से दो ऊंटों पर उसे लालच आई, उस ने उन्हें अक़ीक़ की एक घाटी में छुपा दिया। फिर रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया और कहा ऐ मुहम्मद! तुम मेरी बेटी को ले आए हो, यह उस का फ़िदया है। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया और वह दो ऊंट कहां हैं जिन्हें तुम ने अक़ीक़ की फुलां घाटी मे छुपा दिया है। हारिस यह सुनते ही बोलाः

اشهد ان لا اله الا الله وانك محمد رسول الله فوالله
ما اطلع على ذالك الا الله

मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और यह कि आप मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। ख़ुदा की क़सम! इस मुआमिले में अल्लाह के सिवा कोई और नहीं जानता था। पस हारिस, उसके दो बेटों और उस की क़ौम के कुछ लोगों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और वह दोनों ऊंट आदमी भेज कर मंगवाए गए और उन की बेटी जुवेरियह वापस कर दी गई, यह भी इस्लाम ले आईं। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने उनके वालिद को प्यामे निकाह दिया। उन्होंने जुवेरियह का निकाह कर दिया और चार सौ दिरहम महर मुक़र्रर हो गया।"

सीरत इबने हिशाम में हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के हवाले से इब्ने हिशाम लिखते हैं कि

''हुज़ूरे अक़दस ﷺ के जुवेरियह को अपनी ज़ौजियत में लेने से लोगों ने बनू मुस्तलक़ के सौ क़ैदियों को आज़ाद कर दिया जो बनू मुस्तलक़ के ख़ानदान से थे। मेरी नज़र में ऐसी कोई औरत नहीं जो अपनी क़ौम के लिये इतनी बाइसे बरकत साबित हुई हो यानी जिस की वजह से सौ क़ैदी आज़ाद हो गए हों।''

अब इन्साफ़ पसन्द फ़ैसला करें कि लानती वसीम रिज़वी झूटा है या नहीं? क्या जुवेरियह जबरन मुसलमान बनाई गईं? क्या जुवेरियह को बांदी बना कर जिन्सी तअल्लुक़ क़ायम किया गया? यह सब बातें लानती वसीम रिज़वी की गढ़ी हुई हैं।

लानती वसीम रिज़वी की गंदी मानसिकता

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 61 पर लिखता है कि

''उनको आयशा के साथ सेक्स करने में मजा भी आता था।''

यह बात सरासर झूट है, इस की हक़ीक़त और असलियत कुछ भी नहीं। इसलिये उस ने कोई किताब का हवाला भी नहीं दिया है। अपनी तरफ़ से गढ़ दिया है। हुज़ूरे अक़दस ﷺ के नज़्दीक सब बीवियां यकसां थीं। इसलिये हुज़ूर ﷺ सब के लिये बारियां मुक़र्रर करते थे चाहे वह कम उम्र की हों, या ज़्यादा उम्र की। आइये इस सुबूत के लिये हदीस पेश करता हूं।

अबू दाऊद किताबुन निकाह जिल्द दोम, सफ़्हा 140, हदीस नंबर 367

''हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूले ख़ुदा ﷺ इन्साफ़ से बारियां मुक़र्रर फ़रमाते थे।''

अबू दाऊद जिल्द दोम, किताबुन निकाह, सफ़्हा नंबर 141, हदीस नंबर 368 में है कि

''उरवह से रिवायत है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमायाः ऐ भांजे! रसूलुल्लाह ﷺ हम में से एक को दूसरे पर

तरजीह नहीं देते थे। हमारे पास रहने की बारियों में आप हर ज़ौजा के पास तशरीफ़ ले जाते लेकिन उसे हाथ न लगाते यहां तक कि उस के पास पहुंच जाते जिस की बारी होती और रात उसी के पास गुज़ारते।''

इस हदीस से यह साबित हो गया कि हुज़ूर صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم कितने इन्साफ़ पसन्द थे कि शब बाशी में भी बारियां मुक़र्रर कर दी थीं। किसी पर किसी को तरजीह नहीं देते थे। इससे साबित हो गया कि लानती वसीम रिज़वी की बात झूट पर मबनी है।

झूटी बातें:

लानती वसीम रिज़वी किताब के सफ़्हा 62 पर लिखता है कि

''मुहम्मद की मौत सेक्स की अधिकता से हुई थी।''

मआज़ल्लाह सौ बार मआज़ल्लाह! वह हवाला के तौर पर इब्ने हिशाम का ज़िक्र करता है।

इब्ने हिशाम ने हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के मर्ज़ और विसाल का ज़िक्र 20 सफ़्हात पर किया है लेकिन कहीं भी यह ज़िक्र नहीं है कि मआज़ल्लाह हुज़ूर صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم का विसाल कसरते मुजामिअत से हुआ। यह बिल्कुल झूट है। इन्साफ़ पसन्द ख़ुद इब्ने हिशाम का मुतालिआ करें और देखें कि लानती वसीम रिज़वी कितना बड़ा झूटा है।

सीरते इब्ने हिशाम जिल्द दोम, सफ़्हा 789 में है कि

''हज़रत आयशा रद़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के सर का दर्द बढ़ गया। उस वक़्त आप बारी बारी से अपनी बीवियों के पास रहते थे। यहां तक कि आप की हालत ज़्यादा ख़राब हुई तो आप हज़रत मैमूना रद़ियल्लाहु अन्हा के घर में थे। आपने तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात को बुलाया और उन से इजाज़त चाही कि वह मेरे घर में अलालत का वक़्त गुज़ारें और अज़्वाजे मुतह्हरात ने इजाज़त दे दी।''

जो बात किताब में न हो उस का हवाला देना, और उस झूटी बात को किताब और साहिबे किताब की तरफ़ मन्सूब करना कितनी बेबाकी और ज़्यादती है, जो बात इब्ने हिशाम ने लिखा ही नहीं उन की तरफ़ मन्सूब करना हर इन्साफ़ पसन्द इस को ज़ालिमाना हरकत और झूटा क़रार देगा। ऐसा लगता है कि झूट और फ़रेब लानती वसीम रिज़वी की फ़ितरत में शामिल है।

मूत्र पीने वाला कौन?

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 71 पर लिखता है

''वे ऊंट के मूत्र भी पीते हैं, क्योंकि मुहम्मद ने इसे पिया।''

लानती वसीम रिज़वी झूटी बात करने में बहुत माहिर है। वह कहता है कि मुसलमान पेशाब पीते हैं। यह बात न किसी तारीख़ की किताब में है और न हदीस में और न क़ुरआन में, न किसी सीरत की किताब में है और न ही उस ने कोई हवाला दिया। मुसलमान तो पेशाब को नजिस और नापाक समझता है। कपड़े पर लग जाए तो फ़ौरन धोता है। उस को धोए बग़ैर नमाज़ नहीं होती लेकिन यह बात बताने की ज़रूरत नहीं है कि एक क़ौम गाय के पेशाब को पवित्र और पाक समझती है, उस को पीने की तरग़ीब देती है, उसके इस्तेमाल में हज़ारहा फ़ायदा बताती है। मैं नाम नहीं ले रहा हूं। अगर लानती वसीम रिज़वी को अक़्ल और समझ होगी तो वह समझ जाएगा कि मैं किस की बात कर रहा हूं। पेशाब के बारे में कुछ बोलने से पहले लानती वसीम रिज़वी को दूसरे मज़हब की किताबों का भी मुतालिआ करना चाहिये थे।

पेशाब के तअल्लुक़ से मनु स्मृती, अध्याय 11, श्लोक 212 में है कि

''गऊ मूत्र (गाय का पेशाब) गोबर, दूध, घी और पानी इन सब को मिला कर पिये और दूसरे दिन उपवास रखे। यह ''सन्तापन

करछर" कहा जाता है, और जब ऊपर कही हुई चीज़ों को एक एक दिन में एक एक चीज़ को भोजन करे और सातवें दिन उपवास करे यह "सहा सान्त पनछर" कहा जाता है।"

अब ख़ुद लानती वसीम रिज़्वी बताए कि किस मज़हब में पेशाब पीना दुरुस्त है। मुझे तो हैरत इस बात पर है कि वह कहता है मआज़ल्लाह "मुहम्मद ने पिया।" अफ़सोस सद अफ़सोस! उस की बुहतान तराशी पर कहीं से कोई सुबूत नहीं है कि मआज़ल्लाह हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने पेशाब पिया हो, यह सरासर झूट है। हदीस से पता चलता है कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने बतौरे इलाज कुछ लोगों के लिये कहा।

सहीह बुख़ारी जिल्द सोम, किताबुत तिब सफ़्हा 254, हदीस नंबर 646

"क़तादह ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि कुछ लोगों को मदीना की आब व हवा रास न आई तो नबी करीम ﷺ ने उन्हें हुक्म दिया कि उस चरवाहे के पास चले जाएं जो आपने ऊंटों के लिये मुक़र्रर फ़रमाया है। वहां ऊंटों का दूध और पेशाब पियें, वह वहां ऊंटों का दूध और पेशाब पीते रहे यहां तक कि वह तन्दुरुस्त हो गए।"

यह वाक़िआ सीरत इब्ने हिशाम जिल्द दोम, सफ़्हा 786 पर भी दर्ज हैं

लानती वसीम रिज़्वी यह बताए कि हुज़ूरे अकरम ﷺ पर पेशाब पीने का इल्ज़ाम झूट है कि नहीं? हर इन्साफ़ पसन्द इन्सान कहेगा कि यह झूट है। लानती वसीम रिज़्वी मरते दम तक कोई ऐसी हदीस नहीं दिखा सकता, और ना ही ऐसी कोई तारीख़ी किताब ही दिखा सकता कि जिस में हुज़ूर ﷺ के पेशाब पीने का ज़िक्र हो।

लानती वसीम रिज़्वी की निगाह में गांधी जी अहमक़ः

लानती वसीम रिज़्वी अपनी किताब के सफ़्हा 71 पर लिखता है

कि

“महातमा गांधी ने अपनी पत्नी से शादी की, जब दोनों ही दस साल के थे। इस तरह के विवाहों का उद्देश्य युगल को एक साथ बढ़ने, सामंजस्य और एक ख़ास बंधन में बांधना था। यह एक पुरानी मूर्खतापूर्ण विश्वास था।”

लानती वसीम रिज़वी यह कहना चाहता है कि महातमा गांधी ने दस साल की उम्र में शादी करके अहमक़ाना अक़ीदा पर अमल किया और यह बात ज़ाहिर है कि जो अहमक़ाना अक़ीदा पर अमल करेगा वह अहमक़ और बेवक़ूफ़ होगा। गांधी जी के मां बाप और सास ससुर इस अहमक़ाना अक़ीदे पर राज़ी हुए। क्या वह भी बेवक़ूफ़ और अहमक़ थे? लानती वसीम रिज़वी के मुताबिक़ वह अहमक़ थे।

डाक्टर मुहम्मद अहमद नईमी अपनी किताब “इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ” जिल्द दोम सफ़्हा 544 पर स्मृती के हवाले से लिखते हैं कि

“आठ साल की लड़की की शादी सबसे बेहतर है। दस साल से पहले लड़की की शादी न करने वाले मां बाप और भाई नर्क में जाते हैं।”

लानती वसीम रिज़वी ख़ुद बताए कि स्मृती में जो लिखा है उस पर अक़ीदा रखने वाला अहमक़ और बेवक़ूफ़ है या नहीं? इस पर तफ़सीली गुफ़्तगू और दीगर मज़ाहिब के हवाले इन शाअल्लाह हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी की बहस में पेश करूंगा।

बदसूरत कौन?

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 129 पर लिखता है कि

“एक बात और है कि मोहम्मद देखने में बदसूरत थे हदीसों की माने तो।”

मआज़ल्लाह सुम्मा मआज़ल्लाह! इससे बड़ा झूटा शायद ही कोई होगा। हदीस की बात करता है मगर हवाला नहीं देता, इसलिये कि हदीस में ऐसा है ही नहीं। हुज़ूरे अक़दस ﷺ कितने ख़ूबसूरत हसीन व जमील थे इस पर सैकड़ों अहादीस पेश की जा सकती हैं। बतौरे सुबूत चन्द अहादीस पेश करता हूं ताकि लानती वसीम रिज़वी का झूट साबित हो जाए।

सहीह बुख़ारी जिल्द दोम, किताबुल अंबिया, सफ़्हा 341, हदीस नंबर 763

''हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ म्याना क़द थे। मैंने आप को सुर्ख़ हुल्ले में मल्बूस देखा और हरगिज़ किसी को आपसे ज़्यादा हसीन व जमील नहीं देखा।''

बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम, सफ़्हा 341, हदीस नंबर 764 किताबुल अंबिया

''हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा गया कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ का चेहरए अनवर क्या तल्वार की तरह चमकदार था? आपने फ़रमाया नहीं, बल्कि चांद की तरह चमकता था।''

जामेअ तिर्मिज़ी जिल्द दोम, अबवाबुल मनाक़िब, सफ़्हा 683, 684 हदीस नंबर 1582

''हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैंने रसूले अकरम ﷺ से ज़्यादा हसीन कोई चीज़ नहीं देखी, गोया आपके चेहरे पर सूरज तैर रहा हो।''

अरब के मशहूर शाइर हस्सान बिन साबित लिखते हैं कि

واحسن منك لم ترقط عيني   واجمل منك لم تلد النساء

तर्जमाः या रसूलल्लाह! आपसे ज़्यादा हसीन मेरी आंखों ने नहीं देखा। आप से ज़्यादा ख़ूबसूरत किसी औरत ने किसी को जना ही नहीं है।

अब क़ारईन ख़ुद फ़ैसला करें कि मज़्कूरा बाला अहादीस से यह साबित होता है या नहीं कि मेरे नबी करीम ﷺ निहायत हसीन व जमील थे और लानती वसीम रिज़्वी निहायत ही ज़लील और झूटा है।

आरोप तराशीः

लानती वसीम रिज़्वी अपनी किताब के सफ्हा 129 पर लिखता है

''जिस व्यक्ति ने उसकी तस्वीर बनाई, मुहम्मद ने उसे देश निकाला दे दिया।''

यह बात भी झूट पर मबनी है।

सीरत इब्ने इस्हाक़, सीरत इब्ने हिशाम, सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम वग़ैरा में कहीं नहीं लिखा है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने तस्वीर कशी करने वाले को मुल्क बदर किया हो। लानती वसीम रिज़्वी का यह इल्ज़ाम झूट पर मबनी है। तस्वीर कशी के तअल्लुक़ से प्यारे आक़ा ﷺ ने क्या फ़रमाया है, हदीस मुलाहिज़ा करें।

सहीह बुख़ारी जिल्द सोम, सफ़्हा ३३३, किताबुल लिबास, हदीस नंबर 903

''हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैंने रसूले ख़ुदा ﷺ को फ़रमाते हुए सुना कि जो शख़्स दुनिया में तस्वीर बनाएगा, क़यामत के रोज़ उसे मजबूर किया जाएगा कि उस में जान डाले लेकिन वह नहीं डाल सकेगा।''

तस्वीर कशी के तअल्लुक़ से एक और हदीस मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

सहीह बुख़ारी जिल्द सोम, सफ़्हा 332, किताबुल लिबास, हदीस नंबर 899।

''हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर के एक जानिब सेहन में पर्दा लटक रहा था, हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने उन से फ़रमाया कि इसे हटा दो

क्योंकि इस पर्दे की तस्वीरें नमाज़ में मेरे सामने होती हैं।''

इसके अलावा बहुत सारी अहादीस तस्वीर कशी की मुमानिअत पर मिलती हैं लेकिन कोई ऐसी हदीस नहीं मिलती कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने तस्वीर कशी करने वाले को मुल्क बदर किया हो। यह लानती वसीम रिज़वी की बुहतान तराशी है।

बुतों को क्यों तोड़ाः

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 130 पर लिखता है

''मोहम्मद ने मक्का विजय के बाद काबा में मूर्तियों को क्यों तोड़ा?''

यह तो मैं बाद में जवाब दूंगा कि बुतों को क्यों तोड़ा। मैं लानती वसीम रिज़वी से पूछता हूं कि सबसे पहले अम्र बिन लुहयि से पूछो कि मुल्के शाम से लाकर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तामीर कर्दा ख़ानए कअबा में हज़ारों साल के बाद बुत क्यों रखा? क्या लानती वसीम रिज़वी के पास इस का जवाब है? ख़ानए कअबा की तामीर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के साथ फ़रमाई। तामीरे कअबा के तअल्लुक़ से एक हदीस मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

सहीह बुख़ारी, जिल्द अव्वल, सफ़्हा 591 किताबुल मनासिक में है।

''हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा रिवायत करती हैंः रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारी क़ौम का ज़माना जाहिलियत के क़रीब न होता तो कअबा को अज़ सरे नौ तामीर करने में जो हिस्सा अलग किया गया है उस को उस में शामिल करने को कहता और उस की कुर्सी ज़मीन के बराबर कर देता, उस में एक दरवाज़ा पूरब जानिब और एक पच्छिम जानिब बनवाता और उस की बुन्याद इब्राहीमी बुन्यादों के मुताबिक़ कर देता।''

इस हदीस से साबित है कि ख़ानए कअबा की तामीर हज़रत

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने की। एक और हदीस मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

सहीह बुख़ारी जिल्द अव्वल, सफ़्हा 590, किताबुल मनासिक, हदीस नंबर 1482

''हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूले अकरम ﷺ ने उन्हें फ़रमायाः तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारी क़ौम ने जब तामीरे कअबा की तो बुन्यादे इब्राहीमी से उसे छोटा कर दिया।''

कुरआन भी इस बात पर शाहिद है कि कअबा की तामीर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने की। सूरह नंबर 2, आयत नंबर 127।

''और जब इब्राहीम ने उस की बुन्यादें उठाईं और इस्माईल ने कहा ऐ हमारे रब! तू हम से कुबूल फ़रमा।''

कुरआन व अहादीस से यह तो साबित हो गया कि ख़ानए कअबा की तामीर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने की। इसके हज़ारों साल बाद क़बीला खुज़ाअह के सरदार अम्र बिन लुहयि ने मुल्के शाम से एक बुत लाकर ख़ानए कअबा में नस्ब कर दिया।

सीरते इब्ने हिशाम जिल्द अव्वल, सफ़्हा 108

''इब्ने हिशाम ने कहा कि बाज़ अहले इल्म ने मुहम्मद से बयान किया कि अम्र बिन लुहयि मुल्के शाम गया और सरज़मीने बलक़ा पहुंचा, उस ने वहां देखा कि लोग बुतों की पूजा करते हैं। अम्र बिन लुहयि ने उन से कहा क्या तुम इन में से कोई बुत मुझे न दोगे? उन्होंने एक बुत दे दिया जिसे हबल कहा जाता है और वह मक्का लाकर ख़ानए कअबा में नस्ब कर दिया।''

अब मैं जवाब देता हूं कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने फ़तहे मक्का के दिन बुतों को क्यों तोड़ा।

नबीए करीम ﷺ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद में से हैं।

सीरत इब्ने हिशाम जिल्द अव्वल, सफ़्हा 31 में है कि

"अबू मुहम्मद अब्दुल मलिक बिन हिशाम अन्नहवी ने कहा कि यह किताब रसूलुल्लाह ﷺ की सीरते तय्यबा में है, आप का नसब यह है।"

"(१) मुहम्मद ﷺ (२) बिन अब्दुल्लाह (३) बिन अब्दुल मुत्तलिब (४) बिन हाशिम (५) बिन अब्द मुनाफ़ (६) बिन क़ुसय (७) बिन किलाब (८) बिन मुर्रह (९) बिन कअब (१०) बिन ग़ालिब (११) बिन लुवयि (१२) बिन फ़हर (१३) बिन मालिक (१४) बिन नज़्र (१५) बिन किनानह (१६) बिन ख़ज़ेमह (१७) बिन मुदरकह (१८) बिन इलियास (१९) बिन मुज़र (२०) बिन निज़ार (२१) बिन मअद (२२) बिन अदनान (२३) बिन उद्द (२४) बिन मुक़व्विम (२५) बिन नाहूर (२६) बिन तीरह (२७) बिन यअरब (२८) बिन यश्जब (२९) बिन नाबत (३०) बिन इस्माईल (३१) बिन इब्राहीम।"

नसब नामा से साबित हो गया कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की औलाद से हैं। ख़ानए कअबा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का तामीर कर्दा है तो ख़ानए कअबा हुज़ूरे अकरम ﷺ के बाप का बनाया हुआ है। जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ख़ानए कअबा को बुतों से पाक रखा था तो हुज़ूर ﷺ ने भी अपने बाप के घर को बुतों से पाक कर दिया, इस में कौन सी तअज्जुब की बात है!

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 130 पर लिखता है कि

"सऊदी अरब में मंदिर या चर्च बनाने की इजाज़त क्यों नहीं है?"

लानती वसीम रिज़वी को मालूम होना चाहिये कि हर मुल्क व रियासत का अलग अलग दस्तूर होता है। क्या लानती वसीम रिज़वी जवाब देगा कि हिन्दुस्तान में गाय का ज़बीहा क्यों मना है? बहुत से

ऐसे ग़ैर मुस्लिम मुमालिक हैं जहां गाय के ज़बीहा पर पाबन्दी नहीं, क्या लानती वसीम रिज़वी के पास इस का जवाब है?

क्या बच्चा आसमान से टपकेगा?

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 131 पर लिखता है।

''गर्भ निरोधक क्यों हराम है?''

लानती वसीम रिज़वी को मालूम होना चाहिये कि मानेअ हमल इसलिये हराम है कि जब बच्चा पैदा होगा तो मुल्क की ख़िदमत करेगा। कोई डॉक्टर बनकर मरीज़ों का इलाज करेगा तो कोई जज बनकर कोर्ट में फ़ैसला करेगा। कोई साइंटिस्ट बनकर मेज़ाइल बनाएगा तो कोई फ़ौजी बनकर मुल्क की सरहदों की हिफ़ाज़त करेगा और पड़ोसी मुख़ालिफ़ का डटकर मुक़ाबला करेगा। अगर मानेअ हमल पर अमल कर लिया जाए तो क्या बच्चा आसमान से टपकेगा? फिर मुल्क की सरहदों की हिफ़ाज़त कौन करेगा? लानती वसीम रिज़वी की सोच वहां तक पहुंच ही नहीं पा रही है।

“अब झूट से पर्दा उठता है”

क़ारईन! पिछले सफ़्हात में आपने देखा कि किस तरह झूटों के सरदार लानती वसीम रिज़वी ने झूटी और मन घड़त बातें इस्लाम, मुसलमान और हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की तरफ़ मन्सूब कर दी हैं। अब मैं उन झूटी बातों से पर्दा उठाता हूं। जहां उस ने हदीस का हवाला दिया, आप मुलाहिज़ा करेंगे कि किस तरह उस ने हदीस में ख़्यानत की है और अपनी तरफ़ से घटाया और बढ़ाया है। पहले उस की लिखी हुई हदीस, फिर अस्ल हदीस, इसके बाद उस की वज़ाहत और मुहासिबा पेश करूंगा ताकि झूट से पर्दा उठ जाए। अब मुलाहिज़ा करें।

आसमान व ज़मीन का अंतर

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 63 पर सहीह बुख़ारी जिल्द 7, बाब नंबर 62, हदीस नंबर 144 के हवाले से लिखता है:

“आयशा ने कहा कि जिस समय अल्लाह ने रसूल को उठाया था, उनका सर मेरी गर्दन के पास था, और वह मुझे चूम रहे थे, उनका थूक मेरे थूक से मिल रहा था, उनकी मौत के लिये मैं ख़ुद को ज़िम्मेदार मानती हूं। उस समय मेरी किशोरावस्था थी, मैं नादाँ थी, मैं तो नबी को और उत्तेजित करना चाहती थी और कामक्रीड़ा में उनका सहयोग करना चाहती थी लेकिन अनुभव हीनता के कारण मुझे पता नहीं था कि जब कोई बूढ़ा और बीमार व्यक्ति किसी एक जवान औरत के साथ जंगली की तरह संसर्ग करता है, तो क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं। वरना मैं उनको रोक लेती।

मैंने उस वासना के चरम आनंद के क्षण पर उनको रोकना उचित नहीं समझा मैं देखती रही, वह मेरी छाती पर लुढ़क गए।

आयशा ने कहा कि मरते समय नबी ने कलमा नहीं पढ़ा था क्योंकि उस समय उनकी जीभ मेरे मुंह के अन्दर थी।''

लानती वसीम रिज़वी का झूट ख़ुद उसके हवाले से मुलाहिज़ा कीजिये।

वह अपनी किताब के सफ़्हा 134 पर उसी हवाले से लिखता हैः वही सहीह बुख़ारी, वही जिल्द नंबर 7, वही बाब नंबर 62, वही हदीस नंबर 144 लेकिन हदीस बदल गई, वह लिखता है।

''आयशा ने कहा कि उस दिन रसूल के साथ सोने की मेरी बारी थी, रसूल मेरे साथ थे लेकिन अल्लाह ने उन्हें उठा लिया। मरते समय उनका सर मेरे दोनों स्तनों के बीच था, उनकी लार मेरे थूक से मिल कर मेरी गर्दन से बह रही थी।''

दोनों हदीस में आसमान ज़मीन का फ़र्क़ है लेकिन लानती वसीम रिज़वी के हवाले के मुताबिक़ दोनों हदीस एक ही हैं जो कि ग़लत बात।। अब दोनों हदीस का फ़र्क़ मुलाहिज़ा कीजिये।

पहली हदीस में है कि उनका सर मेरी गर्दन के पास था। जबकि दूसरी हदीस में लिखता है उनका सर मेरे दोनों छातियों के दरमियान था। पहली हदीस में लिख रहा है उन क थूक मेरे थूक से मिल रहा था। दूसरी हदीस में लिखता है उनका थूक मेरे थूक से मिलकर गर्दन से बह रहा था।

यह सारी बातें सहीह बुख़ारी की हदीस में अपनी तरफ़ से जोड़ दी हैं। अब मैं आपके सामने सहीह बुख़ारी की वह अस्ल हदीस अरबी इबारत और तर्जमा के साथ पेश करता हूं, मुलाहिज़ा फ़रमाएंः

सहीह बुख़ारी जिल्द दोम, किताबुल मग़ाज़ी, सफ़्हा 700, हदीस 1571

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعِيدٍ قَالَ
أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّ أَبَا عَمْرٍو ذَكْوَانَ مَوْلَى عَائِشَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَائِشَةَ

كَانَتْ تَقُوْلُ إِنَّ مِنْ نِعَمِ اللهِ عَلَيَّ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تُوُفِّيَ فِيْ بَيْتِيْ وَفِيْ يَوْمِيْ وَبَيْنَ سَحْرِيْ وَنَحْرِيْ وَأَنَّ اللهَ جَمَعَ بَيْنَ رِيْقِيْ وَرِيْقِهِ عِنْدَ مَوْتِهِ دَخَلَ عَلَيَّ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ وَبِيَدِهِ السِّوَاكُ وَأَنَا مُسْنِدَةٌ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَأَيْتُهُ يَنْظُرُ إِلَيْهِ وَعَرَفْتُ أَنَّهُ يُحِبُّ السِّوَاكَ فَقُلْتُ آخُذُهُ لَكَ فَأَشَارَ بِرَأْسِهِ أَنْ نَعَمْ فَتَنَاوَلْتُهُ فَاشْتَدَّ عَلَيْهِ وَقُلْتُ أُلَيِّنُهُ لَكَ فَأَشَارَ بِرَأْسِهِ أَنْ نَعَمْ فَلَيَّنْتُهُ فَأَمَرَّهُ وَبَيْنَ يَدَيْهِ رَكْوَةٌ أَوْ عُلْبَةٌ يَشُكُّ عُمَرُ فِيْهَا مَاءٌ فَجَعَلَ يُدْخِلُ يَدَيْهِ فِي الْمَاءِ فَيَمْسَحُ بِهِمَا وَجْهَهُ يَقُوْلُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ إِنَّ لِلْمَوْتِ سَكَرَاتٍ ثُمَّ نَصَبَ يَدَهُ فَجَعَلَ يَقُوْلُ فِي الرَّفِيْقِ الْأَعْلَى حَتّٰى قُبِضَ وَمَالَتْ يَدُهُ۔

तर्जमाः ''अबू अम्र ज़कवान (हज़रत आयशा के आज़ाद कर्दा गुलाम) ने इब्ने अबी मुलैकह को ख़बर दी कि हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमायाः अल्लाह तआला के मुझ पर इन्आमात से एक यह भी है कि रसूलुल्लाह ﷺ का विसाल मेरे घर में मेरी बारी के दिन और इस हालत में हुआ कि आप मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे। अलावा अज़ीं आपके विसाल से पहले अल्लाह तआला ने मेरे और आपके लुआबे दहन को मिला दिया। हुआ यूंकि हज़रत अब्दुर्रहमान मेरे पास आए और उनके हाथ में मिस्वाक थी और मैं रसूलुल्लाह ﷺ को टेक दिये हुए थी। मैंने देखा कि आप मिस्वाक की तरफ़ देख रहे हैं तो मैंने जान लिया कि आप मिस्वाक करना चाहते हैं। मैं अर्ज़ गुज़ार हुई कि क्या मैं इसे आपके लिये ले लूं? आपने सरे मुबारक से हां का इशारा फ़रमाया। मैंने मिस्वाक ली तो सख़्त मालूम हुई, फिर मैं अर्ज़ गुज़ार हुई कि क्या मैं इसे आपके लिये नर्म कर दूं? आपने अस्बात में सरे मुबारक से इशारा फ़रमाया। पस मैंने उसे चबा कर नर्म कर दिया और आपके सामने पानी का एक बर्तन रखा हुआ था, आप अपना दस्ते मुबारक पानी में डाल कर उसे अपने चेहरे पर फेर लेते थे और

फ़रमातेः لا اله الا الله ان للموت سكرات۔ बेशक मौत तकलीफ़ से भरी हुई होती है। फिर आपने अपना हाथ ऊपर उठाया और कहने लगेः في الرفيق الاعلى۔ यहां तक कि आपने विसाल फ़रमाया और आप का दस्ते मुबारक नीचे आ गया।''

दूसरी हदीस मुलाहिज़ा फ़रमाएं

सहीहुल बुख़ारी जिल्द दोम, सफ़्हा 700, किताबुल मग़ाज़ी, हदीस नंबर 1572

حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَسْأَلُ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ يَقُولُ أَيْنَ أَنَا غَدًا أَيْنَ أَنَا غَدًا يُرِيدُ يَوْمَ عَائِشَةَ فَأَذِنَ لَهُ أَزْوَاجُهُ يَكُونُ حَيْثُ شَاءَ فَكَانَ فِي بَيْتِ عَائِشَةَ حَتَّى مَاتَ عِنْدَهَا قَالَتْ عَائِشَةُ فَمَاتَ فِي الْيَوْمِ الَّذِي كَانَ يَدُورُ عَلَيَّ فِيهِ فِي بَيْتِي فَقَبَضَهُ اللهُ وَإِنَّ رَأْسَهُ لَبَيْنَ نَحْرِي وَسَحْرِي وَخَالَطَ رِيقُهُ رِيقِي ثُمَّ قَالَتْ دَخَلَ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ وَمَعَهُ سِوَاكٌ يَسْتَنُّ بِهِ فَنَظَرَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ لَهُ أَعْطِنِي هَذَا السِّوَاكَ يَاعَبْدَ الرَّحْمٰنِ فَأَعْطَانِيهِ فَقَضِمْتُهُ ثُمَّ مَضَغْتُهُ فَأَعْطَيْتُهُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاسْتَنَّ بِهِ وَهُوَ مُسْتَنِدٌ إِلَى صَدْرِي۔

तर्जमाः ''हिशाम बिन उरवह का बयान है कि मुझे हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने बताया कि रसूलुल्लाह ﷺ अपने मर्ज़े विसाल में फ़रमाया करते थेः कल मैं किस घर में हूंगा? मैं कल किसके पास हूंगा? हुज़ूरे अक़्दस ﷺ हज़रते आयशा की बारी का इन्तिज़ार फ़रमाते थे, तो आप की अज़्वाजे मुतह्हरात ने इजाज़त दे दी, आप जिसके पास चाहें रहें। आप विसाल तक हज़रत आयशा के घर रहे। हज़रत आयशा फ़रमाती हैंः जिस रोज़ आप का

विसाल हुआ वैसे भी वह मेरी ही बारी का दिन था तो आप का सरे मुबारक मेरे गले और सीने से लगा हुआ था। उस वक़्त अल्लाह तआला ने आपके और मेरे लुआबे दहन को एक जगह मिला दिया। वह इस तरह कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बकर आए और उनके पास मिस्वाक थी। रसूले ख़ुदा ﷺ उस की तरफ़ देखने लगे तो मैंने कहा ऐ अब्दुर्रहमान! यह मिस्वाक मुझे दे दो। उन्होंने मुझे दे दी तो मैंने चबा कर नर्म करके रसूले ख़ुदा ﷺ को दे दी। आप ने मिस्वाक की, आप उस वक़्त मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे।''

इन दोनों हदीसों के अलावा और भी कई अहादीस सहीह बुख़ारी में हुज़ूर के विसाल के तअल्लुक़ से मौजूद हैं लेकिन किसी भी हदीस में वह वाहियात और बकवास नहीं जो लानती वसीम रिज़वी ने की है और अपनी तरफ़ से मन मानी बातें उस में शामिल कर दी हैं। साफ़ सुथरे और अच्छे वाक़िआत को भी जिन्सियात और सेक्स का मिर्च मसाला लगा कर पेश करने में लानती वसीम की महारत से ऐसा लगता है जैसे उस ने सेक्स का कोर्स किया हो। एक बेहतरीन और साफ़ सुथरी हदीस में वह किस तरह सेक्स आमेज़ अल्फ़ाज़ अपनी तरफ़ से मिलाता है, इस को मुलाहिज़ा करें। शायद ऐसा झूटा क़यामत तक पैदा न हो। उसके अल्फ़ाज़ कुछ इस तरह हैं जो हदीस में शामिल किये गए हैं।

''वह मुझे चूम रहे थे।''

''उस वक़्त मेरी जवानी थी।''

''मैं नबी को पुर-जोश करना चाहती थी।''

''खेल में उन का तआवुन करना चाहती थी।''

''जब कोई बूढ़ा और बीमार आदमी किसी एक जवान औरत के साथ मुतअद्दिद बार करता है उसके क्या बुरे असरात हो सकते हैं''

''मैंने उसे जिन्सी ख़्वाहिश के पुर-लुत्फ़ लम्हात पर उनको रोकना मुनासिब नहीं समझा।''

"विसाल के वक़्त नबी ने कलिमा नहीं पढ़ा"

"उस वक़्त उन की ज़बान मेरे मुंह में थी।"

"उनका थूक मेरे थूक से मिल कर मेरी गर्दन से बह रहा था।"

"उन का सर मेरी दोनों छातियों के दरमियान था।"

यह हैं वह बकवास जिन का हदीस से कोई तअल्लुक़ नहीं है। इन में से कोई जुम्ला हदीसे पाक में नहीं है। अरबी का मतन जो मैंने हवाला में पेश किया है उस का एक एक लफ़्ज़ पढ़िये, इस में से कोई जुम्ला नहीं मिलेगा। वह लिखता है।

"उन का सर मेरी दोनों छातियों के दरमियान था।" इसके लिये हदीस के अल्फ़ाज़ यह हैं।

بین سحری ونحری एक जगह है مستندالی صدری, एक जगह है حاقتنی وذاقتنی, पहला जुम्ला का मअना होता है मेरे गले और सीने के दरमियान, दूसरा जुम्ला का मअना होता है मेरे से सीने से टेका लगाए थे। तीसरा जुम्ला का मअना होता है मेरी हंसली और ठोड़ी से लगा हुआ था। अब लानती वसीम रिज़वी बताए कि दोनों छातियों के दरमियान किस लफ़्ज़ का तर्जमा है?

छाती को अरबी में ثدی कहते हैं और दो छातियों को ثدین कहते हैं। पूरी हदीस का एक एक लफ़्ज़ देखिये, कहीं भी आप को लफ़्ज़ بین ثدیین नहीं मिलेगा। लानती वसीम रिज़वी तो हर बात को सेक्स की तरफ़ ले जाना चाहता है, इसी लिये उस ने بین سحری ونحری का तर्जमा मेरी दोनों छातियों के दरमियान कर दिया। झूटा लानती वसीम रिज़वी लिखता है कि

"आयशा ने कहा कि विसाल के वक़्त नबी ने कलिमा नहीं पढ़ा था।"

अरबी मतन को मुलाहिज़ा फ़रमाएं, उस में लिखा है يقول لا اله الا الله ان للموت سكرات. आपने फ़रमायाः لا اله الا الله बेशक मौत तकालीफ़ से भरी होती है। आप ख़ुद बताएं कि अल्लाह के नबी

ने आख़िरी वक़्त कलिमा पढ़ा कि नहीं? अगर कोई यह कहे कि لا اله الا الله कहा और محمد رسول الله नहीं कहा तो मालूम होना चाहिये कि अल्लाह के रसूल मुहम्मद तो वह ख़ुद हैं, उन्हें محمد رسول الله कहने की क्या ज़रूरत है? इससे साबित हो गया कि लानती वसीम रिज़वी कितना बड़ा झूटा है जो झूटी हदीस बयान करके रसूलुल्लाह ﷺ के मक़ाम को कम करना चाहता है। अगर लानती वसीम रिज़वी जैसे हज़ारों पैदा हो जाएं तो मेरे नबी का मक़ाम कम नहीं होगा।

हज़रत आयशा की तरफ़ यह झूट मन्सूब करके लिखता है कि

''उन का थूक मेरा थूक से मिलकर मेरी गर्दन से बह रहा था।''

इसकी हक़ीक़त जानने के लिये अरबी का मतन मुलाहिज़ा कीजिये।

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: وخالط ريقه وريقي- अब आप बताएं कि कहां लिखा हुआ है कि थूक मेरी गर्दन से बह रहा था। लानती वसीम रिज़वी साबित करे, वह क्या साबित करेगा! अस्ल हदीस का मतन आपके सामने मैंने रखा ख़ुद इन्साफ़ करें कि क्या सहीह है क्या ग़लत।

लानती वसीम रिज़वी सहीह बुख़ारी की हदीस में एक जुम्ला और घुसेड़ता है कि आख़िरी वक़्त उनकी ज़बान मेरे मुंह में थी। सहीह बुख़ारी के अल्फ़ाज़ मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

''ثم نصب يده فجعل يقول فى الرفيق الاعلىٰ حتى قبض ومالت يده-''

फिर आपने हाथ ऊपर उठाया और कहने लगे فى الرفيق الاعلىٰ यहां तक कि आपने विसाल फ़रमाया और आप का दस्ते मुबारक नीचे आ गया।''

लानती वसीम रिज़वी का झूट साबित हो गया कि हुज़ूर ﷺ की ज़बान हज़रत आयशा के मुंह में नहीं थी क्योंकि आप अपना हाथ उठा कर अपने रब की बारगाह में कह रहे थे: فى الرفيق الاعلىٰ-

झूटे पर अल्लाह की धिक्कार

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 107 पर लिखता है कि

‘‘मोहम्मद अय्याशी के दौरान नशे का भी इस्तेमाल करते थे।’’

मआज़ल्लाह सौ बार मआज़ल्लाह! अपनी बात को साबित करने के लिये झूटे और मन घड़त जुम्ले मिला कर सहीह बुख़ारी की हदीस लिखता है। पहले आप उसकी झूटी हदीस को मुलाहिज़ा करें, फिर मैं अस्ल हदीस का अरबी मतन पेश करके उसका मुहासिबा करता हूं।

सफ़्हा 106 पर लिखता हैः

‘‘आयशा के हवाले से एक हदीस यह भी है कि आयशा ने कहा कि रसूल जहश की बेटी ज़ैनब (मोहम्मद के मुंह बोले बेटे ज़ैद की पत्नी) के घर छुपकर शहद पीने के बहाने ‘‘मग़ाफ़िर’’ नाम की एक बदबूदार शराब पीते थे। मैंने और हफ्सा ने मिलकर इसकी जांच करने की योजना बनाई, अगर वह शराब पियेंगे तो उसकी गंध सूंघने से पता चल जाएगी, बाद में यही बात सहीह निकली। पकड़े जाने पर रसूल बोले मैं क़सम खाता हूं कि अब ऐसा नहीं करूंगा और तुम भी वादा करो कि यह बात किसी को नहीं कहोगी।’’

अब आइये हदीस का अरबी मतन मुलाहिज़ा करें।

सहीह बुख़ारी जिल्द सोम सफ़्हा 120, किताबुत्तलाक़, हदीस नंबर 248 |

حَدَّثَنِي الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ صَبَّاحٍ حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ زَعَمَ عَطَاءٌ أَنَّهُ سَمِعَ عُبَيْدَ بْنَ عُمَيْرٍ يَقُولُ سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَمْكُثُ عِنْدَ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ وَيَشْرَبُ عِنْدَهَا عَسَلًا فَتَوَاصَيْتُ أَنَا وَحَفْصَةُ أَنَّ أَيَّتَنَا دَخَلَ عَلَيْهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلْتَقُلْ إِنِّي أَجِدُ مِنْكَ رِيحَ مَغَافِيرَ

أَكَلْتَ مَغَافِيْرَ فَدَخَلَ عَلَى إِحْدَاهُمَا فَقَالَتْ لَهُ ذٰلِكَ فَقَالَ لَا بَلْ شَرِبْتُ عَسَلًا عِنْدَ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ وَلَنْ أَعُوْدَ لَهُ فَنَزَلَتْ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللهُ لَكَ إِلَى إِنْ تَتُوْبَآ إِلَى اللهِ۔ سورة التحريم آية ١٤ لِعَائِشَةَ وَحَفْصَةَ وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَى بَعْضِ أَزْوَاجِهِ سورة التحريم آيت ٣ لِقَوْلِهِ بَلْ شَرِبْتُ عَسَلًا۔

तर्जमाः ‘‘हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम ﷺ का मअमूल था कि आप हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश के पास ठहरते और शहद पिया करते थे। चुनान्चे मैंने और हफ़सह ने बाहम मशवरा किया कि हम में से जिसके पास नबी करीम ﷺ वहां से तशरीफ़ लाएं तो वह कहे कि आपके दहने मुबारक से मग़ाफ़ीर की बू आती है, क्या आपने मग़ाफ़ीर खाया है? पस हम में से एक के पास हुजूर तशरीफ़ लाए तो उस ने ऐसा ही कहा। आपने फ़रमायाः ऐसा नहीं है बल्कि मैंने ज़ैनब बिन्ते जहश के पास से शहद पिया है और आइन्दा नहीं पियूंगा। तो यह आयते करीमाः يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللهُ لَكَ से إِنْ تَتُوْبَا إِلَى اللهِ तक नाज़िल हुई।

तर्जमाः ऐ नबी! तुम उसे हराम क्यों करते हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल किया है ... से إِنْ تَتُوْبَا إِلَى اللهِ तक।

तर्जमाः अगर वह दोनों अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करें ... यह आयशा और हफ़सह रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की तरफ़ ख़िताब है। وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَى بَعْضِ أَزْوَاجِهِ ... इस हदीस से मफ़हूम यही निकलता है कि मैंने मग़ाफ़ीर नहीं खाया बल्कि शहद पिया है।

क़ारईन! आपने अस्ल हदीस मुलाहिज़ा फ़रमाई, आप इस हदीस के मतन को बार बार पढ़िये और लानती वसीम रिज़वी की बकवास से मवाज़ना कीजिये। अब मैं उस का झूट शुमार कराता हूं।

झूट नंबर 1

‘‘छुप कर शहद पीने के बहाने मग़ाफ़िर पीते थे।’’

झूट नंबर 2:

‘‘रसूल बोले क़सम खाता हूं’’

झूट नंबर 3:

‘‘तुम वादा करो यह बात किसी को नहीं कहोगी।’’

आपने पूरी हदीस को पढ़ा, क्या हुज़ूरे अक़्दस ﷺ छुप कर गए थे? बल्कि आप का मअमूल था आप शहद पीने जाते थे। पूरी हदीस में कहीं नहीं है कि रसूल ने क़सम खाई हो, पूरी हदीस में कहीं यह नहीं है कि तुम वादा करो यह बात किसी को नहीं कहोगी, यह सब सरासर झूट और लानती वसीम रिज़वी की रसूल दुश्मनी है।

अब आइये लानती वसीम रिज़वी के झूटों से पर्दा उठाते हैं, वह इतना बड़ा नादान और जाहिल है उसे पता ही नहीं कि मग़ाफ़िर क्या है?

वह खाने की चीज़ है या पीने की?

वह हराम है कि हलाल?

वह नशा आवर है कि नहीं?

वह कहता है ‘‘मग़ाफ़ीर एक बदबूदार शराब है।’’

अरे जाहिल! वह शराब नहीं है और न उससे नशा होता है और न ही वह पीने की चीज़ है।

कुछ खाने की चीज़ें ऐसी होती हैं जो मना तो नहीं है और न ही उससे नशा होता है लेकिन उस में बू आती है, जैसे हिन्दुस्तान में कच्ची प्याज़ और लहसन।

सहीह बुख़ारी में मग़ाफ़ीर के लिये “أكل” खाने का लफ़्ज़ आया है “شرب” पीने का नहीं।

सहीह बुख़ारी में है "أكلت مغافير؟ لا بل شربت عسلا" यानी मग़ाफ़ीर के लिये أكلت और शहद के लिये شربت का लफ़्ज़ आया है। जिस जाहिल को खाने और पीने की अरबी नहीं मालूम वह हदीस को क्या समझ सकता है। जैसे कोई अंग्रेज़ हिन्दुस्तान आए और उसे मालूम न हो कि रोटी क्या चीज़ है तो वह कहेगा कि हम रोटी पियेगा। वही हाल लानती वसीम रिज़वी का है, वह कहता है रसूल मग़ाफ़ीर पीते थे। मग़ाफ़ीर गोंद की तरह एक चीज़ है जिसे पिया नहीं बल्कि खाया जाता है।

हदीस की वज़ाहत यह है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने न क़सम खाई और न यह कहा कि किसी को नहीं कहना बल्कि आपने यह कहा कि अब शहद भी नहीं पियूंगा, तो अल्लाह की तरफ़ से यह हुक्म आया कि ऐ नबी! जो चीज़ हलाल है उसे आप अपने ऊपर हराम क्यों करते हैं और हज़रत हफ़सह और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हुमा को यह हुक्म हुआ कि अल्लाह की बारगाह में रुजूअ करें। इस हदीस के मुतालिआ से रोज़े रौशन की तरह अयां हो गया कि लानती वसीम रिज़वी की सारी बातें झूटी हैं।

एक तो आपने मग़ाफ़ीर का इस्तेमाल ही नहीं किया और मग़ाफ़ीर में नशा होता ही नहीं है तो अब बताइये कि उस का यह कहना झूट है कि नहीं, कि मुहम्मद नशा का इस्तेमाल करते थे।

हदीस का भाव अर्थः

लानती वसीम रिज़वी किताब के सफ़्हा 76 पर सहीह बुख़ारी का एक हवाला हज़रत ख़ौलह के तअल्लुक़ से लिखता है, जो झूट पर मबनी है। वह लिखता है कि

''हिशाम के पिता ने कहा कि ख़ौला एक ऐसी औरत थी जिसने सम्भोग के लिये ख़ुद को रसूल के सामने प्रस्तुत कर दिया था। इसलिये आयशा ने उससे पूछा, क्या तुझे एक पराये मर्द के सामने

ख़ुद को पेश करने में शर्म नहीं आयी? तब रसूल ने क़ुरान की सूरा अहज़ाब 33, 50 की यह आयत सुना दी, जिस में कहा थाः हे नबी! तुम सम्भोग के लिए अपनी पत्नियों की बारी (Turn) को टाल सकते हो। इस पर आयशा बोली, लगता है तुम्हारा अल्लाह तुम्हें और अधिक मज़े करने की इजाज़त दे रहा है।''

لعنة الله على الكذبين झूटों पर अल्लाह की लअनत।

अस्ल हदीस का अरबी मतन मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

सहीह बुख़ारी, जिल्द सोम, सफ़्हा 76, किताबुन निकाह, हदीस नंबर 102

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَامٍ حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ قَالَ كَانَتْ خَوْلَةُ بِنْتُ حَكِيمٍ مِنَ اللَّائِي وَهَبْنَ أَنْفُسَهُنَّ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ عَائِشَةُ أَمَا تَسْتَحِي الْمَرْأَةُ أَنْ تَهَبَ نَفْسَهَا لِلرَّجُلِ فَلَمَّا نَزَلَتْ تُرْجِئُ مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ قُلْتُ يَارَسُولَ اللهِ مَا أَرَى رَبَّكَ إِلَّا يُسَارِعُ فِي هَوَاكَ.

तर्जमाः ''हिशाम ने अपने वालिद उरवह से रिवायत की कि ख़ौलह बिन्ते हकीम उन ख़्वातीन में से हैं जिन्होंने अपने नफ़्स को नबी करीम ﷺ को हिबा किया था। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया क्या औरत शर्म नहीं करती कि अपना नफ़्स किसी आदमी को हिबा करती है, तो यह आयते करीमा تُرْجِئُ مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ नाज़िल हुई तो मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ﷺ! मैं तो यही देखती हूं कि आप का रब आप की मर्ज़ी पूरी करने में जल्दी फ़रमाता है।''

क़ारईन! ज़रा इन्साफ़ से हदीस के पूरे अरबी मतन को बार बार पढ़िये, कहीं है कि मआज़ल्लाह हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने ख़ौलह के साथ हमबिस्तरी की थी?

हदीस के अल्फ़ाज़ यह है وَهَبْنَ أَنْفُسَهُنَّ जिस का मतलब यह

होता है कि हज़रत ख़ौलह ने अपने नफ़्स को हिबा कर दिया।

जाहिल लानती वसीम रिज़वी को मालूम होना चाहिये कि हिबा का मतलब हमबिस्तरी करना नहीं होता। इस हदीस से यह भी साबित नहीं होता कि हज़रत ख़ौलह ने हिबा किया तो उस को हुज़ूर ﷺ ने कुबूल फ़रमाया।

सबसे पहले लानती वसीम रिज़वी के झूट को देखिये।

झूट नंबर 1:

''हमबिस्तरी के लिये ख़ुद को रसूल के सामने पेश किया।''

झूट नंबर 2:

''अज्नबी आदमी के सामने पेश किया।''

झूट नंबर 3:

''तुम्हारा अल्लाह तुम्हें और ज़्यादा मज़ा करने की इजाज़त दे रहा है।''

हदीस के अल्फ़ाज़ यह हैं:

يُسَارِعُ فِيْ هَوَاكَ यानी अल्लाह तआला आप की मर्ज़ी को जल्दी पूरा करता है।

लानती वसीम रिज़वी ने कुरआन की आयत का तर्जमा और मफ़हूम दोनों ग़लत बयान किया है। कुरआन की आयत ''ترجی من تشاء منهن وتؤی الیك من تشاء۔'' (सूरए अहज़ाब: 51)

उन में से जिसे चाहो पीछे हटाओ और जिसे चाहो अपने पास जगह दो।

लानती वसीम रिज़वी लिखता है:

''ऐ नबी! तुम हमबिस्तरी के लिये अपनी बारी मुल्तवी कर सकते हो।''

आइये इस आयत की तफ़सीर, मशहूर तफ़सीर की किताब में मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

तफ़सीरे मदारिक, सूरए अहज़ाब, आयत नंबर 51, सफ़्हा 947

"हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि यह आयत उन औरतों के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने अपनी जानें हुज़ूरे अक़दस ﷺ पर हिबा कर दीं और हुज़ूरे अक़दस ﷺ को इख़्तियार दिया गया कि उन में से जिसे चाहें क़ुबूल करें और उनके साथ निकाह फ़रमाएं और जिस को चाहें इन्कार कर दें।"

क़ारईन! इस तफ़सीर से वाज़ेह हो गया कि हिबा करने का मतलब यह है कि हुज़ूर को इख़्तियार था कि हज़रत ख़ौलह से निकाह करें या इन्कार करें। नबी करीम ﷺ ने हज़रत ख़ौलह से निकाह नहीं फ़रमाया।

तफ़सीर और अहादीस से साबित हो गया कि लानती वसीम रिज़वी कितना बड़ा झूटा है कि हज़रत ख़ौलह पर लफ़्ज़ हिबा के ज़रिया हमबिस्तरी की पेशकश का इल्ज़ाम लगाता है।

झूट की वर्षा

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 133 पर लिखता है कि

"मुहम्मद मौत से डरते थे।"

और सहीह बुख़ारी का हवाला दिया, वह हवाला मुलाहिज़ा फ़रमाएं। वह लिखता है:

"आयशा ने कहा कि उस दिन (मौत के दिन) रसूल के साथ सोने की मेरी बारी थी। रसूल ने कहा मुझे पता नहीं है कि मैं कहाँ जाऊंगा? कहाँ सोऊंगा? और मेरे साथ कौन होगा? मैंने कहा यद्दपि मेरी बारी है, फिर भी आप किसी के साथ सो सकते हैं। मुझे पता नहीं था कि रसूल अगली दुनिया की बात कर रहे थे।"

अब आप हदीस का अरबी मतन मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

सहीह बुख़ारी, जिल्द सोम, सफ़्हा 103, किताबुन निकाह, हदीस नंबर 201 /

حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالٍ قَالَ هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَسْأَلُ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ أَيْنَ أَنَا غَدًا أَيْنَ انَا غَدًا يُرِيدُ يَوْمَ عَائِشَةَ فَأَذِنَ لَهُ أَزْوَاجُهُ يَكُونُ حَيْثُ شَاءَ فَكَانَ فِي بَيْتِ عَائِشَةَ حَتَّى مَاتَ عِنْدَهَا۔

तर्जमाः हिशाम बिन उरवह ने कहा कि उन्हें ख़बर दी उनके वालिद ने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ अपने मर्ज़े विसाल में दरियाफ़्त फ़रमाते थे कि मैं कल किसके पास रहूंगा? मैं कल किसके पास रहूंगा? हज़रत आयशा की बारी के बाइस आप पूछा करते थे। लिहाज़ा आप की अज़्वाज ने इजाज़त दे दी कि आप जिसके पास चाहें क़याम कर सकते हैं, चुनान्चे आप का विसाल हज़रत आयशा के घर में हुआ।

अस्ल हदीस मुलाहिज़ा करने के बाद अब आप ख़ुद अंदाज़ा लगाएं कि लानती वसीम रिज़वी कितना बड़ा झूटा है।

अब आइये! उस की बकवास का मुहासिबा करते हैं

अब मैं लानती वसीम रिज़वी के झूट शुमार कराता हूं।

झूट नंबर 1:

मुझे नहीं मालूम कि मैं कहां जाऊंगा?

झूट नंबर 2:

कहां सोऊंगा

झूट नंबर 3:

मेरे साथ कौन होगा?

झूट नंबर 4:

रसूल के साथ सोने की बारी थी?

झूट नंबर 5:

आप किसी के साथ सो सकते हैं?

झूट नंबर 6:

मुझे मालूम नहीं था कि रसूल आख़िरत की बात कर रहे थे।

पूरी हदीस को बार बार पढ़िये, कई बार पढ़िये, क्या यह जुम्ले इस हदीस में हैं? बिल्कुल नहीं, फिर लानती वसीम रिज़वी ने कैसे झूट लिख दिया। झूटा आदमी झूट ही लिखेगा।

हदीस के अल्फ़ाज़ देखें अल्लाह के रसूल ने फ़रमायाः

"این انا غدًا این انا غدًا" इस का मतलब क्या है? आगे के अल्फ़ाज़ बता रहे हैं "يريد يوم عائشة" यानी हज़रत आयशा की बारी के सबब आप पूछा करते थे। कल मुझे कहां रहना है? "فَأذن له ازواجه" यानी तो तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात ने इजाज़त दे दी।

इससे लानती वसीम रिज़वी का झूट साबित हो गया।

जाहिल लानती वसीम रिज़वी ने "این انا غدا" से समझ लिया कि हुज़ूरे अक़्दस ﷺ मौत से डरते थे बल्कि इस का मतलब "يريد يوم عائشة" है। इस हदीस में लानती वसीम रिज़वी ने छे झूटी बातें शामिल कर दीं जो आपने ऊपर मुलाहिज़ा किया। आप ख़ुद अंदाज़ा लगाएं कि लानती वसीम रिज़वी कितना बड़ा मक्कार और झूटा है।

लानती वसीम रिज़वी की लेखा परिक्षा

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 133 पर लिखता है कि

''मुहम्मद की मौत का हाल'' और इसके आगे लिखता है कि हाथ उठा कर कुछ कहना चाहते थे लेकिन उनके हाथ नीचे आ गए। सहीह बुख़ारी का झूटा हवाला देते हुए लिखता हैः

''आयशा ने कहा कि रसूल की तबियत ख़राब थी, मैं पानी लेकर आई और रसूल को पानी पिला कर उनके चेहरे पर पानी मला। रसूल अपने हाथ ऊपर करके कुछ कहना चाहते थे लेकिन

उनके हाथ नीचे लटक गए।''

अब आइये लानती वसीम रिज़वी के झूट का मुहासिबा करने के लिये अस्ल हदीस अरबी मतन में मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

सहीह बुख़ारी जिल्द दोम, सफ़्हा 697, किताबुल मग़ाज़ी हदीस नंबर 1567

وَكَانَتْ عَائِشَةُ زَوْجُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تُحَدِّثُ أَنَّ رَسُوْلَ
اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا دَخَلَ بَيْتِيْ وَاشْتَدَّ بِهِ وَجَعُهُ قَالَ هَرِيْقُوْا
عَلَيَّ مِنْ سَبْعِ قِرَبٍ لَمْ تُحْلَلْ أَوْ كِيَتُهُنَّ لَعَلِّيْ أَعْهَدُ إِلَى النَّاسِ
فَأَجْلَسْنَاهُ فِيْ مِخْضَبٍ لِحَفْصَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ
طَفِقْنَا نَصُبُّ عَلَيْهِ مِنْ تِلْكَ الْقِرَبِ حَتَّى طَفِقَ يُشِيْرُ إِلَيْنَا بِيَدِهِ۔

तर्जमाः ''हज़रत आयशा सिद्दीक़ा ज़ौजा नबी करीम ﷺ ने बयान फ़रमाया कि जब रसूले ख़ुदा ﷺ मेरे घर में जल्वा अफ़रोज़ हुए तो आपके मर्ज़ में और इज़ाफ़ा हो गया और फ़रमाया सात मश्कीज़े पानी मेरे ऊपर बहाओ, जिनके मुंह खोले न गए हों, शायद मैं लोगों को कोई वसियत कर सकूं तो हम ने आप को हज़रत हफ़सह के एक बर्तन में बिठा दिया और मश्कीज़े से आपके ऊपर पानी डाला गया, यहां तक कि आपने हाथ के इशारे से हमें मना फ़रमाया।''

सहीह बुख़ारी, जिल्द दोम, सफ़्हा 700, किताबुल मग़ाज़ी, हदीस नंबर 1571

حَدَّثَنِيْ مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ حَدَّثَنَا عِيْسَى بْنُ يُوْنُسَ عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعِيْدٍ
قَالَ أَخْبَرَنِيْ ابْنُ أَبِيْ مُلَيْكَةَ أَنَّ أَبَا عَمْرٍو ذَكْوَانَ مَوْلَى عَائِشَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ
عَائِشَةَ كَانَتْ تَقُوْلُ إِنَّ مِنْ نِعَمِ اللهِ عَلَيَّ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ تُوُفِّيَ فِيْ بَيْتِيْ وَفِيْ يَوْمِيْ وَبَيْنَ سَحْرِيْ وَنَحْرِيْ وَأَنَّ اللهَ جَمَعَ بَيْنَ رِيْقِيْ
وَرِيْقِهِ عِنْدَ مَوْتِهِ دَخَلَ عَلَيَّ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ وَبِيَدِهِ السِّوَاكُ وَأَنَا مُسْنِدَةٌ

رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَأَيْتُهُ يَنْظُرُ إِلَيْهِ وَعَرَفْتُ أَنَّهُ يُحِبُّ السِّوَاكَ فَقُلْتُ آخُذُهُ لَكَ فَأَشَارَ بِرَأْسِهِ أَنْ نَعَمْ فَتَنَاوَلْتُهُ فَاشْتَدَّ عَلَيْهِ وَقُلْتُ أُلَيِّنُهُ لَكَ فَأَشَارَ بِرَأْسِهِ أَنْ نَعَمْ فَلَيَّنْتُهُ فَأَمَرَّهُ وَبَيْنَ يَدَيْهِ رَكْوَةٌ أَوْ عُلْبَةٌ يَشُكُّ عُمَرُ فِيهَا مَاءٌ فَجَعَلَ يُدْخِلُ يَدَيْهِ فِي الْمَاءِ فَيَمْسَحُ بِهِمَا وَجْهَهُ يَقُوْلُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ إِنَّ لِلْمَوْتِ سَكَرَاتٍ ثُمَّ نَصَبَ يَدَهُ فَجَعَلَ يَقُوْلُ فِي الرَّفِيْقِ الْأَعْلَى حَتَّى قُبِضَ وَمَالَتْ يَدُهُ۔

इस हदीस के आख़िरी जुम्ले मुलाहिज़ा फ़रमाएं:

ثُمَّ نَصَبَ يَدَهُ فَجَعَلَ يَقُوْلُ فِي الرَّفِيْقِ الْأَعْلَى حَتَّى قُبِضَ وَمَالَتْ يَدُهُ۔

तर्जमाः ‘‘फिर आपने हाथ ऊपर उठाया और कहने लगे आला की रिफ़ाक़त में यहां तक कि आपने विसाल फ़रमाया और आप का दस्ते मुबारक नीचे आ गया।’’

अब मैं आपके सामने लानती वसीम रिज़वी का झूट शुमार कराता हूं।

झूट नंबर 1:

मैं पानी लेकर आई।

झूट नंबर 2:

रसूल को पानी पिलाई।

झूट नंबर 3:

चेहरे पर पानी छिड़कने लगी।

झूट नंबर 4:

रसूल हाथ उठा कर कुछ कहना चाहते थे।

मज़्कूरा बाला हदीस को आप बार बार पढ़ें, यह सब बकवास कहीं भी नहीं लिखी है। उस का झूट देखिये उस ने लिखा है कि

‘‘रसूल हाथ उठा कर कुछ कहना चाहते थे लेकिन उनके हाथ

नीचे आ गए।''

हदीस से साबित हो गया कि हाथ उठा कर जो कहना चाहते थे वह कहा, वह यह है "فى الرفيق الاعلىٰ"

इसके बावुजूद वह झूटा कहता है जो कहना चाह रहे थे नहीं कह पाए। यह झूट की इन्तिहा हो गई। मज़्कूरा हदीस में उसके चारों झूट का पर्दा चाक हो गया।

क़ब्रस्तान में परिवर्तितः

लानती वसीम रिज़वी किताब के सफ़्हा 133 पर सहीह बुख़ारी का हवाला देकर लिखता हैः

''इब्ने अब्बास ने कहा जिस दिन रसूल मरे। वे मुझ से कह रहे थे, सारे अरब से काफ़िरों, यहूदियों और ईसाइयों को निकाल दो, उनके उपासना स्थलों को गिरा दो और उनको क़बरिस्तान में बदल दो।''

क़ारईन! यह तमाम बातें झूट और बकवास हैं। सहीह बुख़ारी का अस्ल मतन आपके सामने पेश करता हूं ताकि लानती वसीम रिज़वी का झूट रोज़े रौशन की तरह अयां हो जाए।

सहीह बुख़ारी, जिल्द दोम, सफ़्हा 697, हदीस नंबर 1567

"أَنَّ عَائِشَةَ وَعَبْدَاللهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالَا لَمَّا نَزَلَ بِرَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَفِقَ يَطْرَحُ خَمِيْصَةً لَهُ عَلَى وَجْهِهِ فَإِذَا اغْتَمَّ كَشَفَهَا عَنْ وَجْهِهِ وَهُوَ كَذٰلِكَ يَقُوْلُ لَعْنَةُ اللهِ عَلَى الْيَهُوْدِ وَالنَّصَارٰى اتَّخَذُوْا قُبُوْرَ أَنْبِيَاءِهِمْ مَسَاجِدَ يُحَذِّرُ مَا صَنَعُوْا۔"

तर्जमाः ''हज़रत आयशा सिद्दीक़ा और इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फ़रमाया कि बीमारी के दिनों में रसूलुल्लाह ﷺ चादर के अन्दर मुबारक चेहरा छुपाने लगे थे। जब दिल घबराता तो चेहरए अनवर को खोल देते और यही फ़रमातेः यहूद व नसारा पर

अल्लाह की लअनत, जिन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को मस्जिदें बना लिया, उन की इस हरकत से आप बचने के लिये फ़रमाते।”

अस्ल हदीस के मतन को बार बार पढ़िये और उसके झूट को देखिये। अब मैं लानती वसीम रिज़वी के झूट को शुमार कराता हूं।

झूट नंबर 1:

इब्ने अब्बास ने कहा जिस दिन आपकी वफ़ात हुई वह मुझ से कह रहे थे।

झूट नंबर 2:

सारे अरब से काफ़िरों, यहूदियों और ईसाइयों को निकाल दो।

झूट नंबर 3:

उन की इबादतगाहों को मुन्हदिम कर दो।

झूट नंबर 4:

उन को क़ब्रस्तान में तब्दील कर दो।

यह है लानती वसीम रिज़वी के झूट का अंबार।

इस हदीस में कहीं भी यहूद व नसारा को निकालने की बात नहीं कही गई है बल्कि अंबिया की क़ब्रों को मस्जिद बनाने वालों पर अल्लाह की लअनत भेजी गई है। अल्फ़ाज़ देखें: “لَعْنَةُ اللهِ عَلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارٰى۔” लानती वसीम रिज़वी कहता है कि उनकी इबादत-गाहों को क़ब्रस्तान में तब्दील कर दो। हुज़ूरे अक़दस ﷺ के अल्फ़ाज़ यह हैं: “اِتَّخَذُوْا قُبُوْرَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ۔” जिन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को मसाजिद बना लिया।

ज़रा ग़ौर करें। न ही इस हदीस में अरब के लिये अल्फ़ाज़ हैं और न ही इस में निकालने की बात है, न ही इबादतगाहों को मुन्हदिम करने का कोई ज़िक्र है।

यह है लानती वसीम रिज़वी का झूट। कहां तक उस का झूट शुमार कराया जाए।

अब मैं उस हदीस को पेश करता हूं जिस में जज़ीरए अरब से

निकालने की बात की गई है, किस से कही गई है और किस तरह की गई है। हदीस का अरबी मतन मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

सहीह बुख़ारी, जिल्द दोम, सफ़्हा 693, किताबुल मग़ाज़ी, हदीस नंबर 1557

"حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سُلَيْمَانَ الْأَحْوَلِ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَوْمُ الْخَمِيْسِ وَمَا يَوْمُ الْخَمِيْسِ اشْتَدَّ بِرَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَجَعُهُ فَقَالَ ائْتُوْنِيْ أَكْتُبْ لَكُمْ كِتَابًا لَنْ تَضِلُّوْا بَعْدَهُ أَبَدًا فَتَنَازَعُوْا وَلَا يَنْبَغِيْ عِنْدَ نَبِيٍّ تَنَازُعٌ فَقَالُوْا مَا شَأْنُهُ أَهَجَرَ اسْتَفْهِمُوْهُ فَذَهَبُوْا يَرُدُّوْنَ عَلَيْهِ فَقَالَ دَعُوْنِيْ فَالَّذِيْ أَنَا فِيْهِ خَيْرٌ مِمَّا تَدْعُوْنِيْ إِلَيْهِ وَأَوْصَاهُمْ بِثَلَاثٍ قَالَ أَخْرِجُوا الْمُشْرِكِيْنَ مِنْ جَزِيْرَةِ الْعَرَبِ وَأَجِيْزُوا الْوَفْدَ بِنَحْوِ مَا كُنْتُ أُجِيْزُهُمْ وَسَكَتَ عَنِ الثَّالِثَةِ أَوْ قَالَ فَنَسِيْتُهَا۔

तर्जमाः "सईद बिन जुबैर का बयान है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फ़रमायाः हाए जुमेरात! और जुमेरात का दिन क्या है? उस रोज़ हुज़ूरे अक़दस ﷺ की बीमारी शिद्दत इख़्तियार कर गई थी। आपने फ़रमायाः मुझे लिखने की चीज़ें लाकर दो ताकि मैं तुम्हें ऐसी चीज़ तहरीर कर दूं कि मेरे बाद कभी गुमराह न हो सको। कुछ लोग झगड़ने लगे हालांकि नबी की बारगाह में झगड़ना मुनासिब न था। बाज़ हज़रात कहने लगे कि शायद आप बीमारी के बाइस ऐसा फ़रमा रहे हैं तो उन्होंने दोबारा जाकर दरियाफ़्त किया तो आपने फ़रमायाः इस बात को जाने दो मैं जिस हालत में हूं वह उससे बेहतर है जिस की जानिब तुम बुला रहे हो, आपने उन्हें तीन बातों की वसियत फ़रमाई।"

(1) मुश्रिकीन को जज़ीरए अरब से निकाल देना।

(2) सफ़ीरों के साथ इस तरह हुस्ने सुलूक करना जैसे मैं करता

था।

(3) तीसरी वसियत से वह ख़ामोश हो गए या रावी ने कहा कि मैं भूल गया।

क़ारईन! ध्यान से इस हदीस का मुतालिआ करें, इस में भी कहीं नहीं है कि काफ़िरों, यहूदियों और ईसाइयो को निकाल दो, इस में भी कहीं नहीं है कि उन की इबादतगाहों को मुन्हदिम कर दो। इस हदीस में भी कहीं नहीं है कि उन को क़ब्रस्तान में तब्दील कर दो। इस में सिर्फ़ यह है कि

أَخْرِجُوا الْمُشْرِكِيْنَ مِنْ جَزِيْرَةِ الْعَرَبِ۔

क़ारईन! अब ख़ुद अंदाज़ा लगाएं कि लानती वसीम रिज़वी झूट बोलने में कितना माहिर है।

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 132 पर लिखता है:

''सफ़िया ने मुहम्मद के खाने में ज़हर मिला दिया था।''

मआज़ल्लाह! वह यह साबित करना चाहता है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़ियह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने हुज़ूर ﷺ को ज़हर दिया था। उस का गंदा नज़रिया यह है कि रसूले ख़ुदा ﷺ की बीवी ने ही ज़हर देकर आप को क़त्ल करने की कोशिश की। अपने सुबूत के लिये सहीह बुख़ारी की दो मन घड़त हदीस हवाला के तौर पर लिखता है।

''अब्दुर रहमान बिन अबू बकर ने कहा कि रसूल ने एक भेड़ का बच्चा ज़िबह किया, और उसे पकाने के लिए सफ़िया के पास भिजवा दिया। सफ़िया ने उसे पकाया।''

दूसरा हवाला यह देता है:

''अनस बिन मालिक ने कहा कि रसूल की एक यहूदी पत्नी ने भेड़ का बच्चा पकाया था, जिसमें ज़हर था। रसूल प्लेट से लेकर वह गोश्त खा गए।''

क़ारईन! इन दोनों हवालों में उसके झूट को दखिये:

झूट नंबर 1:

भेड़ का बच्चा।

झूट नंबर 2:

रसूल ने ज़िब्ह किया।

झूट नंबर 3:

यहूदी बीवी।

झूट नंबर 4:

रसूल ने सफ़ियह के पास भेजा।

यह सारी बातें झूट पर मुन्हसिर हैं। भेड़ का बच्चा नहीं बल्कि बकरी थी। अल्फ़ाज़ यह हैं: "شاة فيها سم" यानी बकरी के गोश्त में ज़हर था। रसूले ख़ुदा ﷺ ने ज़िब्ह नहीं किया था बल्कि आप को तोहफ़ा भेजा गया था। अल्फ़ाज़ यह हैं: "اهديت لرسول الله صلى الله عليه وسلم۔"

झूट से पर्दा उठ जाए इसलिये ज़हर ख़ूरानी के अस्ल वाक़िआ को हदीस के अरबी मतन के साथ पेश करता हूं।

सहीह बुख़ारी, जिल्द दोम, सफ़्हा 617, किताबुल मग़ाज़ी, हदीस नंबर 1392

حَدَّثَنَا عَبْدُاللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ حَدَّثَنِي سَعِيدٌ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ لَمَّا فُتِحَتْ خَيْبَرُ أُهْدِيَتْ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَاةٌ فِيهَا سُمٌّ۔

तर्जमा: "हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जब ख़ैबर फ़तह हो गया तो रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हदिया के तौर पर बकरी का गोश्त पेश किया गया जिस में ज़हर था।"

इसी ज़हर ख़ूरानी के तअल्लुक़ से एक तफ़सीली हदीस अरबी

मतन के साथ मुलाहिज़ा फ़रमाएं:

सहीह बुख़ारी, जिल्द सोम, सफ़्हा 282, बाबुल मग़ाज़ी, हदीस नम्बर 724

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ قَالَ لَمَّا فُتِحَتْ خَيْبَرُ أُهْدِيَتْ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَاةٌ فِيهَا سَمٌّ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اجْمَعُوا لِي مَنْ كَانَ هَاهُنَا مِنَ الْيَهُودِ فَجُمِعُوا لَهُ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنِّي سَائِلُكُمْ عَنْ شَيْءٍ فَهَلْ أَنْتُمْ صَادِقِيَّ عَنْهُ فَقَالُوا نَعَمْ يَا أَبَا الْقَاسِمِ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ أَبُوكُمْ قَالُوا أَبُونَا فُلَانٌ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَذَبْتُمْ بَلْ أَبُوكُمْ فُلَانٌ فَقَالُوا صَدَقْتَ وَبَرِرْتَ فَقَالَ هَلْ أَنْتُمْ صَادِقِيَّ عَنْ شَيْءٍ إِنْ سَأَلْتُكُمْ عَنْهُ فَقَالُوا نَعَمْ يَا أَبَا الْقَاسِمِ وَإِنْ كَذَبْنَاكَ عَرَفْتَ كَذِبَنَا كَمَا عَرَفْتَهُ فِي أَبِينَا قَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ أَهْلُ النَّارِ فَقَالُوا نَكُونُ فِيهَا يَسِيرًا ثُمَّ تَخْلُفُونَنَا فِيهَا فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اخْسَئُوا فِيهَا وَاللهِ لَا نَخْلُفُكُمْ فِيهَا أَبَدًا ثُمَّ قَالَ لَهُمْ فَهَلْ أَنْتُمْ صَادِقِيَّ عَنْ شَيْءٍ إِنْ سَأَلْتُكُمْ عَنْهُ قَالُوا نَعَمْ فَقَالَ هَلْ جَعَلْتُمْ فِي هَذِهِ الشَّاةِ سَمًّا فَقَالُوا نَعَمْ فَقَالَ مَا حَمَلَكُمْ عَلَى ذَلِكَ فَقَالُوا أَرَدْنَا إِنْ كُنْتَ كَذَّابًا نَسْتَرِيحُ مِنْكَ وَإِنْ كُنْتَ نَبِيًّا لَمْ يَضُرَّكَ۔

तर्जमा: ''हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब ख़ैबर फ़तह हो गया, मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में बकरी का गोश्त पेश किया गया जिस में ज़हर था। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जितने यहां यहूदी हैं उन्हें मेरे पास बुलाओ। चुनान्चे उन्हें आपके सामने हाज़िर किया गया। हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने उन से फ़रमाया कि मैं तुम लोगों से एक बात पूछने वाला हूं,

क्या तुम मुझे सच सच बता दोगे? जवाब दियाः ऐ अबुल क़ासिम! हां। आपने उनसे फ़रमायाः तुम्हारा जद्दे आला कौन है? उन्होंने कहा हमारा बाप फुलां है। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः तुम ने झूट से काम लिया बल्कि तुम्हारा जद्दे आला फुलां है। वह कहने लगे आपने सच फ़रमाया और रास्त गोई से काम लिया। हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः अगर मैं तुम से एक बात पूछूं तो क्या मुझे सच सच बता दोगे? उन्होंने जवाब दिया ऐ अबुल क़ासिम! हां। अगर हम झूट बोलेंगे तो आप को उसी तरह पता लग जाएगा जैसे हमारे जद्दे आला के बारे में आप जान गए।

नबी करीम ﷺ ने फ़रमायाः कि यह बताओ दोज़ख़ी कौन है? उन्होंने कहा थोड़े दिन हम रहेंगे फिर हमारी जगह आप लोगा होंगे। हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः उस में ज़लील होने वालो! ख़ुदा की क़सम तुम्हारी जगह हम कभी नहीं जाएंगे। फिर आपने फ़रमायाः अगर मैं तुम से कोई बात पूछूं तो क्या सच सच बता दोगे? उन्होंने कहा हां। आपने फ़रमायाः क्या तुम ने इस बकरी में ज़हर मिलाया था? उन्होंने कहा हां। आपने फ़रमायाः तुम्हें ऐसा करने पर किस चीज़ ने आमादा किया? उन्होंने कहा हमने यह इरादा किया कि अगर आप झूटे हैं तो हमें आपसे नजात मिल जाएगी और अगर आप सच्चे नबी हैं तो आप को नुक़सान नहीं पहुंचेगा।''

एक और हवाला मुलाहिज़ा फ़रमाएंः

सीरत इब्ने हिशाम, जिल्द दोम, सफ़्हा 404

''जब रसूलुल्लाह ﷺ को इत्मिनान हो गया तो ज़ैनब बिन्ते हारिस जो सलाम बिन मुश्किम की बीवी थी, आप की ख़िदमत में एक भुनी हुई बकरी हदियतन पेश की। ज़ैनब पहले दरियाफ़्त कर चुकी थी कि हुज़ूर ﷺ को बकरी का कौन सा उज़्व ज़्यादा पसन्द है और उसे बताया जा चुका था कि आप को दस्त ज़्यादा पसन्द है। ज़ैनब ने यूं तो सारी बकरी में ज़हर मिलाया था मगर दस्त में ज़्यादा

मिला दिया। अब उसे लेकर आई, बकरी का गोश्त आपके सामने रखा गया और आपने दस्त उठा कर तनावुल फ़रमाया। पहला ही लुक़्मा चबा कर निगलना चाहा मगर निगल न सके। आपके साथ बिश्र बिन बरा बिन मअरूर भी शरीक थे। उन्होंने भी रसूलुल्लाह ﷺ की तरह एक लुक़्मा उठा कर खाया और निगल गए। मगर रसूले खुदा ﷺ ने उगल दिया और फ़रमायाः हड्डी बताती है कि गोश्त ज़हर आलूद है। फिर ज़ैनब को बुला कर पूछा तो उस ने एतेराफ़ कर लिया। रसूले अकरम ﷺ ने उससे पूछाः ما حملك على هذا۔ इस पर तुझे किस चीज़ ने आमादा किया? उस ने जवाब दिया आप मेरी क़ौम के सिलसिले में जिस हद तक पहुंच गए हैं वह आप पर मख़्फ़ी नहीं है। मैंने सोचा अगर आप बादशाह हैं तो आप को ज़हर से मार कर मुझे सुकून मिल जाएगा और अगर नबी हैं तो आप को बहरहाल मालूम हो जाएगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने उसे छोड़ दिया।''

अंग्रेज़ी का मन घड़त लेखः

क़ारईन! सहीह बुख़ारी के हवाले और सीरत इब्ने हिशाम के हवाले से वाज़ेह हो गया कि लानती वसीम रिज़वी की बातें झूटी हैं। उस ने अपनी झूटी बातें एक अंग्रेज़ी मज़मून जिस का उन्वान है ''आयशा अहमद'' उससे मुतास्सिर होकर लिखा है। जब वह मज़मून झूट पर मुन्हसिर है तो लानती वसीम रिज़वी ने भी उसी झूटी बुन्याद पर झूट का क़िला खड़ा कर दिया। आप भी मज़मून को मुलाहिज़ा करें। लानती वसीम रिज़वी किताब के सफ़्हा 63 पर लिखता है।

''यह लेख ''आयशा अहमद'' के अंग्रेज़ी लेख पर आधारित है।

पूरे यहूदी क़बीले के मर्दों को मार कर माल असबाब औरतों की लूट के बाद जब मोहम्मद को बताया गया कि ''सफ़िया'' नाम की तेज़ तर्रार जवान औरत कोई और अपने साथ ले जा रहा है जो ''आपके क़ाबिल'' है तो किसी और को सफ़िया के ले जाने का हुक्म

बदल दिया गया और सफ़िया हरम में शामिल की गई। सफ़िया ने खाने में ज़हर मिला दिया जिससे मोहम्मद की ऐसी तबियत बिगड़ी कि जिबरील से लेकर अल्लाह के तमाम फ़रिश्ते और तमाम जिन्नात, हकीम, झाड़-फूंक करने वाले हार गए और सफ़िया भोली सी होकर कहती रही कि ''अगर तुम सच्चे पैग़ंबर हो तो ज़हर से मरोगे नहीं और झूटे हो तो मेरे घर वालों की हत्या का बदला तुम्हारी मौत से ही चुकता है।''

यह है वह झूटा मज़मून जिस का हक़ीक़त से कोई तअल्लुक़ नहीं। पूरा मज़मून झूट पर मबनी है। इसी झूट के समुन्द्र में लानती वसीम रिज़वी ने ग़ोता लगा कर झूट की बारिश बरसाई है।

सहीह बुख़ारी के हवाले और सीरत इब्ने हिशाम के हवाले से इस अंग्रेज़ी मज़मून का जनाज़ा निकल गया।

अब मैं इस हदीस की रौशनी में लानती वसीम रिज़वी का झूट शुमार कराता हूं।

झूट नंबर 1:

ज़हर देने वाली का नाम सफ़ियह नहीं बल्कि ज़ैनब बिन्ते हारिस है जो सलाम बिन मुश्किम की बीवी थी।

झूट नंबर 2:

ज़हर ख़ुरानी के बाद हुज़ूर ﷺ ने किसी से न इलाज कराया न झाड़ फूंक कराया।

झूट नंबर 3:

ज़हर देने वाली हुज़ूर की बीवी नहीं थी।

झूट नंबर 4:

उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़ियह के घर वाले ज़िन्दा थे और आपके वालिद हुज़ूर ﷺ की बारगाह में हाज़िर हुए थे।

झूट नंबर 5:

सफ़ियह नादान सी होकर कहती रही।

झूट नंबर 6:

पैग़म्बर हो तो मरोगे नहीं।

झूट नंबर 7:

क़त्ल का बदला तुम्हारी मौत से ही हो सकता है।

यह तमाम बातें बुख़ारी और सीरत इब्ने हिशाम के हवाले से झूटी साबित हो गईं।

कौन सच्चा कौन झूटा:

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 82 पर लिखता है।

''आयशा मुहम्मद को झूटा मानती थी।''

इहयाउल उलूम का एक हवाला नक़्ल करता है ताकि मआज़ल्लाह हुज़ूर ﷺ को झूटा साबित किया जा सके। लानती वसीम रिज़वी लिखता है:

''एक बार किसी बात पर रसूल और आयशा में तकरार हो गई। और फ़ैसला करने के लिये आयशा ने अपने पिता अबू बकर को मुंसिफ़ बनाया। तब आयशा ने रसूल से कहा, बोलो तुम झूट नहीं बोलोगे और सिर्फ़ केवल सच ही कहोगे। इस पर अबू बकर ने आयशा को इतनी ज़ोर से थप्पड़ मारा कि उसके मुंह से ख़ून निकल आया।''

क़ारईन! लानती वसीम रिज़वी ने जो हुज़ूरे अक़दस ﷺ को झूटा साबित करने के लिये मज़मूम और नाकाम कोशिश की है, इस की हैसियत एक पानी के बुलबुले से ज़्यादा नहीं है। इस हक़ीक़त को जानने के लिये अस्ल हदीस अरबी मतन के साथ मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

जिस को इमाम ग़ज़ाली ने बयान किया। ख़तीबे बग़दाद ने अपनी तारीख़, तारीख़े बग़दाद (जिल्द नंबर 11, सफ़्हा 239, दारुल कुतुबुल इल्मिया, बैरूत लेबनान) में भी बयान किया है।

अस्ल हदीस अरबी मतन के साथ मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

"عن عائشة قالت كان بينى وبين رسول الله كلام اترضين بابى بكر قلت نعم فبعث اليه فجاء فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم اقض بينى وبين هذه قال انا يارسول الله؟ قال نعم فتكلم رسول الله صلى الله عليه وسلم فقلت له اقصد يارسول الله قالت فرفع ابوبكر يده فلطم وجهى لطمة بدر منها انفى ومنخر اى دما وقال لا ام لك فمن يقصد؟ واذا لم يقصد رسول الله صلى الله عليه وسلم۔"

तर्जमाः "हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है, आप फ़रमाती हैं कि मेरे और नबी करीम ﷺ के दरमियान कोई बात हो गई तो नबी करीम ﷺ ने कहाः तुम इस बात पर राज़ी हो कि फ़ैसला करने के लिये हज़रत अबू बकर को बुलाऊं, तो मैंने कहा हां! रसूले ख़ुदा ﷺ ने हज़रत अबू बकर को बुलवा भेजा। हज़रत अबू बकर तशरीफ़ लाए तो आपने कहा कि اقض بينى وبين هذه मेरे और आयशा के दरमियान फ़ैसला करो। हज़रत अबू बकर ने तअज्जुब से कहा انا يارسول الله؟ या रसूलल्लाह! मैं इन्साफ़ करूं? तो आपने फ़रमायाः हां। फिर हुज़ूर ﷺ ने गुफ़्तगू शुरू की। हज़रत आयशा ने कहा اقصد يارسول الله म्याना रवी इख़्तियार कीजियेगा, इस पर हज़रत अबू बकर ने हज़रत आयशा के चेहरे पर तमांचा मारा तो उन से ख़ून जारी हुआ और कहा فمن يقصد؟ اذا لم يقصد رسول الله صلى الله عليه وسلم۔

तर्जमाः "रसूले ख़ुदा ﷺ म्याना रवी इख़्तियार न करेंगे तो कौन करेगा?"

क़ारईन! हदीस के अरबी मतन से वाज़ेह हो गया कि लानती वसीम रिज़वी जो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की जानिब से हुज़ूर ﷺ को झूटा होने का इल्ज़ाम लगा रहा है सरासर बकवास और मन घड़त है। लानती वसीम रिज़वी की इबारत को एक बार और पढ़िये।

"कहो तुम झूट नहीं बोलोगे, सिर्फ़ सच ही बोलोगे।"

मैं पहले अल्फ़ाज़ की वज़ाहत करदूं, बाद में लानती वसीम रिज़वी की ख़बर लेता हूं।

हज़रत आयशा ने फ़रमायाः "اقصد یارسول الله" इस का मतलब होता है या रसूलल्लाह! म्याना रवी इख़्तियार कीजिये या एतेदाल बरतिये। "اقصد یارسول الله" का तर्जमा "कहो तुम झूट नहीं बोलोगे, सिर्फ़ सच ही बोलोगे।" करना कितनी बड़ी ख़्यानत और मक्कारी है। लानती वसीम रिज़वी इस में काफ़ी महारत रखता है।

सच और झूट के लिये अरबी में صدق और کذب का लफ़्ज़ आता है, पूरी इबारत में कहीं भी صدق और کذب का लफ़्ज़ नहीं आया है। तो फिर "सच और झूटा" का तर्जमा करना लानती वसीम रिज़वी की मक्कारी नहीं तो और क्या है?

अब मैं लानती वसीम रिज़वी से पूछना चाहता हूं जब अदालत में जज या वकील किसी से पूछते हैं कि जो तुम कहना सच कहना, सच के अलावा कुछ नहीं कहना, क्या इससे साबित होता है कि जज ने या वकील ने उस शख़्स को झूटा समझ लिया, कोई नहीं कहेगा कि जज ने या वकील ने उस को झूटा समझ लिया लेकिन लानती वसीम रिज़वी की दर्ज बाला ख़्यानत इस बात को ज़ाहिर करती है कि इस जैसा जाहिल उस शख़्स को झूटा समझेगा।

एक और हदीस मुलाहिज़ा कीजिये

तब्क़ात इब्ने सअद, जिल्द नंबर 8, सफ़्हा 95

"हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते है कि अल्लाह की क़सम! हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर ﷺ पर कभी झूट नहीं बांध सकतीं।"

इस गुफ़्तगू से यह साबित हो गया कि मआज़ल्लाह सौ बार मआज़ल्लाह हज़रत आयशा की गुफ़्तगू से हुज़ूर ﷺ का झूटा होना हरगिज़ साबित नहीं होता। हर आम व ख़्वास को यह बात

अच्छी तरह समझ में आ गई होगी।

हवस परस्ती का आरोपः

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा नंबर 75 में लिखता है किः

“मुहम्मद साहब की हवस की शिकार होने वाली पहली औरत का नाम “ख़ौला बिन्ते हकीम अल सलमिया” था। आगे लिखता हैः “ख़ौला मुहम्मद की माँ की बहिन यानि उनकी सगी मौसी (Maternal Aunt) थी। इसको मुहम्मद साहब ने अपना सहाबी बना दिया था। मदीना की हिजरत में मुहम्मद आयशा के साथ ख़ौला को भी ले गए थे। यह घटना उसी समय की है इस औरत ने अय्याशी के लिए ख़ुद को मुहम्मद के हवाले कर दिया था।”

इसके सुबूत के लिये लानती वसीम रिज़वी एक मन घड़त हदीस मुस्नदे अहमद के हवाले से लिखता है किः

“यह बात मुस्नद अहमद में इस प्रकार दी गयी है। “ख़ौला बिन्ते हकीम” ने रसूल से पूछा कि जिस औरत को सपने में ही स्खलन होने की बीमारी हो, तो वह औरत क्या करे, रसूल ने कहा उसे मेरे पास लेटना चाहिये। तब ख़ौला मुहम्मद साहब के पास सो गयी, और मुहम्मद साहब ने उसके साथ सम्भोग किया।” (मआज़ल्लाह सौ बार मआज़ल्लाह)

लानती वसीम रिज़वी की मन घड़त हदीस का पोस्ट मार्टमः

क़ारईन! अब आपके सामने लानती वसीम रिज़वी के मन घड़त हवाले, मन घड़त हदीस का पोस्ट मार्टम करता हूं ताकि लानती वसीम रिज़वी के झूट का नासूर आपके सामने वाज़ेह हो जाए।

सबसे पहला झूट तो यह है कि ख़ौलह बिन्ते हकीम अस्सलमियह

हुज़ूरे अक़दस ﷺ की हक़ीक़ी ख़ाला नहीं हैं जिसे मुल्ऊन वसीम रिज़वी ने (Maternal Aunt) लिखा है। हज़रत ख़ौलह का नसब ख़ौलह बिन्ते हकीम बिन उमय्यह बिन हारिसा है और हुज़ूरे अक़दस ﷺ की वालिदा का नाम आमिनह बिन्ते वहब बिन अब्दे मनाफ़ है जिन का तअल्लुक़ क़बीला बनू ज़ुहरा से था और ख़ौलह का तअल्लुक़ क़बीला सुलैम से था। फिर ख़ौलह हुज़ूर ﷺ की सगी ख़ाला कैसे हो सकती हैं? लानती वसीम रिज़वी की मन घड़त कहानी से ऐसा महसूस होता है कि उस की आंख में झूट की पट्टी बांध दी गई है।

लानती वसीम रिज़वी कितनी बेबाकी से कहता है ''मुहम्मद की हवस का निशाना बनने वाली पहली ख़ातून का नाम ख़ौलह बिन्ते हकीम अस्सलमियह है।

आइये सबसे पहले उसके हवाला की तरफ़ रुजूअ करते हैं जो उस ने मुस्नदे इमाम अहमद जिल्द 11, में मुस्नदुन्निसा, सफ़्हा नंबर 195, हदीस नंबर 27869 का दिया है।

حَدَّثَنَا عَبْدُاللهِ حَدَّثَنِي اَبِي حَدَّثَنَا أَبُو الْمُغِيْرَةِ قَالَ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِاللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ الْأَنْصَارِيُّ عَنْ جَدَّتِهِ أُمِّ سُلَيْمٍ قَالَتْ كَانَتْ مُجَاوِرَةً أُمِّ سَلَمَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَانَتْ تَدْخُلُ عَلَيْهَا فَدَخَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ يَارَسُوْلَ اللهِ أَرَأَيْتَ إِذَا رَأَتِ الْمَرْأَةُ أَنَّ زَوْجَهَا يُجَامِعُهَا فِي الْمَنَامِ أَتَغْتَسِلُ فَقَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ تَرِبَتْ يَدَاكِ يَاأُمَّ سُلَيْمٍ فَضَحْتِ النِّسَاءَ عِنْدَ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ إِنَّ اللهَ لَا يَسْتَحِي مِنَ الْحَقِّ وَإِنَّا إِنْ نَسْأَلِ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَمَّا أَشْكَلَ عَلَيْنَا خَيْرٌ مِنْ أَنْ نَكُوْنَ مِنْهُ عَلَى عَمْيَاءَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِأُمِّ سَلَمَةَ بَلْ أَنْتِ تَرِبَتْ يَدَاكِ نَعَمْ يَا أُمَّ

سُلَيۡمٍ عَلَيۡهَا الۡغُسۡلُ إِذَا وَجَدَتِ الۡمَاءِ فَقَالَتۡ أُمُّ سَلَمَةَ يَارَسُوۡلَ اللهِ وَهَلۡ لِلۡمَرۡأَةِ مَاءٌ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ فَأَنّٰى يُشۡبِهُهَا وَلَدُهَا هُنَّ شَقَائِقُ الرِّجَالِ۔

तर्जमाः हज़रत उम्मे सुलैम से मरवी है कि एक मर्तबा उन्होंने हुजूर ﷺ से पूछा कि अगर औरत भी उसी तरह ख़्वाब देखे जैसे मर्द देखता है तो क्या हुक्म है? नबी करीम ﷺ ने फ़रमायाः जो औरत ऐसा ख़्वाब देखे और उसे इंज़ाल हो जाए तो उसे ग़ुस्ल करना चाहिये। उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया, उम्मे सुलैम! तुम्हारे हाथ ख़ाक आलूद हों। तुम ने तो नबी के सामने सारी औरतों को रुस्वा किया। उम्मे सुलैम कहने लगीं, अल्लाह तआला हक़ बात से नहीं शर्माता, ख़ैर कोई बात मुश्तबह हो तो नबी से पूछ लेना हमारे नज़्दीक इसके मुतअल्लिक़ नावाक़िफ़ रहने से बेहतर है। नबी करीम ﷺ ने फ़रमायाः ऐ उम्मे सलमह! तुम्हारे हाथ ख़ाक आलूद हों। हां उम्मे सुलैम! अगर औरत ऐसा ख़्वाब देखे तो उस पर ग़ुस्ल वाजिब हो जाता है। हज़रत उम्मे सलमह ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! क्या औरत का भी पानी होता है? नबी करीम ﷺ ने फ़रमायाः बच्चा औरत के मुशाबह क्यों होता है? औरते मर्दों का जोड़ा हैं।”

मोहतरम क़ारईन! अब मैं लानती वसीम रिज़वी की ख़बर लेता हूं, जिस हदीस को उस ने ख़ौलह बिन्ते हकीम सलमियह की तरफ़ मन्सूब किया है वह हदीस उन से मरवी नहीं। मुस्नदे अहमद के मुस्नदुन्निसा के तहत यह हदीस उम्मे सुलैम से मरवी है। जब यह हदीस ख़त्म होती है तो ख़ौलह बिन्ते हकीम की हदीस शुरू होती है और ख़ौलह बिन्ते हकीम से कौन सी हदीस मरवी है वह भी आप मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

मुस्नदे इमाम अहमद जिल्द 11, मे मुस्नदुन्निसा के तहत हदीस

नंबर 27881

“عَنْ خَوْلَةَ قَالَتْ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ نَزَلَ مَنْزِلًا فَقَالَ أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ لَمْ يَضُرَّهُ شَيْءٌ حَتَّى يَظْعَنَ مِنْهُ۔”

तर्जमाः “हज़रत ख़ौलह से रिवायत है कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह फ़रमाते हुए सुना कि जो शख़्स किसी मक़ाम पर पड़ाव डाले और यह कलिमात कहेः أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ۔ तो उसे कोई चीज़ नुक़सान न पहुंचा सकेगी यहां तक कि वह उस जगह से कूच कर जाए।”

लानती वसीम रिज़वी का झूट मुलाहिज़ा कीजिये।

झूट नंबर 1ः

ख़ौलह बिन्ते हकीम पर हवस परस्ती का झूटा इल्ज़ाम लगाने में पहली ख़ातून क़रार दिया।

झूट नंबर 2ः

झूटा इल्ज़ाम लगाते हुए हुजूर ﷺ पर मअज़ल्लाह उन से हमबिस्तरी का इल्ज़ाम लगाया।

झूट नंबर 3ः

उम्मे सुलैम की हदीस को ख़ौलह बिन्ते हकीम की तरफ़ मन घड़त कहानी के साथ बयान कर दिया।

लानती वसीम रिज़वी को तो हुज़ूर पर झूटा इल्ज़ाम लगाना था इसलिये उस ने मन घड़त कहानी बयान कर दी।

मोहतरम क़ारईन! अब हदीस की अरबी मतन को बार बार पढ़िये और इस को समझिये कि क्या कहीं भी लिखा है कि हज़ूर ﷺ के साथ ख़ौलह सोई? या उम्मे सुलैम सोई? उनसे मुन्सलिक मन घड़त कहानी में लानती वसीम रिज़वी का झूट मुलाहिज़ा कीजिये।

झूट नंबर 1ः

हज़रत ख़ौलह हुज़ूर ﷺ की सगी ख़ाला नहीं थीं।

झूट नंबर 2:

जिस औरत को इंज़ाल की बीमारी हो।

झूट नंबर 3:

रसूल ने कहा उस को मेरे पास लेटना चाहिये।

झूट नंबर 4:

ख़ौलह हुज़ूर ﷺ के साथ सो गईं।

झूट नंबर 5:

हुज़ूर ﷺ ने ख़ौलह के साथ हमबिस्तरी की।

(मआज़ल्लाह सौ बार मआज़ल्लाह!)

सबसे बड़ा झूट तो यह है कि यह हदीस ख़ौलह बिन्ते हकीम की है ही नहीं। बल्कि उम्मे सुलैम की है और पूरी हदीस का मुतालिआ कीजिये तो लानती वसीम रिज़वी की यह मन घड़त बातें आप को नज़र आएंगी।

जब हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया, ऐसी औरत को क्या करना चाहिये? हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः "عليها الغسل" यानी उस को ग़ुस्ल करना चाहिये। झूटा लानती वसीम रिज़वी लिखता है कि रसूल ने कहाः मेरे साथ लेटना चाहिये। (मआज़ल्लाह)

यह हदीस मुस्नदे अहमद के अलावा सहीह बुख़ारी में भी है। इस हदीस को भी आप मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

सहीह बुख़ारी, जिल्द अव्वल, सफ़्हा 193, किताबुल ग़ुस्ल, हदीस नंबर 275

"حَدَّثَنَا عَبْدُاللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ أَنَّهَا قَالَتْ جَائَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ امْرَأَةُ أَبِي طَلْحَةَ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ فَقَالَتْ يَارَسُوْلَ اللهِ إِنَّ اللهَ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ هَلْ عَلَى الْمَرْأَةِ مِنْ غُسْلٍ إِذَا هِيَ احْتَلَمَتْ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَعَمْ إِذَا رَأَتِ الْمَاءَ۔"

तर्जमाः ''उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि अबू तल्हा की ज़ौजा उम्मे सुलैम रसूलुल्लाह ﷺ के पास आईं, अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह तआला हक़ बात बयान करने से नहीं शर्माता, जब औरत को एहतेलाम हो तो उसके लिये भी ग़ुस्ल ज़रूरी है? हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने फ़रमायाः हां! अगर पानी देखे।''

यही हदीस इमाम मुस्लिम ने भी रिवायत की है।

सहीह मुस्लिम, जिल्द अव्वल, सफ़्हा 271, किताबुल हैज़, हदीस नंबर 404

"حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ يُونُسَ الْحَنَفِيُّ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ قَالَ قَالَ إِسْحٰقُ بْنُ أَبِي طَلْحَةَ حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ قَالَ جَائَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ وَهِيَ جَدَّةُ إِسْحٰقَ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ لَهُ وَعَائِشَةُ عِنْدَهُ يَارَسُوْلَ اللهِ الْمَرْأَةُ تَرَى مَايَرَى الرَّجُلُ فِي الْمَنَامِ فَتَرَى مِنْ نَفْسِهَا مَايَرَى الرَّجُلُ مِنْ نَفْسِهِ فَقَالَتْ عَائِشَةُ يَاأُمَّ سُلَيْمٍ فَضَحْتِ النِّسَاءَ تَرِبَتْ يَمِيْنُكِ فَقَالَ لِعَائِشَةَ بَلْ أَنْتِ فَتَرِبَتْ يَمِيْنُكِ نَعَمْ فَلْتَغْتَسِلْ يَاأُمَّ سُلَيْمٍ إِذَا رَأَتْ ذَاكِ۔"

तर्जमाः ''हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि इस्हाक़ की दादी उम्मे सुलैम रसूले ख़ुदा ﷺ की ख़िदमत मे हाज़िर हुईं, उस वक़्त हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा भी हुज़ूर के पास बैठी हुई थीं। उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा, या रसूलल्लाह! अगर कोई औरत इस तरह ख़्वाब देखे जैसे मर्द ख़्वाब देखता है तो वह क्या करे? हज़रत

आयशा सिद्दीक़ा बोलीं, ऐ उम्मे सुलैम! तुम्हारे हाथ ख़ाक आलूद हों, तुम ने तो औरतों को शर्मिंदा कर दिया। रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा से फ़रमायाः बल्कि तुम्हारे हाथ ख़ाक आलूद हों। फिर उम्मे सुलैम से मुख़ातब होकर फ़रमायाः ऐ उम्मे सुलैम! जब औरत ऐसा ख़्वाब देखे तो उसे चाहिये कि ग़ुस्ल करे।''

मोहतरम क़ारईन! अब रोज़े रौशन की तरह अयां हो गया कि हज़रत ख़ौलह पर सरासर इल्ज़ाम है और हुज़ूर ﷺ पर मआज़ल्लाह झूटा इल्ज़ाम लगाया गया है। हदीस से इस का कोई तअल्लुक़ नहीं है। न मुस्नदे अहमद की हदीस में, न सहीह बुख़ारी की हदीस में, न सहीह मुस्लिम की हदीस में। यह सब लानती वसीम रिज़वी की मन घड़त बातें हैं।

लानती वसीम रिज़वी का मिर्च मसालाः

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 105 पर लिखता है:

''इस विषय से जुड़ा एक रोचक क़िस्सा है मोहम्मद द्वारा गोद लेने की प्रथा को रद्द किए जाने के बाद अबू हुजैफा और उसकी बीवी सहला मोहम्मद के पास आई। इन दोनों के पास भी सलीम नाम का एक दत्तक पुत्र था। सलीम अबू हुजैफा का मुक्त किया हुआ गुलाम था जिसे उसने दत्तक पुत्र बना लिया था। सहला ने मोहम्मद से कहा ए रसूल सलीम मेरे साथ हमारे घर में रह रहा है, वह जवान मर्द हो गया है और यौन संबन्धित समस्याओं को समझने लगा है। मोहम्मद ने एक होशियारी भरा जवाब देते हुए कहा उसे अपने स्तन से दूध पिलाओ। इस जवाब से सहला हक्का बक्का हो गई और पूछा उसे कैसे दूध पिला सकती हूं वह बड़ा हो गया है। मोहम्मद मुस्कुराए और बोले हां मैं जानता हूं कि वह जवान मर्द है वास्तव में सलीम काफ़ी बड़ा था और उसने बद्र की जंग में भाग भी

लिया था। एक और हदीस कहती है कि मोहम्मद सहला की बात सुनकर ज़ोर से हंसा। मोहम्मद ने यह बात इसलिये कही कि यह सहला अगर सलीम को अपने स्तन से दूध पिलाती तो दत्तक पुत्र का रिश्ता ख़त्म हो जाता क्योंकि सलीम एक जवान मर्द था।''

मोहतरम क़ारईन! लानती वसीम रिज़वी की बकवास भरी कहानी आपने मुलाहिज़ा फ़रमाई, उस ने कोई हवाला भी नहीं दिया। हक़ीक़त क्या है? वाक़िआ क्या है? अस्ल हदीस अरबी मतन के साथ आपके सामने पेश करता हूं ताकि लानती वसीम रिज़वी का झूट बिल्कुल ज़ाहिर हो जाए और आप जान जाएं कि लानती वसीम रिज़वी कितना बड़ा झूटा है।

लानती वसीम रिज़वी ने तो वाक़िआ बयान कर दिया लेकिन कोई हवाला नहीं दिया। अब मैं आपके सामने हवाला पेश करता हूं।

अबू दाऊद, जिल्द दोम, सफ़्हा 115, किताबुन निकाह, हदीस नंबर 293

''فَجَاءَتْ سَهْلَةُ بِنْتُ سُهَيْلِ بْنِ عَمْرٍو الْقُرَشِيِّ، ثُمَّ الْعَامِرِيِّ، وَهِيَ امْرَأَةُ أَبِي حُذَيْفَةَ، فَقَالَتْ يَارَسُوْلَ اللهِ إِنَّا كُنَّا نَرَى سَالِمًا وَلَدًا، وَكَانَ يَأْوِي مَعِي وَمَعَ أَبِي حُذَيْفَةَ فِي بَيْتٍ وَاحِدٍ، وَيَرَانِي فُضُلًا، وَقَدْ أَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ فِيهِمْ مَا قَدْ عَلِمْتَ، فَكَيْفَ تَرَى فِيهِ؟ فَقَالَ لَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرْضِعِيهِ، فَأَرْضَعَتْهُ خَمْسَ رَضَعَاتٍ۔''

तर्जमाः तो सहलह बिन्ते सुहैल इब्ने अम्र क़रशी आमिरी ने जो हज़रत अबू हुज़ैफ़ा की बीवी थीं, हुज़ूरे अक़दस ﷺ की बारगाह में हाज़िर होकर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम सालिम को अपना बेटा समझते थे। वह मेरे और हज़रत अबू हुज़ैफ़ा के साथ एक मकान में रहता है, वह मुझे घरेलू हालत में देखता है, अल्लाह तआला ने उसके बारे में हुक्म नाज़िल फ़रमा दिया जो हुज़ूर ﷺ को बख़ूबी मालूम है। लिहाज़ा उसके बारे में आप क्या फ़रमाते हैं?

नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः उसे दूध पिला दो तो उन्होंने पांच घूंट दूध पिलाया।''

एक और हवाला मुलाहिज़ा फ़रमाएं ताकि मैं लानती वसीम रिज़वी के दिलचस्प झूट का पर्दा चाक कर सकूं।

तब्क़ात इब्ने सअद, जिल्द 8, सफ़्हा 349

''यज़ीद बिन हारून, उन को ख़बर दी अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी सलमुज़्ज़हरी ने कहा हज़रत सहलह ने हुज़ूरे अक़दस ﷺ से अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! हम सालिम को अपना बेटा समझते हैं, वह हमारे घर आते जाते हैं, मैं काम काज के कपड़ों में होती हूं और वह मुझे उसी हाल में देखते हैं। हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः तुम उसे पांच घूंट दूध पिला दो, अब वह बे-खटक तुम्हारे घर आ जा सकता है।''

तब्क़ात इब्ने सअद, जिल्द 8, सफ़्हा 349, 350 में है कि

''ख़बर दी मुहम्मद बिन उमर ने, उन से हदीस बयान की मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने, वह अपने वालिद से बयान करते हैं कि हज़रत सहलह एक बर्तन में अपना एक घूंट दूध निकाल दिया करती थीं और सालिम उसे पी लिया करते थे, इसी तरह पांच दिन पीते रहे, फिर सालिम उनके पास आते जाते थे हालांकि उनके सर पर दुपट्टा नहीं होता था। यह रसूल ﷺ की तरफ़ से हज़रत सहलह को रुख़्सत दी गई थी।''

मोहतरम क़ारईन! अबू दाऊद और तब्क़ात इब्ने सअद के हवाला से पूरा वाक़िआ आपके ज़हन में आ गया कि हक़ीक़त क्या है और आप लानती वसीम रिज़वी की झूटी बकवास को भी समझ गए हैं।

लानती वसीम रिज़वी की झूटी बातों को अब मैं शुमार कराता हूं।

झूट नंबर 1:

जिन्सी तअल्लुक़ को समझने लगा है।

झूट नंबर 2:

मुहम्मद ने होशियारी भरा जवाब दिया।

झूट नंबर 3ः

अपने पिस्तान से दूध पिलाओ।

झूट नंबर 4ः

सहलह यह सुन कर हैरान हो गई।

झूट नंबर 5ः

मुहम्मद सहलह की बात सुन कर ज़ोर से हंसा।

झूट नंबर 6ः

पिस्तान से दूध पिलाई तो ले-पालक का रिश्ता ख़त्म हो जाता है।

क़ारईन पर वाज़ेह हो गया कि अबू दाऊद और तब्क़ात इब्ने सअद में कहीं भी यह सब बातें नहीं हैं।

झूटा लानती वसीम रिज़वी लिखता हैः

''अपने पिस्तान से दूध पिलाओ।''

हदीस के अरबी मतन मुलाहिज़ा फ़रमाएं فارضعته خمس رضعات. अरबी में رضع मुतलक़ दूध पिलाने को कहते हैं। अगर दूध निकाल कर किसी बर्तन के ज़रिया पिलाया जाए तो उस को भी رضع कहते हैं خمس رضعات से वाज़ेह हो गया कि पांच घूंट दूध पिलाया जैसा कि इब्ने सअद ने बयान किया है। इसके बावुजूद यह कहना कि अपने पिस्तान से पिलाया, बहुत बड़ा और झूटा इल्ज़ाम है, यह सिर्फ़ और सिर्फ़ मन घड़त कहानी है। यह भी झूट है कि दूध पिलाना, ले-पालक बेटे के रिश्ते को ख़त्म करने के लिये था। बल्कि पर्दे का हुक्म नाज़िल हुआ इसलिये दूध पिलाने को कहा और वह ख़ास कर हज़रत सहलह के लिये था कि सालिम की रज़ाई मां हो जाए और पर्दे को जो मस्अला है वह हल हो जाए।

जब किसी को कहा जाए कि दूध पिलाओ तो यह कहां साबित होता है कि पिस्तान से पिलाया जाए। उस को निकाल कर बर्तन और बोतल के ज़रिया भी पिलाया जाता है। अभी दूध बैंक का भी

निज़ाम क़ायम हो गया है। औरतें वहां दूध इकट्ठा करती हैं और उस में से ज़रूरत मन्द बच्चों को दिया जाता है। अगर कहा जाए कि उन बच्चों को मुख़्तलिफ़ औरतों का दूध पिलाया गया है क्या इस का मतलब यह होता है कि उन बच्चों ने अपना मुंह उन औरतों की पिस्तान से लगा कर दूध पिया है? नहीं और हरगिज़ नहीं! दौरे हाज़िर में घर बार और बच्चों की देख भाल के लिये मुलाज़िमा रखी जाती है। वक़्त पर मुलाज़िमा बच्चों को नहलाती है, खाना खिलाती है, नाश्ता कराती है, दूध पिलाती है। क्या दूध पिलाने से कोई आदमी यह समझेगा कि मुलाज़िमा ने उन बच्चों को अपने पिस्तान से दूध पिलाया है? नहीं हरगिज़ नहीं!

लेकिन लानती वसीम रिज़वी जैसा बे-अक़्ल कम-ज़र्फ़ और झूटा ज़रूर समझेगा कि मुलाज़िमा ने अपने पिस्तान से दूध पिलाया है।

चश्मा के पीछे सेः

लानती वसीम रिज़वी झूट का एक और पटाख़ा फोड़ता है और उस का यह झूट हिमालय पर्बत से भी बड़ा है। क़ारईन! पहले उस की बकवास, मन घड़त और झूटी इबारत को मुलाहिज़ा फ़रमाएं, फिर मैं तारीख़ के हवाले से सहीह वाक़िआ पेश करता हूं, इसके बाद लानती वसीम रिज़वी के झूट को शुमार कराता हूं।

लानती वसीम रिज़वी अपनी पुस्तक के सफ़्हा 143 पर ''हुनैन का बलात्कार कांड'' के उन्वान के तहत लिखता हैः

> ''मक्का और तायफ़ के बीच में एक घाटी थी, जिसमें ''हवाजीन'' नाम का एक बद्दू क़बीला रहता था। जो क़ुरैश का ही हिस्सा था। इस क़बीले की औरतें भी मेहनती होने के कारण स्वस्थ थीं। और उन औरतों के स्तन उभरे हुए थे। मुहम्मद ने उन पर हम्ला करने के लिए बहाना निकाला कि यह

लोग काफ़िर हैं। लेकिन मुहम्मद और उनके अय्याश साथियों की नज़र हवाज़िन क़बीले की औरतों पर थी। इसी लिए रात में ही हमला कर दिया। चूंकि यह कांड हुनैन नाम की सकरी घाटी में हुआ था। जिस से बाहर निकलना कठिन था, इसलिए बद्दू लोग हार गए। इतिहासकार इब्ने इशाक़ के अनुसार इस्लाम में हुनैन की जंग का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि इस लड़ाई के बाद ही मुसलमानों को युद्ध में या कहीं से भी पकड़ी गयी औरतों के साथ सम्भोग करने का अधिकार प्राप्त हो गया। हालांकि मुसलमान हुनैन की इस लड़ाई को युद्ध कहते हैं।

लेकिन इसे युद्ध कहना ठीक नहीं होगा, क्योंकि एक तरफ़ से मुहम्मद के 12 हज़ार प्रशिक्षित हथियारधारी लुटेरे थे तो दूसरी तरफ़ से 6 हज़ार साधारण बद्दू थे, जिनमें औरतें, बूढ़े, बीमार और बच्चे भी थे। यह घटना इस्लामी महीने शव्वाल की 10 तारीख़ हिजरी सन 8 में हुई थी, यानी ईसवी सन 630 की बात है। इब्ने इशाक़ के अनुसार इस युद्ध में कोई धन नहीं मिला था लेकिन 6000 औरतें पकड़ी गयी थीं।"

मोहतरम क़ारईन! यह था लानती वसीम रिज़वी का बकवास भरा वाक़िआ झूट पर मबनी क़िस्सा जो आपने मुलाहिज़ा किया, ऐसी झूटी बातें सुनकर इन्साफ़ पसन्द इन्सान उस पर सौ बार लअनत भेजेगा।

सबसे पहले मैं मुअर्रिख़ इब्ने इस्हाक़ के हवाले से हुनैन का पूरा वाक़िआ आपके सामने पेश करता हूं ताकि झूट का बादल छट जाए और दूध का दूध और पानी का पानी हो जाए और लानती वसीम

रिज़वी की मक्कारी वाज़ेह हो जाए। इसके बाद लानती वसीम रिज़वी के झूट को शुमार कराऊंगा। मुअर्रिख़ इब्ने इस्हाक़ ने ग़ज़वए हुनैन को तफ़सील से लिखा है। ग़ज़वए हुनैन के उन्वान से सफ़्हा 670 पर लिखते हैं।

> ''फ़तहे मक्का के बाद कुरैशे मक्का नबी करीम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के फ़रमां बरदार हो गए। अरब का मशहूर बड़ा और मुनज़्ज़म क़बीला हवाज़न जो अब तक ताबेअ इस्लाम नहीं हुआ था, यह क़बीला अपनी मर्दानगी और बहादुरी की वजह से शोहरत रखता था। उस का सरदार मालिक बिन औफ़ नसरी था। जब उस को ख़बर लगी कि मक्का और अतराफ़े मक्का हुज़ूर صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم का फ़रमां बरदार हो गया है तो सोचने लगा कि मुहम्मद (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) के हम्ला करने से पहले हमें उस पर हम्ला कर देना चाहिये। इसके लिये उन्होंने अपने क़बीला के लोगों को जमा किया और उनके अलावा मुल्के यमन के मुल्हिक़ा इलाक़ों के उन लोगों को जमा किया जो क़बीला हवाज़न के हलीफ़ और मुआहिद थे। उन से मदद की दरख़्वास्त करके साथ मिला लिया। इस तरह उस ने एक लशकरे जर्रार तय्यार किया, जिनके लिये साज़ व सामान इकट्ठा किया और नबी अलैहिस्सलाम के साथ जंग की तय्यारी की। इस मौक़ा पर उस ने अपने क़बीला के लोगों से कहा वह अपने साथ साथ माल व मनाल ले लें, औरतों और बच्चों को साथ रखें।
>
> उस लशकर के साथ एक और क़बीला का सरदार दुरैद बिन सुम्मह भी था हालांकि वह काफ़ी ज़ईफ़ और कमज़ोर हो चुका था लेकिन वह जंगी उमूर का

माहिर था, बहुत से मअरके देखे थे, उसके लिये ऊंट पर मुहाफ़ह रखा गया और उसके तजर्बात से फ़ायदा उठाने के लिये उस को साथ ले लिया गया। दुरैद को यह मालूम न था कि मालिक बिन औफ़ ने अपने क़बीले के लोगों को यह हुक्म दिया है कि वह अपनी औरतों और बच्चों और माल को साथ रखें। यह लशकर सफ़र करता हुआ "औतास" पहुंचा और यहां क़याम पज़ीर हुआ तो दुरैद बिन सुम्मह ने मालूम किया कि यह कौन सी जगह है। जब उस को बताया गया कि यह वादी औतास है तो दुरैद ने कहा बहुत अच्छी जगह है, जहां की ज़मीन न तो बहुत सख़्त है जहां घोड़ों को दौड़ने में दुशवारी हो और न इतनी नर्म कि सवारियों के पैर धंसने लगें। बाद में जब दुरैद बिन सुम्मह ने लशकर में बकरियों, दूसरे जानवरों, औरतों और बच्चों की आवाज़ें सुनीं तो उन से कहा कि यह माल, औरतें और बच्चे क्यों साथ हैं? और कौन साथ लाया है? तो दुरैद बिन सुम्मह को बताया गया कि मालिक बिन औफ़ ने क़बीला हवाज़न के लोगों को हुक्म दिया था कि साज़ व सामान के अलावा औरतों और बच्चों को भी साथ लिया जाए। यह सुन कर दुरैद ने कहा, मालिक बिन औफ़ कहां है? उस को बुलाओ, चूंकि दुरैद को मुआशरा में इज़्ज़त व एहतेराम के साथ देखा जाता था, उस की राए को एहतेराम के साथ कुबूल किया जाता था इसलिये उस का बात को अहमियत दी गई और लोगों ने जाकर मालिक बिन औफ़ से कहा कि दुरैद ने तुम्हें बुलाया

है। चुनान्चे मालिक बिन औफ़ ने दुरैद से आकर कहा आपने मुझे क्यों बुलाया है? तो दुरैद ने कहा, ऐ मालिक! तुझे यह क्या सूझी थी कि तू औरतों, बच्चों और जानवरों के रेवड़ तक साथ ले आया है। औरतों और बच्चों को मुसबत में डाला। मालिक बिन औफ़ ने कहा, ऐसा मैंने इसलिये किया है ताकि जंग के दौरान मेरे क़बीले हवाज़न के लोग अपनी औरतों, बच्चों, माल व अस्बाब की हिफ़ाज़त की ख़ातिर दिल-जमई और बहादुरी से लड़ें। और लड़ाई के दरमियान अपनी पीठ न दिखाएं और न मुंह फेर कर भागें। यह सुन कर दुरैद बिन सुम्मह ने उसके मुंह पर तमांचा मारा और कहा कि तू इस लायक़ है कि जानवरों का रेवड़ चराए न कि लोगों की सरदारी करे। मालिक बिन औफ़ ने कहा क्यों? तो दुरैद ने कहा इसलिये कि जिस काम के लिये हम निकले हैं यह दो हाल से ख़ाली नहीं और इन दोनों हालत में नतीजा यह निकलेगा, अगर फ़तह होगी तो मर्दों की तलवार की वजह से होगी न कि यह भीड़ भाड़ की वजह से। अगर शिकस्त हुई तो उस मौक़ा पर मर्द तो भाग कर अपनी जानें बचा लेंगे और तेरा यह साज़ व सामान दुशमन के हाथ लगेगा, औरतें और बच्चे उन के रहम व करम पर होंगे, इससे ज़्यादा ज़िल्लत व रुस्वाई क्या होगी।

मालिक बिन औफ़ निहायत ही मग़रूर और मुतकब्बिर था और अपनी बहादुरी पर नाज़ां था। वह लोगों से कहने लगा कि दुरैद बिन सुम्मह ने ख़ौफ़-ज़दा होकर यह बात कही है, उस पर तवज्जुह

देने की ज़रूरत नहीं है। क़बीला हवाज़न के लोगों को मालिक बिन औफ़ की बात ग़लत मालूम हुई और वह दुरैद के मशवरा पर अमल करने के क़ायल हो गए। बच्चों और औरतों को साथ लाने की ग़लती का एतेराफ़ करने लगे। मालिक बिन औफ़ ने जब यह महसूस किया कि हवाज़न के लोगों को अपनी ग़लती का एहसास हो गया है और वह माल व अस्बाब, औरतो और बच्चों को वापस करने के बारे में सोच रहे हैं तो उस ने अपने क़बीले के लोगों को बुलाया, तलवार हाथ में लेकर कहा, अगर तुम मेरी इताअत करो और मेरे कहने पर अमल करो तो ठीक है वरना मैं अपनी तलवार अपने सीने पर मार लूंगा और ख़ुद को हलाक कर लूंगा। जब हवाज़न के लोगों ने यह बात सुनी तो वह मरऊब होकर कहने लगे जो तुम्हारा हुक्म होगा उस पर अमल किया जाएगा। जब वहां से रवाना हुए तो लशकर के साथ माल व मनाल, औरतें और बच्चे भी थे। रवानगी के वक़्त मालिक बिन औफ़ ने लशकर से कहा, जब तुम मुहम्मद (ﷺ) के लशकर को देखो तो तलवारें नियाम से निकाल कर उनके प्रचम को फाड़ देना और इस्लामी लशकर पर अचानक हम्ला कर देना।

जब नबी करीम ﷺ को ख़बर मिली कि मालिक बिन औफ़ हवाज़न के साथ जंग के इरादे से निकला है तो आपने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी हदरद असलमी से फ़रमाया कि वह क़बीला हवाज़न के लशकर में जाकर हालात का जाइज़ा लें, उनके इरादों

और तादाद का अंदाज़ा लगाएं और सारी बातें आकर बताएं। चुनान्चे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी हदरद ने हवाज़न के लशकर में जाकर तमाम हालात का जाइज़ा लिया और नबी करीम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم से आकर उन को बयान किया।

फ़तहे मक्का के मौक़ा पर इस्लामी लशकर की तादाद दस हज़ार थी और दो हज़ार का इज़ाफ़ फ़तहे मक्का के बाद हुआ। अब इस्लामी लशकरों की तादाद बारह हज़ार थी, लिहाज़ा उस बारह हज़ार लशकर के साथ आप मक्का मुकर्रमा से हवाज़न के मुक़ाबला के लिये रवाना हुए। मक्का मुकर्रमा में इन्तिज़ामी उमूर की निगरानी के लिये हज़रत इताब बिन उसैद को मुक़र्रर फ़रमाया।

सफ़वान बिन उमय्यह मक्का के साहूकारों में से था। वह मुख़्तलिफ़ चीज़ें लोगों को उधार दिया करता था। उसके पास बहुत सामाने जंग था, ज़िरहों का ज़ख़ीरा था। चुनान्चे नबी करीम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने एक सहाबी को उसके पास भेजा ताकि उससे चन्द ज़िरहें ले आ सकें। चूंकि सफ़वान अब तक मुसलमान नहीं हुआ था, उस ने सोचा कि यह ज़िरहें वापस न होंगी। उस ने हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास आकर अर्ज़ किया, या मुहम्मद (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم)! यह ज़िरहें उधार ली जा रही हैं? या ज़बरदस्ती ली जा रही हैं? हुज़ूर صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फ़रमाया कि बतौर उधार ली जा रही हैं, उन की वापसी की ज़िम्मादारी हमारी है, अगर वह ज़ाए हुईं तो हम उस का तावान अदा करेंगे।

जब नबी करीम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم रवाना हुए तो रात दिन

सफ़र करते हुए वादी हुनैन के क़रीब पहुंचे, वह यहां से भी आगे गुज़रना चाहते थे लेकिन वाक़िआ इस तरह पेश आया।

वादी हुनैन में महफ़ूज़ पनाहगाहें थीं। हवाज़न के लोगों को मालूम था कि इस्लामी लशकर की गुज़रगाह यह वादी है। इसलिये उन्होंने अपने फ़ौजियों को यहां छुपा दिया। न तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इस नुक्ता की जानिब तवज्जुह फ़रमाई, न इस्लामी लशकरों को इस का एहसास हुआ, यह निहायत इत्मिनान से वादी की जानिब चलते रहे।

सुबह के क़रीब जब वादी में उस जगह पहुंचे जहां यह लोग छुपे बैठे थे तो यह अपनी जगह से बाहर निकले और इस्लामी लशकर पर हम्ला आवर हुए। इस्लामी लशकर इस नाकहानी हम्ला से घबरा गए और अपनी हिफ़ाज़त की ख़ातिर जिधर मौक़ा मिला भाग गए। जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह मंज़र देखा तो दायां हाथ बुलन्द करके लोगों को मुतवज्जह किया और फ़रमायाः लोगो! मेरे पास आओ मैं अल्लाह का रसूल और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हूं लेकिन उन बदहवास लशकरियों ने एक न सुनी। इस मौक़ा पर अन्सार और मुहाजिरीन में से चन्द जां-निसारों ने साबित क़दमी का सुबूत दिया। उस में हज़रत अबू बकर, उमर, अली, अब्बास, अबू सुफ़यान बिन हारिस, रबीअह बिन हारिस, उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम शामिल हैं। इस्लामी लशकर जो बारह हज़ार अफ़राद पर मुश्तमल था सब अफ़रा तफ़री का शिकार हो

गया और यह इस्लामी लशकर जब शिकस्त से दोचार हुआ तो नौ-मुस्लिम सरदाराने कुरैश जो नबी करीम ﷺ के साथ ग़ज़वए हुनैन में शिरकत के लिये आए थे और उनके साथ कुछ ऐसे लोग भी थे जो अभी इस्लाम कुबूल नहीं किये थे, उन्होंने मुसलमानों पर लअन तअन शुरू कर दिया। उस मौक़ा पर अबू सुफ़यान बिन हरब ने कहा "यह वह मौक़ा है कि मुहम्मद (ﷺ) के साथी इस शिकस्त के बाद समुन्द्र में भी पनाह नहीं पाएंगे।

हवाज़न के लोग महफ़ूज़ पनाहगाह में थे और इस्लामी लशकर बिखर चुका था और मुसलमान तक़रीबन शिकस्त खा चुके थे।

जंगे हुनैन के दिन नबी करीम ﷺ सब्ज़ घोड़े पर सवार थे। जब नबी ﷺ ने मुसलमान फ़ौजियों को बुलाया, अफ़रा तफ़री के सबब किसी ने आप की आवाज़ न सुनी और वापस न हुए तो आपने हज़रत अब्बास से फ़रमायाः आप बुलन्द आवाज़ हैं इसलिये आप अस्हाबे समुरह और अन्सार को पुकारें। चुनान्चे जब हज़रत अब्बास ने अस्हाबे समुरह और अन्सार को पुकारा तो वह लब्बैक लब्बैक कहते हुए उस आवाज़ की तरफ़ लपके। इस तरह अन्सार के सौ अफ़राद नबी ﷺ के गिर्द जमा हो गए और यह सौ जांबाज़ उन जां-निसारों में शामिल हो गए जो पहले से नबी ﷺ के साथ मौजूद थे। अब अन्सारे मदीना मैदाने जंग में कूद पड़े। नबी ﷺ ने एक टीले से मैदाने जंग का हाल देख कर फ़रमायाः अब जंग शिद्दत में है।

क़बीला हवाज़न के काफ़िरों में एक शख़्स बहादुर और बहुत मशहूर था, उसके हाथ में स्याह परचम था, जिस में वह नेज़ा छुपाए हुए था। यह शख़्स काफ़िरों के लशकर के आगे आगे था, जो मुसलमान आगे बढ़ता उस को नेज़े से रोक देता, मुसलमानों को उस ने बहुत नुक़सान पहुंचाया। जब हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहू ने उस की जंगी हिकमते अमली देखी तो ख़ुद आगे बढ़े, तलवार से हम्ला करके उस को घोड़े से गिराया और क़त्ल कर दिया। जब यह काफ़िर क़त्ल हुआ तो मुसलमानों ने इज्तिमाई हम्ला करके काफ़िरों के क़दम उखाड़ दिये। जब काफ़िर मुक़ाबला से भाग गए तो मुसलमानों ने उन का तआक़ुब किया, बाज़ मारे गए, बाज़ क़ैद किये गए। अभी तक तमाम मफ़रूर क़त्ल और क़ैदी न बनाए गए थे। फिर भी एक हज़ार मर्दों को मुसलमानों ने क़ैदी बना लिया और उन्हें नबी करीम ﷺ की बारगाह में पेश किया।

जब काफ़िर शिकस्त से दोचार हुए तो हर क़बीला के लोग जिधर मुंह उठा भागने लगे। मालिक बिन औफ़ ने भागते हुए ताइफ़ का रुख़ किया, नबी करीम ﷺ ने उनके तआक़ुब में दस्ता रवाना किया।

जिन दस्तों को नबी करीम ﷺ ने अतराफ़ में भागे हुए लशकरों के तआक़ुब में रवाना किया था, जब उन दस्तों की वापसी हुई तो उनके साथ क़ैदी और माले ग़नीमत थे। नबी करीम ﷺ ने उन सब को मक़ामे जेअरानह में रोका, उन की निगरानी

की ज़िम्मादारी हज़रत मसऊद बिन अम्र ग़िफ़ारी के सिपुर्द फ़रमाई और ख़ुद मक्का वापस तशरीफ़ ले गए।

ग़ज़वए हुनैन में चार मुसलमान शहीद हुए। ग़ज़वए हुनैन की वापसी में नबी करीम ﷺ ने एक औरत की लाश को देख कर कहा कि इस को किस ने क़त्ल किया है? तो आप को बताया गया कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ने। नबी करीम ﷺ ने फ़रमायाः ख़ालिद से कहो! अल्लाह के रसूल का हुक्म है कि काफ़िरों की औरतों, बच्चों और मअज़ूरों को क़त्ल न किया जाए।''

मोहतरम क़ारईन! आपने मुअर्रिख़ इब्ने इस्हाक़ की ज़बानी उन की सीरत इब्ने इस्हाक़ के हवाले से ग़ज़वए हुनैन का वाक़िआ समाअत फ़रमाया। इस को बार बार पढ़िये और ग़ौर कीजिये कि लानती वसीम रिज़वी ने मुअर्रिख़ इब्ने इस्हाक़ पर कितनी बुहतान तराशी की है और जो बात उन्होंने नहीं कही उस को भी अपनी तरफ़ से उन की तरफ़ मन्सूब कर दिया है। इसलिये ग़ज़वए हुनैन का पूरा वाक़िआ बयान कर दिया ताकि लानती वसीम रिज़वी की मक्कारी और झूट आप पर अयां हो जाए।

अब मैं लानती वसीम रिज़वी के झूट को मुअर्रिख़ इब्ने इस्हाक़ के हवाला से शुमार कराता हूं, मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

झूट नंबर 1ः

''एक बद्दू क़बीला हवाज़न रहता था।''

यह क़बीला बद्दू नहीं बल्कि बहुत बहादुर था जैसा कि इब्ने इस्हाक़ ने लिखा है।

झूट नंबर 2ः

''क़बीले की औरतें मेहनती होने की वजह से सेहतमन्द भी थीं।''

झूट नंबर 3ः

“मुहम्मद ने उन पर हम्ला करने के लिये बहाना निकाला कि यह काफ़िर हैं।”

झूट नंबर 4ः

“मुहम्मद और उनके अय्याश साथियों की नज़र हवाज़न क़बीले की औरतों पर थी।”

झूट नंबर 5ः

“इसलिये रात को ही हमला कर दिया।”

झूट नंबर 6ः

“इसलिये बद्दू शिकस्त खा गए।”

झूट नंबर 7ः

“इस जंग के बाद ही मुसलमानों को जंग में या किसी भी जगह पकड़ी गई ख़्वातीन के साथ जिन्सी तअल्लुक़ात की इजाज़त मिल गई।”

झूट नंबर 8ः

“दूसरी तरफ़ छे हज़ार आम बद्दू थे जिस में औरतें, बीमार और बच्चे थे।”

झूट नंबर 9ः

“इब्ने इस्हाक़ के मुताबिक़ इस जंग में माल व ज़र हासिल न हुआ।”

झूट नंबर 10ः

“मुहम्मद के बारह हज़ार तर्बियत याफ़्ता मुसल्लह डाकू थे।”

मोहतरम क़ारईन! अब आइये लानती वसीम रिज़वी के झूट का तारीख़ इब्ने इस्हाक़ के हवाला से पोस्ट मार्टम करता हूं क्योंकि उस ने मुअर्रिख़ इब्ने इस्हाक़ का हवाला दिया है।

झूट नंबर 1ः

“एक बद्दू क़बीला हवाज़न रहता था।”

बद्दू कहते हैं ख़ाना बदोश को जो जंग में माहिर नहीं होता है, उस में जंगजू बहादुर अफ़राद नहीं होते हैं। बद्दू कह कर लानती वसीम रिज़्वी उन को भोले भाले साबित करना चाहता है। जबकि दुरैद बिन सुम्मह जंगी उमूर का माहिर था और उस क़बीले का सरदार मालिक बिन औफ़ निहायत ही मग़रूर व मुतकब्बिर और बहादुर था।

झूट नंबर 2:

"क़बीले की औरतें मेहनती होने की वजह से सेहत मन्द थीं।"

मुअर्रिख़ इब्ने इस्हाक़ ने हवाज़न क़बीले की औरतों के तअल्लुक़ से कुछ नहीं लिखा है कि उन का मश्ग़ला क्या था? वह क्या काम करती थीं? उनके ज़िम्मा क्या काम था? या वह मेहनती थीं लेकिन लानती वसीम रिज़्वी ने यह बातें मन घड़त बयान कर दीं।

झूट नंबर 3:

"मुहम्मद ने उन पर हम्ला करने के लिये बहाना निकाला कि यह काफ़िर हैं।"

आपने हुनैन के पूरे वाक़िआ को मुतालिआ कर लिया कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने कोई बहाना नहीं किया बल्कि जब पता चला कि औफ़ बिन मालिक इस्लामी लशकर पर हम्ला करने की तय्यारी कर रहा है तो हुज़ूर ﷺ अपने दिफ़ाअ के लिये रवाना हुए। क्या अपना दिफ़ाअ करना जुर्म है? हर इन्सान को हक़ हासिल है कि अपना दिफ़ाअ करे।

झूट नंबर 4:

"मुहम्मद और उनके अय्याश साथियों की नज़र हवाज़न क़बीले पर थी।"

यह लानती वसीम रिज़्वी की तरफ़ से मन घड़त कहानी है, अपनी तरफ़ से झूटा इल्ज़ाम लगा रहा है। मुअर्रिख़ इब्ने इस्हाक़ या किसी भी मुअर्रिख़ ने इस तरह की कोई बात नहीं लिखी है और न

ही क़बीला हवाज़न के लोगों ने इस का एतेराफ़ किया है कि इस्लामी लशकरों की नज़र हमारी औरतों पर है बल्कि क़बीला हवाज़न ने ख़ुद ही हम्ला की तय्यारी करके पेश क़दमी शुरू कर दी। क़ारईन! ख़ुद फ़ैसला करें कि लानती वसीम रिज़वी झूटा है या नहीं?

झूट नंबर 5:

''इसलिये रात को ही हमला कर दिया।''

मोहतरम क़ारईन! तारीख़ का मुतालिआ करने वाले और इब्ने इस्हाक़ के ज़रिया लिखी गई तारीख़ पढ़ने के बाद लानती वसीम रिज़वी की अक़्ल पर मातम करेंगे। वाक़िआ में साफ़ साफ़ लिखा है कि हुनैन की तंग वादी से जब इस्लामी लशकर गुज़र रहा था तो अचानक हवाज़न क़बीले वालों ने हमला कर दिया जिससे इस्लामी लशकर मुन्तशर हो गया और शिकस्त के क़रीब हो गए। इसके बावुजूद लानती वसीम रिज़वी का कहना कि ''रात को हमला किया'' कितना बड़ा झूट है।

झूट नंबर 6:

''इसलिये बद्दू शिकस्त खा गए''

लानती वसीम रिज़वी कितना बड़ा झूटा है। मुअर्रिख़ इब्ने इस्हाक़ के मुताबिक़ पहले हमले में बद्दू शिकस्त नहीं खा गए बल्कि कामयाब हो गए, इस्लामी लशकर मुन्तशर हो गया और ४ सिपाही शहीद भी हुए और फ़रार होने लगे, बाद में इकट्ठा होकर हमला करने की सूरत में कामयाब हुए।

झूट नंबर 7:

''इस जंग के बाद ही मुसलमानों को जंग में या किसी जगह पकड़ी गई ख़्वातीन के साथ जिन्सी तअल्लुक़ की इजाज़त मिल गई।''

यह सरासर झूट पर मबनी है। आप पूरा वाक़िअए हुनैन पढ़ लीजिये। इसलिये मैंने पूरा वाक़िअए हुनैन नक़ल कर दिया है ताकि लानती वसीम रिज़वी का झूट साबित हो जाए। मुअर्रिख़ इब्ने इस्हाक़

ने यह बात कहीं नहीं लिखी है कि कहीं भी पकड़ी गई ख़्वातीन के साथ जिन्सी तअल्लुक़ात की इजाज़त मिल गई। लानती वसीम रिज़वी इस झूट का इज़ाफ़ा करके मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों के दरमियान नफ़रत के बीज बोना चाहता है वरना इस का तारीख़ से कोई तअल्लुक़ नहीं है, यह झूट पर मबनी है।

झूट नंबर 8ः

''दूसरी तरफ़ छे हज़ार बद्दू थे, जिस में औरतें, बीमार और बच्चे भी थे।''

यह भी सरासर झूट है। मुअर्रिख़ इब्ने इस्हाक़ ने इस की कोई तादाद नहीं लिखी है। लानती वसीम रिज़वी का झूट देखिये, एक जगह तो वह कहता है छे हज़ार बद्दू थे जिस में औरतें, बच्चे और बीमार भी थे। इस का मतलब यह हुआ कि सब को मिला कर छे हज़ार थे। दूसरी जगह लिखता है छे हज़ार औरतें पकड़ी गईं। अब ख़ुद फ़ैसला कीजिये कि लानती वसीम रिज़वी कितना बड़ा झूटा है। जब छे हज़ार औरतें पकड़ी गईं तो बाक़ी बूढ़े, बच्चे, बीमार और भागे हुए, मारे गए अफ़राद कहां गए? ख़ुद ही कहता है कि टोटल छे हज़ार थे, फिर ख़ुद ही कहता है कि छे हज़ार औरतें पकड़ी गईं, वह क्या लिखता है उसे ख़ुद पता नहीं है। मुअर्रिख़ इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि एक हज़ार मर्दों को मुसलमानों ने क़ैदी बना लिया जबकि झूटा लानती वसीम रिज़वी लिखता है छे हज़ार औरतें पकड़ी गईं। लानती वसीम रिज़वी को सिर्फ़ औरतें ही नज़र आती हैं, मेहनती औरतें, सेहत मन्द औरतें और औरतों की उभरी हुई छातियां नज़र आती हैं। अगर्चे किसी मुअर्रिख़ ने इस का ज़िक्र नहीं किया है।

झूट नंबर 9ः

''इब्ने इस्हाक़ के मुताबिक़ इस जंग में माल व ज़र हासिल न हुआ।''

यह भी सरासर झूट है। मुअर्रिख़ इब्ने इस्हाक़ लिखते हैं कि जब

दस्तों की वापसी हुई तो उनके साथ क़ैदी और माले ग़नीमत भी थे लेकिन लानती वसीम रिज़वी माल व ज़र का इन्कार करता है क्योंकि उस को तो सिर्फ़ छे हज़ार औरतें दिखाना है। पता नहीं वह औरतों को दिखा कर क्या साबित करना चाहता है जबकि मुअर्रिख़ इब्ने इस्हाक़ औरतों का नहीं बल्कि एक हज़ार क़ैदी मर्द का ज़िक्र करते हैं।

झूट नंबर 10:

"मुहम्मद के बारह हज़ार तर्बियत याफ़्ता मुसल्लह डाकू थे।"

अल्लाह की लअनत हो झूटे पर। अगर लानती वसीम रिज़वी उस इस्लामी लशकर को जो अपनी दिफ़ाअ में निकले थे, उन को मुसल्लह डाकू कह रहा है तो उन को क्या कहेगा जिन्होंने हुनैन की वादी में घात लगा कर छुप कर इस्लामी लशकर पर हम्ला कर दिया। मुसल्लह डाकू तो उन्हें कहना चाहिये। लेकिन लानती वसीम रिज़वी को छुप कर हम्ला करने वाले नज़र नहीं आ रहे हैं। इसलिये नज़र नहीं आ रहे हैं कि उस की आंखों में झूट का पर्दा पड़ा हुआ है।

मोहतरम क़ारईन से फिर गुज़ारिश करूंगा कि वाक़िअए हुनैन को फिर से पढ़ें ताकि लानती वसीम रिज़वी के झूट से पर्दा हट जाए।

किस की योजना

लानती वसीम रिज़वी का एक झूट और मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 146 पर लिखता है कि

> "मुसलमान हुनैन की लड़ाई का कारण कुछ भी बताते रहें लेकिन वास्तव में औरतें पकड़ कर उन से सामूहिक बलात्कार की मुहम्मद की एक कुत्सित योजना थी।"

मुअर्रिख़ीन ने जो वजह बताई लानती वसीम रिज़वी के नज़्दीक

उस की कोई अहमियत नहीं कि हवाज़न क़बीला हम्ला के लिये रवाना हो चुका था, मुसलमान लशकर अपने दिफ़ाअ के लिये निकले थे। लानती वसीम रिज़वी ने जो सोच लिया वह लिख भी दिया। साबित हुआ कि एक मक्कार और झूटा सहीह और हक़ बात कैसे लिख सकता है। इन्साफ़ पसन्द क़ारईन से मैं गुज़ारिश करूंगा कि पूरे वाक़िअए हुनैन को पढ़ें, क्या इस में किसी औरत की अस्मत दरी की गई। अगर ऐसा मन्सूबा होता तो जंग में कामयाब होने के बाद उस पर अमल करते, जब कोई ऐसा बेहूदा इरादा ही नहीं था तो वह कैसे उस पर अमल करते! यह लानती वसीम रिज़वी का गंदा ख़्याल है जो उस ने लिखा है और मुअर्रिख़ीन की बातों को भी नज़र अंदाज़ किया है।

लानती वसीम रिज़वी ख़ुद बीमारः

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 44 पर लिखता है कि

"मुहम्मद मानसिक तौर पर बीमार थे।" (मआज़ल्लाह सौ बार मआज़ल्लाह)

हुज़ूरे अक़दस ﷺ की ज़ात पर लानती वसीम रिज़वी का बुहतान और इल्ज़ाम है। किसी भी मुअर्रिख़ ने यह बात कहीं नहीं लिखी है। मुअर्रिख़ इब्ने इस्हाक़, मुअर्रिख़ इब्ने हिशाम, तब्क़ात इब्ने सअद, तबरी किसी ने कहीं भी यह नहीं लिखा है कि मआज़ल्लाह हुज़ूर ﷺ ज़हनी बीमार थे। यह सिर्फ़ और सिर्फ़ लानती वसीम रिज़वी का बुहतान है और ऐसा लगता है कि लानती वसीम रिज़वी ख़ुद ज़हनी मरीज़ है जो इस तरह का इल्ज़ाम लगाता है।

लानती वसीम रिज़वी की कॉकटेल कहानीः

मोहतरम क़ारईन! लानती वसीम रिज़वी की और एक कॉकटेल

कहानी सुनिये और सर धुनिये और लानती वसीम रिज़वी की अक़्ल पर मातम कीजिये और उस की जहालत को भी जानिये। सबसे पहले उस की मन घड़त कहानी सुनिये, फिर मैं अस्ल वाक़िआ अहादीस और तारीख़ के हवाला से पेश करूंगा, फिर इस कॉकटेल कहानी का पोस्ट मार्टम करूंगा।

वह अपनी किताब के सफ़्हा 77 पर लिखता है,

''चचेरी बहन से सहवास''

के उन्वान के तहत वह लिखता है

''मुहम्मद साहब के चाचा अबू तालिब की बड़ी लड़की का नाम उम्मे हानी बिन्ते अबू तालिब था। जिसे लोग फ़कित और हिन्दा भी कहते थे। यह सन 630 ईसवी यानी 8 हिजरी की बात है। जब मुहम्मद साहब तायफ़ की लड़ाई में हार कर साथियों के साथ जान बचाने के लिये काबा में छुपे थे लेकिन मुहम्मद साहब चुपचाप सब की नज़रें चुरा कर उम्मे हानी के घर में घुस गए, लोगों ने उनको काबा में बहुत खोजा और आख़िर वह उम्मे हानी के घर में पकड़े गए। इस बात को छुपाने के लिये मुहम्मद साहब ने एक कहानी गढ़ दी और लोगों से कहा कि मैं जेरूसलेम और जन्नत की सैर करने गया था, मुझे अल्लाह ने बुलवाया था। उस समय उनकी पहली पत्नी ख़दीजा की मौत हो चुकी थी। वास्तव में मुहम्मद साहब उम्मे हानी के साथ व्यभिचार करने गए थे। उन्होंने कुरान की सूरा अहज़ाब की आयत 33:50 सुना कर सहवास के लिये पटा लिया था। यह बात हदीस की किताब तिरमिज़ी में मौजूद है। जिसे प्रमाणिक माना जाता है। पूरी हदीस इस प्रकार

> है “उम्मे हानी ने बताया उस रात रसूल ने मुझ से अपने साथ शादी करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन मैंने इसके लिये उन से माफ़ी मांगी। तब उन्होंने कहा कि अभी अभी अल्लाह की तरफ़ से मुझे एक आदेश मिला है: “हे नबी! हम ने तुम्हारे लिए वह पत्नियां वैध कर दी हैं, जिनके मेहर तुमने दे दिये। और लौंडियाँ जो युद्ध में प्राप्त हों, और चाचा की बेटियाँ, फूफियों की बेटियाँ, मामूं की, ख़ालाओं की बेटियाँ और जिस औरत ने तुम्हारे साथ हिजरत की है, और वह ईमान वाली औरत जो ख़ुद को तुम्हारे लिये समर्पित हो जाए।” यह सुन कर मैं राज़ी हो गयी और मुसलमान बन गयी।

यह है लानती वसीम रिज़वी की बकवास भरी कॉकटेल कहानी जिसे आपने मुलाहिज़ा किया।

इस कहानी में लानती वसीम रिज़वी ने चार वाक़िआत को एक साथ जोड़ कर कॉकटेल कहानी बना दिया जो अलग अलग सन में वाक़ेअ हुए।

(१) उम्मे हानी की शादी की पेशकश का वाक़िआ।

(२) यरोशलम और जन्नत की सैर यानी मेअराज का वाक़िआ।

(३) ताइफ़ के मुहासिरा का वाक़िआ।

(४) उम्मे हानी के इस्लाम लाने का वाक़िआ।

यह चारों वाक़िआत अलग अलग सन में 9 साल के अन्दर वाक़ेअ हुए। लानती वसीम रिज़वी ने 9 साल के वाक़िआत को एक ही रात में जोड़ दिया। हज़रत उम्मे हानी फ़तहे मक्का के मौक़ा पर इस्लाम लाईं जो 8 हिजरी का वाक़िआ है। हुज़ूर नबी करीम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم को मेअराज हिजरत से 18 माह क़ब्ल हुई। आठ हिजरी में फ़तहे मक्का हुआ, उसके बाद आप ग़ज़वए हुनैन के लिये रवाना हुए, उसके

बाद ताइफ़ का मुहासिरा किया, उसके बाद मक्का तशरीफ़ लाए। ताइफ़ का मुहासिरा और वाक़िअए मेअराज के दरमियान 9 साल का वक़्फ़ा है, इस को एक ही रात में जोड़ दिया गया। उम्मे हानी से शादी की पेशकश और मेअराज का वाक़िआ के दरमियान 9 साल का फ़र्क़ है इस को एक ही रात में जोड़ दिया गया। जो वाक़िआत 9 साल में हुए उन को एक ही रात में बयान करके एक कहानी बनाई ताकि हुज़ूर ﷺ की मुक़द्दस ज़ात पर ज़िना का इल्ज़ाम आइद कर सके लेकिन उस की कहानी के पोस्ट मार्टम से क़ारईन पर वाज़ेह हो जाएगा कि लानती वसीम रिज़वी मुअल्लिमुल काज़िबीन यानी झूटों का उस्ताज़ है और उस की यह किताब मज्मूअतुल अकाज़ीब है। अब मैं तारीख़ और अहादीस के हवाले पेश करता हूं, सबसे पहले तिर्मिज़ी की हदीस बयान करता हूं।

तिर्मिज़ी जिल्द दोम, सफ़्हा 488, अबवाब तफ़सीरुल क़ुरआन, हदीस नंबर 1141

''حَدَّثَنَا عَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوْسَى عَنْ إِسْرَائِيْلَ عَنِ السُّدِّيِّ عَنْ أَبِيْ صَالِحٍ عَنْ أُمِّ هَانِئٍ بِنْتِ أَبِيْ طَالِبٍ قَالَتْ خَطَبَنِيْ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاعْتَذَرْتُ إِلَيْهِ فَعَذَرَنِيْ ثُمَّ أَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ اللَّاتِيْ آتَيْتَ أُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ مِمَّا أَفَاءَ اللهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمِّكَ وَبَنَاتِ عَمَّاتِكَ وَبَنَاتِ خَالِكَ وَبَنَاتِ خَالَاتِكَ اللَّاتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ۔''

तर्जमाः ''हज़रत उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम ﷺ ने मुझे पैग़ामे निकाह दिया। मैंने उज़्र पेश

किया तो आपने मेरी मअज़िरत क़ुबूल फ़रमाई। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाईः (तर्जमा) ऐ पैग़म्बर! हमने तुम्हारे लिये तुम्हारी बीवियां जिनके तुम ने महर दे दिये हैं हलाल कर दी हैं और तुम्हारी बांदियां जो ख़ुदा ने तुम को अता की हैं और तुम्हारे चचा की बेटियां, और तुम्हारी फूफियों की बेटियां, और तुम्हारे मामूं की बेटियां, और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की है।''

हज़रत उम्मे हानी फ़रमाती हैं चूंकि मैंने आपके साथ हिजरत नहीं की इसलिये मैं आपके लिये हलाल नहीं, मैं तलक़ा में से हूं। (यानी फ़तहे मक्का के बाद इस्लाम लाने वालों में से)

मोहतरम क़ारईन! उम्मे हानी की शादी के तअल्लुक़ से इब्ने सअद ने अपनी तब्क़ात में वज़ाहत के साथ बयान फ़रमाया।

तब्क़ात इब्ने सअद जिल्द 8, सफ़्हा 211 पर लिखते हैंः

''ख़बर दी हिशाम बिन मुहम्मद बिन साइब कलबी ने, उन्हें ख़बर दी अबू सालेह ने, उन्होंने कहा कि हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है कि नबी करीम ﷺ ने ज़मानए जाहिलियत में अबू तालिब से उन की बेटी उम्मे हानी पर पैग़ाम डाला और हुबैरह बिन अबी वहब ने भी पैग़ाम डाला, फिर उन से हुबैरह ने निकाह कर लिया। आपने फ़रमायाः चचा जान! आपने उम्मे हानी से हुबैरह का निकाह कर दिया और मुझे महरूम फ़रमा दिया। अबू तालिब ने जवाब दिया, भतीजे! हमने उन से रिश्ता कर दिया, मुहसिन मुहसिन के साथ बराबर का एहसान करता है। फिर उम्मे हानी मुशर्रफ़ ब-इस्लाम हो गईं और

निकाह टूट गया, फिर हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने निकाह का पैग़ाम दिया तो हज़रत उम्मे हानी बोलीं: मैं बच्चों वाली औरत हूं और उन से आप को तकलीफ़ होगी और यह मुझे गवारा नहीं। हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने फ़रमायाः क़ुरैश की औरतें अपने कम-सिन बच्चों को बहुत प्यार करती हैं और अपने शौहर के माल की ख़ूब हिफ़ाज़त करती हैं।''

मोहतरम क़ारईन! आप हज़रत उम्मे हानी से शादी की पेश कश को हदीस और तारीख़ के हवाले से अच्छी तरह जान गए। अब आइये वाक़िआ मेअराज को जानते हैं कि यह कब वाक़ेअ हुआ?

तब्क़ात इब्ने सअद, जिल्द अव्वल, सफ़्हा 281 *पर है:*

''अबू बकर बिन अब्दुल्लाह बिन अबी सुब्रह से मरवी है कि रसूले अकरम ﷺ अपने रब से दरख़्वास्त किया करते थे कि वह आप को जन्नत और दोज़ख़ दिखाए तो हिजरत से अट्ठारह महीने पहले आप को मेअराज हुई।''

हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने मक्का को 8 हिजरी में फ़तह किया।

अस्सहीहुल बुख़ारी, जिल्द दोम, सफ़्हा 625, हदीस नंबर 1416 किताबुल मग़ाज़ी

''حَدَّثَنِيْ مَحْمُوْدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ قَالَ
أَخْبَرَنِي الزُّهْرِيُّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِاللهِ عَنِ ابْنِ
عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ خَرَجَ فِيْ رَمَضَانَ مِنَ الْمَدِيْنَةِ وَمَعَهُ عَشَرَةُ
آلَافٍ وَذٰلِكَ عَلَى رَأْسِ ثَمَانِ سِنِيْنَ وَنِصْفٍ مِنْ
مَقْدَمِهِ الْمَدِيْنَةَ فَسَارَ هُوَ وَمَنْ مَعَهُ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ
إِلَى مَكَّةَ۔''

तर्जमाः उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि नबी करीम ﷺ रमज़ानुल मुबारक के महीने में मदीना मुनव्वरा से रवाना हुए और आपके साथ दस हज़ार मुसलमान थे। यह सफ़र उस वक़्त हुआ जब हुज़ूर ﷺ को मदीना तशरीफ़ लाए हुए साढ़े आठ साल हो चुके थे। तो आप मुसलमानों को साथ लेकर मक्का की जानिब चल पड़े।''

मोहतरम क़ारईन! आपने उम्मे हानी की शादी की पेशकश के बारे में जान लिया। आपने वाक़िआ मेअराज किस सन में हुआ यह भी जान लिया। आपने फ़तहे मक्का के सन के बारे में जान लिया, अब आइये ताइफ़ के बारे में जानते हैं।

सहीह बुख़ारी जिल्द दोम, सफ़्हा 643, हदीस नंबर 1457 किताबुल मग़ाज़ी

''حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِاللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ أَبِي الْعَبَّاسِ الشَّاعِرِ الْأَعْمَى عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ لَمَّا حَاصَرَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الطَّائِفَ فَلَمْ يَنَلْ مِنْهُمْ شَيْئًا قَالَ إِنَّا قَافِلُوْنَ إِنْ شَاءَ اللهُ فَثَقُلَ عَلَيْهِمْ وَقَالُوْا نَذْهَبُ وَلَا نَفْتَحُهُ۔''

तर्जमाः ''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि जब रसूलुल्लाह ﷺ ने ताइफ़ का मुहासिरा किया और फ़ायदा कुछ हासिल न हुआ तो फ़रमाया इन शाअल्लाहु तआला हम कल वापस लौट जाएंगे। लोगों पर यह बात गिरां गुज़री और कहने लगे कि बग़ैर फ़तह किये चले जाएंगे।''

हुज़ूरे अक़दस ﷺ ताइफ़ का मुहासिरा उठाने के बाद मक़ाम जेअरानह में तशरीफ़ लाए। इस को मुअर्रिख़ इब्ने इस्हाक़ ने वज़ाहत के साथ पेश किया। वह सफ़्हा 683 पर लिखते हैं कि सफ़रे ताइफ़

में आप की दो बीवियां साथ थीं। उन में से एक उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमह थीं। दोनों के लिये अलग अलग ख़ेमा लगाया गया था। इब्ने इस्हाक़ आगे लिखते हैं कि नबी करीम ﷺ ने ताइफ़ से रवाना होकर मक्का आने के बजाए रास्ता में मक़ाम जेअरानह में क़याम फ़रमाया।''

सीरत इब्ने हिशाम, जिल्द दोम, सफ़्हा 603, पर इब्ने हिशाम इब्ने इस्हाक़ के हवाला से लिखते हैं:

''नबी करीम ﷺ जेअरानह से निकल कर उमरह के लिये तशरीफ़ ले गए, आप का उमरह ज़ी क़अदह में हुआ था।''

मोहतरम क़ारईन! अब पूरी तस्वीर आपके सामने साफ़ हो गई। अब आप को मालूम हो गया कि लानती वसीम रिज़वी की किताब मज्मूअतुल अकाज़ीब है यानी झूट की गठरी है और लानती वसीम रिज़वी मुअल्लिमुल काज़िबीन यानी झूटों का उस्ताज़ है।

मोहतरम क़ारईन! अब मैं लानती वसीम रिज़वी की कॉकटेल कहानी का पोस्ट मार्टम आपके सामने पेश करता हूं। सबसे पहले इस कहानी की झूटी बातों को शुमार कराता हूं।

झूट नंबर 1:

''मुहम्मद साहब ताइफ़ की लड़ाई में शिकस्त खा गए।''

तब्सिरा: ताइफ़ में लड़ाई हुई ही नहीं बल्कि क़िला का मुहासिरा किया गया था जिसे अल्लाह के रसूल ने उठा लिया, जैसा कि आपने ऊपर पढ़ा।

झूट नंबर 2:

''अपने साथियों के साथ जान बचाने के लिये कअबा में छुप गए।''

तब्सिरा: ताइफ़ के वाक़िआ से पहले 8 हिजरी में मक्का फ़तह हो गया। आप फ़ातहे मक्का थे यानी मक्का के बादशाह थे, फिर आप कअबा में क्यों छुपेंगे।

झूट नंबर ३:

“मुहम्मद साहब नज़रें चुरा कर उम्मे हानी के घर में दाख़िल हो गए।”

तब्सिराः ताइफ़ का वाक़िआ 8 हिजरी में हुआ। आप हालते इहराम में थे, आपके साथ आप की दो बीवियां थीं, आपने उमरा किया, फिर आप नज़रें चुरा कर कैसे उम्मे हानी के घर में दाख़िल हुए?

झूट नंबर 4:

“लोगों से कहा मैं यरोशलम और जन्नत की सैर करने गया था।”

तब्सिराः ताइफ़ का वाक़िआ 8 हिजरी को हुआ, जन्नत की सैर यानी वाक़िआ मेअराज हिजरत से 18 महीने पहले का है। दोनों वाक़िआ में 9 साल का फ़र्क़ है। दोनों एक साथ कैसे हो सकते हैं। हक़ीक़त यह है कि यह मन घड़त कहानी तय्यार की गई है लेकिन तारीख़ और अहादीस के हवालों से इस कहानी का और कहानी गढ़ने वाले का जनाज़ा निकल गया। यह इतने पुख़्ता सुबूत हैं कि इस का जवाब देने में लानती वसीम रिज़वी की पैंट और धोती दोनों गीली हो जाएगी मगर वह जवाब नहीं दे सकेगा।

लानती वसीम रिज़वी घर का, न घाट का!

लानती वसीम रिज़वी ने अपनी किताब के सफ़्हा 114 से सफ़्हा 126 तक 15 सफ़्हात पर मुश्तमल “जन्नत की तरफ़ मुहम्मद का सफ़र” के उन्वान से हुज़ूरे अक़दस ﷺ के वाक़िआ मेअराज को मस्ख़ करके लिखा है, उस ने इसी बकवास में पन्द्रह सफ़्हात स्याह कर दिया है।

उस ने वाक़िआ मेअराज पर सीरत इब्ने इस्हाक़, बुख़ारी और मुस्लिम का हवाला दिया हैं अपनी किताब के सफ़्हा 114 पर लिखता

है कि

> ''मुहम्मद के दावे को परखने के लिये अबू बकर ने उन से जेरूसलम का वर्णन करने को कहा और जब उन्होंने वर्णन किया तो अबू बकर बोला सत्य है मैंने परख लिया है कि तुम अल्लाह के रसूल हो।'' उसके आगे लिखता है कि ''यह स्पष्ट नहीं है कि क्या अबू बकर ने कभी जेरूसलम देखा था।''

क़ारईन! आगाह हो जाएं, मक्कार ने अपनी मक्कारी दिखाते हुए अस्ल इबारत हज़फ़ कर दिया। सीरत इब्ने इस्हाक़ के हवाले से सीरत इब्ने हिशाम जिल्द अव्वल सफ़्हा 441 पर है कि

> ''हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आपने लोगों से बयान फ़रमाया कि आज रात आप बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ ले गए थे? आपने फ़रमायाः हां। तो अबू बकर ने अर्ज़ की, ऐ अल्लाह के नबी! वहां के औसाफ़ मुझ से बयान फ़रमाइये, क्योंकि मैं वहां जा चुका हूं।''

हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने फ़रमायाः فرفع لی حتی نظرت الیہ۔ वह मेरे सामने इस तरह पेश कर दिया गया कि मैं उसे देखने लगा। फिर हुज़ूर ﷺ हज़रत अबू बकर से उसके औसाफ़ बयान फ़रमाने लगे। अबू बकर सुनते और कहते आपने सच फ़रमाया, मैं गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के रसूल हैं। हुज़ूर ﷺ ने हज़रत अबू बकर से फ़रमायाः انت یا ابابکر الصدیق۔ ऐ अबू बकर! तुम सिद्दीक़ हो, उस दिन से आप का लक़ब सिद्दीक़ हो गया।

मोहतरम क़ारईन! लानती वसीम रिज़वी की मक्कारी तो देखिये जो हवाला उस ने दिया वहीं से आगे की इबारत को छोड़ दिया ताकि वाक़िआ मेअराज को सच न समझ लें। इब्ने इस्हाक़ के हवाला से

आपने पढ़ा कि हज़रत सिद्दीके़ अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ुद फ़रमाते हैं, मैं वहां जा चुका हूं। बैतुल मुक़द्दस के औसाफ़ सुनने के बाद हज़रत अबू बकर ने फ़रमाया कि या रसूलल्लाह! आपने वहां के औसाफ़ को सहीह सहीह बताया। यह हवाला मैंने वहीं से दिया है जहां से लानती वसीम रिज़वी ने दिया। बस अपने मज़मूम मक़सद के लिये उस ने आगे की इबारत छोड़ दी।

लानती वसीम रिज़वी सफ़्हा 120 पर लिखता है किः

> ''सच तो यह है कि आज धर्म पूरी तरह विज्ञान की बैसाखी पर चल रहा है। दिन रात धर्म अध्यात्म या ईश्वर के चमतकारों की बकवासें करने वाले धर्मगुरू आज विज्ञान की बदौलत ही धर्म का प्रचार करते हैं और फिर भी धर्म को विज्ञान से श्रेष्ठ बताते हैं।''

जाहिल लानती वसीम रिज़वी को मालूम होना चाहिये कि साइंस को वुजूद में आए हुए बहुत कम अरसा हुआ, यह दो चार सौ साल की बात है जबकि इस धर्ती पर मज़ाहिब हज़ारों साल से हैं। इसके मुबल्लिग़ीन ने हज़ारों साल से इस की तब्लीग़ की है। इस साइंस के वुजूद से पहले हर मज़हब के मुबल्लिग़ीन चाहे वह हिन्दू हों, मुसलमान हों, ईसाई हों या यहूदी अपने मज़हब की इशाअत करते रहे हैं। उस वक़्त तक तो साइंस का वुजूद भी नहीं था, जब साइंस का वुजूद ही नहीं था तब साइंस की कौन सी बैसाखी पर मज़हब चल रहा था। हां यह ज़रूर कहा जाएगा कि लानती वसीम रिज़वी ने अपनी जहालत की बैसाखी पर चल कर यह सब बातें लिखी हैं।

लानती वसीम रिज़वी से सवाल है कि क्या ईसा मसीह के दौर में साइंस थी? क्या हुज़ूरे अक़्दस ﷺ के दौर में साइंस थी? क्या राम के ज़माने में साइंस थी? क्या अशोक के ज़माने में थी? नहीं। लेकिन उन सभों के दौर में मज़हब था। लानती वसीम रिज़वी तो तारीख़ से नाबलद है, वह क्या बता पाएगा। अगर उसे मालूम होता

तो वह ऐसी लायानी बातें न करता।

मस्जिद, मंदिर, गिरजा घर

लानती वसीम रिज़वी सफ़्हा 120 पर लिखता हैः

''दुनिया भर में मंदिर, मस्जिद, चर्च के स्ट्रक्टर पर ग़ौर कीजिए पूरा विज्ञान नज़र आएगा यहां धर्म का कोई रोल नहीं।''

अफ़सोस! लानती वसीम रिज़वी की सोच पर कि मंदिर, मस्जिद और गिरजा घरों की साख़्त पर अगर मज़हब का किरदार नहीं है तो जब साइंस का वुजूद नहीं था, तब उन इबादत गाहों की इमारत और साख़्त पर किस का किरदार था?

लानती वसीम रिज़वी को मालूम होना चाहिये कि सीमेंट, लोहा और पत्थर से बनाई गई इमारत का नाम मंदिर, मस्जिद और गिरजा घर नहीं है बल्कि मज़हब की बुन्याद मज़हबी किरदार की वजह से उसे मंदिर, मस्जिद और गिरजा घर कहा जाता है, वरना ईंट, पत्थर और लोहा से तो शॉपिंग मॉल और सिनेमा थियेटर भी बनाए जाते हैं, उस को फिर मंदिर, मस्जिद और गिरजा घर क्यों नहीं कहते। पता चला कि तामीर के साथ साथ उस में मज़हबी रंग और किरदार भी हो तो उस इमारत को मस्जिद, मंदिर और गिरजा घर कहेंगे।

भगवान के लिये नहीं:

लानती वसीम रिज़वी सफ़्हा 120 पर लिखता हैः

''इन धार्मिक इमारतों में बिजली, पानी, एसी, पंखे,
लाइट भी विज्ञान की देन है।''

हां तोहफ़ा है और बिल्कुल है लेकिन यह तोहफ़ा मंदिर में आने वालों के लिये है भगवान के लिये नहीं। मस्जिद में आने वालों के लिये है ख़ुदा के लिये नहीं। गिरजा घर में आने वालों के लिये है ईसा मसीह के लिये नहीं। लेकिन यह बात लानती वसीम रिज़वी की

समझ से बालातर है।

वाक़िआ मेअराज में लानती वसीम रिज़वी सफ़्हा 123 पर लिखता है किः

> ‘‘ईश्वर का दूत उन्हें पवित्र स्थान ले जाकर उनका सीना फाड़ के ईमान घुसेड़ देता है, अगर उनके अन्दर ईमान था तो फिर दूत को ऐसा करने की क्या आवश्यकता पड़ी?’’

मोहतरम क़ारईन! सबसे पहले मैं आपके सामने हवाला पेश करता हूं।

सहीह बुख़ारी, जिल्द अव्वल, सफ़्हा 215, किताबुससलात, हदीस नंबर 339

‘‘حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ
عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ كَانَ أَبُو ذَرٍّ
يُحَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فُرِجَ
عَنْ سَقْفِ بَيْتِي وَأَنَا بِمَكَّةَ فَنَزَلَ جِبْرِيلُ صَلَّى اللهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَفَرَجَ صَدْرِي ثُمَّ غَسَلَهُ بِمَاءِ زَمْزَمَ ثُمَّ
جَاءَ بِطَسْتٍ مِنْ ذَهَبٍ مُمْتَلِئٍ حِكْمَةً وَإِيمَانًا فَأَفْرَغَهُ
فِي صَدْرِي.‘‘

तर्जमाः ‘‘हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमायाः मैं मक्का में था, मेरे घर की छत शक़ हुई, फिर हज़रत जिब्राईल उतरे, मेरा सीना चीर कर उसे आबे ज़मज़म से धोया, फिर एक तश्त सोने का हिकमत और ईमान से भरा हुआ लाकर मेरे सीने में डाल दिया।’’

लानती वसीम रिज़वी की ग़बनः

लानती वसीम रिज़वी की ख़्यानत तो देखिये, उस ने ईमान लिखा और उसी जगह हिकमत भी है उस को नहीं लिखा। वह कहा रहा है अगर पहले से ईमान था तो उस में ईमान दाख़िल करने की ज़रूरत क्यों पड़ी? लानती वसीम रिज़वी की सूझ बूझ इन्तिहाई नाक़िस है। किसी चीज़ का इज़ाफ़ा होना माक़ब्ल में उस शय की नफ़ी नहीं है। ईमान व हिकमत को सीने में डालना, इससे लाज़िम नहीं आता है कि इससे पहले आप में हिकमत व ईमान नहीं थे बल्कि इससे पहले भी आप में हिकमत व ईमान थे, उस में और इज़ाफ़ फ़रमा दिया गया। सीना चीरने का वाक़िआ हुज़ूर ﷺ को कई बार पेश आया है।

सीरत इब्ने हिशाम, जिल्द अव्वल, सफ़्हा 186

"इब्ने इस्हाक़ ने कहा सौर बिन यज़ीद ने बाज़ अहले इल्म से रिवायत की और मैं समझता हूं यह रिवायत ख़ालिद बिन मअदान अलकलाई की है कि नबी करीम ﷺ के बाज़ सहाबा ने आपसे अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! अपने कुछ हालात बयान फ़रमाइये तो आपने फ़रमायाः

"واسترضعت فی بنی سعد بن بکر فبینا انا مع اخ لی خلف بیوتنا نرعی بھا لنا اذا تانی رجلان علیھما ثیاب بیض بطست من ذھب مملوءۃ ثلجا ثم اخذانی فشقا بطنی۔"

तर्जमाः "हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने फ़रमायाः बनी सअद बिन बकर के क़बीले में दूध पीकर मैंने परवरिश पाई। मैं अपने घरों के पीछे अपने एक भाई के साथ था, हम बकरियां चरा रहे थे कि दो शख़्स सफ़ेद कपड़े में लिपटे हुए मेरे पास बर्फ़ से भरा हुआ सोने का एक तश्त लेकर आए, उन्होंने

मुझे पकड़ा और मेरा पेट चाक किया।''

लानती वसीम रिज़वी की कम-अक़्ली पर जितना मातम करें कम है। अगर ईमान डालना मुराद होता तो एक बार काफ़ी था, बार बार सीना चीर कर क्यों हिकमत व ईमान डाला जाता? इस का मतलब यह है कि यहां ईमान व हिकमत की नफ़ी नहीं है बल्कि ईमान व हिकमत का इज़ाफ़ा है। अगर कोई यह कहे कि मैं इस घर का मालिक हो गया तो क्या इससे यह साबित होता है कि इससे पहले वह बे-घर था? नहीं और हरगिज़ नहीं बल्कि यह समझा जाएगा पहले भी उसके पास घर था। एक घर और ख़रीदा उस का भी मालिक हो गया। इससे यह मालूम हुआ कि उसके घर में इज़ाफ़ हो गया? न कि यह पता चलता है कि यह बे-घर था। लेकिन लानती वसीम रिज़वी को यह बात समझ में नहीं आएगी क्योंकि उस की आंखों में मक्कारी और फ़रेब का चश्मा लगा हुआ है।

लानती वसीम रिज़वी का दिमाग़ ठिकाने लगा

लानती वसीम रिज़वी किताब के सफ़्हा 124 पर लिखता है कि:

''धर्म या ईमान, अच्छाई या बुराई तो इन्सान के मस्तिष्क की देन है ये इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति को बचपन में कैसे संस्कार मिले या उसका विकास किस प्रकार हुआ है? इस तरह ईमान दिमाग़ के अन्दर होता है न कि सीने में परन्तु क्या सर्वज्ञान संपन्न परमात्मा को इतना भी ज्ञान नहीं था जिसे वह अपने दूत को सिखाते कि बेटा ईमान सीने में नहीं दिमाग़ में होता है।''

यानी लानती वसीम रिज़वी यह कहना चाहता है कि:

''अल्लाह तबारक व तआला को चाहिये कि जिब्रईल को यह हुक्म देते कि सीने में ईमान न डालो दिमाग़

में डालो क्योंकि ईमान सीने में नहीं बल्कि दिमाग़ में होता है।"

मोहतरम क़ारईन! लानती वसीम रिज़वी का मुतालिआ और तालीम की वुस्अत हाथ की हथेली से ज़्यादा नहीं है। तीन चीज़ है दिल, सीना और अक़्ल, दिल का मक़ाम सीना है और अक़्ल भी दिल के अन्दर ही होती है।

आइये लोगों की बात चीत और गुफ़्तगू का जाइज़ा लेते हैं। जब कोई किसी से मुहब्बत करता है और मुहब्बत का यक़ीन दिलाना चाहता है तो कहता है मैं तुम से दिल से मुहब्बत करता हूं। यह नहीं कहता कि अक़्ल से मुहब्बत करता हूं। अगर कोई किसी से अदब व एहतेराम का ज़िक्र करता है तो कहता है आप हमारे बड़े हैं, मैं दिल की गहराई से आप का अदब करता हूं, कोई नहीं कहता कि मैं अक़्ल की गहराई से आप का अदब करता हूं।

लगाओ और मेहनत का तअल्लुक़ भी दिल से है। जब कोई मुलाज़िम अपने मालिक को अपनी मेहनत का यक़ीन दिलाना चाहता है तो कहता है मैं आपके यहां दिल लगा कर काम करता हूं, यह नहीं कहता मैं अक़्ल लगा कर काम करता हूं। इसी तरह अच्छाई या बुराई, ईमान व अक़ीदा का तअल्लुक़ दिल से होता है अक़्ल से नहीं। जब कोई इन्सान समाज और सोसाइटी में नफ़रत फैलाता है तो उसके बारे में कहा जाता है उसके दिल में नफ़रत भरी हुई है, यह नहीं कहा जाता कि उस की अक़्ल में नफ़रत भरी हुई है। जब दो आदमी गले मिलते हैं तो कहा जाता है कि गले के साथ साथ दिल भी मिलना चाहिये, कोई यह नहीं कहता कि गले के साथ साथ अक़्ल भी मिलना चाहिये। ऐसी हज़ारों मिसालें हैं जिन से पता चलता है कि अच्छाई या बुराई का तअल्लुक़ अक़्ल से नहीं दिल से होता है, लेकिन लानती वसीम रिज़वी इस को समझ नहीं सकता क्योंकि न उस के पास समाज में मुहब्बत फैलाने वाला दिल है न ही अक़्ल।

लानती वसीम रिज़वी का दिल दिमाग़ ग़ायबः

मोहतरम क़ारईन! दिल और दिमाग़ के बारे में मुख़्तसर गुफ़्तगू पेश करता हूं ताकि लानती वसीम रिज़वी का दिल और दिमाग़ ठिकाने लग जाए। क़ल्ब जिस को दिल कहते हैं इस को हार्ट भी कहा जाता है, इस की जगह सीना है।

कुरआन फ़रमाता है, सूरह नंबर 22, आयत नंबर 46,

فانها لا تعمى الابصار ولكن تعمى القلوب التى فى الصدور۔

तर्जमाः "आंखें अंधी नहीं हो जाती हैं बल्कि दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं।"

कुरआन ने बता दिया कि दिल की जगह सीना है, मुस्नदे अहमद की रिवायत में है कि हुजूरे अक़दस ﷺ ने फ़रमायाः तक़वा यहां होता है और इशारा अपने सीने की तरफ़ फ़रमा रहे थे। कुरआने मुक़द्दस में فتكون لهم قلوب يعقلون بها۔ *(सूरह 22, आयतः 46)*

तर्जमाः "तो उनके पास दिल होते जिन से यह सोचते।"

कुरआन फ़रमाता हैः

لهم قلوب لا يفقهون بها۔ *(सूरह आराफ़, आयतः 179)*

तर्जमाः "उनके पास दिल हैं मगर उससे समझते नहीं।"

कुरआन ने यह वाज़ेह कर दिया कि ईमान की जगह इन्सान का दिमाग़ नहीं बल्कि दिल है।

कुरआन कहता हैः

وقولوا اسلمنا ولما يدخل الايمان فى قلوبكم۔

(आयतः 14, सूरए अलहुजरात)

तर्जमाः "और तुम यह बात कह लो कि हम ने इस्लाम कुबूल किया है ईमान अभी तक तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ।"

शैतान का वस्वसा इन्सान के सीने में पड़ता है।

कुरआन फ़रमाता है: الذی یوسوس فی صدور الناس۔

(सूरए नास नंबर 114, *आयत:* 5)

तर्जमा: “जो इन्सानों के सीने में वस्वसा डालता है।”

इन्सानी व नफ़्सानी ख़्वाहिशात की जगह भी दिल ही है। रूह का मर्कज़ इन्सान का दिल है, दिमाग़ नहीं। इन्सान की जिस्मानी हयात का दारो मदार उसके दिल की हरकत पर है। अगर वह हरकत में है तो ज़िन्दा है अगर वह रुक गया तो वह मर गया, यह मुम्किन नहीं कि किसी इन्सान का दिल निकाल लें और वह ज़िन्दा रहे। इन्सान के जज़्बात की जगह दिल है। जिस तरह आंख देखने और कान सुनने के काम आते हैं उसी तरह दिल मुहब्बत और नफ़रत के काम आता है, अच्छाई और बुराई के काम आता है, इन्सान अच्छा या बुरा दिल से करता है।

शुअबुल ईमान में इमाम बैहक़ी करते हैं:

“فی الانسان مغضة اذا صلحت صلح له سائر جسده
واذا سقمت سقم له سائر جسده وھی القلب۔”

तर्जमा: नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: जिस्म में एक गोश्त का टुकड़ा है, अगर वह गोश्त दुरुस्त हो जाए तो तमाम जिस्म की इस्लाह ख़ुद बख़ुद हो जाएगी, अगर वह ख़राब हो जाए तो तमाम जिस्म में फ़साद बरपा हो जाता है और वह दिल है।”

हैवानी सतह पर सोचने का काम दिमाग़ करता है और इन्सानी सतह पर सोचने और ग़ौर व फ़िक्र करने का काम सिर्फ़ दिल करता है। अगर सांप को सालों दूध पिलाया जाए तब भी मौक़ा मिलने पर वह डस ही लेगा क्योंकि उस की सोच हैवानी सतह की है। शेर की

जितनी ख़ातिर व मदारत की जाए मौक़ा मिलने पर इन्सान पर हम्ला कर देगा लेकिन इन्सान के पास दोनों चीज़ें हैं। अगर इन्सान दिमाग़ से हैवानी सतह पर सोचता है तो हैवान से बदतर हो जाता है, अगर दिल से इन्सानी सतह पर सोचता है तो समाज और क़ौम के लिये बड़ा कारनामा अंजाम देता है।

मोहतरम क़ारईन! अब लानती वसीम रिज़वी के भेजे में यह बात घुस गई होगी कि ईमान दिल में होता है न कि दिमाग़ में। लानती वसीम रिज़वी वाक़िआ मेअराज को तफ़सील से लिखने के बाद लिखता है कि जो इस्लाम लाए तो वाक़िआ मेअराज को सुन कर मुर्तद हो गए और वह यही बावर कराना चाहता है कि इस्लाम लाने के बावुजूद मुर्तद हो गए।

मुर्तद कौन हुआ?

अपनी किताब के सफ़्हा 113 पर लिखता है कि:

> ''इब्ने साद कहता है यह कहानी सुनने के बाद जो लोग मुहम्मद के साथ आए थे और इस्लाम कुबूल किया था उनमें से बहुत से लोग धर्म द्रोही हो गए और इस्लाम छोड़ दिया।''

लानती वसीम रिज़वी को मालूम होना चाहिये कि इस वाक़िआ को सीरत इब्ने हिशाम में भी बयान किया गया। सीरत इब्ने हिशाम जिल्द अव्वल, सफ़्हा 441 पर है कि:

''इस सबब से बहुत से लोग जिन्होंने इस्लाम इख़्तियार कर रखा था मुर्तद हो गए।''

लानती वसीम रिज़वी यह बताना चाहता है कि इस्लाम लाने के बावुजूद इस्लाम से फिर गए। लानती वसीम रिज़वी को बता दूं यह कोई तअज्जुब की बात नहीं है, साबिक़ा अंबियाए किराम अलैहिमस्सलाम की उम्मतों ने भी बाज़ लोगों ने इर्तिदाद का रास्ता

इख़्तियार किया है। हुज़ूरे अक़्दस ﷺ के ज़माने में और उसके बाद भी लोग मुर्तद हुए। दौरे हाज़िर में भी मुर्तद होते हैं, इस की जीती जागती मिसाल मुल्ऊन वसीम रिज़वी है कि ज़िन्दगी के आख़िरी वक़्त में जबकि एक पैर क़ब्र में है उस वक़्त मुर्तद हो गया। मैं कहूंगा कि क़ब्र वाला मुहावरा उसके लिये अब दुरुस्त नहीं है बल्कि मुहावरा यह कहना पड़ेगा एक पैर चिता में है, उस वक़्त मुर्तद हो गया। फिर लानती वसीम रिज़वी दूसरों के मुर्तद होने पर तअज्जुब क्यों करता है और उसके पेट में दर्द क्यों उठता है।

लानती वसीम रिज़वी को मालूम होना चाहिये कि जिस तरह हक़ बात उस की समझ में न आई, इस तरह हर दौर में लोग होते हैं जो हक़ से मुंह फेर कर मुर्तद हो जाते हैं।

किस के सामने बलात्कारः

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 145 पर शौहर के सामने अस्मत दरी के उन्वान के तहत अबू दाऊद का हवाला देते हुए लिखता है किः

> ''सईद अल खुदरी ने कहा कि जब रसूल ने हुनैन के औतास क़बीले पर हम्ला करके वहां के लोगों को पराजित करके उनकी औरतों को बंधक बना लिया। तब रसूल ने अपने साथियों को आदेश दिया कि तुम इस युद्ध में पकड़ी गयी औरतों के साथ बलात्कार करो, लेकिन कुछ लोग उन औरतों के पतियों के सामने ही ऐसा करने से झिझक रहे थे। तब रसूल ने उसी समय सूरा निसा 4:24 की आयत सुना दी, जिसमें कहा है कि तुम पकड़ी गयी औरतों के साथ सम्भोग नहीं कर सकते हो, यदि वह मासिक धर्म से रजस्वला हो।''

लानती वसीम रिज़वी एक झूट का इज़ाफ़ा कर देता है और लिखता है:

“सईद ख़ुदरी ने कहा कि पकड़ी गयी औरतों में से अपने बराबर की आयु वाली औरतों के साथ सम्भोग कर सकते हैं।”

मोहतरम क़ारईन! मैं अबू दाऊद की वह हदीस पेश करता हूं जिस का हवाला उस ने दिया है, इस हदीस में कितनी बातें अपनी तरफ़ से गढ़ी हैं। दोनों हदीस का मवाज़ना (तुलना) कीजिये तो कई झूटी बातें आपके सामने आ जाएंगी।

अबू दाऊद जिल्द दोम, सफ्हा 148, किताबुन निकाह, हदीस नंबर 388

“حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ بْنِ مَيْسَرَةَ، حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ
زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ صَالِحٍ أَبِي الْخَلِيْلِ،
عَنْ أَبِي عَلْقَمَةَ الْهَاشِمِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ، أَنَّ
رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ يَوْمَ حُنَيْنٍ
بَعْثًا إِلَى أَوْطَاسَ، فَلَقُوْا عَدُوَّهُمْ فَقَاتَلُوْهُمْ فَظَهَرُوْا
عَلَيْهِمْ وَأَصَابُوْا لَهُمْ سَبَايَا، فَكَأَنَّ أُنَاسًا مِنْ أَصْحَابِ
رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَحَرَّجُوْا مِنْ
غِشْيَانِهِنَّ مِنْ أَجْلِ أَزْوَاجِهِنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ، فَأَنْزَلَ
اللهُ تَعَالَى فِيْ ذٰلِكَ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا
مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ۔”

तर्जमा: हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने ग़ज़वए हुनैन के दिन एक फ़ौज औतास रवाना की, उनका दुशमन से मुक़ाबला हुआ, उन्होंने उनसे जंग की और उस पर ग़ालिब आए और उन की कुछ

औरतें क़ैद कर ले आए। बाज़ सहाबए किराम ने उनके साथ मुजामिअत से परहेज़ किया क्योंकि वह शादी शुदा थीं और उनके शौहर मुश्रिक थे। उस वक़्त अल्लाह तबारक व तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाईः

(तर्जमा) ''शादी शुदा औरतें तुम पर हराम हैं बांदियों के सिवा यानी इद्दत पूरी होने के बाद वह तुम्हारे लिये हलाल हैं।''

मोहतरम क़ारईन! इसी से मुताल्लिक़ एक और हदीस सहीह मुस्लिम से मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

सहीह मुस्लिम, जिल्द दोम, सफ़्हा 249, किताबुर्रज़ाअ, हदीस नंबर 3594

''وحَدَّثَنِيهِ يَحْيَى بْنُ حَبِيبٍ الْحَارِثِيُّ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَبِي الْخَلِيلِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ أَصَابُوا سَبْيًا يَوْمَ أَوْطَاسَ لَهُنَّ أَزْوَاجٌ فَتَخَوَّفُوا فَأُنْزِلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ۔''

तर्जमाः ''हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, ग़ज़वए औतास में मुसलमानों ने कुछ औरतों को गिरफ़्तार कर लिया, वह शादी शुदा थीं। सहाबए किराम उनके साथ मुजामिअत करने से डरे। उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुईः ''शादी शुदा औरतें तुम पर हराम हैं मासिवा बांदियों के।''

घुसेड़ने की आदतः

मोहतरम क़ारईन! आपने लानती वसीम रिज़्वी की दी गई हदीस को भी पढ़ा, मैंने भी अबू दाऊद की वही हदीस आपके सामने पेश

की, उसके बाद एक हदीस उससे मुताल्लिक़ सहीह मुस्लिम की भी पेश की।

आप ख़ुद अंदाज़ा लगाएं कि लानती वसीम रिज़वी ने कितनी झूटी बातें अपनी तरफ़ से इस हदीस में घुसेड़ दी हैं। अब मैं उस की झूटी बातों को शुमार कराता हूं।

झूट नंबर 1ः

''रसूल ने हुनैन के क़बीला औतास पर हम्ला किया।''

तब्सिराः हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने हम्ला नहीं किया बल्कि सहाबए किराम को हमले के लिये रवाना किया, आप उस में शामिल न थे।

झूट नंबर 2ः

''रसूल ने अपने साथियों को हुक्म दिया कि पकड़ी गई औरतों से अस्मत दरी करो।''

तब्सिराः मोहतरम क़ारईन! आपने ऊपर दी हुई हदीस को पढ़ा, अल्लाह के रसूल ने ऐसा हुक्म दिया ही नहीं या ऐसी कोई बात कही ही नहीं है।

लानती वसीम रिज़वी ने अपनी तरफ़ से यह बात गढ़ दी।

झूट नंबर 3ः

''औरतों के शौहर के सामने ऐसा करने से हिचकिचा रहे थे।''

तब्सिराः झूटे पर अल्लाह की लअनत हो, वह इस तरह से बयान कर रहा है कि उनके शौहर वहां खड़े थे और यह लानती भी वहां मौजूद था और सब कुछ अपनी नज़रों से देख रहा था। अस्तग़्फ़िरुल्लाह! हदीस में यह है कि वह शादी शुदा थीं। यह कम-अक़्ल शादी शुदा से यह समझ रहा है कि उनके शौहर वहां मौजूद थे इसलिये निहायत गंदा उन्वान ''शौहर के सामने अस्मत दरी'' डाला है।

जब इतना बड़ा झूट बोलना ही था और अपने आप को मुअल्लिमुल काज़िबीन यानी झूटों का गुरू कहलाना ही था तो उन्वान

डाल देता "मेरे सामने अस्मत दरी।" इतने झूटों में एक झूट का और इज़ाफ़ा हो जाता, इतनी झूटी बातों से यह साबित हो रहा है कि उस की सरिश्त में झूट और सिर्फ़ झूट है सच नाम की कोई चीज़ नहीं।

क़ारईन! आपने मुलाहिज़ा फ़रमाया अब तक सैकड़ों झूट साबित हो चुके हैं।

झूट नंबर 4:

"गिरफ़्तार शुदा औरतों में से अपनी उम्र की औरतों के साथ मुबाशरत कर सकते हो।"

तब्सिराः मोहतरम क़ारईन! आपने अबू दाऊद और सहीह मुस्लिम की दोनों हदीसों को मुलाहिज़ा फ़रमाया, दोनों हदीसों में कहीं भी लिखा नहीं है कि अपनी उम्र की औरतों के साथ मुबाशरत कर सकते हो। (मआज़ल्लाह सौ बार मआज़ल्लाह)!

जब कोई मुसलसल झूट बोलता है, फिर वह झूट बोलने का आदी हो जाता है तो उस की ज़बान व क़लम से झूट के अलावा सच निकलता ही नहीं।

लानती वसीम रिज़वी का यही हाल है, लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 78 पर "पुत्रवधु के साथ सहवास" के उन्वान के तहत लिखता है किः

> "ज़ैद की शादी हो गयी उसकी पत्नी का नाम "जैनब बिन्त जहश" था। वह काफ़ी सुंदर और गोरी थी। इसलिये मुहम्मद साहब की नज़र ख़राब हो गयी। उन्होंने घोषित कर दिया कि आज से मेरे दत्तक पुत्र को मेरे नाम से नहीं उसके असली बाप के नाम से पुकारा जाए और इसकी पुष्टि के लिये कुरान की सूरा 33:5 भी ठोक दी। ज़ैनब को हासिल करने के लिये मुहम्मद साहब ने फिर कुरान का

दुरुपयोग किया।"

लानती वसीम रिज़वी का असली चेहराः

मोहतरम क़ारईन! यह थी लानती वसीम रिज़वी की बकवास जिसे आपने देखा। मैं क़ुरआन व हदीस और तारीख़ के हवाले से तफ़सीली गुफ़्तगू आपके सामने पेश करता हूं ताकि लानती वसीम रिज़वी का अस्ल चेहरा आपके सामने आ जाए और उसके चेहरे से मुखौटा उतर जाए। हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश की शादी ज़ैद के साथ होने से क़ब्ल वह बेवा हो चुकी थीं और उनके शौहर का इन्तिक़ाल हो चुका था। फिर हुज़ूर ﷺ ने अपने मुतबन्ना ज़ैद से उनका निकाह करा दिया। ज़ैनब बिन्ते जहश इस शादी से राज़ी नहीं थीं क्योंकि वह मुअज़्ज़ज़ ख़ानदाने क़ुरैश से थीं और ज़ैद एक आज़ाद कर्दा ग़ुलाम थे। उस ज़माने के रस्म व रिवाज के मुताबिक़ यह एक मअयूब बात थी। हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने मसावात क़ायम करने के लिये और ऊंच नीच को ख़त्म करने के लिये ज़ैद की शादी ज़ैनब बिन्त जहश से कराना चाहा तो आपके कहने पर ज़ैनब बिन्ते जहश राज़ी हो गईं। ज़ैद के साथ ज़ैनब का निकाहे सानी था, दोनों के दरमियान अज़्दवाजी ज़िन्दगी ख़ुशगवार नहीं थी। जब ज़ैद ने तलाक़ देना चाहा तो हुज़ूर ﷺ ने उसे समझाया कि तलाक़ न दो जैसा कि क़ुरआन की सूरह अहज़ाब आयत नंबर 37 में हैः

> "और तुम जब उस शख़्स से जिस पर ख़ुदा और तुम ने एहसान किया था, यह कहते थे कि अपनी बीवी को निकाह में लिये रहो और ख़ुदा से ख़ौफ़ करो।"

तब्क़ात इब्ने सअद में ज़ैनब बिन्ते जहश की शादी का वाक़िआ बड़ी तफ़सील के साथ बयान किया गया है।

तब्क़ात इब्ने सअद जिल्द 8, सफ़्हा 135 पर है किः

> "ख़बर दी मुहम्मद बिन उमर ने, हदीस बयान की उमर बिन उस्मान जहशी ने, वह बयान करते हैं उस्मान से कि नबी करीम मदीना तशरीफ़ लाए तो हज़रत ज़ैनब भी आपके साथ हिजरत करके मदीना आईं। रसूले ख़ुदा ﷺ ने ज़ैद बिन हारिसह के लिये आप पर प्याम डाला। ज़ैनब बोलीं या रसूलल्लाह! मैं उन्हें अपने लिये पसन्द नहीं करती और मैं क़ुरैश की बेवा हूं। आपने फ़रमायाः मैं उन्हें तुम्हारे लिये पसन्द करता हूं, फिर आपने ज़ैद से उनका निकाह करा दिया।"

इस्लामिक स्कॉलर डॉक्टर रफ़ीक़ ज़करिया अपनी किताब "मुहम्मद और क़ुरआन" जो लानती रुशदी की किताब शैतानी आयात के रद्द में लिखी है, उस किताब के सफ़्हा 114 पर लिखते हैं किः

> "जब हुज़ूर ﷺ ने हज़रत ज़ैनब से शादी की, उन की उम्र 38 साल थी, यह इल्ज़ाम कि तलाक़ के लिये रसूले अकरम ﷺ ज़िम्मादार थे एक निहायत ही बे-बुन्याद रिवायत पर मबनी है। इससे ज़्यादा दरोग़ गोई और इफ़्तिरा की मिसाल मिलना मुश्किल है। हज़रत मुहम्मद ﷺ के लिये ज़ैनब कोई अज्नबी ख़ातून नहीं थीं, वह आप की फूफी की साहबज़ादी थीं, आप उन्हें बचपन से ही जानते थे। हज़रत ज़ैनब के बेवा हो जाने की वजह से आप उनकी ज़िन्दगी की बहाली के ख़्वाहिश मन्द थे। अगर आप उनके हुस्न व जमाल से मुतास्सिर होते तो हज़रत ज़ैद से शादी करने के बजाए ख़ूद अपने निकाह में ला सकते थे। हज़रत ज़ैनब हमेशा इस बात पर अफ़सोस करती थीं कि उन की शादी एक

गुलाम के साथ कर दी गई थी। वह अपने शौहर को कमतर दर्जे का आदमी समझती थीं और उन से उसी तरह का बरताव रखती थीं। हज़रत ज़ैद ने कई बार हुज़ूरे अकरम ﷺ से उनके तौहीन आमेज़ रवय्या की शिकायत भी की लेकिन हुज़ूर ﷺ ने उनको हमेशा सब्र की तल्क़ीन फ़रमाई।''

मोहतरम क़ारईन! मज़्कूरा बाला हवालो से वाज़ेह हो गया है कि लानती वसीम रिज़वी की तमाम बातें झूटी हैं। आइये उस के झूट का जाइज़ा लेते हैं।

झूट नंबर 1ः

''बहू के साथ सोहबत''

तब्सिराः जब ज़ैद ने तलाक़ दे दी तो अब बहू कहां रही? हर मज़हब का अलग अलग रस्म व रिवाज और क़ानून है। इस्लामी क़ानून में मुतबन्ना बेटे की बीवी सुलबी बेटे की बीवी की तरह हराम नहीं है। सुलबी बेटे की बीवी हमेशा के लिये हराम है जैसा कि सूरए निसा की आयत नंबर 23 में हैः وابنائکم الذین من اصلابکم۔ और तुम्हारे नस्ली बेटों की बीवियां।

यह बात वाज़ेह हो गई कि इस्लामी क़ानून के मुताबिक़ मुतबन्ना बेटे की बीवी और सुलबी बेटे की बीवी में फ़र्क़ है। इस्लामी क़ानून के मुताबिक़ मुतबन्ना बेटा जायदाद में हक़दार नहीं होता। यह इस्लाम का एक ज़ाब्ता है दूसरे मज़ाहिब में भी कुछ ज़ाब्ते हैं।

न्योग क्या है?

डॉक्टर मुहम्मद अहमद नईमी अपनी किताब ''इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ'' जिल्द दोम में सफ़्हा नंबर 594 पर लिखते हैं किः

''इसी तरह ऋग-वेद में एक मक़ाम पर तालीम दी

गई है कि जब शौहर औलाद पैदा करने के लायक़ न हो तो अपनी औरत को दूसरे शौहर के पास जाने की इजाज़त दे। इस रस्म को न्योग कहते हैं।''

सत्य प्रकाश में एक मंत्र का तर्जमा दयानंद सरस्वती इस तरह करते हैं।

''ऐ नेक बख़्त औरत! ख़ुश नसीबी की ख़्वाहिश करने वाली औरत! तू मेरे अलावा दूसरे शौहर की ख़्वाहिश कर।''

डॉक्टर मुहम्मद अहमद नईमी अपनी किताब ''इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ'' जिल्द दोम, सफ़्हा 595 पर लिखते हैं कि:

''हिन्दू धर्म व तहज़ीब में एक औरत के बयक वक़्त मुख़्तलिफ़ शौहर हो सकते हैं। इस की सबसे पहली मिसाल महाभारत की द्रोपदी रानी की सूरत में नज़र आती है जो पांच पांडव भाइयों की मुश्तरिका बीवी थी।''

चुनान्चे महाभारत आदी पर्व में लिखा है:

''ज़बरदस्त जलाल वाले पांडवों ने जैसे ही द्रोपदी को देखा, वैसे ही प्यार के देवता ने उनके हवास बाख़्ता करके उन पर अपना असर जमा दिया। ईश्वर ने द्रोपदी के ख़ूबसूरत हुस्न को दूसरी औरतों के मुक़ाबिल बहुत हसीन और सभी जानदारों के दिल माइल करने वाला बनाया था। इन्सानों में आला और कुंती के बेटे युधिष्टर ने अपने भाइयों का रंग ढंग देख कर उन के दिल की बात समझ ली और साथ ही साथ व्यास ऋषी की सारी बातें उन को याद आ गईं। राजा युधिष्टर यह सोच कर कि कहीं भाइयों में

आपस में दुश्मनी न हो, तमाम भाइयों से बोले कि
बेहतरीन ख़ूबियों वाली द्रोपदी हम सब की बीवी है।''

मोहतरम क़ारईन! मज़्कूरा बाला हवाला देने का मतलब किसी मज़हबी रस्म व रिवाज पर तब्सिरा करना नहीं है बल्कि यह बताना मक़सद है कि हर मज़हब का अपना अपना दस्तूर और रस्म व रिवाज है लेकिन लानती वसीम रिज़वी का मुतालिआ इतना मुख़्तसर और कम है कि यह सब बातें उस को मालूम ही नहीं हैं।

लानती वसीम रिज़वी की बीनाई ख़त्मः

इस वाक़िआ में लानती वसीम रिज़वी के झूट को शुमार कराता हूं।

झूट नंबर 1ः

''मुहम्मद साहब की नज़र ख़राब हो गई।''

तब्सिराः लानती वसीम रिज़वी को मालूम होना चाहिये कि जिस वक़्त हुज़ूर ﷺ ने हज़रत ज़ैनब से निकाह फ़रमाया उस वक़्त हज़रत ज़ैनब की उम्र 38 साल थी। हुज़ूर ﷺ हज़रत ज़ैनब को बचपन से जानते थे क्योंकि आप की फूफी ज़ाद बहन थीं। लानती वसीम रिज़वी की सोच पर जितना मातम करें कम है कि जब हज़रत ज़ैनब जवान थीं उस वक़्त नबी करीम ﷺ की नियत ख़राब नहीं हुई, जब जवानी ढल गई, उम्र 38 साल हो गई उस वक़्त आप ﷺ की नियत ख़राब हुई। (मआज़ल्लाह) क्या कोई अक़्लमन्द इस बात को तसलीम करेगा। अगर लानती वसीम रिज़वी के पास बीनाई होती तो इस तरह की बातें नहीं करता।

झूट नंबर 2ः

''मुहम्मद साहब ने ज़ैनब को हासिल करने के लिये क़ुरआन का ग़लत इस्तेमाल किया।''

तब्सिराः मोहतरम क़ारईन! अब वाज़ेह हो गया कि लानती वसीम रिज़वी कितना बड़ा झूटा है, क़ुरआन की आयत जो आपने पढ़ी उस

में है कि: "अपनी बीवी को निकाह में लिये रहो।" यानी कुरआन की आयत से यह साबित होता है कि हुज़ूर ज़ैद को तलाक़ देने से मना फ़रमा रहे थे और लानती वसीम रिज़्वी कहता है कि कुरआन का ग़लत इस्तेमाल किया। लानती वसीम रिज़्वी ने सूरए अहज़ाब की आयत नंबर 5 बयान की है, इसकी वज़ाहत मैं आपके सामने पेश करूं।

तफ़सीरे ख़ाज़िन में है कि: "ले-पालक बच्चे को पालने वालों का बेटा क़रार देने से मना किया गया" और इस आयत में यह फ़रमाया जा रहा है कि तुम बच्चों को उनके हक़ीक़ी बाप ही की तरफ़ मन्सूब करके पुकारो, यह अल्लाह तआला के नज़्दीक ज़्यादा इन्साफ़ की बात है। फिर अगर तुम्हें उनके बाप का इल्म न हो और इस वजह से तुम उन्हें उनके बापों की तरफ़ मन्सूब न कर सको तो वह तुम्हारे दीनी भाई और दोस्त हैं। जिस के ले-पालक हैं उस का बेटा न कहो और मुमानिअत का हुक्म आने से पहले तुम ने जो लाइल्मी में ले-पालकों को उनके पालने वालों का बेटा कहा उस पर तुम्हारी गिरफ़्त न होगी।

इस्लामी क़ानून में बच्चा गोद लेना जाइज़ है लेकिन यह याद रहे कि गोद में लेने वाला आम बोल चाल में या काग़ज़ात Documents वग़ैरा में उसके हक़ीक़ी बाप के तौर पर अपना नाम इस्तेमाल नहीं कर सकता बल्कि सब जगह अस्ली वालिद का ही नाम इस्तेमाल करेगा।

(D. N. A.) डी, एन, ए क्या है?

अगर ग़ौर किया जाए तो मेडिकल के एतेबार से भी अस्ल बाप को तसलीम किया जाता है। इन्सान की अस्लियत का पता लगाने के लिये (DNA) यानी जीन (Deoxyribonucleic Acid) टेस्ट किया जाता है। जीन को मौरूसी इकाई कहा जाता है, जो वालिदैन का कोई

ख़ास्सा या कई ख़ास्सात औलाद को मुन्तक़िल करती है, यह मौरूसी इकाइयां डी, एन, ए के तवील सालमे पर मौजूद होती हैं।

हर इन्सान का डी एन ए मुख़्तलिफ़ होता है, हर इन्सान अपने डी एन ए का 50 फ़ीसद हिस्सा अपनी मां से और 50 फ़ीसद अपने बाप से पाता है। डी एन ए से उसके अस्ल वालिदैन का पता चलता है।

क़ुरआन कहता है ले-पालक बेटे को उसके अस्ली बाप का नाम दो और डी एन ए भी इन्सान के अस्ली बाप को बताता है। किसी भी डी एन ए टेस्ट में अस्ली बाप को बताएगा न कि गोद लेने वाले का नाम। यह हक़ीक़त पर मबनी है कि बच्चे की परवरिश कोई भी करे अस्ली बाप वही रहेगा जिसके पानी से वह पैदा हुआ है। इसलिये इस्लाम ने गोद लिये हुए बच्चे को अस्ली बाप का नाम दिया है और उसी की तरफ़ मन्सूब करने का हुक्म है।

अब लानती वसीम रिज़वी को समझ में आ गया होगा कि अस्ली बाप कौन होता है और गोद लेने वाले का हुक्म क्या होता है।

लानती वसीम रिज़वी की यौन शिक्षा से रुचिः

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 87 पर "आयशा सहाबियों को सेक्स सिखाती थी" उन्वान के तहत लिखता है कि "रसूल की पत्नी आयशा ने कहा कि एक आदमी रसूल के पास गया और उनसे पूछा कि मैं जब अपनी पत्नी के साथ सम्भोग करता हूं तो स्खलित नहीं होता। क्या ऐसे सम्भोग के बाद स्नान करना ज़रूरी है? उस समय वहां आयशा भी मौजूद थी। रसूल ने कहा कि जब भी मैं और ईमान वालों की माता (आयशा) सम्भोग करते हैं, तो स्नान करते हैं।"

लानती वसीम रिज़वी इसके अलावा एक हदीस और भी बयान करता है। अब मैं दोनों हदीस अस्ल मतन के साथ पेश करता हूं,

फिर लानती वसीम रिज़वी की मक्कारी बयान करता हूं।

सहीह मुस्लिम, जिल्द अव्वल, सफ़्हा 292, किताबुल हैज़, हदीस नंबर 784

''حَدَّثَنَا هَارُوْنُ بْنُ مَعْرُوْفٍ وَهَارُوْنُ بْنُ سَعِيْدٍ الْأَيْلِيُّ قَالَا حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنِيْ عِيَاضُ بْنُ عَبْدِاللّٰهِ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللّٰهِ عَنْ أُمِّ كُلْثُوْمٍ عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ إِنَّ رَجُلًا سَأَلَ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الرَّجُلِ يُجَامِعُ أَهْلَهُ ثُمَّ يُكْسِلُ هَلْ عَلَيْهِمَا الْغُسْلُ وَعَائِشَةُ جَالِسَةٌ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنِّيْ لَأَفْعَلُ ذٰلِكَ أَنَا وَهٰذِهٖ ثُمَّ نَغْتَسِلُ۔''

तर्जमाः ''हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया कि कोई शख़्स अपनी बीवी से सोहबत करे, फिर इंज़ाल से पहले अलग हो जाए तो क्या उस पर ग़ुस्ल वाजिब होता है? रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत आयशा की तरफ़ इशारा करके फ़रमायाः मैं और यह ऐसा करते हैं और फिर ग़ुस्ल करते हैं।''

दूसरी हदीस भी आप मुलाहिज़ा फ़रमाएंः

सहीह मुस्लिम जिल्द अव्वल, सफ़्हा 292, किताबुल हैज़, हदीस नंबर 783

''حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنّٰى حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِاللّٰهِ الْأَنْصَارِيُّ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ هِلَالٍ عَنْ أَبِيْ بُرْدَةَ عَنْ أَبِيْ مُوْسَى الْأَشْعَرِيِّ ح

وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى وَهَذَا حَدِيْثُهُ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلَالٍ قَالَ وَلَا أَعْلَمُهُ إِلَّا عَنْ أَبِيْ بُرْدَةَ عَنْ أَبِيْ مُوْسَى قَالَ اخْتَلَفَ فِيْ ذَلِكَ رَهْطٌ مِنَ الْمُهَاجِرِيْنَ وَالْأَنْصَارِ فَقَالَ الْأَنْصَارِيُّوْنَ لَا يَجِبُ الْغُسْلُ إِلَّا مِنَ الدَّفْقِ أَوْ مِنَ الْمَاءِ وَقَالَ الْمُهَاجِرُوْنَ بَلْ إِذَا خَالَطَ فَقَدْ وَجَبَ الْغُسْلُ قَالَ قَالَ أَبُوْ مُوْسَى فَأَنَا أَشْفِيْكُمْ مِنْ ذَلِكَ فَقُمْتُ فَاسْتَأْذَنْتُ عَلَى عَائِشَةَ فَأُذِنَ لِيْ فَقُلْتُ لَهَا يَا أُمَّاهُ أَوْ يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِيْنَ إِنِّيْ أُرِيْدُ أَنْ أَسْأَلَكِ عَنْ شَيْءٍ وَإِنِّيْ أَسْتَحْيِيْكِ فَقَالَتْ لَا تَسْتَحْيِيْ أَنْ تَسْأَلَنِيْ عَمَّا كُنْتَ سَائِلًا عَنْهُ أُمَّكَ الَّتِيْ وَلَدَتْكَ فَإِنَّمَا أَنَا أُمُّكَ قُلْتُ فَمَا يُوْجِبُ الْغُسْلَ قَالَتْ عَلَى الْخَبِيْرِ سَقَطْتَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا جَلَسَ بَيْنَ شُعَبِهَا الْأَرْبَعِ وَمَسَّ الْخِتَانُ الْخِتَانَ فَقَدْ وَجَبَ الْغُسْلُ۔"

तर्जमाः हज़रत अबू मूसा अशअरी बयान फ़रमाते हैं कि मुहाजिरीन और अन्सार का इस बात में इख़्तिलाफ़ हुआ कि बग़ैर इंज़ाल के ग़ुस्ल वाजिब होता है कि नहीं। अन्सारी सहाबा यह कहते थे कि ग़ुस्ल सिर्फ़ इंज़ाल से वाजिब होता है और मुहाजिरीन कहते थे कि सिर्फ़ सोहबत करने से ग़ुस्ल वाजिब होता है। हज़रत अबू मूसा ने फ़रमाया कि मैंने कहा मैं इस मुआमिला में तुम्हारी अभी तसल्ली कराता हूं। मैं वहां से उठ कर हज़रत आयशा सिद्दीक़ा

रज़ियल्लाहु अन्हा के पास हाज़िर हुआ और बारयाबी की इजाज़त चाही। इजाज़त मिलने पर मैंने अर्ज़ किया, ऐ मेरी मां और तमाम मुसलमानों की मां! मैं आपसे एक मस्अला हल कराना चाहता हूं लेकिन मुझे शर्म आती है। हज़रत आयशा ने फ़रमायाः मैं तुम्हारी हक़ीक़ी वालिदा की तरह हूं, मुझ से कोई बात पूछने में शर्म न करो। मैंने अर्ज़ किया, ग़ुस्ल किस चीज़ से वाजिब होता है? आपने फ़रमायाः तुम ने उससे यह बात पूछी है जिसको इस मस्अला का इल्म है। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः जब आदमी चार शानों के दरमियान बैठे और दो शर्मगाहें मिल जाएं तो ग़ुस्ल वाजिब हो जाता है।''

मोहतरम क़ारईन! आपने दोनों हदीसों को पढ़ा। क्या इस में जिन्सी तालीम की तरग़ीब है? क्या इससे यह ज़ाहिर हो रहा है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा ने सहाबा को जिन्सी तालीम दी? कोई भी इन्साफ़ पसन्द इस बात को क़ुबूल नहीं करेगा कि इस में जिन्सी तालीम है। लेकिन लानती वसीम रिज़वी के ज़हन व फ़िक्र में सेक्स ऐसा मुसल्लत है कि हर चीज़ में उसको सेक्स ही नज़र आता है। इस किताब के मुतालिआ से आप को ख़ुद अंदाज़ा हो गया होगा कि उस कम-ज़र्फ़ को हर वाक़िआ में सेक्स ही नज़र आता है। उस कम-ज़र्फ़ को हर वाक़िआ में सेक्स का मिर्च मसाला लगाने का कितना शौक़ है।

ऊपर की दोनों हदीसें सफ़ाई और पाकीज़गी को बताती हैं। यह एक इस्लामी और शरई मस्अला है कि आदमी बीवी से कितना क़रीब हो कि उस को ग़ुस्ल करना ज़रूरी है। यह मुआमिला हर ज़ौजैन को पेश आ सकता है तो इस का इस्लामी क़ानून जानना भी ज़रूरी है। हुज़ूरे अक़दस ﷺ के ज़ाहिरी विसाल के बाद सहाबए किराम

अहम अहम मसाइल में उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की तरफ़ रुजूअ होते थे इसलिये कि आप मुज्तहिदा थीं। इस मस्अला में इख़्तिलाफ़ होने की सूरत में मस्अला के हल के लिये उन के पास गए। आपने सहीह इस्लामी क़ानून बता दिया। यह तो दुनिया का दस्तूर और निज़ाम है कि हर मस्अला को अपने से ज़्यादा जानने वाले के पास जाकर ही हल किया जाता है।

लानती वसीम रिज़वी को दूसरे मज़हब की किताबों का भी मुतालिआ करना चाहिये जैसा कि जिन्सी तअल्लुक़ से दयानंद सरस्वती अपनी किताब सत्यार्थ प्रकाश सम्लास चौथा बाब ''ग्रभादान सन्सकार'' उन्वान के तहत लिखता है किः

> ''ब्याह के तरीक़ा को पूरा करके ख़ल्वत में चले जाएं, मर्द मनी डालने और औरत मनी खींचने की जो तरकीब है उसी के मुताबिक़ देनों हम-बिस्तरी करें। जहां तक हो सके वहां तक ब्रहमचार्य की मनी को फ़ुज़ूल ज़ाए न करे। जब मनी बच्चा-दानी में गिरने का वक़्त हो, उस वक़्त औरत मर्द दोनों बे-हरकत नाक के सामने नाक, आंख के सामने आंख यानी सीधा जिस्म हो, हिलें नहीं, मर्द अपने जिस्म को ढीला छोड़ दे, औरत मनी हासिल करते वक़्त सांस ऊपर खींचे, अपनी शर्मगाह को ऊपर सुकड़ लें, मनी ऊपर खींच के बच्चा दानी में ठहरा दें, फिर दोनों साफ़ पानी से ग़ुस्ल करें।''

मनु धर्म शास्त्र, बाब तीसरा, श्लोक 19

> ''शुद्र औरत के लबों का बोसा लेने, अपने गालों को उस की सांसों से गर्म करने और उस में बेटा पैदा करने के गुनाहों का कफ़्फ़ारा किसी शास्त्र में लिखा नहीं है।''

दयानंद सरस्वती अपनी किताब ‘‘सत्यार्थ प्रकाश’’ सम्लास छटा में उन से एक सवाल किया जाता है कि अगर औरत हामिला हो और मर्द की जवानी का आलम हो, उसे बग़ैर औरत के रहा न जाए तो क्या करे?

दयानंद सरस्वती जी जवाब देते हैं, ‘‘अगर हामिला औरत से एक साल बग़ैर हम-बिस्तरी रहा न जा सके तो किसी से न्योग करके उसके लिये औलाद पैदा कर दे।’’

रावण ने सीता से क्या कहा?

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, सर्ग नंबर 46, सफ़्हा नंबर 448, मत्बूआ गीता प्रेस गोरखपूर में लिखा है कि रावन सीता को मुख़ातब करके कहता है किः

> ‘‘सुन्दर मुस्कान, रुचिर दन्तावली और मनोहर नेत्रवाली विलासिनी रमणी। तुम अपने रूप-सौन्दर्य से मेरे मन को वैसे ही हरे लेती हो, जैसे नदी जल के द्वारा अपने तट का अपहरण करती है।
> तुम्हारी कमर इतनी पतली है कि मुट्ठी में आ जाय। केश चिकने और मनोहर हैं। दोनों स्तन एक-दूसरे से सटे हुए हैं। सुन्दरी! देवता, गन्धर्व, यक्ष और किन्नर जाति की स्त्रियों में भी कोई तुम-जैसी नहीं है।

अब लानती वसीम रिज़वी बताए कि क्या यह मज़हबी किताबें और दयानंद सरस्वती अपने पैरोकारों को जिन्सी तालीम दे रहे हैं? इस का जवाब लानती वसीम रिज़वी को देना चाहिये।

किसी इन्सान को जिन्सी इमराज़ लाहिक़ हो जाएं और वह किसी डॉक्टर से रुजूअ करे और डॉक्टर उसे जिन्सी मशवरा दे तो क्या कोई यह कहेगा कि डॉक्टर ने फ़ुलां मरीज़ को जिन्सी तालीम दी।

ख़्वातीन को दौराने हमल जिन्स से मुताल्लिक़ कई मसाइल दरपेश होते हैं। कभी डॉक्टर ख़्वातीन को हालात के जाइज़ा के बाद यह मशवरा देता है कि आप अपने शौहर से वुज़ए हमल तक हम-बिस्तरी न करें, तो क्या लानती वसीम रिज़वी के मुताबिक़ यह कहा जाएगा कि डॉक्टर ने ख़्वातीन को जिन्सी तालीम दी? नहीं और हरगिज़ नहीं। लेकिन लानती वसीम रिज़वी जैसे सेक्सी ज़हन का मालिक यह ज़रूर कहेगा कि डॉक्टर ने ख़्वातीन को जिन्सी तालीम दी।

ज़रूरत पड़ने पर जिन्सी आज़ा और जिन्सी तअल्लुक़ से गुफ़्तगू की जाती है लेकिन उस को जिन्सी तालीम नहीं कहा जाएग। डॉक्टर मुहम्मद नईमी अपनी किताब ‘‘इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ’’ जिल्द दोम के सफ़्हा 403 में मनु स्मृती के हवाला से लिखते हैं कि ‘‘औरते शक्ल व सूरत का लिहाज़ नहीं करती हैं और न हम-उम्र का ख़्याल रखती हैं, ख़ूबसूरत हो या बद-सूरत मर्द का साथ पाते ही उसके साथ मुबाशरत करती हैं।’’

डॉक्टर साहब इसी किताब के सफ़्हा 556 पर मनु स्मृती के हवाले से गांधर्व विवाह के बारे में लिखते हैं कि ‘‘लड़की और लड़के के रज़ा व पसन्द से दोनों का मुआहिदा और इत्तिहाद होना गांधर्व विवाह कहलाता है। यह जिस्मानी ख़्वाहिश के मक़सद के लिये होता है और यह हम-बिस्तरी के लिये बहुत मुफ़ीद है।

डॉक्टर साहब अपनी किताब के सफ़्हा 691 पर मनु स्मृती के हवाला से लिखते हैं कि

> ‘‘जब फ़रेब या धोके से ज़िना किया जाता है तो सारी दौलत छीन ली जाती है और माथे पर औरत की शर्मगाह के नक़्शा का दाग़ लगाया जाता है।’’

इसी किताब के सफ़्हा 750 पर मनु स्मृती के हवाला से दर्ज है कि

"उस्ताद या गुरू की बीवी के साथ बदकारी करने वाले की पेशानी पर औरत की शर्मगाह का नक़्शा तपे हुए लोहे से बना दे।"

मज़्कूरा बाला चन्द इक़्तिबास हिन्दू धर्म की मज़हबी किताबों से अख़ज़ किये गए हैं। इन में शर्मगाह का ज़िक्र है, ज़िना का ज़िक्र है, हम-बिस्तरी का ज़िक्र है, माथे पर औरत की शर्मगाह का दाग़ लगाए जाने का ज़िक्र है, पेशानी पर तपे हुए लोहे से शर्मगाह का नक़्शा बनाने की बात है।

मेरा मक़सद किसी मज़हब के रुसूम व रिवाज और क़ानून पर तब्सिरा करना नहीं है और न मैं यह कहूंगा कि यह सब बातें जिन्सी तालीम पर मुश्तमल हैं। मैं लानती वसीम रिज़वी से सवाल करता हूं कि मनु स्मृती की बातें क्या जिन्सी तालीम पर मुन्हसिर हैं? वह क्या जवाब देगा, वह तो जवाब देने का लायक़ ही नहीं है। लानती वसीम रिज़वी ने अपनी किताब के सफ़्हा ८५ पर एक उन्वान "पत्नी से गुदा मैथुन (Sodomy) हलाल है" लिखा है। आगे वह लिखता है "जब इब्ने उमर ने कहा कि रसूल ने इस आयत में औरत के साथ उसके गुदा में सम्भोग करने की इजाज़त दे दी है। और गुदा मैथुन (Sodomy) को हलाल बताया है।" हवाला दिया है दुर्रे मन्सूर, जिल्दः 1, सफ़्हा 638

मोहतरम क़ारईन! सबसे पहले दुर्रे मन्सूर से हवाला नक़्ल करता हूं, दुर्रे मन्सूर जिल्दः 1, सफ़्हा 638 में हैः

"من طریق یزید بن رومان عن عبیداللہ بن عبداللہ بن عمر ان عبداللہ بن عمر کان لایری باسا ان یاتی الرجل المراۃ فی دبرھا۔"

तर्जमाः "यज़ीद बिन रोमान से रिवायत है, वह बयान करते हैं उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह से कि अब्दुल्लाह बिन उमर कोई हर्ज नहीं जानते थे कि मर्द औरत के पीछे से आए।"

इस इबारत को बार बार पढ़िये, इस में कहीं रसूलुल्लाह ﷺ

का ज़िक्र है या इब्ने उमर यह कहते हों कि मैं इस फ़ेअल में कोई हर्ज नहीं देखता हूं बल्कि इस इबारत को उनकी तरफ़ मन्सूब कर दी गई है और यह इबारत "كان لايرى باسا ان ياتى الرجل المراة فى دبرها۔" को उन का क़ौल बताया गया है।

मोहतरम क़ारईन! तफ़सील में जाने से पहले लानती वसीम रिज़वी के झूट को भी शुमार कर लीजिये।

झूट नंबर 1:

"बीवी के साथ अग़लाम बाज़ी हलाल है।"

तब्सिराः हराम हराम सख़्त हराम है। इसके सुबूत में कुरआन की आयत व अहादीस आपके सामने पेश करूंगा।

झूट नंबर 2:

"जब इब्ने उमर ने कहा"

तब्सिराः यह भी सरासर झूट है, इब्ने उमर ने नहीं कहा बल्कि यज़ीद बिन रोमान ने उनके बेटे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह से रिवायत करते हुए कहा कि इब्ने उमर ऐसा कहा करते थे। इससे यह साबित हो गया कि यह इब्ने उमर का क़ौल नहीं है।

झूट नंबर 3:

"रसूल ने इस आयत में औरत के साथ उसके मक़अद मे हम-बिस्तरी की इजाज़त दे दी।"

तब्सिराः झूट, झूट, सफ़ेद झूट, न कुरआन की आयत में इस की इजाज़त है। न हदीस में इस की इजाज़त है, न ही किसी सहाबी ने इस को हलाल जाना। कुरआन और हदीस आपके सामने पेश करता हूं ताकि लानती वसीम रिज़वी के झूट का जनाज़ा धूम धाम से निकले।

गुदा मैथुन इस्लाम में हरामः

सूरए निसा, आयत नंबर 223

"نساء کم حرث لکم فاتوا حرثکم آنی شئتم۔"

तर्जमाः "तुम्हारी औरतें तुम्हारे लिये खेतियां हैं तो आओ अपनी खेती में जिस तरह चाहो।"

तफ़सीरे कबीर में है, इस आयत की शाने नुज़ूल यह है कि अरब के यहूदी कहते थे जो कोई अपनी बीवी के साथ पीछे की जानिब से आगे के मक़ाम में सोहबत करे तो बच्चा भेंगा पैदा होगा और आम अहले अरब का भी यही अक़ीदा था। एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बारगाहे नबवी में हाज़िर हुए और अर्ज़ करने लगे, या रसूलल्लाह! मैं तो हलाक हो गया कि मैं पीछे की जानिब से आगे के मक़ाम पर जिमाअ करता हूं। फिर यह आयते करीमा नाज़िल हुई जिस में यह हुक्म है कि हर जानिब से सोहबत की इजाज़त दी गई है बशर्तेकि वह आगे का ही मक़ाम हो।

इस आयत में यह बताया गया है कि तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेतियां हैं यानी अफ़्ज़ाइशे नस्ल का ज़रिया हैं, ज़ाहिर सी बात है कि आगे का मक़ाम ही खेती है न कि पीछे का। इस आयत से साबित हो गया कि पीछे के मक़ाम में मुबाशरत जाइज़ नहीं अल्बत्ता पीछे की जानिब से आगे के मक़ाम पर मुबाशरत कर सकते हैं।

लानती वसीम रिज़वी ने बड़ी ज़ोरदार सुर्ख़ी लगा दी "बीवी के साथ अग़लाम बाज़ी हलाल है" जबकि इस के मतलब को वह समझा ही नहीं। अब आइये इब्ने उमर के तअल्लुक़ से हदीस आपके सामने पेश करता हूं।

अद्दुर्रुल मन्सूर, जिल्द 1, सफ़्हा 635

"اخرج النسائی والطبرانی وابن مردویه عن ابی النضر انه قال لنافع مولی ابن عمر انه قد اکثر علیك القول انك تقول عن ابن عمر انه افتی ان یوتی النساء فی ادبارهن قال کذبوا علی۔"

तर्जमाः ‘‘इब्ने मरदवियह रिवायत करते हैं अबुन्नज़्र से कि उन्होंने नाफ़ेअ से कहा जो इब्ने उमर के आज़ाद करदा गुलाम हैं, आपके बारे में यह कहा जाता है कि आप यह कहते हैं कि इब्ने उमर ने यह फ़तवा दिया कि औरतों के पीछे से मुबाशरत कर सकते हो। तो नाफ़ेअ ने जवाब दिया कि लोगों ने मुझ पर झूटा इल्ज़ाम बांधा।’’

अद्दुर्रुल मन्सूर, जिल्द 1, सफ़्हा 637

”فان الحارث بن یعقوب یروی عن ابی الحباب سعید بن یسار انہ سال ابن عمر فقال یاابا عبدالرحمٰن انا نشتری الجواری افنحمض لھن قال وما التحمیض فذکر لہ الدبر فقال ابن عمر اف اف ایفعل ذلک مسلم۔“

तर्जमाः ‘‘सईद बिन यसार बयान करते हैं कि उन्होंने सवाल किया इब्ने उमर से, ऐ अबू अब्दुर्रहमान (इब्ने उमर की कुन्नियत) हम बांदी ख़रीदते हैं ताकि तहमीज़ कर सकें। इब्ने उमर ने कहा कि यह तहमीज़ क्या है? तो उन्होंने पीछे के मक़ाम का ज़िक्र किया, तो इब्ने उमर ने कहा ”اف اف ایفعل ذلک مسلم؟“ अफ़सोस है, अफ़सोस है क्या कोई मुसलमान ऐसा कर सकता है?’’

अब लानती वसीम रिज़वी बताए कि जब इब्ने उमर कहते हैं कि अफ़सोस अफ़सोस क्या कोई मुसलमान ऐसा कर सकता है? तो उस को हलाल कैसे कह सकते हैं।

अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती अद्दुर्रुल मन्सूर में बैहक़ी के हवाले से लिखते हैं, अद्दुर्रुल मन्सूर, जिल्द 1, सफ़्हा 634

"عن ابن مسعود قال قال النبی صلے اللہ علیہ وسلم
محاشّ النساء علیکم حرام۔"

तर्जमाः "इब्ने मसऊद से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमायाः औरतों की दुबुर तुम्हारे लिये हराम है।"

झूटा लानती वसीम रिज़वी कैसे कहता है कि रसूल ने मक़अद में हम-बिस्तरी की इजाज़त दी।

तफ़सीर अद्दुर्रुल मन्सूर, जिल्द अव्वल, सफ़्हा 634

"اخرج البیھقی عن قتادہ فی الذی یاتی امراتہ فی
دبرھا قال حدثنی عقبہ بن وشاح ان ابا الدرداء
قال لا یفعل ذلك الا کافر۔"

तर्जमाः "इस को इस्तिख़राज किया है बैहक़ी ने क़तादा से कि जो मर्द अपनी बीवी के पीछे से आए तो उन्होंने कहा कि मुझ से हदीस बयान की उक़बह बिन वशाह ने कि अबू दरदा ने कहा कि ऐसा काम काफ़िर के सिवा कौन कर सकता है।"

तिर्मिज़ी जिल्द अव्वल, सफ़्हा 597, अबवाबुर्रज़ाअ, हदीस नंबर 1164

"حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ وَغَيْرُ وَاحِدٍ قَالُوا حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ
عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ مُسْلِمٍ وَهُوَ ابْنُ سَلَّامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ
عَلِيٍّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا
فَسَا أَحَدُكُمْ فَلْيَتَوَضَّأْ وَلَا تَأْتُوا النِّسَاءَ فِي أَعْجَازِهِنَّ۔"

तर्जमाः "हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमायाः जब तुम में से किसी की हवा ख़ारिज हो तो वुज़ू करे और

औरतों से उस की दुबुर में जिमाअ न करे।"

तिर्मिज़ी, जिल्द अव्वल, सफ़्हा 597, अबवाबुर्रज़ाअ, हदीस नंबर 1165

"حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيدٍ الْأَشَجُّ حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ الْأَحْمَرُ عَنِ الضَّحَّاكِ بْنِ عُثْمَانَ عَنْ مَخْرَمَةَ بْنِ سُلَيْمَانَ عَنْ كُرَيْبٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَنْظُرُ اللهُ إِلَى رَجُلٍ أَتَى رَجُلًا أَوِ امْرَأَةً فِي الدُّبُرِ۔"

तर्जमाः "हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः उस शख़्स की तरफ़ अल्लाह नज़रे रहमत नहीं फ़रमाता जो किसी मर्द या औरत से ग़ैर फ़ितरी अमल करे।"

मोहतरम क़ारईन! अब आप इन्साफ़ से बताएं कि अग़लाम बाज़ी के बारे में इस्लाम का क्या मोक़फ़ है? यह साबित हो गया कि इस्लाम में, क़ुरआन में, हदीस में अग़लाम बाज़ी को सख़्त हराम क़रार दिया गया है। इसकी मज़म्मत की गई है। उम्मीद है कि यह तमाम हवाले लानती वसीम रिज़वी के दिमाग़ में घुस गये होंगे और यह समझ गया होगा कि इस्लाम में अग़लाम बाज़ी हलाल नहीं है।

लानती वसीम रिज़वी को मनु धर्म शास्त्र का भी मुतालिआ करना चाहिये था।

मनु धर्म शास्त्र, बाब 11, श्लोक 174 में है किः

"किसी जानवर या औरत के साथ अग़लाम बाज़ी करने से, पानी के अन्दर मुबाशरत करने से या हैज़ वाली औरत से मुबाशरत करने से सन्तापन करछर करना होगा।" (यानी सन्तापन करछर करने से यह गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाएगा। मुसन्निफ़ आसी)

आइये! सन्तापन करछर किसे कहते हैं इस को समझते हैं।

गाय-मूत्र और गोबरः

मनु इमृती, अध्याय 11, श्लोक 212 में है किः

> ''गउ का मूत्र (गाय का पेशाब), गोबर, दूध, घी और पानी इन सब को मिलाकर पिये और दूसरे दिन उपवास रखे, इस को ''सन्तापन करछर'' कहा जाता है, और जब ऊपर कही हुई चीज़ों को एक एक दिन में एक एक चीज़ को भोजन करे और सातवें दिन उपवास करे तो इस को ''सहा सान्त पनछर'' कहा जाता है।''

जैसा दरख़्त वैसा फल

मोहतरम क़ारईन! क़लम व ज़बान से इन्सान की शख़्सियत और ज़हनियत का पता चलता है। अब मैं आपके सामने लानती वसीम रिज़वी के चन्द जुम्ले बताता हूं, आप को ख़ुद अंदाज़ा हो जाएगा कि कितने गंदे ज़हन का इन्सान है और उसके ज़हन व फ़िक्र पर कितनी गन्दगी छाई हुई है।

वह अपनी किताब के सफ़्हा 137 पर लिखता हैः

> ''बच्चा पैदा करने से उनकी औरतों की योनी इतनी ढीली हो जाती है, कि उस में उनका पति अपना सिर घुसा कर अन्दर देख सकता है।''

मैं लानती वसीम रिज़वी के बारे में सिर्फ़ इतना कहूंगा कि जैसा दरख़्त होता है वैसा ही फल लगता है, इमली के दरख़्त में आम नहीं लगेगा। जो बर्तन में होगा वही उससे टपकेगा, बर्तन में शराब हो तो उससे दूध नहीं टपकेगा, जो लानती वसीम रिज़वी के अन्दर था वही बाहर आया। और हां यह तो अन्दर की बात है कि किस की अंदामे

निहानी ढीली है और किस की नहीं है। फिर लानती वसीम रिज़वी को कैसे मालूम हुआ? शायद लानती वसीम रिज़वी को इस का तजर्बा होगा या सर डाल कर देखा होगा? क्योंकि क़ब्र का हाल तो मुर्दा ही जाने।

लानती वसीम रिज़वी का बड़ा झूटः

मोहतरम क़ारईन! आपके सामने लानती वसीम रिज़वी का एक झूट बयान करने जा रहा हूं, यह झूट भी बहुत बड़ा है। पहले उस का बयान करदा वाक़िआ सुन लीजिये, फिर मेरा हवाला और सुबूत देखिये। फिर फ़ैसला कीजिये कि उस का झूट कितना बड़ा है। वह अपनी किताब के सफ़्हा 91 पर लिखता हैः

> ‘‘फ़ातमा जो मुहम्मद की बेटी थी और अली की पत्नी थी ज़्यादा दिन तक ज़िंदा नहीं रहे और उनकी शहादत हो गई उनकी शहादत के पीछे मुहम्मद के दोस्त उमर जो बाद में दूसरा ख़लीफ़ा बना, उसका हाथ था। उमर ने फ़ातमा के घर पर आकर अपने साथियों के साथ हम्ला किया और दरवाज़े में आग लगा दी, जो दरवाज़ा फ़ातमा के ऊपर गिरा और फ़ातमा की पस्लियां टूट गईं। यह सब मुहम्मद के देहांत के कुछ दिनों के बाद ही घटित हुआ और फ़ातमा की मौत हो गयी।’’

आगे सफ़्हा 93 पर लिखता है कि

> ‘‘पिता के निधन के बाद फ़ातिमा केवल 90 दिन जीवित रही।’’ ‘‘इस्लाम के दूसरे ख़लीफ़ा उमर और उनके साथियों ने जब आपके घर को आग लगाई गयी उस समय आप द्वार के पीछे खड़ी थीं। जब किवाड़ों को धक्का देकर शत्रुओं ने घर में प्रवेश किया

तो उस समय आप दर व दीवार के मध्य भिंच गयीं जिस कारण आपके सीने की पसलियां टूट गयीं, व आपका वह बेटा भी स्वर्गवासी हो गया जो अभी जन्म भी नहीं लिया था। जिनका नाम गर्भावस्था में ही मुहसिन रख दिया गया था।

वह सफ़्हा 84 पर लिखता है कि

"उमर अली के घर पर गया, वहां तल्हा, ज़ुबैर और मुहाजिरों का पूरा गिरोह मौजूद था। उमर ने धम्की देकर कहा, अल्लाह की क़सम! अगर तुम लोग मेरे हाथ पर बैयत (वफ़ादारी का वचन) नहीं करोगे तो मैं तुम्हारे पूरे घर वालों को ज़िन्दा जलवा दूंगा। यह सुनकर ज़ुबैर तलवार लेकर बाहर निकला लेकिन गिर गया और तलवार भी हाथ से छूट गई, बाद में उमर के लोग उसे क़ैद करके ले गए।"

तब्सिराः सबसे पहले तारीख़ के हवाले से यह देखते हैं कि हुज़ूर ﷺ का विसाल कब हुआ? हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का विसाल कब हुआ? सय्यदिना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त कब क़ायम हुई? सय्यदिना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त कब क़ायम हुई? हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की वफ़ात कब और कैसे हुई? यह सब जानने के बाद लानती वसीम रिज़वी के झूट से पर्दा उठ जाएगा।

तब्क़ात इब्ने सअद जिल्द सोम सफ़्हा 30 पर है कि

"हुज़ूरे अक़दस ﷺ का विसाल 11 हिजरी में हुआ और सय्यदिना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु 11 हिजरी में ख़लीफ़ा हुए।" और तब्क़ात इब्ने सअद, जिल्द सोम के ही सफ़्हा 45 पर है कि 22 जमादिल उख़रा 13 हिजरी को आप का विसाल हुआ।

"13 हिजरी को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा दोम बने और फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का विसाल ११ हिजरी में हुआ।"

तब्क़ात इब्ने सअद, जिल्द 8, सफ़्हा 47 पर है कि आपने 11 हिजरी में तक़रीबन 29 साल की उम्र में ३ रमज़ान को मंगल की रात दाइए अजल को लब्बैक कहा।

अब आइये हज़रत फ़ातिमा के विसाल के बारे में जानते हैं कि

तब्क़ात इब्ने सअद, जिल्द 8, सफ़्हा 46 पर है कि

"अबू राफ़ेअ अपने वालिद से और वह सुलमी से रिवायत करते हैं, हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बीमार हुईं। वफ़ात वाले दिन अली बाहर चले गए तो फ़ातिमा ने कहा मुझे ग़ुस्ल करा दीजिये। चुनान्चे हज़रत सलमा ने आप पर पानी डाला, आप नहाया। मैंने कपड़े दिये तो उन्होंने कपड़े बदले, मुझे चारपाई बिछाने के लिये कहा तो मैंने हुक्म की तामील की। फिर आप चारपाई पर क़िब्ला रुख़ होकर बोलीं, अब मैं फ़ौत हो जाऊंगी, मैंने ग़ुस्ल कर लिया है लिहाज़ा कोई मेरा जिस्म न खोले, फिर आप की वफ़ात हो गई, फिर मैंने अली को ख़बर दी, फिर आपने तज्हीज़ व तकफ़ीन की और ग़ुस्ल न दिया।"

मोहतरम क़ारईन! लानती वसीम रिज़वी का झूट मुलाहिज़ा कीजिये।

झूट नंबर 1:

> "अगर मेरे हाथ पर बैअत न करोगे तो तुम्हारे पूरे
> घर वालों को ज़िन्दा जला दूंगा।"

तब्सिराः जब फ़ातिमा ज़हरा का इन्तिक़ाल हुआ, उस वक़्त हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त थी। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से यह कैसे कहेंगे कि हाथ पर बैअत करो। हज़रत फ़ातिमा ज़हरा के विसाल के दो साल

बाद तक हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त क़ायम रही। यह है लानती वसीम रिज़वी का सफ़ेद झूट।

झूट नंबर 2ः

''फ़ातिमा की शहादत में मुहम्मद के दोस्त उमर का हाथ था।''

तब्सिराः अभी आपने तब्क़ात इब्ने सअद का हवाला मुलाहिज़ा किया कि आप की वफ़ात बीमारी की वजह से हुई, फिर भी लानती वसीम रिज़वी हज़रत उमर पर झूटा इल्ज़ाम लगा रहा है कि हज़रत फ़ातिमा ज़हरा की शहादत में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ था, यह भी झूट साबित हो गया।

झूट नंबर 3ः

''दरवाज़ा फ़ातिमा के ऊपर गिरा और फ़ातिमा की पस्लियां टूट गईं और फ़ातिमा की मौत हो गई।''

तब्सिराः दरवाज़ा गिरा, पस्लियां टूट गईं, इस में हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा का इन्तिक़ाल हो गया। यह रिवायत न तारीख़े तबरी में है न तब्क़ात इब्ने सअद में है, न सीरत इब्ने हिशाम में है बल्कि तब्क़ात इब्ने सअद ने तो वफ़ात की वजह बीमारी बताई है।

ज़रा ग़ौर कीजिये! अगर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ऐसा ज़ुल्म करते तो क्या हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बदला न लेते? क्या हज़रत अली हज़रत उमर से कमज़ोर थे? जिन्होंने ख़ैबर का क़िला उखाड़ दिया। जिन की बहादुरी पूरे अरब में मशहूर थी, जिन का लक़ब शेरे ख़ुदा है। इस का मतलब यह है कि लानती वसीम रिज़वी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को कमज़ोर या बुज़्दिल ख़्याल करता है हालांकि ऐसा कोई वाक़िआ हुआ ही नहीं बल्कि ऐसी झूटी रिवायत लानती वसीम रिज़वी के ज़हन की पैदावार है।

झूट नंबर 4ः

''आपके सीने की हड्डियां टूट गईं और आप का वह बेटा जो अभी पैदा भी नहीं हुआ था, वह भी इन्तिक़ाल कर गया जिस का

नाम पैदाइश से क़ब्ल ही मुहसिन रख दिया गया था।''

तब्सिराः झूट की इन्तिहा हो गई, ज़रा ग़ौर कीजिये कि जो बच्चा अभी पैदा भी नहीं हुआ, पेट में है उसका नाम कैसे रख दिया गया और यह कैसे मालूम हो गया कि बेटा ही होगा या पेट में लड़का ही है। लानती वसीम रिज़वी ने कोई हवाला भी नहीं दिया है।

यह सिर्फ़ मन घड़त कहानी है हक़ीक़त से इसका कोई तअल्लुक़ नहीं है।

आइये! तारीख़ के हवाले से औलादे फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में जानते हैं। क़ाज़ी सुलैमान सलमान मन्सूरपूरी अपनी किताब ''रहमतुल लिल-आलमीन'' जिल्द दोम, सफ़्हा 111 पर लिखते हैं कि हज़रत सय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा के बतने अतहर से इमाम हसन, इमाम हुसैन, उम्मे कुल्सूम और ज़ैनब पैदा हुईं। वह आगे लिखते हैं कि सय्यदतुन निसाअल आलमीन की औलाद में बाज़ ने मुहसिन और रुक़य्यह के नाम भी बढ़ा दिये हैं मुअर्रिख़ीन ने यह नाम नहीं लिखे। वह भी मानते हैं कि मुहसिन और रुक़य्यह दोनों का इन्तिक़ाल बचपन में हो गया था इसलिये उनके हालात तारीख़ में नहीं मिले।

तारीख़े तबरी, सीरत इब्ने हिशाम, तब्क़ात इब्ने सअद किसी में नहीं लिखा है कि मुहसिन का इन्तिक़ाल पेट के अन्दर ही हो गया और पैदा होने से क़ब्ल ही उस का नाम रख दिया गया था।

लानती वसीम रिज़वी ने जैसे क़सम खा लिया हो कि बात बात में झूट लिखूंगा और हालाते फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा में भी झूट का अंबार लगा दिया।

मनु स्म्रिती का संदर्भः

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 86 पर एक उन्वान ''मां के साथ सम्भोग जायज़ है'' लिखा, उसके आगे वह

लिखता है:

> ‘‘फ़तवा क़ाज़ी ख़ान में उन बातों के बारे में कहा गया है जो हराम हैं और जिन बातों के लिये इस्लामी क़ानून में किसी भी सज़ा का प्रावधान नहीं है। वह इस प्रकार हैं: अपनी पत्नी की बहिन से शादी करना, अपनी मां से शादी करना या ऐसी औरत से शादी करना जो पहले से ही विवाहिता हो। यह सब इस्लाम के अनुसार हलाल हैं।’’

मोहतरम क़ारईन! यह झूट बोलते बोलते अब इस्लामी क़ानून को भी ग़लत तरीक़े से बयान कर रहा है। सबसे पहले मैं आपके सामने फ़तावा क़ाज़ी की वह अरबी इबारत पेश करता हूं, फिर उसकी वज़ाहत करता हूं, फिर आप को समझ में आएगा कि उस इबारत का अस्ल मफ़हूम क्या है और लानती वसीम रिज़वी ने समझा क्या है। अगर कोई ‘‘इमली’’ को ‘‘इमला’’ पढ़ ले तो मफ़हूम बदल ही जाएगा कि ‘‘इमली’’ दरख़्त में होती है और ‘‘इमला’’ क़लम से लिखा जाता है। दोनों का मफ़हूम व मतलब एक कैसे हो सकता है? हर मैदान के माहिरीन अलग अलग होते हैं और उसी फ़न में उस को महारत होती है। जैसे सुप्रीम कोर्ट में चीफ़ जस्टिस होते हैं, आला तालीम, आला फ़िक्र होती है। अगर उन से सरजरी के लिये कहा जाए तो मअज़िरत कर लेंगे और कहेंगे यह मेरे बस की बात नहीं। जो जिस मैदान का होगा उसी में उसको महारत होगी। लानती वसीम रिज़वी को देख लीजिये। कुछ महीने सऊदी में बावर्ची गीरी की और हिन्दुस्तान आकर नेतागीरी की। नेतागीरी करते करते मौलवी, मुल्ला, आलिम और फ़ाज़िल बनने की कोशिश में इमला को इमली समझ लिया और कह दिया कि इस्लाम में दूसरे की बीवी से शादी करना जाइज़ है।

अब मैं आपके सामने फ़तावा क़ाज़ी ख़ान की अस्ल इबारत पेश

करता हूं, फिर उस की तशरीह करता हूं।

फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, जिल्द अव्वल, किताबुन निकाह बाब फ़िल मुहर्रमात, सफ़्हा 169, मत्बूआ हाफ़िज़ कुतुब ख़ाना मस्जिद रोड, कोइटा

"لو تزوج بمنكوحة الغير وهو لا يعلم انها منكوحة الغير فوطئها تجب العدة۔"

तर्जमाः "अगर किसी ने दूसरे की बीवी से निकाह कर लिया और वह नहीं जानता है कि दूसरे की बीवी है और उससे हम-बिस्तरी कर ली तो उस पर इद्दत वाजिब है।"

मोहतरम क़ारईन! आपने तर्जमा पढ़ लिया, अब मैं इस की वज़ाहत करता हूं ताकि इस की हक़ीक़त वाज़ेह हो जाए।

जैसे कोई औरत लखनऊ से मुम्बई आई और उस ने कहा मैं बे-सहारा हूं, मेरा कोई नहीं है, मुझ से शादी कर लो। किसी ने उस औरत से शादी कर ली और हम-बिस्तरी कर ली। कुछ दिनों के बाद उस का शौहर तलाश करते हुए लखनऊ से मुम्बई आ गया और कहा कि यह मेरी बीवी है, तो अब उस औरत पर इद्दत वाजिब है यानी तीन हैज़ आने तक पहला शौहर से हम-बिस्तरी न करे। वह इसलिये कि दूसरे वाले शौहर ने उसके साथ हम-बिस्तरी की है, ऐसा तो नहीं कि दूसरे शौहर से उसके पेट में बच्चा है। अगर तीन हैज़ तक इन्तिज़ार किया जाए तो बात साफ़ हो जाएगी और मालूम हो जाएगा कि पेट में बच्चा है या नहीं। अगर हैज़ नहीं आया और हामिला हो गई तो उस बच्चे का बाप दूसरा वाला शौहर क़रार पाएगा, उससे उसका नसब साबित होगा। ऐसे वाक़िआत हो भी सकते हैं और नहीं भी। अगर हो गया तो उसका हल बता दिया गया। इस अरबी इबारत के शुरू में लफ़्ज़ "لو" आया हुआ है, इसका मतलब

होता है अगर और हर्फ़ "अगर" हर्फ़े शर्त है "اذا فات الشرط
فات المشروط" जब शर्त ख़त्म हो जाए तो मशरूत ख़त्म हो जाएगा। जाहिल लानती वसीम रिज़वी, हर्फ़े शर्त को समझा ही नहीं। मैं मिसाल देकर समझाता हूं जैसे किसी ने कहा अगर लानती वसीम रिज़वी ने चोरी की तो उसकी सज़ा जेल है। इस इबारत से कोई यह नहीं समझेगा कि लानती वसीम रिज़वी ने चोरी की है, या उसके लिये चोरी करना जाइज़ है। लानती वसीम रिज़वी ने यही समझ लिया है कि चोरी की और चोरी करना जाइज़ है। इसी तरह फ़तावा क़ाज़ी ख़ान में एक क़ायदा कुल्लिया बताया गया है जिस को लानती वसीम रिज़वी ने समझ नहीं पाया और बे-धड़क लिख दिया कि इस्लाम में दूसरे की बीवी से शादी करना जाइज़ है। जबकि कुरआन का फ़रमान है, सूरए निसा में है: والمحصنت من النساء۔

यानी शौहर वाली औरतें तुम पर हराम हैं तो फिर किस तरह दूसरे की बीवी से शादी करना इस्लाम में जाइज़ हो सकता है? क्या इसका जवाब लानती वसीम रिज़वी के पास है? या तो कम-अक़्ल लानती वसीम रिज़वी ने इस को समझा ही नहीं या अगर समझने के बाद ऐसा कहता है तो यह इस्लाम को बदनाम करने की एक नाकाम साज़िश है।

मज़हबे इस्लाम में सज़ा मुक़र्रर है, अगर जुर्म बड़ा हुआ तो सज़ा भी बड़ी होती है, अगर जुर्म छोटा हो तो सज़ा भी छोटी होती है, और सज़ा छोटे, बड़े, अमीर, ग़रीब सब के लिये यकसां है। लेकिन दीगर मज़ाहिब में ऐसा नहीं है। लानती वसीम रिज़वी को दूसरी मज़हबी किताबों का भी मुतालिआ करना चाहिये, उसको चाहिये कि मनु धर्म शास्त्र बाब 8, श्लोक 275 को ग़ौर से पढ़े, उस में लिखा है कि

> "अगर कोई आला ज़ात वाले पर थूके तो उसके दोनों होंट काट दे, अगर पेशाब करे तो उसका उज़्वे

तनासुल काट दे, उसकी तरफ़ हवा ख़ारिज करे तो उस की मक़अद काट दे।''

एक और सज़ा के बारे में सुनिये।

मनु धर्म शास्त्र बाब 8, श्लोक 362

''अगर कोई औरत किसी औरत के साथ जिन्सी फ़ेअल करती है तो उस की सज़ा यह है कि उस का सर मुंडा दिया जाए।''

मनु स्मृती, अध्याय 8, श्लोक 370 में है कि

''जो औरत छोटी लड़की की शर्मगाह में उंगली डाल कर ऐबदार करे उस का सर मुंडा देना चाहिये।''

(नोटः ज़रा ग़ौर करें! इतने बड़े/ पाप (गुनाह) की सज़ा सिर्फ़ सर मुंडाना है)

हलाल या हरामः

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 86 पर फ़तावा क़ाज़ी ख़ान के हवाले से लिखता है कि

''अपनी पत्नी की बहिन से शादी करना इस्लाम में हलाल है।''

मोहतरम क़ारईन! आइये सबसे पहले उसके झूट को साबित करने के लिये फ़तावा क़ाज़ी ख़ान की अस्ल अरबी इबारत पेशे ख़िदमत है ताकि हक़ीक़त वाज़ेह हो जाए।

फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, जिल्द अव्वल, किताबुन निकाह, बाब फ़िल मुहर्रमात, सफ़्हा 169, मत्बूआ हाफ़िज़ कुतुब ख़ाना, मस्जिद रोड, कोइटा।

"لو تزوج امراۃ ثم نکح اختها جاز نکاح الاولٰی وبطل نکاح الثانیه۔"

तर्जमाः ''अगर किसी शख़्स ने औरत से निकाह किया, फिर उस की बहन से निकाह किया तो पहली

से निकाह जाइज़ होगा और दूसरी से निकाह दुरुस्त न होगा।"

वज़ाहत आपके सामने पेश करता हूं। किसी आदमी ने शादी की, फिर उसके बाद बीवी की बहन से शादी कर ली तो पहली बीवी का निकाह दुरुस्त है, बाद में जो अपनी साली से शादी किया वह निकाह हुआ ही नहीं है।

लेख घोटालाः

मोहतरम क़ारईन! अब आप ही बताइये फ़तावा क़ाज़ी ख़ान ने जो कुछ लिखा है सब दुरुस्त और सहीह है लेकिन लानती वसीम रिज़वी ने जान बूझ कर इबारत में ख़्यानत की है। अब मैं आप को बताता हूं कि पूरी इबारत में कहां घोटाला किया है। इबारत के पहले हिस्से को लिया है और दूसरे हिस्से को छोड़ दिया है। जब दोनों को एक साथ रखेंगे तो मतलब और मफ़हूम सहीह निकलेगा। अगर एक हिस्सा ले लिया और दूसरा छोड़ दिया तो मतलब में आसमान व ज़मीन का फ़र्क़ हो जाएगा। जैसे "لو تزوج امراۃ ثم نکح اختها جاز نکاح الاولیٰ وبطل نکاح الثانیہ۔" उस ने यहां तक कहा "لو تزوج امراۃ ثم نکح اختها جاز" इस का मतलब यह होता है कि अगर किसी ने औरत से निकाह किया, फिर उसकी बहन से निकाह किया तो जाइज़ है। और نکاح الاولیٰ وبطل نکاح الثانیہ छोड़ दिया। जो बहुत बड़ा घोटाला है। जब جاز के बाद نکاح الاولیٰ وبطل نکاح الثانیہ लिखेंगे तो बात पूरी होगी और उस वक़्त मतलब यह निकलेगा कि दोनों बहनों में से जिससे पहले निकाह किया, जाइज़ है और उस की बहन से निकाह करना जाइज़ नहीं। यह है लानती वसीम रिज़वी का घोटाला।

मोहतरम क़ारईन! एक दूसरी मिसाल देकर आप को समझाता हूं। अगर कोई यह कहे कि कुरआन में नमाज़ पढ़ने से मना किया गया

और अपने सुबूत में सूरए निसा की आयत नंबर 43 पेश करेः "يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ" तर्जमाः "ऐ ईमान वालो! नमाज़ के क़रीब न जाओ।" और आगे का जुम्ला وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى छोड़ दे तो मतलब व मफ़्हूम में आसमान व ज़मीन का फ़र्क़ हो जाएगा। जबकि आयत का मतलब यह हैः "ऐ ईमान वालो! नमाज़ से क़रीब न हो जब तुम हालते नशा में हो।" इस तरह की ख़्यानत लानती वसीम रिज़वी ने की है। अब आप को समझ में आ गया होगा कि वह कितना बड़ा घोटाला बाज़ है।

दो बहनों को एक साथ निकाह में रखना हराम है। क़ुरआन में सूरए निसा, आयतः 23, وان تجمعوا بين الاختين और दो बहनों को इकट्ठा करना हराम है। अब कोई कैसे कह सकता है कि इस्लाम में बीवी के साथ उसकी बहन से शादी करना हलाल है। जो ऐसा कहेगा वह इस्लाम में बुहतान बांधने वाला झूटा है।

लानती वसीम रिज़वी की बेशर्मीः

लानती वसीम रिज़वी बड़ी बेशर्मी से अपनी किताब के सफ़्हा 86 पर लिखता है कि

> "मां के साथ सम्भोग जाइज़ है" और आगे लिखता है कि इन बातों के लिये इस्लामी क़ानून में किसी भी सज़ा का प्रावधान नहीं है और फ़तावा क़ाज़ी ख़ान का हवाला देता है। आइये सबसे पहले फ़तावा क़ाज़ी ख़ान की इबारत मुलाहिज़ा फ़रमाइये, इसके बाद लानती वसीम रिज़वी की जहालत का अंदाज़ा लगाइये।

फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, जिल्द अव्वल, किताबुन निकाह, बाब फ़िल मुहर्रमात, सफ़्हा 170, मत्बूआ हाफ़िज़ कुतुब ख़ाना मस्जिद रोड, कोइटा।

"لو رجل وطئی امراۃ ابیہ حرمت علی ابیہ فان قال الابن علمت انہا علی حرام کان علیہ الحد وان لم یعلم الابن بذالك ووطئہا عن شبہۃ لاحد علیہ۔"

तर्जमाः "अगर किसी शख़्स ने अपने बाप की बीवी से हम- बिस्तरी की तो वह औरत उसके बाप पर हराम हो गई और अगर बेटे ने कहा कि मैं जानता था कि मुझ पर हराम है तो उस पर हद्द यानी दफ़अ है। अगर बेटा जानता ही नहीं है कि वह औरत उसके बाप की बीवी है ग़लती से निकाह और सोहबत कर ली तो उस पर हद्द नहीं।"

मोहतरम क़ारईन! आपने तर्जमा मुलाहिज़ा फ़रमाया, अब मैं इस की वज़ाहत आपके सामने करता हूं। अगर किसी शख़्स ने जान बूझ कर अपने बाप की बीवी से निकाह किया और सोहबत की तो उस पर हद्द यानी दफ़अ है और वह दफ़अ यह है कि अगर वह पहले से शादी शुदा नहीं है तो उसे सौ कोड़े मारे जाएंगे और अगर शादी शुदा था तो उसे पत्थर मार कर हलाक कर दिया जाएगा। और वह जानता ही नहीं था कि वह औरत उसके बाप की बीवी है, अनजाने में निकाह किया और सोहबत की तो उस पर हद्द नहीं यानी उस पर दफ़अ नहीं। इस को मिसाल से समझिये कि किसी शख़्स का बाप किसी दूसरे शहर में गया और किसी औरत से निकाह किया, फिर अपने शहर में वापस आ गया। कुछ अरसा बाद उसी शहर में उस शख़्स का बेटा गया और उस औरत ने कहा कि मैं ग़ैर शादी शुदा हूं और अपनी शादी को छुपाया तो उसके बेटे ने उससे निकाह कर लिया। उसे पता ही नहीं है कि वह औरत उसके बाप की बीवी है तो ऐसी सूरत में उस पर हद्द नहीं यानी दफ़अ नहीं।

औरत एक, शौहर पांचः

अब लानती वसीम रिज़वी के झूट को मुलाहिज़ा कीजिये, वह कहता है इस्लाम में कोई दफ़अ नहीं, जबकि सौ कोड़े या संगसार की दफ़अ है, यह एक इस्लामी क़ानून है। हर मज़हब का अपना अपना क़ानून और दस्तूर होता है। किसी मज़हब में ऐसा भी है कि कई शख़्स मिल कर एक औरत से शादी करते हैं। यह उनके मज़हब का दस्तूर है जैसा कि डॉक्टर मुहम्मद अहमद नईमी अपनी किताब "इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द दोम, सफ़्हा 594" पर लिखते हैं कि रिग वैद में एक मंत्र का तर्जमा दयानंद सरस्वती इस तरह करता हैः

> "ऐ नेक बख़्त औरत! ख़ुश नसीबी की ख़्वाहिश करने वाली औरत! तू मेरे अलावा दूसरे शौहर की ख़्वाहिश कर।"

डॉक्टर मुहम्मद अहमद नईमी अपनी किताब "इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ," जिल्द दोम के सफ़्हा 595 पर लिखते हैं किः

चुनान्चे महाभारत आदि पर्व में लिखा हैः

> "ज़बरदस्त जलाल वाले पांडवों ने जैसे ही द्रोपदी को देखा, वैसे ही प्यार के देवता ने उनके हवास बाख़्ता करके उन पर अपना असर जमा दिया। ईश्वर ने द्रोपदी के ख़ूबसूरत हुस्न को दूसरी औरतों के ब-मुक़ाबिल बहुत हसीन और सभी जानदारों के दिल को माइल करने वाला बनाया था। इन्सानों में आला और कुंती के बेटे युधिष्टर ने अपने भाइयों का रंग ढंग देख कर उनके दिल की बात समझ ली और साथ ही साथ व्यास रिशी की सारी बातें याद आ

गईं। राजा युधिष्टर यह सोच कर कि कहीं भाइयों में आपस में दुशमनी न हो, तमाम भाइयों से बोले कि बेहतरीन ख़ूबियों वाली द्रोपदी हम सब की बीवी है।''

क्या लानती वसीम रिज़वी जवाब देगा कि एक औरत के शौहर होते हुए दूसरा शौहर करने पर कौन सी दफ़अ है? या पांच शख़्स एक औरत के साथ सोहबत करें तो कौन सी दफ़अ उन पर आइद होती है? डॉक्टर मुहम्मद अहमद नईमी साहब इसी किताब के सफ़्हा 554 पर लिखते हैं कि मशहूर और मअरूफ़ तौर पर हिन्दू की शादियां आठ तरह की होती हैं। उन में से एक राकशश शादी है, वह यह है कि ''मुज़ाहमत करने वालों को मार कर ज़ख़्मी करके घर के दरवाज़े तोड़ कर रोती हुई लड़की ज़बरदस्ती उठा कर ले जाने का नाम राकशश विवाह है।'' क्या लानती वसीम रिज़वी बताएगा कि हिन्दू धर्म के इस रिवाज पर कौन सी दफ़अ आइद होती है? मरते दम तक लानती वसीम रिज़वी इस का जवाब नहीं दे सकता।

माएं हराम हैं:

इस्लाम में माएं बेटों पर हराम हैं। क़ुरआने मुक़द्दस, सूरए निसा, आयतः 23

''حرمت علیکم امھتکم'' तर्जमाः ''और हराम हुईं तुम पर तुम्हारी माएं'' और आगे हैः ''وامھتکم التی ارضعنکم'' तर्जमाः ''और हराम हैं तुम्हारी वह माएं जिन्होंने दूध पिलाया।'' आगे हैः ''وامھت نسائکم'' तर्जमाः ''और तुम्हारी बीवियों की माएं।'' यानी सास तुम पर हराम है।

अब वाज़ेह तौर पर लानती वसीम रिज़वी का झूट साबित हो गया। उसका यह कहना कि ''इस्लाम में मां से शादी जाइज़ है'' सरासर झूट पर मबनी है।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा की शादीः

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के साथ नबी करीम ﷺ की शादी को लेकर लानती वसीम रिज़वी ने अपनी किताब के सफ़्हा 64 पर हज़रत आयशा की शादी का ज़िक्र किया और कई सफ़्हात स्याह कर दिये। निकाह के वक़्त हज़रत आयशा की उम्र क्या थी, रुख़्सती के वक़्त उनकी उम्र क्या थी? अपनी पूरी ताक़त उसी में झोंक दी। मुस्तशिरक़ीन का हवाला, सहीह बुख़ारी का हवाला, तब्क़ात इब्ने सअद का हवाला, ब्रिटिश मुअर्रिख़ विल्यम मोंटगमेरी के ख़्यालात, डेनिस स्पीलबर्ग का नज़रिया, अहमदिया आंदोलन के आलिम मुहम्मद अली का अंदाज़ा बड़े तम्तराक़ से बयान किया और यह साबित करने की कोशिश की कि शादी के वक़्त उनकी उम्र 5 साल और रुख़्सती के वक़्त उम्र 9 साल थी और इसी उम्र को लेकर लानती वसीम रिज़वी ने गले में ढोल लटका कर ढिंडोरा पीटना शुरू कर दिया और अपनी किताब के सफ़्हा 70 पर मआज़ल्लाह हुज़ूर अलैहिस्सलातु वत्तसलम पर पेडोफ़ीलिया होने का इल्ज़ाम लगाया। अपनी किताब के सफ़्हा 73 पर लिखता है कि

> ''मानव फ़िज़ियोलॉजी पिछले दो लाख वर्षों से बदल नहीं गई है। मानव भ्रूण 9 महीनों में ही परिपक्व होता है, चाहे कोई भी नस्ल या जलवायु हो और सभी लड़कियां 13 वर्ष की आयु में यौवन को प्राप्त होती हैं। पिछले दो लाख वर्षों में ये संख्याएं नहीं बदली हैं। एक नौ साल की बच्ची अफ़्रीक़ा में, अलास्का या अरब में बच्ची ही है।''

इस तरह की लायानी बातों से कई सफ़्हात ख़राब कर दिये।

अब आइये! इस पर सैर हासिल बहस करते हैं। अब मैं अहादीस, तवारीख़, मेडिकल, फ़िक़्ह और हालाते हाज़िरा के मुशाहिदात

की रौशनी में लानती वसीम रिज़वी को दन्दान शिकन जवाब देता हूं ताकि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी पर उंगली उठाने की गुंजाइश बाक़ी न रहे।

हज़रत उम्मुल मोमिनीन के निकाह और रुख़्सती की उम्र हदीस की रौशनी में मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

सहीह बुख़ारी, जिल्द सोम, सफ़्हा 82, किताबुन निकाह, हदीस नंबर 144

"حَدَّثَنَا قَبِيْصَةُ بْنُ عُقْبَةَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ عُرْوَةَ تَزَوَّجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَائِشَةَ وَهِيَ بِنْتُ سِتِّ سِنِيْنَ وَبَنَى بِهَا وَهِيَ بِنْتُ تِسْعٍ وَمَكَثَتْ عِنْدَهُ تِسْعًا۔"

तर्जमाः उरवा का बयान है, हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से निकाह किया तो वह 6 साल की थीं। जब उनके साथ ख़ल्वत फ़रमाई तो वह 9 साल की थीं और वह 9 साल आप की ख़िदमत में रहीं।"

नबीए करीम ﷺ के यहां जब रुख़्सत होकर आईं, वह हदीस भी मुलाहिज़ा करें।

सहीह बुख़ारी, जिल्द सोम, सफ़्हा 83, किताबुन निकाह, हदीस नंबर 146

"حَدَّثَنِيْ فَرْوَةُ بْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ تَزَوَّجَنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَتْنِيْ أُمِّيْ فَأَدْخَلَتْنِي الدَّارَ فَلَمْ يَرُعْنِيْ إِلَّا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ضُحًى۔"

तर्जमाः ''उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा फ़रमाती हैं कि जब नबी करीम ﷺ ने मुझे अपनी ज़ौजियत का शर्फ़ बख़्शा, मेरी वालिदा मोहतरमा मुझे लेकर आपके काशानए अक़दस में दाख़िल हुईं। मेरे लिये घबराने की बात यही थी कि रसूलुल्लाह ﷺ चाश्त के वक़्त तशरीफ़ लाए।

तब्क़ात इब्ने सअद, जिल्द 8, सफ़्हा 82

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम ﷺ ने मुझ से एलाने नुबुव्वत के 10 साल बाद और हिजरत से 3 साल क़ब्ल निकाह किया। मैं उस वक़्त छे बरस की थी, फिर आप हिजरत करके मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए और हिजरत के आठवें महीने में मेरी रुख़्सती हुई, मैं उस वक़्त 9 साल की थी।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की उम्र रुख़्सती के वक़्त 9 साल तसलीम करते हुए अपनी तहक़ीक़ात पेश करता हूं। जब लड़कियां 9 साल की हो जाती हैं तो वह शरअन मुश्तहात और बालिग़ा हो जाती हैं जैसा कि फ़िक़्ह की मशहूर किताब फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, जिल्द अव्वल, किताबुन निकाह बाब फ़िल मुहर्रमात, सफ़्हा 167 में है।

''ابنة خمس سنين لم تبلغ واما ابنة ست او سبع او ثمانی ان كانت عبلته ضخمة فقد بلغت حد الشهوة۔''

तर्जमाः ''पांच साल की लड़की हद्दे शहवत को नहीं पहुंचती, छे साल या सात साल या आठ साल या इससे ऊपर वह हद्दे शहवत को पहुंच जाती है।''

मेडिकल साइंस क्या कहती है:

अब आइये! मेडिकल साइंस के एतेबार से बलूग़त की उम्र का

पता लगाते हैं कि इसके बारे में डॉक्टरों का क्या कहना है।

गाइयनोलॉजिस्ट डॉक्टर सय्यद मुहम्मद अब्बास रिज़वी अपनी किताब ''निसाइयात'' के सफ़्हा 31 पर लिखते हैं कि ''शबाब (Puberty) यह औरत की ज़िन्दगी का वह ज़माना है जबकि वह बचपन से बलूग़त में दाख़िल होती है। यह ज़िन्दगी का इन्तिहाई अहम ज़माना है जबकि बहुत सी जिस्मानी और ज़हनी तब्दीलियां वुजूद में आती हैं।

पहला तमस जिसे (Menarch) यानी हैज़ कहा जाता है उसी दौर में होता है। जब 8 साल से कम उम्र की बच्ची में सानवी अलामतें ज़ाहिर होने लगती हैं और तमस यानी हैज़ (Menstruation) शुरू हो जाता है। इसे (Precocious Puberty) कहा जाता है। बाज़ बच्चियों में इससे कम उम्र में तमस यानी हैज़ (Menstruation) देखा गया है। तमस यानी हैज़ शुरू होने से जिन्सी बलूग़त का पता चलता है। उन बच्चियों में सानवी जिन्सी तब्दीलियां भी मौजूद होती हैं।

मेडिकल साइंस के एतेबार से यह साफ़ ज़ाहिर हो गया कि बच्चियां 8 साल की उम्र में बालिग़ हो जाती हैं।

फ़तावा क़ाज़ी ख़ान की इबारत और मेडिकल की तहक़ीक़ात में नुमायां मुताबिक़त नज़र आती है। इससे ज़ाहिर है कि बिल-इत्तिफ़ाक़ 8 साल की बच्चियां बालिग़ा हो जाती हैं। अगर बच्ची की शादी 9 साल की उम्र में होती है तो बिल-इत्तिफ़ाक़ यह कहा जाएगा कि वह मुश्तहात और बालिग़ा है। यह रोज़े रौशन की तरह अयां है कि 9 साल की बालिग़ा और मुश्तहात से शादी करने वाले पर पेडोफ़ीलिया का इल्ज़ाम लगाना शरअन और मेडिकल के एतेबार से ग़लत है।

पेडोफ़ीलिया क्या है?:

पेडोफ़ीलिया यह है कि ग़ैर मुश्तहात बच्चों से जिन्सी तअल्लुक़

क़ायम किया जाए। यह सब जानकारी लानती वसीम रिज़वी को नहीं है। लड़कियों की बलूग़त के मुताल्लिक़ बीबीसी की एक रिपोर्ट जो 16 मई 2005 को शाए हुई, मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

तरक़्क़ी याफ़्ता मुमालिक में बच्चों की सने बलूग़त की उम्र कम से कम हुई है और बाज़ लड़कियां सात साल की उम्र में भी बालिग़ हो रही हैं। 1990 ई० में लड़कियों में बलूग़त की इब्तिदाई अलामात आठ साल की उम्र में पैदा होना शुरू होती थी। अब माहिरीन के मुताबिक़ कुछ लड़कियां सात साल की उम्र में बालिग़ हो जाती हैं। सुवीडन के माहिरीन सूरते हाल का मुख़्तलिफ़ पहलुओं से जाइज़ा लेने की कोशिश कर रहे हैं। अब योरुप में बारह टीमें इस अमल को समझने के लिये एक तीन साला मन्सूबे पर काम कर रही हैं।

अब इस में कोई शक नहीं रह जाता है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा रुख़्सती के वक़्त बालिग़ा थीं। इस शादी पर एतेराज़ करना अपनी हिमाक़त को ज़ाहिर करना है।

उस दौर में ज़ौजैन के दरमियान उम्र के तफ़ावुत को कोई मअयूब नहीं समझा जाता था, वरना कुफ़्फ़ारे क़ुरैश इस शादी पर मज़हका ख़ेज़ बातें करते। तमाम तवारीख़ की किताबों में इस का कोई सुबूत नहीं मिलता।

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की लड़की से ख़लीफ़ा दोम हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शादी हुई।

अगर ज़ौजैन राज़ी हों तो उम्र कोई मानी नहीं रखती। गिनीज़ वर्ल्ड रिकार्ड के मुताबिक़ अमेरीका की बाशिंदा ग्रब जानेवे (Grubb janeway) जिन की उम्र 18 साल थी उस ने जॉन जानेवे (John janeway) से शादी की, जिन की उम्र 81 साल थी। दोनों की उम्र में 63 साल का फ़र्क़ था। किसी ने इस शादी पर अंगुश्त नुमाई नहीं की।

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा नंबर 73 पर लिखता है कि

> ''मानव फ़िज़ियोलॉजी पिछले दो लाख वर्षों से बदल नहीं गई है। मानव भ्रूण 9 महीनों में ही परिपक्व होता है, चाहे कोई भी नस्ल या जलवायु हो और सभी लड़कियां 13 वर्ष की आयु में यौवन को प्राप्त होती हैं। पिछले दो लाख वर्षों में ये संख्याएं नहीं बदली हैं। एक नौ साल की बच्ची अफ़्रीक़ा में, अलास्का या अरब में बच्ची ही है।''

मज़्कूरा बाला हवालों से लानती वसीम रिज़वी की बातों की धज्जियां उड़ती हुई नज़र आती हैं।

यह ग़लत है कि लड़कियां सिर्फ़ 13 साल की उम्र में बालिग़ होती हैं बल्कि इससे क़ब्ल भी बालिग़ हो जाती हैं। उसका दावा ग़लत है, वह जाहिल है, ज़माने के हालात पर उसकी नज़र नहीं है। "من لا يعرف اهل زمانه فهو جاهل۔" जो ज़माने पर नज़र नहीं रखता वह जाहिल है।

पूरी कायनात निज़ामे क़ुदरत पर मुन्हसिर है। निज़ामे क़ुदरत के सामने तिब्बी और साइंसी नज़रियात बेबस नज़र आते हैं। चन्द मिसालें आपके सामने पेश करता हूं, इससे लानती वसीम रिज़वी की अक़्ल ठिकाने आ जाएगी और समझ में आ जाएगा कि इल्मुल हयात इन्सानी में तब्दीली हो सकती है या नहीं? 13 साल से कम उम्र की बच्चियां बालिग़ हो सकती हैं या नहीं? अलग अलग मुमालिक में मुख़्तलिफ़ असरात मुरत्तब हो सकते हैं या नहीं?

कम उम्र की माएंः

(1) गिनिज़ वर्ल्ड रिकार्ड

(Small age mother in guinness record) के मुताबिक़ पेरो

की रहने वाली लीना मर्सेला मडीना (Lina marcela Medina) ने 14 मई 1939 में एक बच्चा को जन्म दिया, उस वक़्त उस की उम्र 5 साल 7 महीने और 21 दिन थी।

(2) गिनिज़ वर्ल्ड के मुताबिक़ रूस के बाशिंदे फ़्योडर वेसीलिव (Feodor vassilyev) की बीवी ने 1725 ई० से 1765 ई० के दरमियान 27 बार की ज़च्चगी में उन्होंने उन्हत्तर 69 बच्चों को जन्म दिया।

(3) गिनिज़ वर्ल्ड रिकार्ड के मुताबिक़ अमेरीका केलीफ़ोर्निया की रहने वाली नाडिया सुलेमन (Nadya Suleman) जो ऐडवर्ड दावड की इकलौती औलाद थी, उस ने 26 जनवरी 2009 ई० में केसर परमनेंट मेडिकल केलीफ़ोर्निया में एक साथ 8 बच्चों को जन्म दिया।

(4) एक रिकार्ड के मुताबिक़ 13 सितम्बर 1936 ई० ग्रीसल्डीना अकूना (Griseldina Acuna) कोलंबिया की रहने वाली लड़की 8 साल 2 महीने में मां बन गई।

(5) मेक्सिको की रहने वाली ज़ुल्मा ग्वाडालूप मोरलेस (Zulma Guadalupe Morles) 12 जनवरी 1993 ई० में आठ साल की उम्र में मां बन गई।

(6) नाइजेरिया की रहने वाली मुमज़ी (Mum-zi) दिसम्बर 1884 ई० में आठ साल 4 महीने की उम्र में मां बन गई।

(7) 18 अक्तूबर 1967 ई० में इर्जन्टीना की रहने वाली मारिया इलेलिया अलेंड (Maria Eulalia Allende) 9 साल की उम्र में मां बन गई।

(8) यूनाइटेड स्टेट की रहने वाली इस्टेले पी (Estelle. P) 16 मार्च 1908 ई० को 9 साल की उम्र में मां बन गई।

(9) साउथ वेस्ट अफ़्रीक़ा की रहने वाली वेनेसिया ज़ोगस (Venesia Xoagus) 10 जुलाई 1980 ई० में 9 साल की उम्र में मां बन गई।

(10) ब्राज़ील की रहने वाली मारिया इलेन जिसस मेस्केरनहस (Maria Eliane Jesus Mascarenhas) 25 मार्च 1986 ई० को 9 साल 5 महीने में माँ बन गई।

मोहतरम क़ारईन! इस तरह की सैकड़ों मिसालें मौजूद हैं। इसके बावुजूद अगर लानती वसीम रिज़वी कहे कि 13 साल से क़ब्ल लड़कियां बालिग़ नहीं होती हैं तो यह उस की जहालत है। तारीख़ और हालाते हाज़िरा से नावाक़फ़ियत है।

लानती वसीम रिज़वी किताब के सफ़्हा 72 पर लिखता हैः

"सभी यूरोपीय देशों में विवाह की क़ानूनी आयु 18 है। केवल अल्बानिया और माल्टा ऐसे देश है जहां विवाह की न्यूनतम उम्र 16 है।"

यह लानती वसीम रिज़वी की जहालत और लाइल्मी है, बहुत सी ऐसी रियासतें हैं जहां शादी के लिये कम उम्र की कोई क़ैद ही नहीं है जैसे केलीफ़ार्निया (California) न्यू मेक्सिको (New Mexico) वाशिंगटन (Washington) ओक्लाहोमा (Oklahoma) इसके अलावा और भी रियासतें हैं जहां शादी के लिये कम उम्र की कोई क़ैद नहीं है।

अगर लानती वसीम रिज़वी को इतना मालूम नहीं तो दूसरों की इस में क्या ग़लती? अगर चम्गादड़ दिन न देखे तो इस में सूरज की क्या ग़लती।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की कम उम्री की शादी पर उंगली उठाने से क़ब्ल लानती वसीम रिज़वी को दूसरे मज़ाहिब की किताबों को भी पढ़ लेना चाहिये था तो हक़ीक़त उस पर वाज़ेह हो जाती।

शादी के वक़्त सीता की उम्र 6 सालः

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, सर्ग नंबर 47, सफ़्हा नंबर 449,

मत्बूआ गीता प्रेस गोरखपूर,

सीता अपना तआरुफ़ रावण से कराते हुए कहती हैं कि

> ''ब्रह्मण! आपका भला हो। मैं मिथिलानरेश महात्मा जनक की पुत्री और अवधनरेश श्रीरामचंद्रजी की प्यारी रानी हूं। मेरा नाम सीता है।
>
> विवाह के बाद बारह वर्षों तक इक्ष्वाकुवंशी महाराज दशरथ के महल में रहकर मैंने अपने पति के साथ सभी मानवोचित भोग भोगे हैं। मैं वहाँ सदा मनोवच्छित सुख-सुविधाओं से सम्पन्न रही हूं।
>
> तेरहवें वर्ष के प्रारम्भ में सामर्थ्यशाली महाराज दशरथ ने राजमन्त्रियों से मिलकर सलाह की और श्रीरामचंद्रजी का युवराज पद पर अभिषेक करने का निश्चय किया।
>
> उस समय मेरे महातेजस्वी पति की अवस्था पच्चीस साल से ऊपर की थी और मेरे जन्मकाल से लेकर वनगमनकाल तक मेरी अवस्था वर्षगणना के अनुसार अट्ठारह साल की हो गयी थी।

क़ारईन! इससे मालूम हो गया कि जिस वक़्त सीता और राम की शादी हुई थी उस वक़्त सीता की उम्र छे साल थी और छे साल की उम्र में ही अपने ससुराल आ गई थी और अपने शौहर के साथ रह रही थी।

अब लानती वसीम रिज़वी जवाब दे कि छे साल की उम्र की सीता के साथ शादी करने की वजह से क्या राम पेडोफ़ीलक हैं? अगर लानती वसीम रिज़वी ने मां का दूध पिया है तो राम को पेडोफ़ीलक लिख कर या कह कर बताए। वह ऐसा कभी नहीं बोल सकता और न ही लिख सकता है। और किसी के बारे में ऐसा लिखना भी नहीं चाहिये। हर एक का अपना अपना मज़हब और

अपना अपना मज़हबी दस्तूर होता है। फिर भी उस ने हुज़ूर ﷺ पर पेडोफ़ीलिया का इल्ज़ाम लगाया, जिन को पूरी दुनिया ने अज़ीम तसलीम किया है। क्या लानती वसीम रिज़वी हुज़ूर ﷺ पर पेडोफ़ीलिया का इल्ज़ाम लगाने की वजह से मुज्रिम नहीं है? क्या लानती वसीम रिज़वी और इस जैसे लोग जो किसी भी मज़हबी रहनुमा की तौहीन करते हैं इन को सज़ा नहीं मिलनी चाहिये? कोई भी इन्साफ़ पसन्द इन्सान ऐसे लोगों को सज़ा दिलाने की ही बात करेगा।

डॉक्टर मुहम्मद अहमद नईमी अपनी किताब ''इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ'' जिल्द दोम, सफ़्हा 544 पर विशिष्ट स्मृती के हवाले से लिखते हैं।

(विशिष्ट स्मृती अध्यान 17 श्लोक, 6, 12)

> ''मां बाप की लापरवाही से शादी से पहले ही लड़की को अगर माहवारी शुरू हो जाती है तो उस लड़की से शादी करने वाले को देखने से ही पाप लगता है, वह सिर्फ़ नज़र से ही हलाक कर देता है। इसलिये उस की माहवारी आने से क़ब्ल ही लड़की की शादी कर दें, ऐसा न करने पर मां बाप को गुनाह होता है।''

आगे डॉक्टर साहब स्मृती के हवाले से लिखते हैं:

> ''आठ साल की लड़की की शादी सबसे बेहतर है, दस साल से पहले लड़की की शादी न करने वाले मां बाप और भाई नर्क में जाते हैं।''

गौतम धर्म सूत्र में कहा गया है:

> ''माहवारी शुरू होने से क़ब्ल ही लड़की की शादी कर देनी चाहिये जो ऐसा नहीं करता हो वह पापी है।''

स्वामी दयानंद सरस्वती अपनी किताब ''सत्यार्थ प्रकाश'' सम्लास चौथा, श्लोक नंबर 14, सफ़्हा 105 पर लिखता है कि

> ''अर्थ यह है कि लड़की का आठवें बरस गौरी, नवें बरस रोहिनी, दसवें बरस कन्या और उसके बाद रजुला (हैज़ वाली) नाम होता है। दसवें बरस तक ब्याह न करके रजुला लड़की को मां बाप और उस का बड़ा भाई तीनों देख कर नर्क में गिरते हैं।''

मनु धर्म शास्त्र बाब 9, सफ़्हा 215, श्लोक 88, मत्बूआ निगारिशात पब्लिशर्ज़ मज़ंग रोड लाहौर

> ''ख़्वाह बेटी अभी उम्र को न पहुंची हो, बाप को चाहिये कि मुम्ताज़, ख़ूबसूरत और बराबर ज़ात का रिश्ता आने की सूरत में कुबूल करे।''

मनु धर्म शास्त्र बाब 9, सफ़्हा 216, श्लोक 94, मत्बूआ निगारिशात पब्लिशर्ज़ मज़ंग रोड लाहौर

> ''तीस साल का मर्द बारह साला कन्या से शादी करेगा जो उसे ख़ुश रख सके या चौबीस बरस का मर्द आठ साला लड़की से, अगर दूसरे फ़राइज़ की अदायगी मे हाइल न हो तो उसे शादी करनी चाहिये।''

मज़्कूरा बाला हवालों अश्लोकों से बख़ूबी वाज़ेह हो जाता है कि मज़हबी एतेबार से लड़की की शादी कमसिनी में कर देनी चाहिये।

मोहतरम क़ारईन! यह बात रोज़े रौशन की तरह अयां हो गई कि कमसिनी की शादी कोई मअयूब बात नहीं है।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी पर जो उंगली उठाता है, वह मुस्तश्रिक़ीन हों या लानती वसीम रिज़वी, उन की जहालत और कम इल्मी पर मबनी है। जो इस शादी पर तन्क़ीद करे वह निरा जाहिल है।

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 60 पर लिखता है कि

"मुहम्मद ने 12 शादियां कीं।"

यही शादियों की बुन्याद पर लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 140 पर लिखता है कि

> "यहाँ तक सेक्स के मामले में भी मुहम्मद साहब को "सुपरमैन ऑफ़ सेक्स- Superman of Sex" तक कह देते हैं। लेकिन यूरोप के विद्वान मुहम्मद साहब की अदम्य और असीमित वासना के कारण उनको "सेक्स डेमोन/ Sex Demon" यानी "वासना पिशाच" हवस कहते हैं।"

यह है लानती वसीम रिज़वी की बकवास कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ को उन की 12 शादियो की वजह से इस तरह के नाक़ाबिले बर्दाश्त व नाज़ेबा कलिमात कहे हैं। यह लानती वसीम रिज़वी मुस्तशिरक़ीन और यहूदियों का वावेला है जो सिर्फ़ और सिर्फ़ हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के नामूस को दाग़दार करने की नापाक साज़िश है। आइये कसरते अज़्दवाज के तअल्लुक़ से तारीख़ का मुतालिआ करते हैं ताकि दुशमनों की ज़बान पर ताला लग जाए और लानती वसीम रिज़वी का मकरूह चेहरा सामने आ जाए।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलातु वत्तसलीम जो यहूदियों के नबी हैं और तमाम मुसलमानों का आप पर ईमान है कि आप अल्लाह के सच्चे नबी हैं, उनकी कसरते अज़्दवाज के बारे में मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

तब्क़ात इब्ने सअद, जिल्द 8, सफ़्हा 283

"हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की एक हज़ार बीवियां थीं, सात सौ आज़ाद और तीन सौ लौंडियां। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम यह भी यहूदियों के नबी हैं और तमाम मुसलमानों का आप पर ईमान है कि आप अल्लाह के सच्चे नबी हैं, उनकी भी कसरते अज़्दवाज

मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

तब्क़ात इब्ने सअद, जिल्द 8, सफ़्हा 283

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की सौ बीवियां थीं, उन में उम्मे सुलेमान औरया की औरत भी थीं। आपने उन से आज़माइश में पड़ने के बाद निकाह किया।

क़ाज़ी सुलेमान सलमान मन्सूरपूरी अपनी किताब रहमतुल लिल-आलमीन जिल्द दोम, सफ़्हा 129 पर लिखते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की चार बीवियां थीं।

एक से ज़्यादा शादी करने और एक वक़्त में एक से ज़्यादा बीवियां रखने की इजाज़त सिर्फ़ इस्लाम के साथ ख़ास नहीं है बल्कि हिन्दू धर्म में भी इस को जाइज़ क़रार दिया है। इस की मिसालें हिन्दुओं की मज़हबी किताबों में भी मिलती हैं। डॉक्टर मुहम्मद अहमद नईमी साहब अपनी किताब ''इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ'' जिल्द दोम, सफ़्हा नंबर 587 पर लिखते हैं कि मनु महाराज उसूल व ज़वाबित देते हैं किः

''अगर औरत बांझ हो, आठवें साल में औलाद ज़िन्दा न रहती हो, दसवें साल में सिर्फ़ लड़की हो और ग्यारहवें साल में बे-औलाद हो तो जल्द ही दूसरी शादी कर लेनी चाहिये।''

डॉक्टर साहब आगे लिखते हैंः

''कई बीवियां रखना पाप नहीं लेकिन औरतों के लिये पहले शौहर के वास्ते अपना फ़र्ज़ न निभाना पाप है।''

इस तरह हिन्दू मुहक़्क़िक़ व आलिम चन्देश्वर ने अपने ग्रहस्थ रत्नाकर में देवल रिशी के हवाले से लिखा है कि शूद्र एक से, वेश दो से, छतरी तीन से, ब्रहमण चार से और राजा जितनी चाहे उतनी औरतों से शादी कर सकता है।

बीवियों की भरमारः

डॉक्टर साहब इसी किताब के सफ़हा 590 पर लिखते हैं किः

> ''श्री राम के बाप राजा दशरथ की तीन बीवियां, कौशल्या, सुमित्र और केकई तो मशहूर ही हैं। इनके अलावा वाल्मीकीय रामायण में राजा दशरथ की 353 रानियों का तज़्किरा है, जिन से बनवास के वक़्त श्री राम ने इजाज़त ली थी जिस का बयान वाल्मीकीय रामायण में इस तरह है।

राम ने अपनी तीन सौ पचास माओं की तरफ़ देखा तो वह पहली तीन माओं की तरह ग़मज़दा दिखाई दीं। वाल्मीकीय रामायण के मुताबिक़ हनुमान जी की भी 16 बीवियां थीं जो श्री भरत ने उन को तोहफ़े में दी थीं। बाल्मीकी रामायन में है कि

श्री भरत ने हनुमान को एक लाख गायें, सौ अच्छे गांव और 16 लड़कियां बीवी की सूरत में तोहफ़तन दीं।

इस तरह साबित होता है कि हनुमान जी के भी 16 बीवियां थीं जबकि उन को ब्रहमचारी यानी नफ़्स-कुश और तन्हा ज़िन्दगी गुज़ारने वाला कहा जाता है।

श्री कृष्ण की ख़ास बीवियों की तादाद 8 थी और सैकड़ों गोपियां (मअशूक़ाएं) थीं, महाभारत और श्रीमद भागवत में इस तरह तज़्किरा किया गया है।

एक ही नेक घड़ी में अलग अलग जगहों में अलग अलग सूरतें इख़्तियार करके श्री कृष्ण ने 16 हज़ार लड़कियों के साथ एक साथ शादी की।

कशेब रिशी यह मारीच के फ़रज़ंद थे, उन की शादी दक्श प्रजापती की 13 लड़कियों के साथ हुई थी जिन में अदिती, दती और वनू ख़ास थीं।

ऋगवेद के मुताबिक़ सौभरी रिशी ने राजा मांधाता की 50 लड़कियों से शादी की थी, यह एक बुज़ुर्ग रिशी थे, उन्होंने हर एक बीवी से सौ सौ बच्चे पैदा किया।

राजा हर्शचंद यह राजा त्रिशंको के बेटे थे, उन की सौ बीवियां थीं। वसुदेव श्री कृष्ण के वालिद थे, भागवत पुराण के मुताबिक़ उन की सात बीवियां थीं जिन *में देवकी भद्रा और रोहिणी उन की ख़ास रानियां थीं।*

धर्म ग्रंथों व धर्म शास्त्रों मज़हबी किताबों की इबारत और तारीख़ी हवाला जात की रौशनी में साबित होता है कि एक से ज़्यादा शादी करना और एक ही वक़्त में एक से ज़्यादा बीवियां रखना हिन्दू धर्म मज़हब में भी जाइज़ है। ज़मानए क़दीम से लेकर अब तक ऐसे शवाहिद मौजूद हैं। यहूदी और इस्राईली तवारीख़ से भी साबित होता है कि बनी इस्राईल के अंबिया भी एक वक़्त में कसीर तादाद में बीवियां रखते थे।"

लानती वसीम रिज़्वी उसके हवारीन और उसके योरुप के स्कॉलर चम्चों से सवाल है कि

माअज़ल्लाह सौ बार मआज़ल्लाह 12 शादियां करने की वजह से हुज़ूरे अक़दस ﷺ अगर सुपरमैन ऑफ़ सेक्स या सेक्स डोमेन हैं तो...

राम के बाप राजा दशरथ जिस ने तीन बीवियां और 353 रानियां रखी थीं उन को क्या कहेंगे?

हनुमान जी की 16 बीवियां थीं उन को क्या कहेंगे?

श्री कृष्ण की 8 बीवियां और सैकड़ों मअशूक़ाएं थीं उन को क्या कहेंगे?

कशेब ऋशी की 13 बीवियां थीं उन को क्या कहेंगे?

सौभरी ऋशी की 50 बीवियां थीं, हर एक से सौ सौ बच्चे पैदा किये उन को क्या कहेंगे?

राजा हर्शचंद की सौ बीवियां थीं उन को क्या कहेंगे?

वसुदेव की सात बीवियां थीं उन को क्या कहेंगे?

अगर लानती वसीम रिज़वी ने मां का दूध पिया हैः

अगर लानती वसीम रिज़वी ने मां का दूध पिया है तो,

राम के बाप राजा दशरथ को सुपरमैन ऑफ़ सेक्स (Superman of sex) या सेक्स डोमेन (Sex Demon) कह कर बताए।

अगर लानती वसीम रिज़वी ने मां का दूध पिया है तो,

श्री कृष्ण को सुपरमैन ऑफ़ सेक्स या सेक्स डोमेन कह कर बताए।

अगर लानती वसीम रिज़वी ने मां का दूध पिया है तो,

हनुमान को सुपरमैन ऑफ़ सेक्स या सेक्स डोमेन कह कर बताए।

अगर लानती वसीम रिज़वी ने मां का दूध पिया है तो,

सौभरी ऋशी को सुपरमैन ऑफ़ सेक्स या सेक्स डोमेन कह कर बताए।

जिन के पास पचास बीवियां थीं और हर एक बीवी से सौ सौ बच्चे पैदा किये थे।

क्या लानती वसीम रिज़वी के पास कोई जवाब है?

लानती वसीम रिज़वी मानसिक बीमारः

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 5 पर लिखता है कि

> ''मोहम्मद मानसिक तौर पर ऐसी बीमारी से ग्रस्त थे जो मनुष्य के दिमाग़ में हार्मोन अधिक मात्रा में बना देती है। यह बीमारी मनुष्य की हड्डियाँ बड़ी कर देती है। हाथ पैर काफ़ी रूखे हो जाते हैं। इस बीमारी से

ग्रस्त लोगों में सेक्स करने की क्षमता और चाहत ज़्यादा उत्पन्न हो जाती है।”

यह है लानती वसीम रिज़वी की झूटी बकवास। ऐसी बीमारी का ज़िक्र किसी भी तारीख़ की किताबों में नहीं मिलता।

सीरत इब्ने इस्हाक़, सीरत इब्ने हिशाम, तारीख़े तबरी, तब्क़ात इब्ने सअद, तारीख़े बग़दाद किसी भी किताब में या हदीस में ऐसी बीमारी का ज़िक्र तो नहीं लेकिन यह बीमारी लानती वसीम रिज़वी के दिमाग़ में ज़रूर मौजूद है जिस को उस ने लिख दिया। मज़्कूरा किताबों में सर दर्द और बुख़ार का तज़्किरा मिलता है। अगर ऐसी कोई बीमारी होती तो कुफ़्फ़ारे कुरैश उस बीमारी के हवाले से आप पर तअन ज़रूर करते लेकिन कोई ऐसा वाक़िआ कहीं नहीं मिलता। सवानेह निगारों ने तो आप का हुलिया शरीफ़ बयान किया है कि आपसे ज़्यादा हसीन व जमील कोई न था जैसा कि पिछले सफ़्हात में आपने मुतालिआ किया लेकिन ऐसा तज़्किरा कहीं नहीं मिलता कि हुज़ूर ﷺ के हाथ पैर खुश्क हों, आप की हड्डियां बड़ी हों। भला बताइये तो सही! क्या ऐसी तौहीन आमेज़ बातें किसी मुसलमान के दिल को तकलीफ़ नहीं पहुंचा सकतीं? जैसा कि लानती वसीम रिज़वी ने दावा किया है।

हॉरमोन क्या है?

आइये लानती वसीम रिज़वी के झूट को साबित करने के लिये हॉरमोन (Hormone) के बारे में जानते हैं।

विकिपीडिया रिपोर्ट के मुताबिक़ हॉरमोन को सबसे पहले 1902 ई० में बरतानवी माहिरीने फ़ेअलियात डब्ल्यू बाइलिस (W Bayliss) और ई स्ट्रलिंग (E Starling) ने शनाख़्त किया था और सबसे पहले 1905 में इस इस्तिलाह को इस्तेमाल करने वाला भी ई स्ट्रलिंग ही था। उनके अल्फ़ाज़ यह हैं: यह कीमियाई प्याम्बर या हॉरमोन्ज़ जैसा

कि हम उन्हें पुकार सकते हैं, ख़ून के बहाव के ज़रिये उन आज़ा से जहां यह तय्यार किये गए हों, उन आज़ा तक लिये जाते हैं जहां उन्हें असर पैदा करना हो।

These chemical messengers, however, or hormones, as we might call them, have to be carried from the organ which they are produced to the organ widh they effect by means of the blood steam.

मोहतरम क़ारईन! लानती वसीम रिज़वी के सफ़ेद झूट का अंदाज़ा लगाएं कि मआज़ल्लाह उस ने हुजूरे अक़दस ﷺ पर इल्ज़ाम लगाया कि आपके दिमाग़ में हॉरमोन बढ़ गया था। उस जाहिल को मालूम होना चाहिये कि हॉरमोन की दरियाफ़्त 1902 में हुई तो चौदह सौ साल पहले कैसे मालूम हो गया कि हॉरमोन की मिक़दार बढ़ गई थी और किस टेस्ट के ज़रिया पता लगाया गया था। एक ज़ी-शऊर अच्छी तरह से जान सकता है कि यह तमाम बातें झूट और तौहीन पर मबनी हैं। लानती वसीम रिज़वी सौ साल पहले की दरियाफ़्त को चौदह सौ साल पहले की बता रहा है। अगर झूट बोलने में और तरक़्क़ी की तो यह कह देगा कि राम के ज़माने में लोग मोबाइल पर बहुत बात करते थे।

झूटा लानती कहता है कि हॉरमोन की मिक़दार बढ़ने की वजह से जिन्सी ताक़त बढ़ गई थी।

जब पता लगाने का कोई ज़रिया ही नहीं था तो यह कहना कैसे दुरुस्त होगा कि इस की वजह से जिन्सी ताक़त बढ़ गई थी। यह झूट पर झूट है।

कौन सी ताक़त किस को कितनी होती है, यह निज़ामे क़ुदरत पर मुन्हसिर है। जिन्सी ताक़त, जिस्मानी ताक़त, मुदाफ़िअत की ताक़त हर एक की अलग अलग होती है, हर एक को यकसां तसव्वुर नहीं किया जा सकता। क्या हम मुशाहिदा नहीं करते कि एक शहरी नाश्ते

में एक रोटी या एक पाव पर इक्तिफ़ा करता है जबकि देहात में खेत में काम करने वाला आसानी के साथ दस दस रोटियां खा लेता है क्योंकि उनकी कुव्वते हाज़मा क़वी होती है। इसी तरह से जिन्सी ताक़त और जिस्मानी ताक़त भी अलग अलग होती है जैसा कि आपने साबिक़ा सफ़्हात में पढ़ा कि एक रूसी बाशिंदा 69 बच्चों का बाप बना, क्या यह निज़ामे क़ुदरत नहीं? अमेरीका की नाडिया सुलेमन ने एक साथ 8 बच्चों को जन्म दिया, क्या यह निज़ामे क़ुदरत नहीं? हुज़ूरे अक़दस ﷺ को कुव्वते बाह वदीअत की गई थी।

तब्क़ात इब्ने सअद, जिल्द 8, सफ़्हा 273

> ''हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने फ़रमायाः मेरे पास हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम एक हांडी लेकर आए, मैंने उस में खाया और मुझे चालीस आदमियों की बराबर कुव्वते बाह अता कर दी गई।''

अब अगर कोई कहे कि हॉरमोन बढ़ जाने की वजह से जिन्सी ताक़त ज़्यादा थी तो वह कितना बड़ा जाहिल होगा। ऐसी बातें तो दूसरे मज़ाहिब की मज़हबी शख़्सियात से मुताल्लिक़ भी उन की किताबों में मिलती हैं जैसे श्री कृष्ण, हनुमान जी, राजा दशरथ, शौभरी ऋशी, जिनके पास कसीर तादाद में बीवियां थीं। तो क्या उन के भी लानती वसीम रिज़वी ऐसी गुफ़्तगू और ऐसे फोहड़ तब्सिरे करने की हिम्मत कर सकता है?

विवाह और व्यभिचारः

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 86 ''वेश्यावृति हलाल है'' उन्वान के तहत लिखता है कि दुर्रे मुख़्तार में लिखा है कि

> ''यदि कोई व्यक्ति सूचित करता है कि मैं पैसे देकर किसी औरत के साथ सम्भोग करता हूं तो इस्लामी

क़ानून के अनुसार उसका यह काम दंडनीय नहीं हो सकता है।"

लानती वसीम रिज़वी नेतागीरी करते करते मुफ़्ती बनने की कोशिश करने लगा और मुंह के बल गिर गया।

मोहतरम क़ारईन! सबसे पहले मैं अद्दुर्रुल मुख़्तार की अस्ल अरबी इबारत आपके सामने पेश करता हूं।

अद्दुर्रुल मुख़्तार, जिल्द चहारुम, किताबुन निकाह, बाबुल महर, सफ़्हा 239

لو تزوج علی ان یہب لابیھا الف درھم لھا مھر المثل وھب لہ اولا۔

तर्जमाः "अगर किसी ने इस बात पर निकाह किया कि उसके बाप को एक हज़ार देगा तो उस औरत के लिये महरे मिस्ल होगा, वह दे या न दे।"

वज़ाहतः मोहतरम क़ारईन! अब मैं आपके सामने इस मस्अला की वज़ाहत पेश करता हूं, यहां महर का ज़िक्र है। लानती वसीम रिज़वी को समझना चाहिये कि यह किताबुन निकाह और बाबुल महर है। अगर कोई शख़्स किसी औरत से निकाह करे और उससे यह कहे कि मैं तुम्हारे वालिद को एक हज़ार दिरहम दूंगा तो यह दिरहम दे या न दे उस औरत के लिये महरे मिस्ल हो जाएगा। यहां पर एक हज़ार दिरहम की बात हो रही है न कि एक हज़ार दिरहम देकर जिमाअ करने की बात हो रही है और एक हज़ार महर का ज़िक्र है और इस्लामी क़ानून में निकाह के लिये महर देना वाजिब है। لو تزوج का मतलब होता है अगर निकाह करे और जाहिल लानती वसीम रिज़वी ने समझ लिया अगर जिमाअ करे। इस का मफ़हूम यह निकला कि अगर एक हज़ार दिरहम महर में देकर निकाह करे, इस इबारत में लफ़्ज़ महर का ज़िक्र इसलिये नहीं है कि यह बाबुल महर है, सियाक़ व सबाक़ में महर का ज़िक्र है और लानती वसीम रिज़वी

ने यह समझ लिया कि अगर किसी ने एक हज़ार दिरहम देकर जिमाअ कर लिया।

लानती वसीम रिज़वी अपनी शेख़ी बघारते हुए लिखा है:

"इस्लामी क़ानून के अनुसार उसका यह काम दंडनीय नहीं हो सकता है।"

क़ारईन! जब महर की रक़म देकर शादी करेंगे तो उस में सज़ा क्यों होगी? क्या किसी मज़हब में शादी की सज़ा मुतअय्यन की गई है। जब रक़म देकर शादी नहीं करेंगे बल्कि जिमाअ करेंगे तो ज़िना होगा, इस की सज़ा इस्लाम में सौ कोड़े मारना या संगसार करना है। लानती वसीम रिज़वी ने لو تزوج का मतलब समझा ही नहीं لو تزوج को समझना तो दूर की बात है जो "इब्ने" और "बिन्ते" न समझ सके। जो "अकल" और "शर्ब" न समझ सके, जैसा कि आपने पिछले सफ़्हात में पढ़ा वह لو تزوج क्या समझेगा।

बिला शुबह इस्लाम में ज़िना की सज़ा सख़्त है। दूसरे मज़हब में ज़िना की सज़ा क्या है वह भी आप मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

मनुजी हिन्दू धर्म शास्त्र, बाब 11, श्लोक 172, में बयान करते हैं:

> "बाप की बहन की बेटी, ख़ाला की बेटी या मामूं की बेटी से मुबाशरत करने वाले के लिये चांदराइन ब्रत का कफ़्फ़ारा है।" (यह एक ब्रत है जिस में चांद की रौशनी घटने के साथ खाने में एक एक लुक़्मा घटाते चले जाएं फिर रौशनी बढ़ने के साथ एक एक लुक़्मा बढ़ाते चले जाएं)"

(मज़्कूरा बाला औरतों के साथ मुबाशरत करने का कफ़्फ़ारा चांदराइन ब्रत है, इससे उनके गुनाह धुल जाते हैं।)

मनु धर्म शास्त्र, बाब 11, श्लोक 175

> "मर्द से ख़िलाफ़े फ़ितरत काम करने वाला और

चलती हुई बैल गाड़ी में औरत से मुबाशरत करने वाला अपने कपड़े समेत नहाएगा।''

(इस गुनाह की सज़ा इस मज़हब में यही है कि जिस कपड़े में वह गुनाह किया उसी कपड़े में नहाले उस का गुनाह माफ़ हो जाएगा, ''मुसन्निफ़ आसी'')

ध्मनु धर्म शास्त्र, श्लोक 356 में है कि

''अगर किसी जवान लड़की की मुज़ाहमत के बावुजूद जुर्म का इर्तिकाब करने वाला फ़ौरी जिस्मानी सज़ा का मुस्तहिक़ है लेकिन अगर कोई अपनी हम-ज़ात लड़की की रज़ामन्दी से उसके जिस्म से फ़ायदा उठाता है तो जिस्मानी सज़ा का हुक्म नहीं।''

लानती वसीम रिज़्वी को इस्लाम पर कीचड़ उछालने से क़ब्ल दूसरे मज़ाहिब की किताबों का भी मुतालिआ कर लेना चाहिये था कि क्या मर्द से अग़लाम बाज़ी करने की सज़ा यही है कि कपड़ा समेत नहा ले। लानती वसीम रिज़्वी के पास इस का क्या जवाब है।

पक्षपात की अग्नि

लानती वसीम रिज़्वी ने तअस्सुब की आग में जल भुन कर मुसलमानों पर दहशत गर्दी का लेबल चिपकाने की कोशिश की और क़ुरआने मुक़द्दस को नफ़रत फैलाने वाली किताब क़रार दिया।

मोहतरम क़ारईन! आप तारीख़ का मुतालिआ करें, दुनिया में शायद ही किसी ऐसे मज़हब का वुजूद हो जिस में जंग व जिहाद का तसव्वुर मौजूद न हो बल्कि यह एक हक़ीक़त है कि जंगी उसूल व क़वानीन में इख़्तिलाफ़ के साथ इस का हुक्म तक़रीबन हर मज़हब में पाया जाता है और हर मज़हब को यह मज़हबी इख़्तियार हासिल है कि अपने मज़हब का तहफ़्फ़ुज़ करे। नज़रियए जंग व जिहाद के उन्वान से जब हम क़दीम हिन्दू धर्म का मुतालिआ करते हैं तो मालूम

होता है कि इस्लाम से बढ़ कर उनके मज़ाहिब में भी जंगी दस्तूर मौजूद है। क़दीम हिन्दू धर्म ग्रंथों और धर्म शास्त्रों में भी ज़ुल्म व सितम, ख़ूनरेज़ी से दिफ़ाअ, जान व माल, इज़्ज़त व आबरू के तहफ़्फ़ुज़ के लिये जंग व जिहाद को लाज़मी क़रार दिया है। जिहाद एक मज़हबी लफ़्ज़ है और मज़हबी जंग जिहाद है। हर मज़हब में मज़हबी जंग है तो इस का मतलब यह निकलता है कि हर मज़हब में जिहाद है।

धार्मिक युद्ध या जिहादः

धार्मिक युद्ध या जिहाद के पस मंज़र पर ग़ौर किया जाए तो यह वाज़ेह हो जाता है कि इससे ज़ुल्म व सितम का ख़ातमा होता है, मज़्लूमों को इन्साफ़ मिलता है और इस में इन्सानियत की बक़ा है। मज़हबी जंग या जिहाद को दहशत गर्दी से मन्सूब करना इन्तिहाई नादानी और कम-फ़हमी है। दहशत गर्दी और मज़हबी जंग या जिहाद में कोई मुमासिलत नहीं। दहशत गर्दी इन्सानियत के लिये ख़तरा है, जबकि मज़हबी जंग या जिहाद इन्सानियत का मुहाफ़िज़ है, इसलिये जिहाद को दहशत गर्दी से जोड़ा नहीं जा सकता है।

लानती वसीम रिज़्वी ने अपनी किताब के सफ़्हा 39 से लेकर सफ़्हा 43 तक क़ुरआने मुक़द्दस की 24 आयतों का ज़िक्र किया है जिस में कुछ आयतों में जिहाद का ज़िक्र है, किसी में मुनाफ़िक़ों के बारे में बताया गया है, किसी में जहन्नम के अज़ाब का ज़िक्र है, किसी में जन्नत के ऐश व आराम का ज़िक्र है। उन में से चन्द आयात का तर्जमा आप मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

(1) अल्लाह काफ़िर लोगों को रास्ता नहीं दिखाता।

(2) ऐ ईमान वालो! उन्हें और काफ़िरों को अपना दोस्त न बनाओ, अल्लाह से डरते रहो अगर ईमान वाले हो।

(3) तो जो कुछ ग़नीमत का माल तुम ने हासिल किया उसे

हलाल और पाक समझ कर खाओ।

(4) यह बदला है अल्लाह के दुशमनों का (जहन्नम की आग) आग उस में उन का हमेशा का घर है, इसके बदले में कि हमारी आयतों का इन्कार करते हैं।

(5) फिर हम ने उनके दरमियान क़यामत के दिन तक के लिये दुशमनी और बद-नियती की आग भड़का दी और अल्लाह जल्द उन्हें बता देगा जो कुछ वह करते रहे हैं।

(6) तो यक़ीनन हम कुफ़्र करने वालों को अज़ियत का मज़ा चखाएंगे और बिला शुबह हम उन्हें सबसे बड़ा बदला देंगे उस काम का जो वह करते थे।

(7) अल्लाह ने तुम से बहुत सी ग़नीमतों का वादा किया है जो तुम्हारे हाथ आएंगी।

(8) ऐ नबी! ईमान वालों को लड़ाई की तरग़ीब दो, अगर तुम में से बीस साबित क़दम रहने वाले होंगे तो वह दो सौ पर ग़लबा हासिल करेंगे और अगर तुम में से सौ हों तो एक हज़ार काफ़िरों पर भारी होंगे क्योंकि वह ऐसे लोग हैं जो समझ बूझ नहीं रखते।

(9) और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के ज़रिया बताया जाए, फिर वह मुंह फेर ले बेशक हमें ऐसे मुज्रिमों से बदला लेना है।

(10) कोई मुश्किल नहीं अल्लाह ने ईमान वालों से उन की जानों और उनके मालों को इसके बदले में ख़रीद लिया है कि उनके लिये ''जन्नत'' है। वह अल्लाह के रास्ते में लड़ते हैं तो मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं।

मोहतरम क़ारईन! मज़्कूरा बाला अहकाम की मुमासिलत दूसरे मज़ाहिब की मज़हबी किताब यजुरवेद, मनु स्मृती, मनु धर्म शास्त्र, अथरवेद, सत्य प्रकाश, ऋगवेद वग़ैरा में भी मिलती हैं। आप मुलाहिज़ा करें, ख़ुद फ़ैसला करें कि मज़हबी जंग और जिहाद का

हुक्म उन मज़हबी किताबों में भी है या नहीं।

हिन्दू धर्म में युद्ध व जिहादः

डॉक्टर मुहम्मद अहमद नईमी अपनी किताब ''इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ'' जिल्द अव्वल के सफ़्हा 803 पर ''हिन्दू धर्म में युद्ध व जिहाद'' के उन्वान के तहत तहरीर फ़रमाते हैं:

(1) ऐ अग्नि मिस्ल ईश्वर! हमारा बारुअब दानिशमन्द राजा अपने मुल्क के लिये दुशमनी को पूरी तरह ख़ाक करता हुआ हमारे दुशमनों पर चढ़ाई करे। वह अवाम को जानने वाला या बहुत दौलत वाला राजा दुशमनों की फ़ौज को परेशान कर दे, फिर दुशमनों को ख़ाली हाथ कर डाले। (अथरवेद बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सफ़्हा नंबर 803)

(2) ऐ राजा! मुल्क में धारदार कांटों की तरह जो दुशमन लोग हैं हज़ार पांच सौ जो भी दुशमन हैं उन सब का ख़ातमा कर डालो। (रिगवेद बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सफ़्हा नंबर 804)

(3) हमारे जिस्म को तन्दुरुस्त और मज़बूत करने वाला ख़ालिस पानी पिये, हमारे अन्दर जो तबाह करने का सुलूक है इस बरताव को अपने नापसन्द मुल्क के दुशमन व बाग़ी पर ही इस्तेमाल करें। (अथरवेद बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सफ़्हा नंबर 804)

(4) मेहनत कश क़ाबिले तारीफ़ मर्दों को चाहिये कि आबा व अजदाद के इख़्तियार किये हुए सीधे रास्ते पर चलते हुए मुल्क के बाग़ी दुशमनों को इस तरह जला कर राख कर दें जिस तरह आग गोश्त को राख कर देती है। ताकि वह बाग़ी दुशमन लोग ख़ुदा के रास्ते या अक़्लमन्दों के रास्ते या नेक आबा व अजदाद के रास्ते पर चलने में कोई रुकावट न पहुंचा सकें। (अथरवेद बहवाला इस्लाम और

हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सफ़्हा नंबर 804)

(5) जब धर्म का ख़ातमा होने का इम्कान हो, जब मुसीबत के सबब मुल्क में बद-नज़्मी फैली हो तो अपनी हिफ़ाज़त के लिये या माल, गाय वग़ैरा की हिफ़ाज़त के लिये युद्ध करने का मौक़ा हो। इसी तरह जब औरतों और ब्रहमणों की हिफ़ाज़त के लिये ज़रूरी हो तो ब्रहमणी, छत्री और वैश्य को हथियार उठा लेना चाहिये। ऐसे वक़्त में धर्म के लिये क़त्ल या जंग करने में गुनाह नहीं। (मनु स्म्रिती, बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सः 805)

(6) उस्ताद, बच्चा, बुज़ुर्ग या बहुत से मज़हबी ग्रंथों का आलिम ब्रहमण भी अगर ज़ालिम होकर मारने के लिये आए तो उस को बेझिझक मार डालें। (मनु स्मृती अध्याय 8, श्लोक 350)

(7) सबके सामने या तन्हाई में जो किसी को मारने के लिये उतावला हो उस का क़त्ल करने में कोई पाप नहीं। (मनु स्मृती अध्याय 8, श्लोक 351)

(8) जंग में जो हथियारों के ज़रिया मारा जाता है उस को उसी वक़्त युग का फल और कामयाबी हासिल होती है। (मनु स्मृती अध्याय 8)

(9) जंग में आपस में एक दूसरे को मारने की ख़्वाहिश रखने वाले पूरी ताक़त लगा कर लड़ने वाले राजा जंग में पीठ न दिखा कर सीधा स्वर्ग को जाते हैं।

(10) फ़ौज तय्यार करके फ़ौज की जीत के अमल का फ़ायदा जंग में सामने मरने से स्वर्ग का हुसूल और भागने से नर्क में ज़लील होना वग़ैरा बातों से बेदार करे, उस की जांच पड़ताल करे और दुशमन की फ़ौज से लड़ते वक़्त अपने फ़ौजियों की मेहनत को देखे। (मनु स्मृती, बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सः 806)

(11) ऐ आगे बढ़ने वाले मर्दो! तुम दौड़ कर दुशमन से आगे निकल जाओ, इंद्र के हुक्म से दुशमनों को मारो, भेड़ को जिस तरह भेड़िया मारता है उसी तरह दुशमन को पीस दो। तुम्हारा वह दुशमन छूटने न पाए उस की जान को भी बांध दो। (अथरवेद बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सः 807)

(12) ऐ मौत वाले! तुम ख़तरनाक इस्तेमाल करने वाले मंत्र से नुक़सान पहुंचाने वाले और रिआया को तकलीफ़ देने वाले को हलाक कर दो, किसी को न छोड़ो, उन ख़तरनाक हम्ला करने वालों को मार दो। (अथरवेद बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सः 807)

(13) ऐ मंत्र से तेज़ किये हुए हथियार, यहां से फेंका हुआ दूर जा। तू जा और दुशमनों के पास पहुंच। उन दुशमनों में से किसी को न छोड़ना। (ऋगवेद बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सः 807)

(14) दुशमन क़ाबू में आ जाए तो उस को नहीं छोड़ना चाहिये। अगर दुशमन ताक़तवर है तो नर्मी से उस की ख़िदमत करे, अगर कमज़ोर है तो उस को मार डाले। बचा हुआ दुशमन जल्दी ही ख़तरा पैदा कर देता है। (वेदरन्ती बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सः 808)

(15) दुशमन के शहर को चारों तरफ़ से घेर ले, उसके सूबों को हर तरह से नुक़सान पहुंचाए। मुसलसल वहां का सब्ज़ा, अनाज, पानी और ईंधन तबाह व बरबाद करता रहे। (मनु स्मृती, अध्याय 7, श्लोक 195)

(16) हम लोग जिससे दुशमनी करें या जो हम से दुशमनी करे उस को हम शेर के मुंह में डाल दें और राजा भी उस को शेर के मुंह में डाल दे। (यजुरवेद बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का

तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सः 809)

(17) हम लोग जिससे दुशमनी करें या जो हम से रंज करे उस को हम लोग ख़ूंख़्वार जानवरों के मुंह में डाल दें। (यजुरवेद बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सः 809)

(18) जिन से हम नफ़रत करते हैं या जो हम को तकलीफ़ देते हैं उन को हम उन हवाओं में डाल कर इस तरह तकलीफ़ दें जिस तरह बिल्ली के मुंह में चूहा। (यजुरवेद बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सः 809)

(19) ऐ इन्सान! जिस तरह भी दुशमनों को हलाक किया जा सके उस तरह करके हमेशा की राहत व ज़िन्दगी बसर कर। (यजुरवेद बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सः 809)

(20) ऐ राज पुरुष! आप धर्म के मुख़ालिफ़ दुशमनों को आग में जला डालें। ऐ जाह व जलाल वाले पुरुष! वह जो हमारे दुशमनों को हौसला देता है आप उस को उल्टा लटका कर सूखी लकड़ी की तरह जलाएं। (यजुरवेद बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सः 809)

(21) ऐ तेज धारी विद्वान पुरुष! आप तेज़ रफ़्तार दुशमन के खाने पीने या दीगर काम काज के मक़ामात को अच्छी तरह उजाड़ें और उन को अपनी तमाम ताक़त से मारें। (यजुरवेद बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सः 809)

(22) ऐ राजा! जिस तरह हिफ़ाज़त करने वाले आलिम का पाक शागिर्द सुख देने वाले आग वग़ैरा पदार्थों को हासिल करके वेदों के इल्म का जानने वाला होकर दुशमनों को मारने वाला और दुशमनों के गांव को तबाह करके आपके जाह व हश्मत को दोबाला करता है उसी तरह दीगर आलिम लोग भी करें। (यजुरवेद बहवाला इस्लाम

और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सः 810)

(23) धर्म के मुख़ालिफ़ों को ज़िन्दा आग में जला दो। (ऋगवेद बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सः 810)

(24) मुख़ालिफ़ों का जोड़ जोड़ और बंद बंद काट दिया जाए। (यजुरवेद बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सः 810)

(25) ऐ पराक्रमी, बहादुर सिपह सालार! आप हमें दिली राहत देने वाले हो, आप हमारी हिफ़ाज़त की ख़ातिर तलवार, तोप, बंदूक़ को पकड़िये। आप हिरन की खाल को लिपटे हुए तीर व कमान से मुसल्लह होकर हमारी हिफ़ाज़त के लिये आएं। और दुशमनों की ज़बरदस्त फ़ौज को दरख़्त के मानिंद काट कर फ़तह हासिल कीजिये। (यजुरवेद बहवाला इस्लाम और हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ, जिल्द अव्वल, सः 810)

(26) रथ, घोड़े, हाथी, छतरी, माल, ग़ल्ला, जानवर, नौकर, गुड़, नमक वग़ैरा सामान और तांबा, पीतल वग़ैरा के बर्तन उन में जिस चीज़ को जो जीत कर लाता है वह उस की होती है। युद्ध में जीते हुए हाथी घोड़े, रथ वग़ैरा सब कुछ राजा को पेश कर दे। यह वेद का क़ौल है सभी फ़ौजियों के ज़रिया एक साथ जीता हुआ धन हो उस को राजा फ़ौजियों में बांट दे। (मनु स्मृती अध्याय 7, श्लोक 96, मनु धर्म शास्त्र बाब 7, श्लोक 97)

(27) जो चीज़ हासिल नहीं होती है ताक़त के ज़रिया उस को पाने की ख़्वाहिश करे, जो माल व दौलत जीत कर लाया हो अच्छी तरह उस की हिफ़ाज़त करे। (मनु स्मृती, अध्याय 7, श्लोक 101, मनु धर्म शास्त्र, बाब 7, श्लोक 99)

(28) हम्ले के लिये हर वक़्त तय्यार रहे, बहादुरी की मुस्तक़िल नुमाइश करता रहे। दुशमन की कमज़ोरी का हमेशा खोज लगाता रहे।

(मनु धर्म शास्त्र, बाब 7, श्लोक 102)

(29) हम्ला करने के लिये हमेशा तय्यार रहने वाले से पूरी दुनिया ख़ौफ़ज़दा रहती है, उसे चाहिये कि सारी मख़लूक़ को क़ाबू करे चाहे यह काम ताक़त के बल बूते पर ही क्यों न हो। (मनु धर्म शास्त्र, बाब 7, श्लोक 103)

(30) दुशमनों को उस की कमज़ोरियों का इल्म हरगिज़ न होने पाए लेकिन उसे दुशमन की कमज़ोरी का इल्म हो। (मनु धर्म शास्त्र, बाब 7, श्लोक 105)

(31) दुशमन के चैलेंज का सामना हो तो मुंह न मोड़े, ख़्वाह ताक़त में दुशमन बराबर हो, कमज़ोर हो या ताक़तवर उसे छत्री का फ़र्ज़ याद रखना चाहिये। (मनु धर्म शास्त्र, बाब 7, श्लोक 87)

(32) मफ़ाहिमत में दो मुतज़ाद मक़ासिद का हुसूल पेशे नज़र है अपनी बेटियां शादी में दे और बेटों को बचा ले। (मनु धर्म शास्त्र, बाब 7, श्लोक 152)

(33) शाही हिकमते अमली के छे चीज़ें क़ाबिले ग़ौर हैं, इत्तिहाद, जंग, पेश क़दमी, पड़ाव, फ़ौज की दसतों में तक़सीम और पनाहगाह की तलाश। (मनु धर्म शास्त्र, बाब 7, श्लोक 160)

(34) जब रथों, लादु जानवरों और अदद के एतेबार से कमज़ोर हो तो निहायत मुहतात होकर ख़ामोश बैठे और रफ़्ता रफ़्ता दुशमनों से मफ़ाहिमत करता जाए। (मनु धर्म शास्त्र, बाब 7, श्लोक 172)

(35) जब देखे के दुशमन का पल्ला हर एतेबार से भारी है तो अपना मक़सद हासिल करने के लिये उस की फ़ौज को तक़सीम कर दे। (मनु धर्म शास्त्र, बाब 7, श्लोक 173)

(36) अगर देखे कि हिफ़ाज़त में शर फैलता है तो बिला झिजक जंग का रास्ता इख़्तियार करे। (मनु धर्म शास्त्र, बाब 7, श्लोक 176)

(37) दुशमन को महसूर कर चुके तो बाहर ख़ेमाज़न हो। धावों से उसके इलाक़े उजाड़े, घास, ख़ुराक, ईंधन, पानी की तबाही जारी

रखे, इस तरह तालाब, फ़सलें और ख़न्दकें भी तबाह कर दे। दुशमन पर शब-ख़ून मारे और रात को हरासां करे। (मनु धर्म शास्त्र, बाब 7, श्लोक 196)

(38) दुशमन की कारवाई से बाख़बर रहे और जब मुक़द्दर साथ दे बिला ख़ौफ़ लड़ते हुए फ़तह के लिये कोशिश करे। (मनु धर्म शास्त्र, बाब 7, श्लोक 197)

(39) मुनासिब तौर पर कुव्वत लगानी चाहिये और इस तरह लड़ना चाहिये कि दुशमन पर मुकम्मल फ़तह हासिल करे। (मनु धर्म शास्त्र)

(40) लड़ाई में फ़तह के बाद देवताओं की पूजा करे, सच्चे ब्रहमणों को एज़ाज़ात दे। (मनु धर्म शास्त्र, बाब 7, श्लोक 201)

(41) जब जंग के लिये तलब करे तो छत्रियों के धर्म को याद करके मैदाने जंग में जाने से न हिचकिचाए बल्कि बड़ी होशियारी के साथ उन से जंग करे जिससे अपनी कामयाबी हो। (सत्यार्थ प्रकाश सम्लास छटा)

(42) कभी कभी दुशमनों को मग़लूब करने के लिये उनके सामने छुप जाना वाजिब है क्योंकि जिस तरह भी दुशमन पर ग़ालिब आ सकें वही काम करना चाहिये। (सत्यार्थ प्रकाश सम्लास छटा)

(43) डर कर भागा हुआ मुलाज़िम जो दुशमनों के हाथ से मारा जाता है उस को गुनाह लग जाते हैं। वह क़ाबिले सज़ा हुआ है। नीज़ उस की वह इज़्ज़त जिससे उस को लोक प्रलोक में सुख मिलने वाली थी उस का आक़ा ले लेता है। (सत्यार्थ प्रकाश सम्लास छटा)

(44) जो जंग से भाग जाए उस को कुछ भी सुख नहीं होता बल्कि उसके नेक आमाल का फल ज़ाए हो जाता है। (सत्यार्थ प्रकाश सम्लास छटा)

(45) वह शोहरत को पाता है जिस ने धर्म को समाने रख कर बख़ूबी जंग की हो। (सत्यार्थ प्रकाश सम्लास छटा)

(46) लड़ाई में जो गाड़ी, घोड़ा, दौलत, रसद, जानवर, औरतें, घी, तेल वग़ैरा फ़तह किये हों वही उस को लेगा। (सत्यार्थ प्रकाश सम्लास छटा)

(47) फ़ौज के आदमी फ़तह की हुई चीज़ों में से सोलहवां हिस्सा राजा को देदे और राजा भी इस दौलत में से जो सब ने मिल कर फ़तह की हो सोलहवां हिस्सा फ़ौज के सिपाहियों को देदे। (सत्यार्थ प्रकाश सम्लास छटा)

(48) अगर कोई लड़ाई में मर गया हो तो उस का हिस्सा उस की औरत और औलाद को देदे। (सत्यार्थ प्राश सम्लास छटा)

(49) फ़तह पाकर उन से इक़रार नामा लिखा ले कि तुम को हमारे हुक्म के मुताबिक़ यानी धर्म से पेवस्ता सियासते मुल्की के मवाफ़िक़ अमल करके इन्साफ़ से रिआया परवरी करनी होगी। (सत्यार्थ प्रकाश सम्लास छटा)

(50) बिला सफ़ बंदी के लड़ाई न करे। (सत्यार्थ प्रकाश सम्लास छटा)

अथरवेद, यजुरवेद, मनुकाम शास्त्र, मनु स्मृती और दीगर मज़हबी किताबों में जो जंग, जिहाद या मज़हबी लड़ाई का तसव्वुर है उस का इज्माली ख़ाका हाज़िर है। मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

(1) अपने दुशमनों पर चढ़ाई कर दे। (अथरवेद)

(2) दुशमनों की ख़ाली हाथ कर दे। (अथरवेद)

(3) हज़ार पांच सौ जो भी दुशमन हों उन सब का ख़ातमा कर डालो। (रिगवेद)

(4) दुशमनों को इस तरह जला कर राख कर दें जिस तरह आग गोश्त को राख कर देती है। (अथरवेद)

(5) जब धर्म के ख़ातमा का इम्कान हो ऐसे वक़्त में धर्म के लिये क़त्ल या जंग करने में कोई गुनाह नहीं। (मनु स्मृती)

(6) उस्ताद बच्चा, बुज़ुर्ग मज़हबी ग्रंथों का आलिम अगर ज़ालिम

होकर मारने के लिये आए तो उस को बिला झिझक मार डालें। (मनु स्मृती)

(7) जो किसी को मारने में उतावला हो तो उस को क़त्ल करने में कोई पाप नहीं। (मनु स्मृती)

(8) जो जंग में हथियारों के ज़रिया मारा जाता है उस को युग का फल और कामयाबी हासिल होती है। (मनु स्मृती)

(9) जंग करने वाला जो जंग में पीठ न दिखाए वह सीधा स्वर्ग को जाता है। (मनु स्मृती)

(10) जो फ़ौजी जंग में मारा जाता है वह स्वर्ग हासिल करता है और जो भाग जाता है वह नर्क में ज़लील होता है। (मनु स्मृती)

(11) इंद्र के हुक्म से दुशमनों को मारो। दुशमनों को पीस दो, तुम्हारा दुशमन छूटने न पाए। (अथरवेद)

(12) किसी को न छोड़ो ख़तरनाक हमला करने वालों को क़त्ल कर दो। (अथरवेद)

(13) जो जंग से भाग जाता है उस को पाप लगता है। (सत्यार्थ प्रकाश)

(14) जो जंग से भाग जाए उस का नेक अमल ज़ाए हो जाता है। (सत्यार्थ प्रकाश)

(15) वह शोहरत को पाता है जिस ने धर्म को सामने रख कर बख़ूबी जंग की हो। (सत्यार्थ प्रकाश)

(16) जंग में घोड़ा, औरत, दौलत, अनाज जो फ़तह करके हासिल कर ले वह उसी का है। (सत्यार्थ प्रकाश)

(17) फ़ौज के आदमी फ़तह की हुई चीज़ों में से सोलहवां हिस्सा राजा को दें। (सत्यार्थ प्रकाश)

(18) सब ने मिल कर जो फ़तह किया उस में से राजा सोलहवां हिस्सा फ़ौज के सिपाहियों को दे। (सत्यार्थ प्रकाश)

(19) अगर कोई लड़ाई में मर गया तो उस का हिस्सा उस की

औरत और औलाद को दे दे। (सत्यार्थ प्रकाश)

(20) फ़तह पाकर उन से इक़रार नामा लिखा ले कि हमारे हुक्म के मुताबिक़ यानी धर्म से मुन्सलिक काम करके रिआया की देख भाल करे। (सत्यार्थ प्रकाश)

(21) बग़ैर सफ़ बंदी के लड़ाई न करे (सत्याथ प्रकाश)

(22) तू जा और दुशमनों के पास पहुंच, उन दुशमनों में से किसी को न छोड़ना। (रिगवेद)

(23) दुशमन क़ाबू में आ जाए तो उसे नहीं छोड़ना चाहिये। (वेदरनीती)

(24) दुशमन कमज़ोर है तो उस को मार डाले, बचा हुआ दुशमन ख़तरा पैदा करता है। (वेदरनीती)

(25) दुशमन को चारों तरफ़ से घेरे और उसके सूबों को हर तरह से नुक़सान पहुंचाए। (मनु स्मृती)

(26) दुशमन का अनाज, सब्ज़ा, पानी, ईंधन तबाह व बरबाद करता रहे। (मनु स्मृती)

(27) ऐ इन्सान! जिस तरह दुशमनों को हलाक किया जा सके वह करे। (यजुरवेद)

(28) ऐ राज पुरुष! आप धर्म के मुख़ालिफ़ दुशमनों को आग में जला डालें। (यजुरवेद)

(29) ऐ जाह व जलाल वाले पुरुष! जो हमारे दुशमनों को हौसला दे उस को उल्टा लटका कर सूखी लकड़ी की तरह जलाएं। (यजुरवेद)

(30) अगर देखे कि फ़ितना फैलता है तो बिला झिजक जंग का रास्ता इख़्तियार करे। (मनु धर्म शास्त्र)

(31) दुशमनों पर शब ख़ून मारे और रात को डराए। (मनु धर्म शास्त्र)

(32) दुशमनों के इलाक़े उजाड़ डाले, तालाब, फ़सलें बरबाद करे।

(मनु धर्म शास्त्र)

(33) इस तरह लड़ना चाहिये कि दुशमन पर मुकम्मल फ़तह हासिल करे। (मनु धर्म शास्त्र)

(34) जब जंग के लिये बुलाया जाए तो छत्रियों के धर्म को याद करके बिला ख़ौफ़ जंग में शामिल होना चाहिये। (सत्यार्थ प्रकाश)

(35) बड़ी होशियारी से दुशमन के साथ जंग करे जिस में अपनी कामयाबी हो। (सत्यार्थ प्रकाश)

(36) वही काम करना चाहिये जिससे दुशमन को क़ाबू किया जा सके। (सत्यार्थ प्रकाश)

(37) ऐ तेजधारी विद्वान पुरुष! दुशमन के खाने पीने और काम काज के मक़ामात को अच्छी तरह उजाड़ दें। (यजुरवेद)

(38) दुशमन को अपनी पूरी ताक़त से मारें। (यजुरवेद)

(39) वेदों के इल्म को जानने वाला आपके दुशमनों के गांव को तबाह करके आपके मर्तबा को बुलन्द करता है इसी तरह दीगर आलिम लोग भी करें। (यजुरवेद)

(40) धर्म के मुख़ालिफ़ों को ज़िन्दा जला दो। (रिगवेद)

(41) मुख़ालिफ़ो का जोड़ जोड़ और बंद बंद काट दिया जाए। (यजुरवेद)

(42) ऐ प्राकर्मी सिपह सालार! हिफ़ाज़त के ख़ातिर तलवार, तोप, बंदूक़ पकड़िये। (यजुरवेद)

(43) दुशमनों की फ़ौज को दरख़्त के मानिंद काट कर फ़तह हासिल कीजिये। (यजुरवेद)

(44) यह वेद का क़ौल है कि सभी फ़ौजियों के ज़रिया एक साथ जीता हुआ धन राजा फ़ौजियों में बांट दे। (मनु स्मृती)

(45) जो चीज़ हासिल नहीं होती है ताक़त के ज़रिया उस को पाने की ख़्वाहिश कर। (मनु स्मृती)

(46) हम्ला के लिये हर वक़्त तय्यार रहे। (मनु धर्म शास्त्र)

(47) दुशमनों की कमज़ोरी का हमेशा खोज लगाता रहे। (मनु धर्म शास्त्र)

(48) सारी मख़लूक़ को क़ाबू करले चाहे यह काम ताक़त के बल पर ही क्यों न हो। (मनु धर्म शास्त्र)

(49) दुशमन के चैलेंज का सामना हो तो मुंह न मोड़। (मनु धर्म शास्त्र)

(50) दुशमनों से लड़ने के लिये उसे छत्री का फ़र्ज़ याद रखना चाहिये। (मनु धर्म शास्त्र)

(51) जो हम से दुशमनी करे उस को हम शेर के मुंह में डाल दें। (यजुरवेद)

मोहतरम क़ारईन! आप ख़ुद फ़ैसला करें कि मज़्कूरा बाला मज़हबी किताबों में, श्लोकों में, मंत्रों में किस क़दर वज़ाहत के साथ जंग, जिहाद, मज़हबी लड़ाई, माले ग़नीमत का हुसूल, दुशमनों का क़त्ल, जीती हुई जंग में औरतों को हासिल करना, माल व मनाल को हासिल करना, दुशमनों के तालाब, फ़सलें, दरख़्त पौदे को बरबाद करना, मुख़ालिफ़ों को आग में जलाना। शबख़ूँ मारना, रात को डराना, उल्टा लटका कर जलाना, जंग का रास्ता इख़्तियार करना, दुशमन को क़ाबू में करना, तलवार, तोप, बंदूक़ उठाना, मुख़ालिफ़ों का जोड़ जोड़ काटना, क्या इन इबारतों को तशद्दुद पर महमूल नहीं किया जा सकता है? फिर लानती वसीम रिज़वी को इन बातो पर एतेराज़ क्यों नहीं? उस अदालते उज़्मा में इन इबारतों को निकालने के लिये अर्ज़ी दाख़िल क्यों नहीं किया? क्या लानती वसीम रिज़वी की सोच व फ़िक्र जानिबदाराना है? इन्साफ़ पसन्द इन्सान हमेशा जानिबदाराना नहीं बल्कि ग़ैर जानिबदाराना सोच रखता है।

इस्लामी जिहाद और हिन्दू धर्म युद्ध

डॉक्टर मुहम्मद अहमद नईमी साहब अपनी किताब ''इस्लाम और

हिन्दू धर्म का तक़ाबुली मुतालिआ'' जिल्द अव्वल, सः 803 में लिखते हैं:

''जहां तक इस्लामी जिहाद और हिन्दू धर्म युद्ध की अहमियत व फ़ज़ीलत का मस्अला है इस्लाम और क़दीम हिन्दू धर्म के माबैन क़दरे मुशाबहत नज़र आती है लेकिन मैदाने जंग में दुशमनों के साथ हुस्ने सुलूक और वुस्अते क़ल्बी का मुज़ाहिरा करने के लिहाज़ से काफ़ी फ़र्क़ पाया जाता है। इसलिये कि इस्लामी नुक़्तए नज़र से जंग व जिहाद का मक़सद दुशमन क़ौम को हलाक व बरबाद करना नहीं। बल्कि सिर्फ़ ज़ुल्म व सितम और फ़ितना व फ़साद से इन्सानी दुनिया को महफ़ूज़ व मामून करना है। इसलिये इस्लाम का हुक्म है कि दुशमनों पर सिर्फ़ उतनी ही ताक़त इस्तेमाल करना चाहिये कि जिससे ज़ुल्म व सितम और फ़ितना व फ़साद का ख़ातमा हो जाए जबकि इसके बरअक्स हिन्दू धर्म का नज़रिया यह है कि दुशमन को किसी तरह का मौक़ा नहीं देना चाहिये। ज़्यादा से ज़्यादा ताक़त इस्तेमाल करके उस को मुकम्मल तौर पर तबाह व बरबाद कर देना चाहिये। इस्लामी जंग व जिहाद के नज़रिये के मुताबिक़ उन लोगों को क़त्ल करने का हुक्म है जो दुशमन या काफ़िर मुसलमानों को क़त्ल करे तो मुसलमान भी उस को क़त्ल करें यानी जितनी ज़्यादती उन्होंने की है तुम भी उसके साथ उतनी ही ज़्यादती करो। इससे हरगिज़ आगे न बढ़ो क्योंकि क़ुरआन में अल्लाह का फ़रमान है:

''जिस ने तुम पर ज़्यादती की, तुम उस पर उसके मिस्ल

ज़्यादती करो।'' (सूरए बक़रह, आयतः 194)

''बेशक अल्लाह हद से बढ़ने वालों को पसन्द नहीं फ़रमाता।'' (सूरए बक़रह, आयतः 190)

''बेशक अल्लाह ज़ुल्म करने वालों को पसन्द नहीं करता।'' (सूरए शूरा, आयतः 40)

''बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों को पसन्द नहीं करता।'' (सूरए क़िसस, आयतः 87)

लेकिन क़दीम हिन्दू धर्म या वेदों में यह शर्त और हुक्म नहीं है कि वेदों के मानने वाले या हिन्दुओं को कोई क़त्ल करे तो वेदिक धर्म या क़दीम हिन्दू धर्म वाले सिर्फ़ उस को क़त्ल करें और उससे ज़्यादा ज़ुल्म न करें बल्कि क़दीम हिन्दू धर्म ग्रंथ या वेदों का हुक्म यह है कि ''महज़ धर्म का मुख़ालिफ़ दुशमन हो'' क़त्ल करे या न करे, तकलीफ़ दे या न दे उस की गर्दन मार दो और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की सख़्त से सख़्त सज़ाए मौत उस पर जारी करो जैसा कि मज़्कूरा बाला श्लोकों में आपने मुलाहिज़ा फ़रमाया। वेदों के मुंदर्जा बाला मंत्रों में दुशमनों और मुख़ालिफ़ों के साथ इन्तिहाई बेरहमी का सुलूक करने की तालीम दी गई है। जिस का माहसल यह है कि जो क़दीम हिन्दू धर्म या वेदिक धर्म को नहीं मानते या उसके पैरोकारों से दुशमनी रखते हैं, उन के लिये वेद का हुक्म यह है कि उनको क़त्ल कर डालें, आग में जला डालें, शेर के मुंह में डाल दें उनके खेत खलियान और बस्तियों को तबाह व बरबाद कर दें और उन को दरख़्त की तरह मुकम्मल तौर से काट डालें। इन मंत्रों में क़ाबिले ग़ौर बात यह है कि महज़ दुशमनी और नफ़रत के बाइस इन्तिहाई ख़तरनाक मौत की सज़ा और वह भी शेर, ख़ूंख़्वार जानवर के मुंह में डालने की बात कही गई है। और लुत्फ़ की बात यह है कि जो हम से दुशमनी करे उस को भी मज़कूरा हैरतनाक सज़ाएं दें और जिससे हम दुशमनी व नफ़रत करें उस को भी यही सज़ाएं दें।

अजीब इन्साफ़ है? कि जिससे आप दुशमनी या नफ़रत रखें उस को यह सज़ाएं किस जुर्म के इवज़ तज्वीज़ की गई हैं?

मुख़्तसर यह है कि क़दीम हिन्दू धर्म ग्रंथों ने दुशमनों और मुख़ालिफ़ों के तअल्लुक़ से जिस सख़्ती, बेबाकी और बेरहमी का सुलूक करने की तालीमात दी हैं, इस्लाम ने ऐसी कहीं कोई तालीम नहीं दी कि जो मुसलमान न हो या मुसलमान से दुशमनी करे या मुसलमान उससे दुशमनी करें या कोई बदकिरदार, बदचलन हो, ज़ालिम हो तो उस को क़त्ल करो या शेर और ख़ूंख़्वार जानवर के मुंह में डाल दो या जला कर राख कर दो और दरख़्त की तरह काट डालो। बल्कि इरशादे ख़ुदावंदी हैः

''दीन के मुआमिले में कोई सख़्ती नहीं।'' (सूरए बक़रह, आयतः 256)

तबरानी जिल्द दोम, सः 65 पर हैः

हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः

''الخلق كله عيال الله فاحبهم الى الله انفعهم لعياله۔''

तर्जमाः तमाम मख़लूक़ अल्लाह का कुंबा है और तमाम मख़लूक़ में अल्लाह का सबसे प्यारा वह है जो उसके कुंबे को ज़्यादा फ़ायदा पहुंचाए।

मिश्कातुल मसाबीह, जिल्द दोम, सः 423

الراحمون يرحمهم الرحمن ارحموا من فى الارض يرحمكم من فى السماء۔

तर्जमाः ''रहम करने वालों पर रहमान रहम फ़रमाता है। तुम ज़मीन वालों पर रहम करो, तो आसमान वाला तुम लोगों पर रहम फ़रमाएगा।''

कुरआन व हदीस की यह इबारतें इस बात की ताईद करती हैं

कि दीन व मज़हब के मुआमिले में किसी पर कोई ज़्यादती नहीं करनी चाहिये और अल्लाह की मख़्लूक़ दुशमन हो या दोस्त जहां तक मुम्किन हो मेहरबानी और नर्मी से पेश आना चाहिये, यही अल्लाह को पसन्द है। अल्बत्ता अगर नर्मी और मेहरबानी से मस्अला का हल न होता हो तो फिर उतनी तकलीफ़ व सज़ा दो जितनी तुम्हें पहुंचाई गई हो। इरशादे ख़ुदावंदी हैः

"और अगर तुम सज़ा दो तो ऐसी ही सज़ा दो जैसी तुम्हें तकलीफ़ पहुंचाई गई थी।" (सूरए नहल, आयतः 126)

दूसरी जगह इरशादे ख़ुदावंदी हैः

"जान के बदले जान, और आंख के बदले आंख,
और नाक के बदले नाक, और कान के बदले कान,
और दांत के बदले दांत और ज़ख़्मों में बदला है।
(सूरए मायदा, आयतः 45)

यानी ज़ुल्म व ज़्यादती के हिसाब से ही बदला व इन्तिक़ाम लिया जाएगा। यही इस्लाम का अदल व इन्साफ़ है। इस तरह दुशमनों और मुख़ालिफ़ों के साथ सुलूक के मुआमिले में इस्लाम और क़दीम हिन्दू धर्म के दरमियान जो फ़र्क़ है वह बख़ूबी ज़ाहिर है।

मुसलमान रसूल की भूमिका को छुपाते नहीं बल्कि छापते और बताते हैं

इसमें कोई शक नहीं कि दुनिया में हज़ारों इन्सानों का भला चाहने वाले और उनकी फ़लाह व बहबूद के लिये काम करने वाले आए लेकिन इन्सानी समाज पर जितने हमागीर असरात नबी करीम ﷺ की ज़ाते गिरामी के मुरत्तब हुए किसी और के हिस्से में नहीं। आपके किरदार की अज़्मत, अख़्लाक़ की पाकीज़गी की गवाही अपने और दीगर मज़ाहिब के लोगों ने भी दी है। रसूले आज़म अलैहिस्सलातु वस्सलाम की शख़्सियत, किरदार और पैग़ाम के बारे में

हर ज़माने में और दुनिया के हर ख़ित्ते में बेशुमार किताबें मुख़्तलिफ़ ज़बानों में लिखी जा चुकी हैं, मुख़्तसर, मुतवस्सित और ज़ख़ीम भी। संजीदा इल्मी और तहक़ीक़ी अंदाज़ में भी, बड़ों के लिये भी, बच्चों के लिये भी और नौ-उम्रों के लिये भी। बल्कि आप की शख़्सियत के एक एक पहलू पर सैकड़ों किताबें मौजूद हैं।

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 127 पर लिखता है कि

> ''मुसलमान मोहम्मद के चरित्र पर बात करने से क्यों डरते हैं? हिन्दू राम के अच्छे कामों को ज़हन में रखकर राम लीला रचाते हैं, ताकि राम के अच्छे कृतियों को दिमाग़ में रख सकें। वास्तविक बात तो यह है के मुहम्मद का कोई चरित्र नहीं था। मुसलमान मुहम्मद को छुपा कर रखते हैं।''

लानती वसीम रिज़वी की जहालत में ज़र्रा बराबर शक व शुबह की कोई गुंजाइश नहीं है। न उसे माज़ी की तारीख़ मालूम है, न दौरे हाज़िर की तारीख़ पर नज़र। मुसलमान कभी भी, किसी भी दौर में हुज़ूर ﷺ की सीरत पर बात करने से नहीं डरते और न ही नबी अकरम ﷺ को छुपाते हैं। हक़ीक़त तो यह है कि मुसलमान अपने नबी के किरदार और सीरत को छुपाते नहीं बल्कि छापते और बताते हैं। हर जुम्आ को मसाजिद में अइम्मा हुज़ूर की सीरत ही पर तो बात करते हैं। रबीउल अव्वल का चांद निकलते ही हर शहर में 12 तारीख़ तक नबी की सीरत को हज़ारों के सामने बयान करते हैं। मुहर्रम का चांद निकलते ही 10 तारीख़ तक रसूल और आले रसूल की सीरत व किरदार को हज़ारों के मज्मा में बयान करते हैं। अगर मुसलमान सीरत पर बात करने से डरते तो हज़ारों के मज्मे में कैसे बयान करते, यहां भी लानती वसीम रिज़वी का झूट साबित होता है।

पैग़म्बरे इस्लाम ग़ैर मुस्लिमों की दृष्टि मेंः

नबी अकरम ﷺ की सीरत को जहां तक छुपाने की बात है तो मैं चैलेंज के साथ कहूंगा कि जितनी किताबें मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) ज़बानों में हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की सीरत व किरदार पर छपी हैं, दुनिया के किसी भी मज़हबी रहनुमा की सीरत व किरदार पर नहीं छपीं। अब मैं तफ़सील के साथ बताता हूं कि हिन्दुस्तान और योरुप के ग़ैर मुस्लिम मुअर्रिख़ों ने कसरत के साथ आप की सीरत पर किताबें लिख कर ख़िराजे अक़ीदत पेश किया है।

डॉक्टर मुहम्मद रज़िउल इस्लाम नदवी मज़ामीन डॉट कॉम के तहत जुलाई 2016 ई० की इशाअत में ''पैग़म्बरे इस्लाम हिन्दुस्तानी ग़ैर मुस्लिम की नज़र में'' के उन्वान के तहत कई ग़ैर मुस्लिम दानिशवरों का हवाला देते हुए लिखते हैं कि

प्रोफ़ेसर रामा कृष्ना राव मराठी आर्टस कालेज बराए ख़्वातीन मैसूर के शुअबा फ़ल्सफ़ा में सदर थे। उन्होंने एक किताब Mohammed The Prophet of Islam के नाम से लिखी। उन्होंने नबी करीम ﷺ की तालीमात में जम्हूरियत और मसावात को ख़ूब सराहा, उनके मुताबिक़ उनकी तालीमात के नतीजे में बैनल अक़वामी इत्तिहाद और भाई चारा के उसूलों को आफ़ाक़ी बुन्यादें फ़राहम हुईं। हुज़ूर अपने मुआसिरीन की निगाह में खरे और आला किरदार के मालिक थे, इसी वजह से यहूदी भी आप की सदाक़त के क़ायल थे।

डॉक्टर एन, के, सिंघः

डॉक्टर एन, के, सिंघ इन्टरनेशनल फ़ॉर रिलीजस स्टडीज़ देहली के डायरेक्टर थे। उन्होंने इस्लामियात को बहस व तहक़ीक़ का मौज़ूअ बनाया, (Prophet Mohammed and His Companions) के नाम से एक जामेअ किताब लिखी। वह किताब के मुक़द्दमा में लिखते हैंः

मुहम्मद पैग़म्बर का नाम एक जदीद अहद की तामीर के लिये जाना जाता है। मज़हबी हल्क़ों के दरमियान एक ग़ैर मामूली शख़्स का किरदार बिल्कुल साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ है।

मुहम्मद ब-हैसियत इन्सान हमारे दरमियान नहीं हैं बल्कि ब-हैसियत पैग़म्बर उन्होंने अपने पीछे कुरआन व सुन्नत की शक्ल में असासा छोड़ा है। जो तालीमात उन्होंने हमारे वास्ते छोड़ी हैं, अगर उन पर सिदक़े दिल के साथ अमल किया जाए तो इस दुनिया में एक ख़ुशगवार ज़िन्दगी हासिल हो सकती है।

हिन्दुस्तान के मशहूर अदीब मुन्शी प्रेम चंद का एक मज़मून दिसम्बर 1925 में "हफ़्त रोज़ा प्रताप" में शाए हुआ। उस में वह लिखते हैंः अरफ़ात के पहाड़ पर हज़रत मुहम्मद की ज़बान से जिस हयात बख़्श पैग़ाम की बारिश हुई थी, वह हमेशा इस्लामी ज़िन्दगी के लिये आबे हयात का काम करती रहेगी। इस्लाम में अवामुन्नास के लिये जितनी कुव्वत और कशिश है वह किसी और में नहीं। जब नमाज़ पढ़ते हैं, एक मेहतर ख़ुद को शहर के बड़े से बड़े रईस के साथ एक ही सफ़ में खड़ा पाता है तो उसके दिल में एहसासे फ़ख़्र मौजें मारने लगता है। इसके बरअक्स हिन्दू समाज ने जिन लोगों को पस्त बना दिया है, उनको कुंएं की मुंडेर पर भी नहीं चढ़ने देते। उन्हें मंदिरों में दाख़िल नहीं होने देते, यह अपने से मिलाने की नहीं अपने से अलग करने की अलामतें हैं।

राजेंद्र नारायन लालः

राजेंद्र नारायन लाल 1940 में काशी हिन्दू यूनिवर्सिटी में क़दीम हिन्दुस्तानी तारीख़ और संस्कृत में एम ए की डिग्री हासिल की। उन्होंने हिन्दी में एक किताब "इस्लाम एक स्वयम सिध ईश्वरिया जीवन वैवस्था" के नाम से लिखी। किताब के सफ़्हा 32 पर फ़तहे मक्का का ज़िक्र करते हुए लिखते हैंः हज़रत मुहम्मद की क़यादत में

फ़तहे मक्का के वक़्त एक शख़्स की भी जान नहीं गई। पैग़म्बर और उन के पैरोकारों ने अपने अपने दुशमनों के मज़ालिम और बदला का इन्तिक़ाम लिये बग़ैर उन्हें छोड़ दिया। तारीख़ में जंग के बाद फ़ातेहीन के ज़रिये मफ़्तूहीन को इस तरह इज्तिमाई तौर पर माफ़ी देने की कोई मिसाल नहीं मिलती। इसके बरअक्स दीगर धार्मिक पुरानों के क़िस्सों में औतारों और देवताओं के ज़रिये से मुख़ालफ़ीन के ख़ौफ़नाक क़त्ले आम का ज़िक्र है।

आगे आप लिखते हैं कि हज़रत मुहम्मद साहब मज़ालिम सहते हुए ख़ुद ज़ालिमों के लिये भी दुआ मांगते रहे। वह इन्तिहाई मजबूरी की हालत में हुक्मे ख़ुदावंदी के तहत दिफ़ाई जंग करते हैं और मुकम्मल फ़तहयाबी हासिल करने के बाद भी अपने साथियों के ऊपर शदीद मज़ालिम ढाने वालों को इज्तिमाई तौर पर माफ़ कर देते हैं, आप का मिशन दीने हक़ के तौर पर इस्लाम था, अगर साइंस के उसूल ''जहदे लिल-बक़ा'' Struggle for existence और बक़ाए इस्लाह Survival of The fittest सहीह हैं और यह उसूल हक़ीक़त में साइंटिफ़िक उसूल हैं तो इन उसूलों पर शख़्सी लिहाज़ से और रसूले ख़ुदा की हैसियत से हज़रत मुहम्मद साहब खरे उतरते हैं और दीन की हैसियत से इस्लाम ही है जो इन उसूलों पर खरा साबित होता है।

स्वामी लक्ष्मी शंकर आचार्यः

स्वामी लक्ष्मी शंकर आचारर्य 1953 में कानपूर में पैदा हुए। इलाहाबाद से तालीम हासिल की, फिर माद्दियत छोड़ कर रूहानियत की तरफ़ माइल हुए। इस्लाम के ख़िलाफ़ होने वाले प्रोपेगंडे से मुतास्सिर होकर The History of Islamic Tolerence नाम से एक किताब लिखी। फिर इस्लामियात का मुतालिआ किया तो उन का ज़हन व फ़िक्र बदल गया। उन्होंने हिन्दी में एक किताब ''इस्लामी आतंकवाद

या आदर्श'' लिखी और अपनी पिछली किताब की तरदीद करते हुए मुसलमानों से माफ़ी के तलबगार हुए। इस्लाम पर लगाए जाने वाले दहशतगर्दी के इल्ज़ाम की सख़्ती से तरदीद की। अदल व इन्साफ़ व मसावात और कुरआन की दीगर अख़लाक़ी व रूहानी तालीमात को सराहा। इस्लाम के बारे में नफ़रत फैलाने वालों ने कुरआन की चौबीस आयतों के सियाक़ व सबाक़ को काट कर मुसलमानों को दूसरे मज़ाहिब के मानने वालों से लड़ने झगड़ने वाला बताया और उन में दहशत फैलाने का काम किया है जो सरासर ग़लत है। उन आयतों का एक मख़सूस पस मंज़र है जो उन के ज़मानए नुज़ूल के साथ ख़ास था। उन आयतों में बाद के ज़माने में दूसरे मज़ाहिब के मानने वालों के साथ मुआमिला करने का उमूमी हुक्म नहीं दिया गया। स्वामी जी आगे लिखते हैं: पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद साहब की सीरते पाक से यह साबित होता है कि इस्लाम का अस्ल मक़सद दुनिया में सच्चाई और अमन का क़याम और दहशतगर्दी की मुख़ालफ़त है।

इस्लामिक स्कॉलर मुहम्मद यहया ख़ान ने एक किताब ''पैग़म्बरे इस्लाम ग़ैर मुस्लिमों की नज़र में'' लिखी। उस किताब में उन्होंने हिन्दुस्तानी और योरुप के ग़ैर मुस्लिमों के तास्सुरात पेश किये जो इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम की सीरत व किरदार पर मबनी हैं। आप मुलाहिज़ा फ़रमाएं और अंदाज़ा लगाएं कि हिन्द और बैरूने हिन्द ग़ैर मुस्लिमों ने भी पैग़म्बरे इस्लाम की बारगाह में किस तरह ख़िराजे अक़ीदत पेश किया है।

मुसन्निफ़ अपनी किताब ''पैग़म्बरे इस्लाम ग़ैर मुस्लिमों की नज़र में'' के सफ़्हा 21 पर तहरीर करते हैं।

थौमस कारलाइल: **Thomas Carlyle**

थौमस कारलाइल Thomas Carlyle स्कॉटलैंड में 1795 में पैदा

हुए। बरतानिया के शोहरए आफ़ाक़ अदीब और फ़ल्सफ़ी थे। 1873 में उन्होंने ''इन्क़िलाबे फ़्रांस'' पर एक मब्सूत किताब लिखी। बरतानिया में मआशी इन्क़िलाब के क़ाइद करॉम्वेल Cromwell के ख़ुतूत और ख़ुत्बात और सवानेह हयात लिखी। 1865 में उन्हें एडंबरा यूनिवर्सिटी का एज़ाज़ी डायरेक्टर मुन्तख़ब किया गया। 1881 में उन्होंने वफ़ात पाई।

थौमस कारलाइल ने एक मक़ाला "The Hero As Prophet Mohammed & Islam" लिखा। उस में वह बयान करते हैं कि योरुप के शुमाली इलाक़ों स्वीडन, डेन्मार्क और नॉरवे वग़ैरा में जब जहालत, नाशाइस्तगी, बुत परस्ती, ला-मज़हबियत का दौर दौरा था और इन्सान बे-सिम्त और बे-लगाम ज़िन्दगी बसर कर रहे थे, अरब मुमालिक में उसी दौर में मज़हब की रौशनी फूट रही थी। इससे मेरी मुराद मुसलमानों के पैग़म्बर की बेअसत से है। यह कोई मामूली वाक़िआ न था बल्कि एक नए दौर का आग़ाज़ था जिस ने बनी नौअ इन्सान के हालात व ख़्यालात में एक अज़ीम इन्क़िलाब बरपा कर दिया था।

इस इन्क़िलाब को बरपा करने वाली शख़्सियत हज़रत मुहम्मद थे जो एक मज़हबी हीरो की हैसियत से ज़हूर पज़ीर हुए। उन का यह दावा न था कि वह ख़ुदा हैं और न ही उनके पैरोकारों ने उन्हें ख़ुदाई का दर्जा दिया।

मैंने अपने मक़ाला में सरज़मीने अरब में पैदा होने वाली एक अज़ीम शख़्सियत मुहम्मद का इन्तिख़ाब इसलिये नहीं किया कि आप अफ़ज़ल तरीन पैग़म्बर माने जाते हैं बल्कि इसलिये किया कि हम बतौर ग़ैर मुस्लिम उन पर खुल कर इज़हारे ख़्याल कर सकते हैं। इसके अलावा उन की आला सिफ़ात का एतेराफ़ कर लेने से यह ख़तरा नहीं है कि हम में से कोई शख़्स दायरए इस्लाम में दाख़िल हो जाएगा। इसलिये मैं आप की वह तमाम सिफ़ात बयान कर देना

चाहता हूं, जो हक़ व इन्साफ़ के तक़ाज़ों को मल्हूज़ रख कर बयान की जा सकती हैं। आप को पूरे शौक़ के साथ सच्चा नबी ज़रूर समझता हूं। आप की कामयाबी और अज़मत का राज़ मालूम करने के लिये हमें तअस्सुबात से पाक होकर खुले ज़हन के साथ ग़ौर करना पड़ेगा।

हज़रत मुहम्मद की तालीमात क्या थीं और उन्होंने इस दुनिया का क्या तसव्वुर पेश किया था? उन की तालीमात का सहीह जाइज़ा उस वक़्त लिया जा सकता है जब हम उन्हें एक सच्चा इन्सान गर्दानते हों।

लेकिन बदक़िस्मती से हमारे यहां यह नज़रिया जड़ पकड़ चुका है कि इस्लाम एक सहर था और उस का पैग़म्बर फ़सूंगर था। हमें इस तरज़े फ़िक्र और इस फ़रसूदा ख़्याल से नजात हासिल करना होगी। हम लोगों ने मुहम्मद के बारे में जो झूट और इफ़्तिरा फैला रखा है वह हमारे लिये हद दर्जा बाइसे शर्म है। इस की एक मिसाल यह है कि इंजील के आलिम और मुम्ताज़ मुस्तशिरक़ ऐडवार्ड डपोकॉक ने जब मुस्तशिरक़ ग्रोटियस Grotius से पूछा कि आपके पास इस इल्ज़ाम का सुबूत क्या है कि मुहम्मद ने एक कबूतर पाल रखा है, जो उन के कान के पास मटर के दाने उठा उठा कर खाता रहता है, उस कबूतर को फ़रिश्ता कहा जाता था। ग्रोटियस ने कहा कि इस का कोई सुबूत हमारे पास नहीं है। वक़्त आ गया है कि हम इस क़िस्म के लग़्व बे-सरोपा इल्ज़ामात से परहेज़ करें।

बारह सौ साल से अट्ठारह करोड़ इन्सान इस दीन को अपने सीने से लगाए हुए हैं। यह अट्ठारह करोड़ नुफ़ूस भी हमारी तरह औलादे आदम हैं। फ़ी ज़माना मुहम्मद के मानने वालों की तादाद दुनिया के सब अदियान पर ईमान रखने वालों से ज़्यादा है। हम किस तरह कह सकते हैं कि इन्सानों की इतनी कसीर तादाद रूहानी दीवालिया पन की शिकार है। यह करोड़ों बंदगाने खुदा उस अज़ीम

शख़्स की ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ की सच्चाई पर पुख़्ता यक़ीन रखते हैं। यह अल्फ़ाज़ सदियों से उनके लिये शमए हिदायत का काम दे रहे हैं। हम कैसे तसलीम कर सकते हैं यह सब अक़ाइद और अफ़आल महज़ रूहानी बाज़ीगरी थी। मैं कम अज़ कम अपनी हद तक ऐसे इल्ज़ामात या क़यास को सहीह तसलीम करने का तसव्वुर तक नहीं कर सकता।

(नोटः एक मुसद्दिक़ा रिकार्ड के मुताबिक़ 1996 तक दुनिया भर में मुसलमानों की तादाद एक सौ दस करोड़ थी)

शहंशाहे फ़्रांस नेपोलियन

फ़्रांस के शहंशाह नेपोलियन बोनापार्ट कहते हैं कि मुहम्मद की ज़ात एक मर्कज़े सक़ल थी, जिस की तरफ़ लोग खिंचे चले आते थे। उन की तालीमात ने लोगों को मुतीअ व गरवीदा बना लिया और एक गिरोह पैदा हो गया जिस ने चन्द ही साल में इस्लाम का प्रचम बुलन्द कर दिया।

अपनी क़ौम को वुजूदे बारी का सबक़ हज़रत मूसा ने सल्तनते रूम में, हज़रत ईसा और हज़रत मुहम्मद ने यही एलान किया मगर अरब बड़े ही बुत परस्त थे। हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्माईल, हज़रत मूसा की तालीमात को जब लोग भूल गए तो मुहम्मद ने उन्हें मक़ामे किब्र याद दिलाया।

इन्सानी गिरोहों ने फ़िक्रे मश्रिक़ में अजब ख़ल्फ़शार पैदा कर रखा था कि ख़ुदा है, मसीह है और रूहुल क़ुदस हैं मगर हज़रत मुहम्मद ने एलान किया सिवाए एक ख़ुदा के दूसरा कोई नहीं। न वह किसी से पैदा हुआ, न कोई उसका फ़रज़ंद है, न कोई दूसरा क़ाबिले परस्तिश। उन्होंने फ़रमाया कि तस्लीस ही बुत परस्ती को राह देती है, इसलिये जान लो कि मअबूद सिवाए ख़ुदा के और कोई नहीं।

नेपोलियन आगे कहते हैं, वह दिन दूर नहीं जब मैं दुनिया के

साहिबाने इल्म व दानिश को मुत्तहिद करके एक नया दौर क़ायम करूंगा, जो यक रंग और हम आहंग हो और कुरआन का उसूल उस की बुन्याद हो। मैं देखता हूं कि कुरआन ही के उसूल सच्चे हैं।

स्वामी भवानी दयाल सन्यासीः

स्वामी जी जुनूबी अफ़्रीक़ा के मशहूर हिन्दुस्तानी लीडर थे, वह कहते हैंः

> ''मुहम्मद साहब ने इस्तक़लाल और हिम्म्त को न छोड़ा, बराबर इस्लाम धर्म की तब्लीग़ करते रहे, हक़ बात कहने से कभी न झिझके। आख़िरकार मुहम्मद साहब का बोल बाला हुआ और उन की ज़िन्दगी ही में सारा अरब देश बुराइयों से पाक व साफ़ हो गया। कअबा से एक एक बुत तोड़ तोड़ कर फेंक डाले गए और यह क़दीम इबादतगाह फिर एक ख़ुदा की पूजा का मर्कज़ क़रार पाई।''

रोमानिया के विदेश मंत्री कोंस्टन वर्जेल जॉरजियोः

कोंस्टन वर्जेल जॉरजियो रसूल की बारगाह में ख़िराजे अक़ीदत इस तरह पेश करते हैंः

> ''जो लोग ग़ुलाम, स्याह फ़ाम, बेगाने और ब्रादरी से ख़ारिज करदा थे और उन में एक बड़ी तादाद मुफ़्लिसों की थी जो इस्लाम से पहले यह तसव्वुर करते थे कि एक दिन ऐसा आएगा कि हम भी दूसरों के हमसर कहलाएंगे। जब मुहम्मद मबऊस हुए तो उन्होंने फ़रमायाः सारे इन्सान एक जैसे हैं उन में कोई फ़र्क़ नहीं।''

गांधी जीः

मोहन दास करम चंद गांधी जिन की पैदाइश 1869 में हुई और उन का क़त्ल 1948 में हुआ। वह लिखते हैं किः

> ''मुझे पहले से ज़्यादा इस बात का यक़ीन हो चला है कि इस्लाम ने तलवार के ज़ोर पर अपना मक़ाम हासिल नहीं किया बल्कि इसका सबब पैग़म्बर का अपनी ज़ात को कामिलन फ़ना करना, हद दर्जा सादगी, अपने वादों की इन्तिहाई ज़िम्मादारी से पाबन्दी, अपने दोस्तों से इन्तिहाई दर्जे की अक़ीदत, दिलेरी, बे-ख़ौफ़ी, अपने मिशन और ख़ुदा पर पुख़्ता यक़ीन है।''

माइकल हार्टः

माइकल हार्ट ने पूरी दुनिया के सौ अहम शख़्सियात पर एक किताब The 100 A ranking of the most influential persons in history के नाम से लिखी। उन सौ शख़्सियतों में जिस को सबसे पहला मक़ाम दिया वह नबी अकरम ﷺ की ज़ाते गिरामी है। मुसन्निफ़ एक ईसाई मज़हब के पैरोकार हैं। उन्होंने इन्साफ़ के तक़ाज़े को पूरा करते हुए हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़ात को अव्वल मक़ाम पर रखा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को बाद में। इस सिलसिले मे मुसन्निफ़ क्या कहते हैं, ख़ुद पढ़िये।

My choice of Muhammed to lead the list of the world's most influential persons may surprise some readers and may be questioned by others, but he was the only man in history who was supremely successful on both the religious and secular levels.

तर्जमाः मुम्किन है कि इन्तिहाई मुतास्सिर कुन शख़्सियात की

फ़ेहरिस्त में मुहम्मद का शुमार सबसे पहले करने पर चन्द अहबाब को हैरत हो और कुछ मोतरिज़ भी हों लेकिन यह वाहिद तारीख़ी हस्ती है जो मज़हबी और दुनियावी दोनों महाज़ों पर बराबर तौर पर कामयाब रही।

माइकल हार्ट आगे लिखते हैं:

Today, thirteen centuries after his death his influence is still powerful and pervasive.

तर्जमाः आज तेरह सौ बरस गुज़रने के बावुजूद उनके असरात इन्सानों पर हनूज़ मुसल्लम और गहरे हैं। वह आगे लिखते हैं:

Muhammed played a far more important role in the development of Islam than Jesus did in the development of Christianity.

तर्जमाः मसीहियत के फ़रोग़ में यसूअ मसीह के किरदार की ब-निस्बत इस्लाम की तरवीज में मुहम्मद का किरदार कहीं ज़्यादा भरपूर और अहम रहा।

लानती वसीम रिज़वी आंखें खोलः

अगर लानती वसीम रिज़वी के पास देखने के लिये आंखें होतीं तो यह नहीं कहता कि मुसलमान मुहम्मद के किरदार को छुपाते हैं। मज़्कूरा बाला बयानात तो सिर्फ़ ग़ैर मुस्लिमों के हैं, इस पर मज़ीद हज़ारों सफ़्हात लिख सकता हूं लेकिन लानती वसीम रिज़वी की आंखें खोलने के लिये शायद इतना काफ़ी है।

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा १२७ पर लिखता हैः "हिन्दू राम के अच्छे कामों को ज़हन में रखकर राम लीला रचाते हैं, ताकि राम के अच्छे कृतियों को दिमाग़ में रख सकें।" लानती वसीम रिज़वी को मालूम होना चाहिये कि इस्लाम में तमाशा, नाटक, ड्रामा वग़ैरा की कोई हैसियत नहीं। इस्लाम यह पसन्द नहीं करता कि

किसी की सीरत व किरदार को तमाशा और ड्रामा बना कर लोगों के सामने पेश किया जाए, चाहे वह किसी मज़हब का रहनुमा ही क्यों न हो।

लानती वसीम रिज़वी कहता है कि राम लीला मना कर राम के किरदार को लोगों को बताया जाता है। मैं लानती वसीम रिज़वी से पूछना चाहता हूं कि इसके बावुजूद माइकल हार्ट ने दुनिया की सौ अहम शख़्सियात पर किताब लिखी उस में राम को कोई जगह आख़िर क्यो नहीं मिली? नबी करीम ﷺ की सीरत व किरदार पर कोई ड्रामा नहीं है, इसके बावुजूद इस किताब में सबसे पहला मक़ाम हासिल हुआ आख़िर क्यों? लानती वसीम रिज़वी यह बात भी ज़हन में रखे कि किताब का मुसन्निफ़ कोई मुसलमान नहीं बल्कि ग़ैर मुस्लिम है। वह इन्साफ़ पसन्द है, इन्साफ़ के तक़ाज़े को पूरा करते हुए उस ने नबी करीम ﷺ की सीरत व किरदार को अव्वल मक़ाम पर रखा।

अब मैं कुछ ऐसे ग़ैर मुस्लिम मुसन्निफ़ीन का इज्माली ज़िक्र करता हूं जिन्होंने मुख़्तलिफ़ ज़बानों पर नबी करीम ﷺ की सीरत पर किताबें लिखी हैं ताकि लानती वसीम रिज़वी के ज़हन से तअस्सुब का पर्दा हट जाए।

विकिपीडिया रिपोर्ट के अनुसारः

विकीपेडिया रिपोर्ट के अनुसार सिर्फ़ पचास साल के दरमियान 1900 से लेकर 1950 तक 74 मुसन्निफ़ीन ने हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलम पर किताबें लिखी हैं। इख़्तिसार के साथ चन्द का तज़्किरा मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

(1) कलाउड एल पिकन्स Claude L. Pickens

यह हारवर्ड यूनिवर्सिटी चाइना के प्रोफेसर हैं, उन्होंने एक किताब लिखी जिस का नाम हैः

Bibliography of literature on Islam in China

(2) स्वीडन के बाशिंदे जियो वाइडन गरन Geo Widengren ने एक किताब लिखी जिस का नाम है: Muhammed, The Apostle of God, and His Ascension.

(3) फ़्रांसिस ई पीटर्स Francis E Peters ने एक किताब लिखी जिस का नाम है:

Muhammed and The Origins of Islam.

(4) विल्फ़र्ड मेडिलंग Wilferd Madelung

यह जर्मन बाशिंदे हैं उन्होंने एक किताब लिखी जिस का नाम है:

The Succession to Muhammed.

(5) जिराल्ड डे गौरी Gerald de Gaury

यह न्यूयार्क के बाशिंदे हैं उन्होंने एक किताब लिखी जिस का नाम है: Rulers of Mecca.

(6) जियोलियो बेसेटी सानी Giulio Basetti-sani

यह इटली के बाशिंदे हैं उन्होंने एक किताब लिखी जिस का नाम है: Mohammed et Saint Francois.

मैंने बतौर मिसाल चन्द मुसन्निफ़ीन और किताबों का नाम पेश किया, अगर मज़ीद क़ारईन को मज़ीद देखना हो तो विकीपेडिया पर मुलाहिज़ा कर सकते हैं।

लानती वसीम रिज़वी बहुत बड़ा बैल:

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 127 पर लिखता है कि:

"मान-अपमान तो जीवित लोगों का होता है।"

लानती वसीम रिज़वी से बड़ा बैल मैंने नहीं देखा। मैंने उस को बैल इसलिये लिखा कि बोली भाषा में बैल का मतलब होता है अहमक़। उससे बड़ा कोई अहमक़ नहीं।

मोहतरम क़ारईन! ज़रा ग़ौर कीजिये एक आम आदमी भी इस बात को समझ सकता है कि इ़ज्ज़त और तौहीन का तअल्लुक़ ज़िन्दगी में भी है और मौत के बाद भी, जो क़ाबिले एहतेराम होते हैं। बाद वफ़ात भी उनका अदब व एहतेराम किया जाता है। ईसा मसीह के मानने वाले आज भी ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम का अदब व एहतेराम करते हैं और उनकी तौहीन बर्दाश्त नहीं करते। इसी तरह राम के पैरोकार जिस तरह उनकी ज़िन्दगी में अदब व एहतेराम करते थे उसी तरह आज भी अदब व एहतेराम करते हैं और बाद वफ़ात भी उनकी तौहीन बर्दाश्त नहीं करते। इसी तरह इस्लाम के पैरोकार अपने नबी का अदब व एहतेराम बाद विसाल भी करते हैं और उनकी तौहीन बर्दाश्त नहीं करते। राम के पैरोकार जब उन का नाम लेते हैं तो राम नहीं बल्कि श्री राम कहते हैं। यह बाद वफ़ात अदब व एहतेराम ही तो है। लेकिन लानती वसीम रिज़वी को यह बात समझ में नहीं आती। लानती वसीम रिज़वी की याद-दाश्त भी बहुत कमज़ोर है। अभी माज़ी की बात है कि हिन्दुस्तान के मशहूर आर्टिस्ट एम एफ़ हुसैन (मक़बूल फ़िदा हुसैन) पर मार्च 2006 में उत्तर प्रदेश के शहर हरिद्वार के एक वकील अरविंद श्रीवास्तव ने एक मुक़द्दमा दाइर किया। उनका कहना था कि एम एफ़ हुसैन ने एक पेंटिंग में हिन्दू देवी की तौहीन की है। अब लानती वसीम रिज़वी जवाब दे कि वह देवियां क्या ज़िन्दा थीं? फिर उन की तौहीन कैसे हो गई? अब यह बात साफ़ हो गई कि क़ाबिले एहतेराम शख़्सियात का अदब व एहतेराम हर हाल में होता है। लेकिन लानती वसीम रिज़वी तो बैल है वह कैसे समझ पाएगा।

रहमानी आयात

लानती वसीम रिज़वी अपनी किताब के सफ़्हा 26 पर लिखता है कि

> "इब्ने साहब लिखते हैं कि एक दिन रसूल काबा के पास लोगों के बीच सूरह अन-नज्म (सूरा 53) पढ़कर सुना रहे थे। जब वो आयत नंबर 19—20 पर पहुंचे और कहा "तो भला तुम लोगों ने लात व उज़्ज़ा और तीसरे मनात को देखा" तो शैतान ने रसूल के मुंह में डालकर नीचे की दो आयतें कहलवाई, यह तीनों देवियां सुखदाई हैं। इनकी मध्यता बख़्शिश की उम्मीद है।
> इन शब्दों से मक्का के प्रभावशाली क़ुरैश बहुत ख़ुश हुए। मोहम्मद का बहिष्कार और उन से दुश्मनी ख़त्म कर दी।"

मोहतरम क़ारईन! यह है लानती वसीम रिज़वी का एतेराज़ यह वही आयतें हैं जिस को बुन्याद बना कर लानती ज़माना सलमान रुश्दी ने "शैतानी आयात" नाम की किताब लिखी और पूरी दुनिया में रुस्वा हुआ। इन शाअल्लाह लानती वसीम रिज़वी इससे ज़्यादा रुस्वा होगा। सलमान रुश्दी की किताब के जवाब में बहुत कुछ लिखा जा चुका है। मशहूर इस्लामिक स्कॉलर डॉक्टर रफ़ीक़ ज़करिया ने इस किताब की रद्द में एक किताब "मुहम्मद और क़ुरआन" लिखी जिस में उन्होंने उसका सख़्त मुहासिबा किया है और उन शैतानी आयात का मुदल्लल और मुफ़स्सल जवाब मौलाना अबुल आला मौदूदी ने अपनी किताब तफ़सीरे क़ुरआन बनाम तफ़हीमुल क़ुरआन सूरए हज में बड़ी वज़ाहत के साथ पेश किया। दस सफ़्हात पर तफ़सीली गुफ़्तगू की है, मैं उसी में से मफ़हूम बयान करता हूं।

पहले वह क़िस्सा समाअत फ़रमाएं। क़िस्सा बयान किया जाता है कि नबी अकरम ﷺ के दिल में यह ख़्वाहिश हुई कि कुरआन में ऐसी कोई आयत नाज़िल हो जिससे कुफ़्फ़ारे कुरैश की नफ़रत दूर हो और वह क़रीब आ जाएं। एक रोज़ कुरैश की मजलिस में बैठे हुए थे, आप पर सूरए नज्म नाज़िल हुई और आपने उसे पढ़ना शुरू किया, जब आप "افرئيتم اللٰت والعزى۔ ومناة الثالثة الاخرى۔" पर पहुंचे तो यकायक आप की ज़बान से यह अल्फ़ाज़ अदा हुए "تلك الغرانقة العلى وان شفاعتهن لترجى۔" (यह बुलन्द मर्तबा देवियां हैं इन की शफ़ाअत की उम्मीद की जा सकती है) इसके बाद फिर सूरए नज्म की आयत पढ़ते चले गए। आख़िर में आपने सज्दा किया तो मुश्रिक और मुसलमान सब सज्दे में गिर गए।

उधर यह वाक़िआ सुन कर मुहाजिरीने हब्शा मक्का वापस आ गए कि हुज़ूर और कुफ़्फ़ारे मक्का के दरमियान सुलह हो गई है।

इस वाक़िआ को इब्ने शिहाब ज़ुहरी, तबरानी, वाक़िदी ने बयान किया है लेकिन इस वाक़िआ को इब्ने कसीर, बैहक़ी, क़ाज़ी अयाज़, इमाम राज़ी, क़रतबी, बदरुद्दीन ऐनी, शोकानी और अल्लामा आलूसी वग़ैरा ने ग़लत क़रार दिया है। इब्ने कसीर कहते हैंः जितनी सनदों से यह रिवायत हुआ है वह मुझे किसी सहीह मुत्तसिल सनद से नहीं मिला। बैहक़ी कहते हैं अज़रूए नक़ल यह क़िस्सा साबित नहीं।

इब्ने ख़ुज़ेमा ने कहा कि यह ज़नादिक़ा का गढ़ा हुआ है। क़ाज़ी अयाज़ कहते हैं इस की कमज़ोरी इससे साबित है कि सिहाहे सित्ता के मुअल्लिफ़ीन में से किसी ने भी अपने यहां नक़ल नहीं किया। इमाम राज़ी, क़ाज़ी अबू बकर और आलूसी ने इस पर मुफ़स्सल बहस करके बड़े पुर-ज़ोर तरीक़े से इस का रद्द किया है।

पहली चीज़ ख़ुद उस की अन्दरूनी बातें हैं जो उसे ग़लत साबित करती हैं। क़िस्से में यह बयान किया गया है कि उस वक़्त पेश आया जब हिजरते हब्शा वाक़ेअ हो चुकी थी और इस वाक़िआ की

ख़बर पाकर मुहाजिरीने हब्शा में से एक गिरोह मक्का वापस आ गया। अब ज़रा तारीख़ों का फ़र्क़ मुलाहिज़ा कीजिये।

हिजरते हब्शा मोतबर तारीख़ों के मुताबिक़ रजब 5 नबवी में वाक़ेअ हुई और मुहाजिरीने हब्शा की वापसी उसी साल शव्वाल के महीने में हुई। इससे मालूम हुआ कि यक़ीनन यह वाक़िआ 5 नबवी का है। सूरए बनी इस्राईल जिस की आयत के मुताल्लिक़ बयान किया जा रहा है कि हुज़ूर ﷺ के इस फ़ेअल पर बतौर इताब नाज़िल हुई थी, मेअराज के बाद उतरी और मोतबर रिवायात के मुताबिक़ मेअराज का वाक़िआ 11 नबवी का है। इसके मानी यह हुए कि इस फ़ेअल पर छे साल गुज़रने के बाद इताब नाज़िल हुआ। क्या कोई अक़्ल इस को क़ुबूल करेगी? इस क़िस्से में बताया गया है यह आमेज़िश सूरए नज्म में हुई। अब सूरए नज्म की आयतों को और मन घड़त आयत को मुलाहिज़ा कीजिये, दोनों का कोई रब्त नहीं है। तर्जमा सूरए नज्म "फिर तुम ने कुछ ग़ौर भी किया, उन लात व उज़्ज़ा पर और तीसरी एक और मनात पर" इसके बाद जो मन घड़त आयत है वह यह है "यह बुलन्द पाया देवियां हैं इन की शफ़ाअत ज़रूर मुतवक़्क़ुअ है" इसके बाद फिर सूरए नज्म की आयत यह है "क्या तुम्हारे लिये नर हों और उनके लिये बेटियां? आप ज़रा ग़ौर करें वह मन घड़त आयत सियाक़ व सबाक़ की आयत से क्या मुताबिक़त रखती है। क्या यह सवाल पैदा नहीं होता है कि क़ुरैश का सारा मज्मा जो उसे सुन रहा था बिल्कुल ही पागल हो गया था कि बाद के जुम्लों में उन देवियों की तारीफ़ के बाद सख़्त तरदीद है। इसके बावुजूद वह कहेंगे कि नबी से हमारा इख़्तिलाफ़ ख़त्म हो गया? यह क़िस्से की अन्दरूनी बातें ही बताती हैं कि यह क़िस्सा मन घड़त है। क़रीने क़यास यह है कि वाक़िआ यूं हुआ हो कि एक रोज़ नबी करीम ﷺ हरमे पाक में जहां क़ुरैश के लोगों का एक बड़ा मज्मा मौजूद था, यकायक आप तक़रीर करने के लिये खड़े हो गए। उस

वक़्त अल्लाह तआला की तरफ़ से आप की ज़बाने मुबारक पर यह खुत्बा जारी हुआ, जो सूरए नज्म की सूरत में हमारे सामने है। इस कलाम की तासीर का यह हाल था कि जब आपने सुनाना शुरू किया तो मुख़ालफ़ीन को शोर मचाने का मौक़ा न मिला, जो अकसर शोर मचा कर कलामे इलाही सुनने से रोकते थे। सूरह के इख़्तिताम पर जब आप सज्दे में गए तो सभी सज्दे में चले गए। बाद में उन्हें अपनी ग़लती का एहसास हुआ। लोगों ने तअना देना शुरू किया कि लोगों को तो कुरआन सुनने से मना करते हैं और आज खुद सुना और साथ ही साथ सज्दा किया। इस शर्मिंदगी से पीछा छुड़ाने के लिये उन्होंने यह जुम्ला गढ़ दियाः "تلك الغرانقة العلٰى وان شفاعتهن لترجى۔"

और कहा कि हम ने मुहम्मद की ज़बान से यह सुना तो सज्दा किया और हम समझे कि मुहम्मद हमारी देवियों की तारीफ़ कर रहा है। यह है उस शैतानी आयात की कहानी जिसे लानती वसीम रिज़वी जैसे शैतान, शैतानी आयत बना कर पेश करता है। जबकि सूरए नज्म में तमाम आयतें रहमानी हैं इस में कोई शैतानी आयत नहीं।

यह है उस हक़ीक़त की कहानी जिस पर लोग उंगलियां उठाते हैं। इस पर नाविल तक लिख डाले हैं जबकि हक़ीक़त से इस का कोई तअल्लुक़ नहीं है।

शाने नबी में जो करते हैं तौहीन
खुदाया मैं उस की सज़ा चाहता हूं
सुब्ह व मसा तुम को पुकारे यह आसी
दोनों जहां में जज़ा चाहता हूं

☪ ☪ ☪ ☪